



अथ रसिकोल्लासः।

दोहा। राधापद बाधाहरन सबसाधाको मूल।
सोपदवल्लभ विप्रके हियमें रहै अडूल १
ब्रजजनजीवन श्यामकी राधाजीवनमूरि।
तिहिपदकंज सुधूरितें दृग अंजै तमदूरि २

अथमनोपदेशः॥ कवित्त॥ येरे मन चंचल तू मेरी या कहीको मानि बाकीरही आयु ताहिब्रथा जानिखोवेरे। कहै विप्रवल्लभ जो अबलोंभई सोभई अब जगजाइनके मुख को न जोवेरे॥ मानिरह्यो सारसुत देह गेह दारन कों इनके सनेह मोह रैनि जिनसोवेरे। ब्रजठकुरानी परब्रह्म पटरानीजूके पदअरबिंद को मलिंद क्यौंनहोवेरे १ जसुदाको नंदनहै देवनको बंदनहै गोपी हिय चंदनहै करत बसेरो है। कंसको निकंदनहै केसिहूको रंदनहै बल्लभ कलिंदी फिरत सुहेरो है॥ कलिमल भंजन है दास मन रंजनहै इन्द्रमद गंजनकै कीनो निज चेरोहै। स्वयं निरंजनहै सुराधा दृग अंजन है ताकेपद कंजन मलिंद मन मेरो है २ अथ कविपरचय॥ दोहा॥ है मेरे निज देस को नाम देसही ख्यात। तहां सुजैपुर नगर बर सुरपुर

सो सरसात ३ तहँ तें पश्चिम कोस नव बगरुमहलाँ ग्राम। बिजैराम जहँ जोयसी गौड़नमें सरनाम ४ तिनको करिसतकार बहु जैपुरेस जैसाहि। वृत्ति दई मंदिर दयो पुर पुरोहिती ताहि ५ सुत तिनके सुभतीनभे तिहिं जेठे सुखदेव। मध्यम पुष्करनाथ अरु गंगाविष्णूसेवह६ जगन्नाथ के दरसकी इच्छाकरि सुतसाथ। काशीनाथहि साथ लैआये पुष्करनाथ ७ तहँ तें आवत राहमें मिलै भोजपुरईस। बहुबिनती करि निज निकट राखे तिनहि महीस ८ गढ़ भीतरहिं सनेह बसकरि आदर सनमान। कूपबाटिका देवगृह रचितहँ कुंजमहान ९ पधराये राधारमन तिहिमधि अतिहि ललाम। विनहीके गुनगाथको निसिदिन रहै कलाम १० चतुराई बहु जगत की तिहिं उररही सुआन। बृन्दाबन तन तजि मिलै कृष्णदेहमें प्रान ११ तिनतें काशीनाथ भे जोतिबेद निधान। तिनकों नृप बरतें मिल्यो बड़ो दान सनमान १२ विनके सुत हम द्वैभये पढ़े शास्त्र बहु छिप्र। ब्रजकिशोर जेठे भये छोटे बल्लभबिप्र १३ राधावल्लभ बिप्रके दोयनाम रमणीय। बल्लभ बिप्र स्वकाव्यमें कहु बल्लभ पददीय १४॥ कवित्त॥ भरद्वाज ऋषिके सुगोत्र बिषैं आदि गौड़ वेद यजु साखा माध्यंदिनिहि बखानिये। यज्ञउपबीत मध्यराजत प्रबर तीन सतहै सुपथ देस देसही सुमानिये॥ सुभकुल देबीपर्ण बासिनी बिचित्रा चैत्र आश्विनकी पूर्णिमै पूजन प्रमानिये। सासन बगड हद्द पदवी है जोयसीकी परिचै हमारो आप याही बिधि जानिये ३ अथ ग्रन्थारंभः॥ तहां बिघ्न निवारण के हेतु

ग्रीष्म रूप गणपतिजू की प्रार्थना ॥ यथा ॥ सवैया ॥
बिघ्नपग्रीखम सो यह राजत बिघ्नन के तरु तुंग उखारे। तापत बिघ्नन के गनको फिरि धूरिकै भूरि अकास उछारे॥ सोखत बिघ्नन के सरकों पुनि सुंडनि झारि बवंडरपारे। बल्लभ त्यों बन बिघ्नन के निज चंड सुअंसन ते नितिजारे १ ॥ दोहा ॥ गजमुखसनमुख राखि सुभ गो गोकुल गुरुध्याय। गोरज ब्रजरज अंजि दृग गोबर्द्धन सिरनाय १५ ॥ सोरठा ॥ बंदि गुपाल दुकूल लकुट मुकुट बंसी अधर। जमुना जमुना कूल तिहि तटके तृण बीरुधहि १ बंसीबट बनकुंज अलि खग मृग जे ब्रजबसत। गोपगोपिका पुंज बन उपबन ब्रजके सकल २ बंदि जसोमति पाय नंदमहरके चरन युग। चाहत तनक सहाय हरिबिचना रचनानकी ३ ॥ दोहा ॥ ब्रज बल्लभ ब्रजजे किये बल्लभ चरित प्रकास। ते बल्लभ मथ कबित्तकरि बल्लभ करत बिकास १६ हुलसे रसिकनि को हियो सुनि सुनि समुझि चरित्त। तिहिते रसिकोल्लास यह नामकियो गुनि चित्त १७॥ सोरठा॥ बल्लभ रसिकोल्लास ग्रंथकरत संग्रह सरस। जिहिसुनि होय हुलास रसजुत रसिकनके हिये ४॥ तत्रराधाप्रभाव वर्णन ॥ कवित्त ॥ पायोहै सुरेसने असेस सुरईस पद कोटिन बरस लगि मनु अनुराधेतें। कहै बिप्र बल्लभ त्यों जलेसने धनेसने सेसहू न पाई ऋद्धि ताही के समाधेतें॥ बिधिहूने बिधितें जलधिहीकी बीचीबीच पायो है बिरंचि पद प्राणायाम साधेतें। पूरे वही साधा अजों जगत अगाधा मौधि मिटि भवबाधा पद राधाके अराधेतें ४ कृष्ण

प्रभाव वर्णन ॥ श्रीपति ॥ सुकवि कहावें हरिनटकेन गुनगावें जगमें जनम तेई भटके फिरतहैं। श्रीपति बिहारी अवतारी अवतारनके गिरिवरधारी घटघटमें रह तहैं ॥ जाकेद्वार लोकन समीप लोकपाल खरे लटके लकुट गोप पटके सहतहैं। हटके न माने पीतपटके पगन पर मुकुट दिगीसनके लटके रहतहैं ५ ॥ बलभद्र प्रभाव ॥ भूलना ॥ जैतिब्रजचन्द्र आनन्दके कंद श्री रोहिणी नन्द आनन्दकारी। बिजे रणखंभ जनदीन अवलंब दुबिद प्रलंब धेनुक प्रहारी ॥ दच्छिभुज लकुट अरु सीसपर मुकुट बनमाल उर चटक पटनीलधारी। भद्रके करण आभद्रके हरण सुइ संत बलभद्रके शरणभारी १ कवित्त ॥ सेस अवतारे कोउ पावत न पारे सिव बिरंचि पचिहारे गुनसागर अपारे हैं। रोहिनीके बारे बसुदेवहूके प्रानप्यारे रेवतीरमणवारे जगलीला बिस्तारे हैं ॥ संखचूड मारे औ प्रलंबहि पछारे प्रभु द्विबिद बिदारे ऐसे पौरुख निहारे हैं । भुजबलभारे मद छकि मतवारे हर मूसर सुधारे सो हमारे रखवारे हैं ६ ॥ सं० ॥ सहायता वर्णन ॥ उदधि मथैया कालीनागको नथैया प्रभु द्रुपद सुताको बर चीरबढ़वैया है । ब्रज उबरैया कर छिगुनी करैया गिरि इंद्रको भरैया मद बलको सुभैयाहै ॥ मुरली ररैया मोर मुकुटलसैया सीस पापको हरैया धर्म धुरि को धरैयाहै । नन्दको कन्हैया नंदरानी को पिवैया दूध बिस्वको भरैया बिप्र बल्लभ सहैयाहै ७ ॥ श्री० ॥ देवदिग तारे जाहि गावैं देवतारे तारे पतित अनेक जेते नभमैंन तारे हैं। रतनारे नैननतें नेकहू निहारें तबे कई कोटिदीन-

नके दारिद बिदारे हैं ॥ श्रीपति पुकारे सुभ स्यामनील घनकारे जसुदाके बारे प्रभु राधा प्रानप्यारे हैं । नंदके दुलारे धराधरके धरनिहारे मोरपखधारे सो हमारे रखवारे हैं ॥ ८ ॥ पूषी ॥ मोरमुकुटवारो धरे भेष नटवारो छुटी लोल लटवारो सुतो जगत उज्यारो है । सांवरो बरन वारो मुरलीधरनवारो संकट हरणवारो नंदजूको प्यारो है ॥ दानव दलनवारो छबिको छलनवारो मंद सो चलन वारो पूषी उरधारो है । कंज चच्छु स्वच्छवारो भृगुपद बच्छवारो मोरपच्छवारो सो हमारो रखवारो है ९ ॥ 'अथ कथा तत्र मंगलार्थ यमुना राधा प्रार्थना नवीन ॥ क० ॥ स्याम सनमानी रसखानी या बखानी जन वह जल खानीजगजानी जसनीकोहै । यापै अनकूलवाके कूलन पै केलिकरै वाके स्यामरंग याके अंगस्याम पीको है॥ दो ऊ रसरूप ब्रजभूपके सरूपछकी दोऊके भागमै सोहागही को टीको है । आसरो दुहूको निसिबासरो नवीन नित भाननंदनी को वृषभाननंदनीको है १९ तत्र ब्रज वर्णन ॥ संग्रहकर्त्ता दोहा ॥ ह्वैगइ जो अरु होयगी ह्वैरहि जो इहिं बार । सो सरसुति बरनन करत ह्वै कवि जीभ सवार १८ सनेहलीला ॥ शिव नारद सनकादि मुनि सारद ब्रज रस लीन । रसिकसदा ब्रजरस उदधि मगनरहै बनिमीन ॥ १९ नागरीदास ॥ ब्रजलहरी जन मीनहै हरिजल ब्रज जनमीन । हरिजन ब्रज आधीनहै ब्रजजन हरिआधीन २० ॥ सनेह ॥ ब्रजसरवर मथुरा कमल वृंदावन मकरंद । ब्रजबनिता तट सुमन बर मधुकर श्रीनँदनन्द ॥ २१ ॥ अपि ॥ धनि ब्रजबासी धन्य ब्रज धन्य धन्य ब्रज

भमि । धनि ब्रजरम ब्रज बालधनि जिन सँगरहे हरिभू-
मि २२॥ सं० ॥ ब्रजचौरासी कोसकी देय भाँवरी जोय ।
लखचौरासी जोनिमैं फिरै फेर नहिं सोय ॥ २३ गोपाल
कवि दोहा ॥ रास बिलास हुलास नित सब सुखको पर-
गास । बड़े भागतें पाइये ब्रजके मांझ निवास ॥ २३ ॥
क० ॥ कीरतन कथा रास भजन समाज साध सन्त
सतसंग नितसुरग बिलासीको । देखत गोपालवर्ष उत्स-
व सकल सुख प्रभुके सुथाननि बिहार भूमि खासीको ॥
सुकवि गोपाल जाकेभागको सराहे ताके आगे फलला-
गतहैं तुच्छ प्रागकासीको । मिटै चौरासी जायहोयअबि-
नासी मिलै सुखनकीरासी ब्रजमांझ ब्रजबासीको १०॥
दोहा ॥ पिय प्यारीकी जबकृपा पूरन पुण्य प्रकास । तब
पावे निरबिघ्न या ब्रजके माहिं निवास २४ ब्रज दर्शन
जात्रा ॥ मन परसन ह्वैके जवै हरिदरसनकौं जात । सा-
ह्मै हरिसन होत अघ बरिसनके कटिजात २५॥ क० ॥
साँझ अरु प्रात हरिमंदिरमे जात जब पापकटिजात
जेते करे बरसनतें । सुकबि गोपाल बहुनैननकौं हेतसुख
ममता अधिक घटिजात घरसनतें ॥ रूपमाधुरीमे जैसो
आवत सवाद तैसो आवै न सवाद कहूंभूलि छरसन-
तें । हरिसन साह्माहोत झरसन लागेदोखं हरसन ला-
गे मन देखें दरसनतें १२ गंगाधरकृत उप सतसैया ॥
कुंडलिया ॥ तजि तीरथ हरि राधिका तन दुति करि अ-
नुराग । जेहि ब्रजकेलि निकुंजमग पग पग होतप्रयाग ॥
पगपगहोत प्रयाग सितासित जावको लागे । गंगा ज-
मुना सरस्वती लज्जित तिनआगे ॥ रसभ्भनरीग सिंगार

प्रेमके बरन चरन भजि । ब्रज निकुंज मगलोटि पश्योरज सबतीरथतजि १ नारायनदास कृत छंदसारे ॥ किरीट छंद ॥ धीर समीर सुबै मुरलीतट औ जमुनाछबि तुंगतरंगित । फूलिरहे द्रुमकुंजनिकुंज करें अलिपुंज पराग सनेहित ॥ श्री वृषभानुसुता नँदनंदनके गुनगान सुनै जितहीजित । कौनसुनै सुकहौं किहिसौं ब्रजकीछबि मोमनमें खटकै नित १॥ अभैराम ॥ क० ॥ एकब्रज रेनुकापै चिंतामनि वारिडारौं तीनलोक वारिडारौं ब्रजके बिहारपै। रची सची वारिडारौं ब्रज पनिहारिनपै रमाहूको वारिडारौं गोपिनकेद्वारपै ॥ लतनकेपातनपैकलपवृक्षवारिडारौं वारि बैकुंठ डारौं कालिंदीके धारपै । कहै अभैरामवारौं देबिनको राधिकापै और सब देव वारौं नंदकेकुमारपै १२ ब्रजनागरनकी उक्ति ॥ नागर कबि ॥ स० ॥ जातकेतो हमहैं ब्रज बासी सुनाहिंरही अब जातकी बाधा । देस है घोखन चाहत मोखकों तीरथ श्रीजमुना सुखसाधा ॥ संतनके सतसंग अजीवका कुंजबिहार अहार अगाधा । नागरको कुल देवगोवर्धन मोहन मित्रहै इष्टहै राधा २ ॥ ठाकुर ॥ रसना हिमिल्यो जिन्हकों ब्रजको तिनभागलिख्यो सुकछूजस ना । जमुनामलियेको प्रभाव यहै तिसनाहिसुतीरथको बसना ॥ बसनाहि रह्यो मनतौ अपने कहे ठाकुर मोह कसे कसना । कसनाहि कियो हरिको भजनै धिकहै धिकहै तिनकी रसना ३ ॥ रसखान ॥ मानुसहौं तो वही रसषान बसौं मिलि गोकुलगांवके ग्वारन । जो पसुहौंतो कहा बसमेरो चरौं मिलि नंदकी धेनुमझारन ॥ पाहनहौं तो वहीगिरिको जो कियोब्रजछत्र पुरंदर धारन । जोख-

गहों तो बसेरोकरों यहिकालिंदी कूलकदंब कि डारन।
४ ॥ तत्र मथुरापुरी वर्णन॥ ग्वाल ॥क० ॥ पांति निगुरी है
जेबनावतगुरीहैं ताहि सुमति घुरीहै घोरदुरमति चुरी हैं
पापनकी पंगति भुरीहैं सोदुरीहै दूरि जमुना दुरीहैं सोज
मेसहूको बुरीहै॥ ग्वालकबि उकति फुरीहैसो मुरीहै नाहिं
मुक्ति अंकुरीहैं जमदूतनकों छुरीहै। धर्मकी धुरीहै षट
पुरीको सुरीहै जोरजोतिसी जुरीहै ऐसीमंजुमधुपुरीहै।
१४॥ सं० ॥ देखिगति झांकी भूली जमकी चलाँकी सब
पूरन कलाकी जहाँमूरति कन्हाकीहै। कहेबिप्र बल्लभ
देवमृत्तिका चहत ताकी मृत्तिका जहाँकी जिनै एकबार
फाँकीहै॥ पुरिनको पूरोगुन पूरिरह्यो तामै सदा ऐसी पु-
न्य पूरनकी मथुरा सुबांकीहै। एकबार जायजहांजाकीछ-
बिझांकी जिन फेर भव आय भवझांकी नहिंझाँकीहै १५
दोहा॥ तिहि अवसर मधुपुरि नृपति रह्योकंस बलवान।
ताके बलके अब कछू चाहत कियो बखान २६ धेनुक
ब्योम अरिष्ट अघ केसी बक चानूर। सल तोसल पर-
लंबसे सँगलै कोरिन सूर २७ ॥ गि० ॥ जीतिलई अ-
मरावती जम कुबेर वरुनादि। इंद्रसहित ऐरावतहि पट-
क्यो घनसमनादि २८॥सं० ॥ है प्रचंड बरिबंड वह मनहुँ
कालको काल। जीते निज भुजदंडते सुर असुरनके जा-
ल २९ और कथा सब कंसकी बहुग्रंथन बिख्यात।
ग्रंथ बढ़न भयते यहां करी न वे सब ख्यात३०कारागा-
रहिदै पितहिं करिजादव अपमान। षटभागिनी सुत
हत कियो जगमें पापमहान ३१ सुरनौमुनि जन महत
को कर्यो महा अपमान। दुखित सकल द्विजवर्नैलगे कर

करुना भगवान ३२ तब अजतें करि कथनसुर छिति सहगये जहँ नाथ । हाथजोरि बोलतभये धरि हरिपद पै माथ ३३ छिति छत्रिनके बंसमै उपजे असुर बिसाल। करिकरुना ततकाल प्रभु हूजे सुरप्रतिपाल ३४॥ कुंडलिया ॥ भयछोभित छितिहूतबहिं बोलीलेत उसास । कंसादिक जग रुजनको कीजे आसु बिनास ॥ कीजे आसु बिनास जगतके हौ तुम पालक । नातरु मरिहैं रोय कलपिके जे तुव बालक ॥ ब्यापिगयो त्रयताप तापत्रै तिनके तपत्वय । सरन सरन गोहराय गिरी हरिपदहिं बिकल भय २ ॥ सरवेस ॥ क० ॥ सुजसन जानो गाय पसुको सुभावयहै वहै सरबेसबेस बेदनजो गायगो । तिसनानदीकी नीकी लहर बहरमांझ लोभ ग्राह गह्यो तबतूहीं मनआयगो ॥ तारे करिवरके गरीबपरवरबानो तबतें सतायगो न काहू तन तायगो। दरद हमारोजो न गरद मिलायगो तो बिरद दरदवारो रदपरिजायगो १५ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ तबबोले हरि करि कृपा लैहों भुविअवतार। वतरहु सुरक्षिति जायसब जहँतहँ नरतनधार ३५॥ नेहलीलायां॥ दोहा ॥ भूतलभार उतारिहौं धरिहौं रूपअनेक। ब्रज तजि अनत न जायहौं यह मेरे हिय टेक ३६॥ जनोपदेश ॥ सुजान ॥ रोजरोज खोज खोज खैबेकी खबरि लेत सोवतहू जागत न नेक बिसरतहै । संकटमै सावधान साहब सुजानसदा सेवा को न साध साध सेवाको डरतहौ ॥ जाके द्वार चौकीदार लेखदार नाहींलगे लगे ना केवार छरीदारन अरतहै । चाकरीजेमाने ताकी चाकरी करे न मूढ़ चाकरी न माने

ताकी चाकरी करतहै १६ इति श्रीमदादिगौड़ दुर्गाग-
भंज श्रीकाशीनाथात्मजविप्रवल्लभविप्रकृते रसिकोल्ला
सभागवते भूमिभारावतरणार्थब्रह्मादिदेवान्बरदानदानो
नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ बन उपवन
खगमृग सहित शोभित सकलसमाज । गोव्रजहित व्र-
जराजहित आयोव्रज गिरिराज १ ॥ गिरिराजको वर्णन॥
गिरिधरदास॥क० ॥ निरझर चहूँ ओर झरझर झरै जहां
मोरनको शोर घोर रह्यो जहां घिरिहै । शिखर अनेक
एकएकतें उतंगबर शीतलसमीर रह्यो मोददानि फिरि
है ॥ गिरिधरदास लसैं बिटप सुबासवंत सुखभासुमेरसों
सरसरहीथिरहै । लसे नंदनन्दन अनंदनकों दैनवारो
मोदनको बर्द्धन गोबर्द्धन सुगिरिहै १॥ वृंदावन वर्णन ॥
कृष्णराम ॥ जेते पसुपक्षी औरकोगने अनेकजीव विद्य-
मानजानो सबहीको देवगनहैं । जेती जहां धेनुकामधे-
नुही बिराजरही जेते द्विजराज तेते जानो मुनिगनहैं ॥
जेते जहां द्रुमकल्पद्रुमहैं कृष्णराम समताको लायक न
चौदहूँ भुवनहैं । अद्भुतरच्यो है बैकुंठहूतैं सरस तीनो
लोकमे सिरै सिरमौर वृन्दावनहै २ ॥ गोपालकवि ॥
चाहै लोकपाल भुवपाल औ गोपाल कबि हालहि नि-
हालहोत जाकी सुखदानी मै । श्यामाश्याम धाम सब
पूरन करनकाम लेत नाम जाको पाय पिरिजात घानी
मै ॥ कहांलगि बरनिके सुनावेकोऊ जाके यश ताके
यशगायबे की सकति न बानी मै । वृंदारजधानी ऐसी
वृन्दारजधानी और वाके कोऊसानी बिहुँलोक मैं न जा-
नी मै ३ वृंदानाम श्रीराधाजीको है तिनको जो वनसो

वृंदावन ॥ ब्रह्मवैवर्त्ते ॥ श्लोक ॥ राधारासेश्वरीरास वा-
सिनीरसिकेश्वरी । कृष्णप्राणाधिकाकृष्णप्रियाकृष्ण
स्वरूपिणी १ कृष्णवामांग संभूता परमानन्दरूपिणी ।
कृष्णा वृन्दावनी वृन्दा वृन्दावन विनोदिनी॥ चन्द्रावती
चन्द्रकांता शतचन्द्रनिभानना । नामान्येतानिसाराणि
तेषामभ्यन्तराणिच ३॥ नागर॥स०॥ भूमिहरीद्रुमभूमि
रहे लखिठौर रहे दृग दौर सुहातें । लोगसुलोगे रँगीले
तहांके मिलैं हँसि प्रेम हिये सरसातें॥ नाम नआवे औ
आवे गरोभरि नागरनाम न लेतहो यातें । सांवरि एक
नदीपै बसे है कहो किनकोउ वा गांवकीबातें १॥ तथा॥
क० ॥ वृंदावन आनँद विहार चारु दंपतिको ताकीसुनि
बात रात द्योसनजियोकरों । ललित हिंडोरा सांझी रास
रंगदीपमाल फूलनकी कुंजरचि रचना कियो करों ॥ नि-
तही बसंतवहां होरी चितचोरी चाव नागर याकेलि यों
सकेलि केलियोंकरों । येयी सुखदीयो करो येयी सुखलीं-
योकरो येयी दिनरैन रसरसिक पियोकरों ४॥ यथा॥ जेते
द्रुमकुंजन कलपवृच्छ ये प्रतच्छ बांछित दुहुनफल देत
विधिभलियां । श्यामाश्याम करैं केलि आनँद अलेल
मध्य बेलिनपै नेहकी अछेह फूल फलियां ॥ दंपतिको
सुख सोई सम्पतिहै नैननकी नागरिया देखि देखि जीव-
त है अलियां । नेक दिनरातकी विहात किनजानीजात
वृन्दावन होत नित नई रंगरलियां ५॥ दोहा ॥ अन्य ॥
वृन्दावनसों वन नहीं नन्दग्रामसों ग्राम । नहिं देवी
राधासरिस नहीं देवसरि श्याम ॥ वृन्दावन बैकुंठको
तौलेयोटकिमदास । गरुवो रह्यो सुरहिगयो हरुवोगयो

अकास ३ ॥ सं० ॥ वृन्दावन में बसन हित वृन्दारक ललचांय। बिन वृंदा देवीकृपा कैसें बसें सुभाय १ वृंदावनमे बसनको देवन कस्योप्रयास। नबसेबसे सुस्वर्ग तब ह्वैके अतिहि निरास २॥ इति वृंदावनबर्णन ॥ अथकुंज॥ दयादेव ॥ क० ॥ जलमै तरंगज्यों तरंगनमे जल जैसें घनरहै दामिनी ज्यों दामिनी त्यों घनमे। कहै कबि दयादेवसूरजमै घामरहै घामहीमे सूरज विचारो ज्ञान मन मे ॥ धनरहै धर्महीमे धर्म में रहत धन जनरहैं साहबमै साहब ज्यों जनमै। जौलौं तेजतनरहै तौलौं यह प्रनरहै मनरहै कुंजनमै कुंजरहैं मनमै ६ ॥ रसखान ॥ स० ॥ या लकुटी अरु कामरिया पर राजतिहूंपुरको तजि डारौं। अष्टहुसिद्धि नवोनिधिके सुख नंदकी धेनु चराय बिसारौं॥ हों रसखान सदाइननैनन सों ब्रजके बन बाग निहारौं। कोटिक ये कलधौतके धाम करीलकी कुंजन ऊपर वारौं२ इति ॥ अथ यमुना ॥ सं० ॥ दोहा ॥ राधा माधव आय नित करैं केलि ममकूल। यह बिचारि यमुना प्रथम आय बसी ब्रजमूल ३॥ नागर॥ क०॥ राधाकृष्णहीके अनुरागको प्रबाहबहै राधाकृष्ण अन्तरके तापनकी दमना। राधाकृष्ण कारनलै फूलपरजंकरचे राधाकृष्ण रासके बिलासमै बिरमना॥ राधाकृष्णहित राखै कूलन कमल फूल राधाकृष्ण नागरके औरैं इहसमना। राधाकृष्ण भायक बढ़ायकहै आनँदकी राधाकृष्ण केलिकी सहायकहै यमना ७॥ जगन्नाथभट॥ भाखत बनैन लाख रसना सों जाके गुन ऐसी छबि छाजत तसानके लोककी। नाथकबिजाकी दुति नैसुक बिलोकिचिते चाहै न रहत

सुरराजहूके ओककी ॥ न्हान पान करत ररतगुनगान जोई शंकानाधरत नरकके टोककी । मरकत शोभासाज श्यामको अनंददैनी राजतकलिंदी या निसैनीहरिलोक की ८ ॥ रघुराय॥ब्रह्मके कमण्डलतैं शिवजटा मण्डलतैं गिरिजाबवंडरतैं धारा बहियत है । तीनलोक पावनकों आपदा नसावनको जाके गुनगावनको बानी चहियतहै॥ कहै रघुराय पाय पूजत असुरसुर सुरसरि नामलेत पापदहियत है । यमुनाकी महिमा कही न जात यातैं जाकी गङ्गापगपानी याहि रानी कहियतहै ९ ॥ ठाकुर ॥ हो तुम यातैं बड़ी हरभातन औ अघघातन या कलिकालके । पूजत मंजु मनोरथ दासके कूजत है खगरूप रसालके ॥ ठाकुरपास मो तेरे प्रसाद महेस कृपातैं लखै भलेभालके । कालिंदी रावरे कुंज कछारन पुंजन कौतुक लाड़िलीलालके ३ ॥ न० ॥ देखत दोष दुखाइन दीखत जागत ज्योति जगाजग जापतैं । लेस रहै कलिके न कलेसको कालिंदी कूलबसेके प्रतापतैं ॥ पापकलाप सराप संतापकी तापतहोत समापत आपतैं । तोरजकौं अजईस अराधत साधतसीस सुलेत सुधापतैं४॥सूरत०॥ क० ॥ हुतो महावात परधनलै मुकरिजात याही भांत नीचकर्म जनम गमायो है । अंतकाल यमदूत मारतही ल्यायेताहि पूछ्यो धर्मराज क्योंरे पाप तैं कमायो है ॥ उहांहू मुकर्‌यो यम नाहीं पापकीनो मैं तो एतो कहतही मैं विमान चढ़िधायोहै । सूरत श्रीयमुनाके नामको प्रताप देख्यो मुकरिबेही तैं ताहि मुकति पठायो है १० ग्वाल ॥ भानुकीतनैया तोय तेरो पियो बच्छ एक ताकी

जननीकों दुह्यौ भूखनशिवेकौं जब । वाही समय आय एक दीनकह्यो भूखेहम दियोपै ताहि परधर्म लसिबे कौं जब ॥ ग्वालकवि ताकी परछांहीं परीपातकी पै पारख-दधाये त्यौं विमान कसिबेकौं सब । सुरभी सहितग्वाल बच्छ औपिवैया युत पातकी पधाख्यो हरिलोक बसिबे को तब ११ ॥ सुभरास ॥ अजहूंलौं ललित निकुंज कुंज कुंजनमै मंजुमंजु भौरनिकी गुंजै निकरतहैं । कहै सुभ-रास अजौं फूलनसौं फूलि भूलि वेई तरु लच्छ लच्छ गुच्छन फरत हैं ॥ अजहूंलौ कलित कलिंदी बिच के-लिनके फैल कल अंबुकन अजौं उछरतहैं । श्यामरंग अं-गनकी अंगनकी श्यामताकी अजहूंलौं श्यामश्यामा लहरैं परतहैं १२ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ यमना समनाहै नहीं जनतारनि तिहुँ लोक । जिहिं मंजन अंजन कियें लहै न समनाओक ४ ॥ इति ॥ अथगोकुल ॥ सं० ॥ गोकुलहू गोलोकतें गोबर्द्धनके हेत । इहि ब्रजभुविमें आयके नद को भयो निकेत ५ ॥ रसरीति ॥ स० ॥ प्रीतिकी रीति नहीं कछुराखत जाति न पांति नहीं कुलभारो । प्रेमको नेमनहीं कछु दीसत लाजरु कानि लगे सब भारो ॥ ली-नभयो हरिसों उरअन्तर आठहूं याम रहै मतवारो । सुन्दरकोउ न जानिसकै यहगोकुलगांवकौं पैंडोई न्यारो ५ ज्ञानदियो गुरुदेव कृपाकरि दूरिकियो भ्रम खोलि किं-वारो । और कृपाकहु कौन करे अब चित्त लग्यो परब्रह्म पियारो ॥ पाय बिना न चलै तिहि ठाम सो पंगुभयो मन मत्त हमारो । सुंदर एक अखंडित ज्यों नभव्यापक बाहर भीतरहै यकसारो ६ दृष्टि न मुष्टि न रूप न रेख न रक्त न पीत

न सेत न कारो। चक्कित होय रह्यो अनुभौ बिनु जे घट ज्ञाननही उजियारो॥ सुंदर लब्ध अलब्ध न दस्य अदस्य अपच्छ न पच्छ न तूल न भारो। झूठ न साच अवाच्य न बाच्य न किंचन कांचन दीन उदारो। जान अजान न मान अमानन सान गुमानन जीत न हारो ७॥ सुं०। सं॥ दो०॥ अहै शेश अवतार यह सहै भूमिको भार। तातें बल-देवहिं प्रथम भेजे भूमिमझार॥६॥ गिरिधर॥ कर्षि देवकी गर्भतें धरे रोहिनीगर्भ। संकर्षन नामक भये तिहिते सुभ वह अर्भ ७॥ चौ०॥ नन्दभवनमें रहत रोहिनी। आनक दुंदुभि नारि मोहिनी॥ आकसमात ताहि सुतजायो। पूरन बिधुसम मुखछबि छायो १ देव देवि बलदेव सोह विन। लीनो जनम जगत कृतपावन॥ भादोंमास पंचमी शितकी। स्वाती बुध सब बिधि सुरहितकी २ उच्चपांच ग्रह रबिदिन मध्य। भयोमोद तिहुँलोक अवध्य॥ नं-दराजसानंद बिराजै। गोकुल अखिल बाजने बाजै ३ दोहा॥ कीनो जातक करम सब पातकहरनं प्रबीन। लच्छ गऊ अतिस्वच्छ चित दुजनि कनकयुत दीन ७ हरिगीतीछंद॥ दीनी कनक युत धेनु विप्रनि नंद अति आनंदसे। हय गय सुरथ अनगन दिये धन रतन प्रीति अनंदसे॥ जाचत अजाचक किये जाचक मनो बां-छित दानदै। पूजे पितर सुर विप्र बंदन बसन धन स-नमानदै १ गोकुल बधाईबजी घर घर गीत सुंदरिगा-वहीं। नभदेव महि नरवृंद मिलि मनि घनसुमन बरसा-वहीं। इमिराम जनम ललामअति अभिराम जे चित ला-वहीं। हरिप्रताप नसायताप मिलाय ते जन पावहीं २

अन्य ॥ जनोपदेश ॥ क० ॥ प्रथम प्रधान ज्ञान साधन विधानहै पै कैसेके अजानतू सुपंथ पायधरिहै । जपतप योग यज्ञ दानके विधान सुने कोहै मतिमान धनमान जो ठहरिहै ॥ चेरेकेसे तेरे हैं सुभाव एरे मेरेसुनि विदुरके भावभाजि भवसिंधु तरिहै । भाजीके खवैयाकों नराजी करिजानिहैरे एरे जिय पाजी कहु राजी काहि करिहै १५ ॥ इति श्रीमदादिगौडदुर्ग्गागर्भजश्रीकाशीनाथात्मजविप्रवल्लभविप्रकृतेरसिकोल्लासभागवतेगोवर्धनवृंदावनयमुनाबलदेवप्रादुर्भाववर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

सं० ॥ दोहा ॥ इहिबिधि सुर छिति बोध करि हलधर भूमि पठाय । आवन चाहतभे हरिहु धरि मानुष की काय १ इमि इच्छा हरिकी निरखि राधासक्ति प्रधान । निज आवन छिति हितकियो कीरति कुच्छि अधान २ राधा हरिकी सक्ति ब्रज आई करन सहाय । गो गोपी गोलोक तजि आई तिहिं सँगधाय ३ अथप्रियाजूको जन्म ॥ देव ॥ क० ॥ राधा जनमआज रावल अगाध ओप होतगान मंगल मृदंग तालखंजरी । औरे छविभरे नर नारी डोले मोदभरे जाई सुनि भानुसुता प्रफुलित कंजरी ॥ कीरतिकी कीरताके काढ़ि चंद चित्तहीं ज्यों उपमा अमलकीले डारी गति गंजरी । शोभा ब्रजनागरि प्रगटभई रूपगोभा कैधौं नँदनन्दनके आनँदकी मंजरी १ ॥ नागरबधाइ ॥ कीरतिके कन्या भई यहसुनि ब्रजबधू लैलै भेट धाई सब आनँद बहबही । थार उरहारनके भार बे सँभारपग धरैं डिगुलातलगे लंकन लहलही ॥ नूपुरनि नादनसौं रह्यो पूरि रनवास

नागर सुबास अंगअंग महमही। रूपकी घटाकीकरि
ठान सबगाजि उठी बाजि उठी सिंह द्वारनौबति गह
गही २॥ नबीनकवि॥ कुंजकुंज उमहे सखी जनके पुंज-
पुंज मंजुल समाज साजें साज सुघराईको। फूलि ललि-
तादिक बरषावें फूल स्वच्छ आज जनम प्रतच्छ अच्छ
राधासुखदाईको॥ केसर मलय मिलि महल चहलमा-
ची दुंदुभी धुकारघोर शोर सहनाईको। प्रेम सरसाई
छबिछाई मनभाई मानो जनमबधाई संग जनमबधाई
को ३॥ नागर॥ सवैया॥ कैसी अलौकिक भानुसुता
प्रगटी निज सुकृत पुंजकियाकी। देवन नागन औ नर
की शुभ कन्यानिराधहि वारिकियाकी॥ कीरति अंक-
हि अंचलवोट दिपै दुति नागर ठौरहियाकी। जैसब-
यारिमे ढापि लिये ललके जनु निर्मल लोयदियाकी १॥
लखिके वृषभानुसुताको यशोमति लायलई हिय मोद
महा। मुख चूमकेचापि सुवायदई भइ मोदमई अबके-
सी अहा॥ जियमैं इकआवे अचंभो यहे कह नागरिया
बलि मोसों हहा। अरिऊँचे निहारिके झोली पसारि न
जानिये रानिने माँग्यो कहा २॥ अन्य॥ क०॥ देवलोक
दिगलोक नरलोक नागलोक सुनिके सुयशहिय आनँ-
द भस्यो करैं। बूझि बूझि पितपाति सूझिसूझि मारगको
बन बन शैल बैठि ध्यानहि धस्यो करैं॥ देवी दिगपाल-
नकी दिब्यलोक जालनकी उमारमा आदि सब बातनि
रस्यो करैं। कुंज द्वारआवनकी राधापदपावनकी गोदलै
खिलावनकी लालसा कस्यो करैं ४॥ सं०॥ दोहा॥
बिबिध तपस्या बिधिकरी तब नभ भइ यह बानि। जब

राधा ब्रज प्रगटिहै मिलै दरश तबजानि ४ ॥ बिधि राधाको जनमसुनि आयो दरशन हेत । निरखि सुपद हरषित भयो जनम सफल चितचेत ६ ॥ सं० ॥ क० ॥ राधिकाकी सुखमा बिलोकि के बिरंचि चित्त दूजीसरि रचिबेकी करी बुद्धि बाधामें । रतिदमयंती रंभा शची उरबशी रची पेन छबिपाई ताके कोटिअंश आधामे ॥ तब चितचेति बिप्रबल्लभ बिचार्यो यह दैव बस पर्यो भ्रम उदधि अगाधामे । अहै ना बनाई ऐसी औरन बनावे कोऊ राधिकाकी छबिसी सुछाजे छबिराधामै५॥ जनम महिमा श्रीराधाजूकी ॥ नागर ॥ क० ॥ कीरति दारानी वृषभान आदि गोपी गोप कैसें जगमाहँ धनि धन्य ये कहावते । कौन तपकरतो या ब्रजबास बासिबे को कौन बैकुंठहूको सुख बिसरावते ॥ नागरिया राधा ह्यां प्रगट जोन होतीतो तो श्यामपर कामही के बिपती कहावते । छायजाती जड़ताबिलायजाते कबि सब जरि-जातीरस तब रसिक कहागावते ६ ॥ श्रीराधाजूकी बाल-लीला ॥ श्रीपति ॥ मुकुरके आंगनमें मृदुल संजाफयुत फरस बिछाई है अमोल किमखाबकी । तापर बिछौना फूल पुंजके बिछाये भले गुलफेंगरक होत मदननवा-बकी ॥ श्रीपति चलत तापै कीरतिकुमारीराधे जाकी छबि देखें छबिहारी महताबकी । धाय अकुलाय के रि-सायकहै हायहाय गड़िजनि जाय पाय पाखुरी गुलाब की ७ ॥ इति राधा जन्म ॥ अथ कृष्ण जन्म ॥ सं० ॥ दोहा ॥ असुर गरवगारन गुरू ज्योंही आयोगर्भ । ह-रखि सुमन बरषनलगे सुरवर मुनिगंधर्ब ॥ देवदेवकी

गर्भ महँ आये तजि निजधाम । ब्रह्मादिक सब देव तहँ अस्तुति करतमुदाम ८ ॥ भिखारीदास ॥ चंचरीकछंद ॥ गर्भस्तुतिः ॥ देवाऊचुः ॥ जाकोनहिं आदि अंत जननि जनक देव कंत रूप रंग रेख रहित व्यापक जग जोई । मच्छ कच्छको सरूप बावन नरहरि अनूप परशुराम रामकृष्ण बुद्धकल्कि सोई ॥ मधुरिपु माधवमुरारि करुणामय कैटभारि रामादिक नाम जासु आनत बहुतेरो । कोमलशुभबास मंजु सुखमा सुखशील कंज ताके पदकंज चित्त चंचरीक मेरो १ ॥ बंधुछंद ॥ आरतनै आसि आरत हैं जू । आरतवंत पुकारत हैं जू ॥ दासहुको दुख दूरि बहावो । तौ प्रभु आरतबंधु कहावो १ ॥ नारायणदास ॥ कुंडलिया ॥ देख्यौं मैं सब शोधिकै हरिसों हितू न कोय । सकलसमै सब देशमै कबहुँ न न्यारो होय ॥ कबहुँ न न्यारो होय सदाइक रस अनुरागे । सोवतहू मैं ढिगै रहै देखत निजजागे ॥ ऐसे प्रीतम भूलि अनत हितू प्रान विशेख्यो । तबहुँ न छाँड़े प्रीति शोधि मनमें मैं देख्यो १ ॥ अनाथदास ॥ छप्पै ॥ चतुरानन समबुद्धि विदित जो होहिं कोटिघर । एकएक घर प्रतिन शीश जो होहिं कोटिवर ॥ शीशशीश प्रति बदन कोटि करतार बनावै । बदन बदन प्रति माहँ रसन फिरि कोटिलगावै ॥ रसन रसन प्रति शारदाकोटि बैठि बानी बकहिं । नहिं जन अनाथके नाथकी महिमा तबहुँ न कहि सकहिं १ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ ब्रह्मादिक सुरगण सकल सुफल समुभि निजकाम । गर्भ स्थित भगवानकी स्तुतिकरिगय निजधाम ९ ॥ अथ

श्रीकृष्णाजन्म ॥ जसवंत प्राचीन ॥ क० ॥ भादौं मास सघन अकाशके प्रकाशनको घोक निरघोकनिको झंझा पौन झोकके । पूरन पुरान आन प्रगट्यो निदान कान्ह सोखन कलेश तातमात उरशोकको ॥ बेदनबखान्यों यशवन्त उरआन्यो जग दुख न घटान्यो नर देवनके थोकको ॥ जन सुखदायकभौ भूतलको नायकभौ घायकभौ कंसको सहायकबिलोकको ८ ॥ पदमाकर ॥ मंजुल मुकुटमाथें मंद मुसक्यान साधें पीतपटकाँधे जोग जगतजितैरही । कहै पदमाकर सो चारभुज चारहू में ऐसी चार आयुधकी आभा त्यों तितैरही ॥ बंदवारे मंदिर मैं अद्भुत सुबालकके उरमैं बिशाल बनमालहूँ हितैरही । बुद्धिबसुदेवकी सुदेवकी बिचारेहिये ऐसीदुतिदेखितहि देवकी चितैरही ६ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ खुले बंध सब निगड़ के खुलिगे द्वारकपाट। जनमतही श्रीकृष्णके खुले बेदके बाट १० ॥ चौपाई ॥ उयेतमहिहरिनभउडराई । तिमि भुबिमहँ प्रगटे यदुराई ॥ गंधवती पुहुमी छबिछाई । देवन देव सुमन झरिलाई १ ॥ निज जनके दुख तम समभागे । पुण्यगंधवह वहन सुलागे ॥ उडुपाते उडुगन गगन प्रकाशा । द्योतित जगमग नग दशआशा २ ॥ अद्भुत लखिदुति देव देवकी । भये बिसमित बसुदेव देवकी ॥ लखि शोभा अतिही अनुरागे। ब्रह्मानंद मनहुँ रसपागे ॥ अस्तुति हरिकी तहँ बहुकरी । देव देवकी पायनपरी ॥ तब बोले इमि कुँवरकन्हाई । नन्द महर घर चलहु लवाई ४ ॥ सोरठा ॥ चले हरिहि धरि कंध नन्दगेह बसुदेव जब । रक्षक भये निस्वै जान्यो

नहिं कोउ भेदयह १ ॥ सवैया ॥ लैप्रभुकों बसुदेव चले चितचाय बिचारि सुनन्द घरेलौं। देखि कलिंदिनि नीर बढ्यो जिमि सिंधु बढ्यो लखि इंदुपुरेलौं ॥ छ्वै हरिकेपद को यमुना उमही जबही बसुदेव गरेलौं ॥ हुं करिके हरि बारिदई तबही सुबही तरवाहि तरेलौं ५ ॥ सोरठा ॥ तनयालै बसुदेव यशुदा ढिग निज तनयधरि । नहिं जान्यौ यह भेव प्रभुमाया मोहित सकल २ ॥ गोपति गोपकहाय गोलोकाधिप ब्रजबसत । तिहि मूरतिमे जाय यदुपति तुरतहि मिलिगये ३ ॥ निजगृह गये तिहिंलेय पूरबवततहँ फिरिभयो । दई कंसको देयकहि यह कन्या जिनहतहु ४ ॥ सुनि असउपज्यो कोह शिलाउपरि मारनचह्यो । तिहिकर झटकिसुमोह दिबि देवीधरि अष्टभुज ५ ॥ भगवती को ध्यान औ देवनकी प्रार्थना ॥ दुर्गा ॥ क० ॥ एककर खडग विराजे शूल एककर एकमें धनुष एककरमें कृपानी है। लीन्हे शर एककर उग्रसेल एककर अंकुशकरएक चर्मएकमें प्रमानी है ॥ दुरगा भनत ऐसी उग्रता प्रसिद्धजाकी जाहिर तिरलोक सुखदैनी बरदानीहै । कीजैना बिलंब जगदंब अवलंब तूही रक्षाकरु माता अष्टभुजी शंभुरानीहै १० ॥ देव्युवाच ॥ सं० ॥ सोरठा ॥ अरे कंससुनु दुष्ट तुहि मारन उपज्यो अनत । शिवावचन गुनिपुष्ट कछु प्रबोध हियमें भयो ६ ॥ दोहा ॥ तब देवकि बसुदेवतें निज अपराध क्षमाय । तुम अब मोपर करिकृपा निजगृह बसोसुजाय ११ ॥ यहकहि खल खोजनलग्यो कहाँ भयौ वहबाल। मोहिं देबी जिहिं कहि गई सो कहँ

उपज्यो काल १२ ॥ करिकुमंत्रमंत्रीन तैं बैठि स्वतंत्र निकेत । भेजे असुरनि दशहुदिशि शिशुमारनके हेत १३ ॥ फिरि पठई ब्रजपूतना करि तिहिको परशंस । हतहुजाय उन शिशुनको जो दश दिवसवतंस ४ ॥ पूतनोवाच ॥ गिरिधर ॥ क० ॥ आपको प्रताप धर्म कर्म को न शर्म रहै भर्म रहै परम अधर्म भूतनारहै । रहैं ना सन्यासी योगी वहैं दहैं वानप्रस्थ स्वस्थ पाप धूत कहूँ अवधूतना रहै ॥ गिरिधरदास सुनि वेदवारो नाहीं रहै ब्यास औ पुरानको पढैया सूत ना रहै । द्विज पूतनारहै दिविज पूतनारहै या ब्रज पूतनारहै जो ब्रजपूतना रहै १५ ॥ पूर्वकथाप्रसंग ॥ देव ॥ सूनोकै परमपद ऊनोकै अनंतमद नूनोकै नदीश नद इंदिरा दुरैपरी । महिमा मुनीशनकी संपति दिगीशनकी ईशनकी सिद्धि ब्रज बीथी बिथुरैपरी ॥ भादोंकी अँधेरी अधरात मथुराके पथ पायकै संयोग देव देवकी दुरैपरी । पारावार पूरन अपार पारब्रह्मराशि यशुदाके कोरैं एकबारही कुरैपरी १२ ॥ टीकाराम ॥ अद्वय अपार अपि अक्रिय अगाध अज अदस अलेख अगअमर उचारोहैं । निराकार निराधार निराहार निर्विकार निरागार नेति नेति निगम निहारो हैं ॥ आनन्द अखण्ड सदा चित्तहू अशेश शुद्ध टीकाराम हेरि हिय हरहँसिहारो हैं । सोई श्री अनन्त भगवन्त नँदनन्द होय भक्तनके काजआज गोकुल पधारोहैं १३ ॥ श्रीमद्भागवते ॥ श्रीशुकउवाच ॥ नन्दस्त्वात्मजउत्पन्ने जाताह्लादोमहामनाः ॥ आहूयविप्रान्देवज्ञान्स्नातश्शुचिरलंकृतः १ ॥ वाचयित्वास्वस्त्य

यनं जातकर्मात्मजस्यवै । कारयामास विधिवात्पितृदेवा र्चनंतथा २ ॥ अन्यत्रापि ॥ वसुदेवसुतोह्यन्यो यस्तु गोपेन्द्रनन्दनः । वृन्दावनंपरित्यज्य पदमेकन्नगच्छति ३ ॥ अन्य ॥ द्वारेठाढ़े देवता पितर पिछवारे ठाढ़े रबि आदि ग्रहरहे उच्चशुभ थानेपै । इंद्रको न आदर कुबेर लागे कौरे अन्नपूरना प्रसन्न भौन भीतर ठिकाने पै ॥ पुरुष पुरान पर्यो पलिका पै बालरूप यशुमति जायो यशुमति ठहराने पै । बाँयें व्यास नारद औ दाँयें खरी शारदाहै पायतें स्वयंभू देव शंभू सिरहानेपै १४ ॥ श्री यशोदाजूकी बास मैको वर्णन ॥ स० ॥ दृगजात चितौ-नके साथ टरे निबलाई दृगंचल ना ठहरैं । छबिबांकीसी काजर कोरनकी अँखियां झपि झूमि झुकेझहरैं ॥ अ-धरानमैं पानकी लालीलसै मनो लालके पानिपकी ल-हरैं । अतिनीको लगै रंगफीको जचा मुखचांदनी ज्यों पिछले पहरैं २ ॥ देव ॥ जागिपरी यशुमति दीनो सर बसदान लीनो जानि जनम गोबिंद गुन अगरे । सेज को प्रकास आसपास भरिपूरिरह्यो बाहरहू भितर उजा-र भौन सगरे ॥ देव अनकूल हरषित बरषितफूल गोकुलके डगर डगर फूल बगरे । बजत बधाई सुरपुर मैनपरी बीच मीचु निशाचरनकी नाची चढ़ि मगरे १५ ॥ पद्माकर ॥ क०॥ गोपकुल कमलपाल दिनपाल भयो शालभयो बैरी बक आदिक बिधंसको । कहै पद्माकर शिंगार रस बेलिनको आछो आलबाल भयो जालभयो अंशको ॥ गौवन गोपाल भयो यशुमति बालभयो भू-षनको ख्यालभयो ढालभयो बंशको । पुण्य प्रतिपालभयो

आनंद बहालभयो नन्दजूको लालभयो कालभयो कंसको १६ ॥ भिखारीदास ॥ हुलासछन्द ॥ कान्ह जनम दिन सुरनर फूले । नभघर निशि बासर समतूले ॥ महितैंम-हर अबीर उड़ावैं । दिवितें देव सुमन बरसावें ॥ सुम-ननि बरसावें हर्ष बढावैं तजि तजि आवैं जाननिकों । सजितिय नरभेषनि सहित अलेखनि करहिं अशेषनि गाननिको ॥ तिन लोगनिकी गति दाननकी अति निर-खि शचीपति भूलिरहे । ब्रज शोभ प्रकाशहिं नन्द बि-लासहिं दासहुलासहिं कौनकहे १० ॥ देव ॥ छूटे पट पाटकहू बूटे लैलै हाटकहू राखी न कपाटकहू हाटकहू बन्दकै । औघट औ घाटकहूं पैयत न बाटकहूं भाटकहूं भटनट नाटककहूं छन्दकै ॥ कोलाहल गोकुल सँभारि पैन गोकुल सुगोकुल उजारो ऊग्यौ गोकुलके चन्दकै। यशुदा उदार बसुधार बरषत देव धाई परे बसुधा ब-धाई परै नन्दकै १७ ॥ नागर ॥ क० ॥ नन्द गोपराज सुनि औरे ब्रज ओप आज तेरे पुत्रभयो भैया पुण्यफल जापकौ । ब्रह्मऋषि द्वारबहु देवता बिमाननपै छयो सुर भेदगान बेदके अलापकौ ॥ घरघर संपदा अपारबाढ़ी देखियत हमपै न कियो जात वर्णन प्रतापकौ । नागर. यों बेर बेर ग्वालकह्यो टेर टेर तेरौ घरमानौ परमेसुर के बापकौ १८ ॥ अन्य ॥ क० ॥ फूल गये गोपगृह गो-पकन भूलिगये हूलसी मचाई माते प्रेम सरसाई मे । कीचमची दधिकी अधिकगैल गैलनमैं कीकै दैदै दौरैं पगे नन्दकी हहाई मे ॥ छूटि परी छोटी सी कछौटी कटि मोटी भई फैलपरी तोंदबडी लौंदकी अवाई मे ।

राजी दिलमोदन बिनोदन बिहसि नन्द नाचै आज आंगन कन्हाईकी बधाईमे ॥ १९ ॥ घनश्याम ॥ स० ॥ पूत सपूतजन्यो यशुधा इतना सुनिके बसुधा सबदौरी। आनँद देवन को सुभयो सुनि धावत गावत मंगल गौरी ॥ नन्द कछू इतनो जुदयो घनश्याम कुबेरहु की मतिबौरी। देखत मोहिं लुटायदयो न बची बछिया छछिया न पिछौरी २० ॥ अन्य ॥ सुनि सुनि धाई भली ब्रजकी लुगाई तहाँ गावत बधाई जहाँ प्रकटे कन्हाई है। गोपनके यूथ गाँव गाँवतें सुआये धाय मानो नद नदी सिन्धु उमगि समाई है ॥ घर घर तोरण पताका कुम्भ द्वार द्वार बाजत सुढोल डफ मुरज सनाई है। दूध दही हरद कीच गोकुल गलीनबीच जर्दभये डोलैं जहाँ लोग औ लुगाई है २० ॥ कृष्णलाल ॥ क० ॥ गली गली बरफसी छायरही मही मही बही बही लही छबि क्षीरके उदधिके । कृष्णलाल आठिनसों भरी है अटारी सब गोरसके खण्डसों भरी दिवार अधिकी ॥ ऐसी दधिकाँदो की छीटपरी छबलकसों भीजी लाजवती जो हुती महल मधिकी । कुचपै कपोलनपै चोलनपै चिबुकपै अलक पलकपै छलक दूध दधिकी २१ अथ छठीको उत्सव। नवीन कवि ॥ नाग नर किन्नर असुर सुर ईश ईश ब्रह्मा औ मुनीशन की मेधालगी हालने। शारद विचारे निति नारद उचारे शेश रचना नवीनधारे पारेरहे ख्यालने ॥ पौनको न गम जाको गावत निगम अति अगम सुगमपायो सोतो नन्द ग्वालने। मायाकी लहर तीनोंलोकन भुलायो जिन जगत

झुलायो सोई झूले आप पालने २२ ॥ स० । दो० ॥
छठी महोत्सव श्यामको लखन हेत ब्रजनारि । निज
निज गृहतें जात सब भूषण बसन सँवारि १५ ॥ क० ॥
अन्य ॥ कञ्चनके थारनि में मंगलके द्रव्यधारि लाखन
कतारनके आइ मनभाइ हैं । यशुदापै जाय जाय भेट-
धरि लागी पाँय देतहैं अशीश सब मरस सोहाइ हैं ॥
कान्हरको देखि मुख मुदन समात केती केती मुखचूमि
केती चूमन उमाइहैं ॥ गावत बधाई औ गवावत ब-
धाई फिरे नाचती तहाँई लिये गोदहिं कन्हाइहैं २३ ॥
देव । क० ॥ जेंवत अहीर नन्द मन्दिर गँहीर भीर
भोजन परोसिबे को बीर सबरे फिरै । कढ़ी और झोर
झोरी परसत बराजोरी भात झकझोरी झोर झाल झ-
बरे फिरै ॥ माखन मलाई खांड़ खीर सिखरन बहै दही
दूध मही मिल रावरबरे फिरै। पौढ़े जगनायक अँगूठन
को चूँसरहे चूसत दमूठनको देव दबरे फिरै २४ ॥ स० ।
दो० ॥ पदसरोज रज माधुरी ज्यहिं सुरचखैं भिलाखि ।
जानि मधुरहरि बालबनि रहे आपत्यहिं चाखि॥ १६ ॥ क० ॥
क्षीरनिधि फेनसी सुपलिकापै परब्रह्म खेलत लख्यो गृह
नन्दके सनन्दहै । वल्लभ सुबाल किलकारत कलोल
भरयो ताकि ताकि मातु मुख हँसत दुचन्दहै ॥ कर अ-
रबिन्दतें सुगहिके पदारबिन्द मुख अरबिन्द मध्य मे-
ळत मुकुन्द है । मन्द मुसकाय माय निरखि अनन्द
होत सो सुख सुछन्दकबि कहै किहि छन्दहै २५ ॥ पद
वर्णन ॥ हाखासी ललाई तरवान में सहज जाके चाह
चेकनाई है समान घृतनिधिके । क्षीरधिसे धौलेनख

नीरधि विमलद्युति कोमलप्रपदकी गुराई समदधिके ॥ इक्षु रसनिधितें सरस चरणामृत औ लवण समुद्रतें लुनाई निरवधिके। रहै दिन रात मेरे पद जलजात हिय वैभव दिखात जामें सातहू उदधिके २६ ॥ नख वर्णन ॥ ओजकरि आपनो पयोज पृथिवीपै रोज रोजहू सरोजनके ओज हरिबो करे। वारिनिधि बसिके कपाली शीशलसिके प्रदक्षिणा सुमेरु आसपास भरिबो करे ॥ छोटो छोटोह्वैके फेरि षोडश कलालौं बढ़ै नीके बुन्द अमल अमीके झरिबो करे। बृन्दाबन चन्द नख चन्द समताके हेत चन्द यह मन्दकोटि छन्द करिबो करे २७ ॥ सं० । दो० ॥ बढ़ि हरिमुख सरि नहिं भयो घटि नख ताहुनपाय। ह्वै तब लज्जित उदधि मधि गयो बूड़ि शशिजाय १७ ॥ सर्वांग ॥ गिरिधर । स० ॥ मुखदेखि सरोज मुदे बिकसैं अबलौं शशि ब्योम बढ़ै घटकैं । भटकैं अलिब्याल शिरे पटकैं सटकैं तम ऐसी लटै लटकैं ॥ लखि दन्तन कुन्दसी कुन्दकली गिरिधारन कान नहीं चटकैं ॥ लखि नाशिका तूनहू पीठबसैं सुकचोरलौं डार नहीं छटकैं ॥ जगदीश पुराधीश बाबू नर्मदेश्वर प्रसादसिंह उपनाम ईश १८ ॥ क० ॥ रूपतैं बिहीन बहुरूपिया लौं रूपधरैं आप बिषै मुक्तपै लखात है बिषै समाज। छपि छपि बिचरै पिछान्यो ना परत ऐसो छलिया छबीलो छैल छक्यौ छलही के छाज ॥ बासी गोलोकको हुलासी हिय राधाजूको लोक सुखरासी ईश कृष्णनाम जाको भ्राजु । भेद भ्रमभंजन है दास मन रंजन है सोई यशुदाके गोद खेलत बिहारी आज १९ ॥ स०।

दो० ॥ कबहूं भूलैं पालने कबहूं बिहरैं गोद । बनि बालक ब्रजपालके करत जननि उर मोद २०। अन्य॥ जनोपदेश ॥ क० ॥ तोहि जठरागिनतैं जरत बचायो जिन ताकी पहचान तजि अन्त पहचान की । जलतैं सुपिण्ड रचि जिनने जनमदीनो पोषि दशमाह शक्ति दीनी पयपानकी ॥ ऐसे प्रभु करुणाके निधान ताहि तजिके तू चाकरी करत जाय जगमेरे आनकी । येरे मतिमन्द नीच लाजके उदधि बीच बूड़त न गरे बाँधि गागरि गिलानकी २० ॥ इतिश्रीमदादिगौड़दुर्गागर्भजश्रीकाशीनाथात्मजाविप्रवल्लभविप्रकृते रसिकोल्लासभागवतेराधाकृष्णप्रादुर्भावजन्मोत्सववर्णनोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

स० ॥ सो० ॥ इमि उतसव करि नन्द गये देन कर कंसको । तहँ बसुदेव सनन्द नन्दमिले दुहुँ परसपर १ निज निज कुशल बताय नन्दमहर बसुदेव फिरि ॥ कह्यो नन्दगृहजाय रक्षहु बालक युगल तुम २ ॥ दो० ॥ ज्योंहि नन्द मथुरागये त्यों आई नँदग्राम । रूप अपूरब करि महा बकी पूतनानाम १ छठी महोत्सव लखनहित गई जो ब्रजकी नारि । वैसोही निज रूपरचि भूषण बसन सँवारि २ तिन युवतिन सँग महलमधि हिलि मिलिगई समाय । यशुमति ढिगमहँ बैठि वह देखत अति चितचाय ३ ॥ चौ० ॥ निजपय प्याय स्वाय हरि गोदहिं । तिहिं मुख निरखि मायलहि मोदहिं ॥ उनमीलित मीलित दृग कबहूं । पीवतपय जनु सोवत अबहूं १ लियो मोहि मन सबहि पूतना । स्तन विषधरि छवि

धारि नूतना ॥ तिहिं अवसर यशुदा कोउ कामहिं । गई सौंपि तहँ तिहिं घनश्यामहिं २ यह अवसर निजजानि आपनो । करन चह्यो तब मनहिं जापनो ॥ इक प्रभुहीं तिहिं कहँ तहँ चीन्हो । तिहिं उठाय हरि उर धरि लीन्हो ३ स्तन मुखमें हरिके तिहिं दियो । दूधसहित हरिप्राणहु पियो । गिरीचिचाय कोस द्वै षटकी ॥ लई राह अस प्रभुपद तटकी ४ सुनतहिं शब्द नारि नर धाये । हरि तिहिं उदर पलोटतपाये ॥ कह्यो सबनि करवर यहटरी । गोपुच्छनिरक्षा बहुकरी ५ ॥ सोरठा ॥ तिहिं अवसरही नन्द आय गये उपनन्द युत । धरि हरि हिय हरचन्द दान दियो बहु द्विजनकों १ ॥ मनसुखकवि ॥ क० ॥ सतोगुन मूरतिके कोगुन बखानिसके चरण प्रताप परसतहीं शिलातरी । गणिका पधारी भृगुलात उरधारी नहीं भीलनी बिचारी निरवारी विपदाखरी ॥ अधम उधारे प्रभु अगुन विचारे मन सुख पचिहारे मुनिकेती करताकरी । दूधपीके मायको सो काहू पूतनाकरी सुविषपीके नन्दजूके पूत पूतना करी १ ॥ अथ शकटासुरवध ॥ सं ॥ सोरठा ॥ मास दिवसके श्याम भये भयो मंगल बहुरि । निकट शकट जिहिं धाम तहां ल्याय स्वायो बहुरि २ तहँ पयप्याय सुताय माय गई निज काजवश । तैसहि शकट समाय शकटासुर छलकरि छिप्यो ३ लखि प्रभु लात चलाय माऱ्यो शकटहिं क्रोधकरि । शकट गिऱ्यो अरराय शकटासुरहू शकटसह ४ सुनि स्वन अति घबराय माय धाय हरि उरलयो । फिरि पयप्याय सुवाय निज गोद

हि जोवतसुमुख ५ ॥ दोहा ॥ हरिढिगके बालनि कह्यो मारी इनहीं लात । ताहीते महि शकटको देखत भयो निपात १ नरनारिन सुनि यह कह्यो झूठ कहत ये बाल । ब्रजऐसो कोउ प्रभु रहत करत सोई प्रतिपाल २ ॥ अथ तृणावर्त्तवधलीला ॥ दोहा ॥ हरिभर गोद न सहिसकी अनु नभ लखीसुधूरि । धरि धरणी यशुदा गई ढापन भाजन भूरि ॥ क० ॥ तृननके आवर्त्त में सुआवृत तृणावर्त्त खग मृग वा नरनि तामधि उड़ावतो । कहै बिप्र बल्लभ औ तोरत तरुन तरु आवत धुधात धूरि धामनिमें छावतो ॥ धुंधरिधुंवासो करि नभ चहुँओर जोर शोरन मचाय ब्रज भूथल भ्रमावतो । घोटुन डुलत बाललीलहिं ढुलत धाय कन्ध पै सुवाके चढ़ि बैठ्यो हरि भावतो ॥ २ ॥ दोहा ॥ तृणावर्त्त आयो तहां धारिबवंडर रूप । हरि काट्यो ताको गरो भयोजाय सुरभूप ४ ॥ अथ अन्नप्राशन ॥ सोरठा ॥ भये श्याम सुखदान कछु दिन घट षटमासके । करिनँद विविध विधान अनप्राशन हरिको कियो ५ ॥ दो० ॥ तन झिंगुली शिर चौतनी भूषण अँग पहिराय ॥ बार बार हरिमुख निरखि यशुमति लेति बलाय ६ इमि शोभा तिहिं समयकी निरखि कहतसुरवृन्द । धन्य २ ब्रजजन सदा जे निरखत नँदनन्द ७ सुमन ससुमन नि बरषिके गये सुमना निजधाम । बायनलै ब्रजनागरीं निरखन आईं श्याम ८ ॥ अथ नामकरण ॥ सोरठा ॥ आये नँदगृह गर्ग मुनिवर वरज्योतिसुर । शोधि सकल षडवर्ग नाम करण हरिके किये ९ संकर्षण ब-

लदेव नाम रोहिणी तनयके। वासुदेव ब्रजदेव कृष्ण नाम हरिको कियो ७ ॥ दोहा ॥ इनमें श्रीभगवान के लक्षण सकल लखात ॥ अरि नासन बासन जगत दासनके सुखदात ९ इमिकहि पूजित नन्दतें गर्गगये निजगेह । तादिनतैं बूझतभये नरतन धरि हरिएह १० श्रीयशुदाजूकी अभिलाषा ॥ आलम ॥ क० ॥ ४ देहौं दधि मधुर धरणिधर धौरिखैहैं धामतैं निकरिधाय धौरी धेनु खोलिहै। धूरि लोटि ऐहैं लपटैहैं लटकतरैहैं माईरी कहत मीठी बतियां अमोलिहै ॥ आलम कहत कैमैं ललन की चलन सीखौं बलनकी बांहधरि गलि-नमें डोलिहै ॥ सोई दिन दिनमें सुदिन गिनोंगी एरी जिहि दिन कन्हैया मोहिं मैया कहि बोलिहै ३ ॥ राम श्यामकी बाललीला ॥ सं० ॥ दोहा ॥ दोउ खेलत इक संगहै रहत दोऊ इकसंग । यशुमति रोहिणि दुहुनकों क्रीडन लखत उमंग ११ ॥ गिरिधर ॥ कबहूँ घुटरन चलतहैं बैठत कबहुँ कुमार । अति पुलकित चितरो-हिणी यशुमति नन्द उदार १२ ॥ स० ॥ फिरकी संग में फिरकीसे फिरैं कभूं घूमें लटूसे बिलोकिलटू । चकई लखिके चकई से फिरैं भँवरासुगभै भँवरासे भटू ॥ मन मूसन चूसन चूसनहै लखि मौन भये पृथिवीके पटू । गिरिधारन या सुखधारन बिन्न हजारन योग जँजाल जटू १ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ मणि आंगन बिहरतकबूँ कबूँ धाय चढ़ि गोद । दोउ बालक ब्रजपालये करत जननि उरमोद १३ रवि शशिसे बलश्याम दोउ उडुगण बा-लकवृन्द । बिहरैं जनु आंगन नभहिं लखि नँद होत

अनन्द १४ ॥ ब्रजनारिनको खेलायबो यथा ॥ आलम कवि ॥ क०४॥ मनके सुहेले सुख करत सोहागनको अँगकी अकोर दै दै हिय हरलाये हैं। काहू मुख चाटै चूमै काहू मुखकेसमोरें काहू करिपातकी पतूकी दूध प्याये हैं ॥ आलम अलोक लोक लोकनके ईश अंश सूनो ब्रहमण्ड छाँड़ि गोकुलको आये हैं। ब्रह्मादिक भीरनके ध्यान में न आवैताहि ब्रजकी अहीरिने खेलौना करिपाये हैं ४ सं० ॥ दोहा ॥ जाकी फिरकी में फिर रच्यो वेद जिनचारि। ताको फिरकी फेरिबो सिखवत हैं ब्रजनारि १५ ॥ अथ बरस गाँठ ॥ गिरिधर ॥ भादोकृष्णा अष्टमी कृष्ण जनम दिन सोय। तादिन गोकुल घर घरन महामहोत्सव होय १६ ॥ क० ॥ करै गान रंभासी रंगीली वर बधूधाम बारबधू नाचें बारबार सरसात हैं। मंगलको घोख पूर्यो घोखकी गली में तैसो दूध औदही को पंक नीको अधिकातहैं ॥ गिरिधर दास शोभा गोकुल की कहा कहौं वाणी रहिजात नैन निरखें सिरातहैं ॥ आजु नँद नँदको जनम दिनहैरीसो अनन्द नन्द मन्दिर अमन्द दरशातहैं ५ द्वारपैं दमामा बाजें तुरही पुकार तैसी गली गलीभली भीर रली है गुवालकी। केसर के छापे थापे ठौर ठौर देखियत तोरन त्यों पल्लव पुहुप बरमालकी ॥ गिरिधरदास जोहि गिरिधरजू को मुख बाला बलिजायँ बोलैं बतियां सुचाल की। आवै मोद बारिदलौं बरस बरस बर बरस बरस यों बरसगाँठि लालकी ६ ॥ ब्र० ॥ दोहा ॥ करचराप गपैंजननी तन रंजित रजपीत ॥ उरहरिनखकटिकिंकि-

नी मुखमंडित नवनीत १७ अरुण अधर मधि दशन द्युति प्रकट हँसनि तैं होति । मानहु सुन्दरता सदन रूप रतनकी जोति १८ नैन आँजि भृकुटी निकट दियो मातु मसिबिंद । करिसिंगार हरि छबि निरखि चूम्यो मुखअरविन्द १९ ॥ स० ॥ जामुखको सनकादिक लोचहिं ध्यानधरैं युगकोटिन घूमै । व्याकुलब्रह्महि खोजत हैं जिहिं स्वर्ग पताल फिरैं भरिभूमै ॥ ताहि लिये शिव साधि समाधि बितै युगकोटि मशानन भूमै । सो मुख नन्दकी नारि यशोमति चापि कपोल दुहूँ मुख चूमै २ सोरठा ॥ मधुर तोतरे बैन श्रवन सुखद मुनि मन हरन । सुनत होत चितचैन समुझत कछू बनै नहीं ८ तासमयको क्रीड़न हँसन बोलन ॥ यथा ॥ लाल ॥ पलँगकी पाटी गहैं हुलसत हालि हालि झुझनात नूपुर बजत जब पाँयको । लालकहै ललित खेलौना लेत हाथ जब हरषत बरषत सुमन सुरनायको ॥ नन्दजूके आंगन अनन्दमई ब्रह्म देख्यो खेलत सरूप धरैं बालक सुभायको । हूँ करत हाँ करत गूँ करत गाँ करत ता करत ताकत किलकि मुख मायको ७ ॥ अन्य ॥ मणि अँगनाई में निरखि प्रतिबिम्ब निज बारबार ताहि चाहि गहिबेको धावैरी । बाजतहि पैंजनी चकित होत धुनि सुनि पुनि पुनि मोद गुनि पायँन हिलावैरी ॥ सांझ समय दीपक बिलोकि फल जानि कोऊ खयबेको चाहि दोऊ करको उचावैरी । भुय्याँ बैयाँ डोलत कन्हैया की बलैयाँ लेऊँ मैया मैया कहिकै जुन्हैयाको लखावैरी ८ माटी खाने ॥ सं० ॥ दो० ॥ माटी खातहि निरखि कै

सांटी मारी माय। सो लखिके ब्रजनागरी देत उलहनो आय १९॥ घोटुन चलत दधि माखन मलत पूर पालने में भूलै नेकु डाटेते डरतहै। पाटी टेकि टेकि दिन द्वैकही तें ठाढ़ो होत बातें जे कहत कछू बूझि न परतहै॥ साँवरो सलोनो श्याम कहाँते सुजान भयो जोही कछु दृष्टि परे ताहीको अरतहै। बौरी नँदरानी तेहि माटी खात देखि तेरो सांटी मारिबेको हाथ कैसे पसरतहै ९ सं०॥ दो०॥ कोमलता याकी निरखि मैंहूँ अति सकुचात। पै नहिं मानतरी कह्यो निशि दिन माटीखात २० क्यों माटी खाई अरे तोहिं सांटी नहिं यादि। मेवा मिसिरी छाँड़िके माटिहि लई सवादि २१ नहिं माटी खाई अरी दिखरायो मुखबाय। मुख देखतही मायके गये होश चकवाय २२ शिवरूप॥ धूसरित धूरिमानो लपटी बिभूति भूरि मोतीमाल मानहुँ लगाये गंगगल सों। बिमल बघनहीं बिराजे उरदास मानो बाल बिधु राख्यो जोरिद्वैक भालथलसों॥ नीलमणि गूँदे मणिहारे आभरन कारे डौंरू करधारे जोरि द्वैक उतपलसों। ताके कमलाके गति गेह यशुदाके फिरैं त्र्याके गिरिजाके ईश मानो हलाहलसों १० दोहनके समय मनमोहन ललाकी वह ललित लुनाई कवि बरनि कहाकहै। कबहूँ किलकि धाय नन्दके निकट आय कटि लचकाय मुख तोतरे बबाकहै॥ कौतुक निरखिके सिहानी ब्रजरानी जाके लेत मुख चूमि लै बलैया ज्यों ज्यों माकहै। गैयाकी सुओट ह्वैके ललैया बिलुकैया दै दै यशुमति मैया सों कन्हैया जब ता कहै ११ धरत धरणि पग करत कलोल

मग ऐंचत निचोल ओट लुकत लुगाई की । लरत फि-
रत फेरि फिरत फितरकरि गिरत परत पै करत मन
भाईकी ॥ रिरकनि खिझनि बुझनि सुरझनि भौन अ-
रुझनि अरनि ददाकी और दाईकी । भूलति न माई
मोहिं भाई की दोहाई वह हेरनि हँसनि सुसुकनि शि-
शुताई की १२ ॥ अम्बादत्त ॥ खेल खेलहीमें बिरुझा-
ने नन्दलाल बाल कहै यशुदाते हार बूँदन गुहायदे ।
देख तो कहाधौं यह चमकी अकाश माहिं खेलिहौं मैं
याते धाय मोहिं गहि ल्यायदे ॥ कवि अम्बादत्तकी न
मानिहौं मैं एको बात कहा गरज्योहै नेक फेर गरजाय
दे । सोईहौं बिछाय अति कोमल दिखाय यह एरीमाय
मेरे कर बादर गहायदे १३ ॥ सं० ॥ खेलतही आंगन
में मचलि मुकुन्द कहै चन्दातकि माय याको भूषण
बनायदे । तकथी अकाशही की सुघर गढ़ाय तामें च-
न्दहि अमन्दहिको तामधि जड़ायदे ॥ वाके अंशुजालन
के तारनमें आसपास तारन फँदाय माय तुरत गुँधाय
दे । बार बार कहत पुकारि करजोरि एरी बल्लभ सुहार
गर मेरे पहिरायदे १४ ॥ पदमाकर ॥ पदमाकर म-
चल मचावै रार मोसोंकहै पायँपरों मैया मोहिं चन्द्रमा
मँगाय दे । बीर बलदाऊ साथ कानन पठैदे मोहिं गो-
धन उठाय मेरे नखपै धरायदे ॥ काली पै चढ़ादे केश
मामाके गहादे हाथ बाबारे मनायहारी ब्राह्मनको गाय
दे । छाछको उठाय जल छींटैं छिरकाय नेकु नागको
छुवाय याकी छिरद मिटायदे १५ ॥ नन्दनन्दनको बाळ
भाषण ॥ यथा ॥ दीनदयालगिरि ॥ कन्दते दुचन्द नंद

नन्दनकी मीठी बात करत अनन्द गात मुददात जनकी। रम्भाऊ अचम्भा मानि फुरै नहिं दूजी बार मोहै रति रम्भा सुनि जाकी नेकु भनकी॥ मिसिरी कठोरकी सरीस री कहाँ मैं कहा बिसरी. सुनत सुधि मेरी बीर तनकी। लाखन उपाय करि दाखन लहीन सरि भाखन की माधुरी धुरीन श्याम घनकी १६ पाई नहिं रंचकऊ मधु मधुराई जासु बोलत कन्हाई मृदुमाई जब बातहैं। भावको प्रकास हासको बिलास जामें कहु कोकिल के कल समकैसे कहिजातहैं॥ बीनकी प्रबीनताको लीन करि राखैं गुनी शारद बिशारद औ नारद लजातहैं। भूषन लगत ब्रज भूषन बचन सुनि ऊषन पियूषन में दूपन दिखातहैं १७॥ अथ पुनः माटीखान लीला॥ अन्य॥ काहू एक बाल फेर यशुदासों आय कह्यो माटी खात लख्यो अबै तेरोई नँदनमैं। यों सुनि रिसाय सुत बोलि मुख खोलि देख्यो दोनों देव तीनोंगुण शोभासे सदनमैं॥ चारों युग पांचों भूत छवों ऋतु सातो मुनि आठों वसु नवों ग्रह दशहू दिशनमैं। ग्यारहों महेश शेश बारहों दिनेश देखे तेरहों रतन लोक चौदहों बदनमैं १८॥ छप्पै॥ बसुधा व्योम पाताल लोक सहलोकपालगन। रवि शशि नखत समस्त विष्णु चतुरास्य त्रिलोचन॥ सकल तत्त्व अरु वृत्ति असुर सुर नर मुनि किन्नर। पशु पक्षी नग वृक्ष सरित सर सिंधु अचरचर॥ ब्रजमण्डल गोकुल धाम निजनिज समेत सुखमें सबै। लखि परम चकित चित गोपिका का यामहँ आफल अबै १९॥ दो०॥ बालचरित कहिजात नहिं कहत उ-

रहि रहिजात। सुमिरि सबहि बहिजात दुख करम भ-
रम दहिजात २३ ॥ श्रीलाड़िली औ श्रीलाड़िले को
एकत्र खेलिबो यथा ॥ बोधा ॥ क० ॥ एकै लिये चौरी
कर छत्री लिये एकै हाथ लिये छाहँगीर एकै दावन
सकेलती। एकै लिये पानदान पीकदान सीसा सीसी एकै
ले गुलाबनकी सीसी शीश मेलती ॥ बोधा कवि कोऊ
बीन बांसुरी सितार लिये लाड़िली लड़ावैं फूल गेंदनकी
झेलती। छोटे ब्रजराज छोटी रावटी रँगीन तामें छोटी
छोटी छोहरी अहीरनकी खेलती १९ ॥ महाकवि ॥
लाड़िलीजीको कथन धायते ॥ राधिका माधवै एकहि
सेज पै धाय लैसोई सुभाव सलोने । प्यारे महाकवि
कान्हके मध्यमें राधेकहै यह बात न होने॥ सांवरेसों मिलि
कैहों न सांवरी बावरी बात सिखाइ है कौने। सोने को
रंग कसौटी लगै पै कसौटी को रंग लगै नहिं सोने
२० ॥ हरिके संग खेलिबेके लिये प्यारीजूको भोरही
जगायबो यथा ॥ देव ॥ क० ॥ जननी के अंक परयङ्कतें
निकसि धाई देव बाम अंकमुखी चषन चकोरही। अ-
टकी अलीनहू न भटकी गलीनहू न चटकी कलीन
चञ्चरीक चित चोरही ॥ नन्दजूकी नींद नींद खोई नँद
नन्दनकी बरज्यो न माने करजोरैं बरजोरही। धोवनदे
बदन बिलोवन दे दधि राधे सोवनदे श्यामहिं जगावै
जिन भोरही २५॥ अथ माखनचोरीलीला॥ सं० ॥ दो०॥
पगन मगन लागे चलन गोप बालकन संग। जहँ
तहँ ब्रजबीथिन करत बालकेलिके ढंग २४ ब्रजबासी
दास ॥ माखन खैये चोरिके सब ब्रज घर घर जाय।

कीजे बालविनोद यों मेरे मन यह आय २५ घर घर फैली बात यह सखानन्द लिये साथ। चोरि सुमाखन खातहैं नन्दसुवन ब्रजनाथ २६ ॥ सो० ॥ सबके मन अभिलाख चोरी पकरन पाइये। धरिये माखन राखि यहे ध्यान सबके हिये ६ ॥ पद्माकर॥क०॥ एरी बीर ग्वालिनि गोपाल कहूं देख्यो जात खाय दधि माखन चुरायके हिरानोरी। कहैं पद्माकर यों सुनि यशुदा के बैन बोली बोल ग्वालिनि पियूषरस सानोरी ॥ तेरी सौंह नंदरानी देतिहौं बताय तोहिं ऐसो ठग दूसरो न ब्रजमें बखानोरी। गोपिन को चीर चोर मेरो चित चोर तेरे माखन को चोर मेरी आँखिन समानोरी २१॥ सवैया ॥ ए ब्रजचंद गुबिंद गोपाल सुनो क्यों न केते कलाम किये मैं। माखन चोरिके खोरि न ह्वै चले भाजि कछू भय मानि जिये मैं ॥ त्यों पद्माकर आनँदके नंद हो नँदनंदन जानि लिये मैं। दूरिहिं दौरि दुर्यो जो चहो तौ दुरो किन मेरे अंधेरे हिये मैं ४ ॥ अन्य ॥ नहिं माखनदेति कहा यशुदा नित आप सखान खवावतहौ। तुम काहे लला यह चोरी करो मुहँलाय दही छलछावत हौ। यह बानि तजो हरि पायँ परों मोहिं झूठहि का डरपावत हौ। बदनामी की गैल बचाये चलो कुल काहें कलंक लगावतहौ ५ यशुदा तुमतें जु फिराद करों तकसीर सुनो अपने नटकी। जबहीं दधि बेंचन जातहुती बहियां झकझोरि हमैं झटकी। अति मैं मनमें सकुचाय रही सखियां मुसक्याय सबै सटकी। दधि माखन खाय लुटाय दयो मटकी चटचौपट मैं पटकी ६ ॥ देव ॥ क० ॥

खोल फिरे बछरा ढँढोल फिरे घर मेरो डोल फिरे गोर-सहि लोल फिरे पानीको। फिरत उमाहे कान्ह काहूकी न माने कानि माखन मलाई नेक बच्योना निशानीको ॥ पहिले खिझाईहुती फिरहू सताई देव अब ना सहोंगीहों कहोंगी नंदरानी को। उदधि मथनहारे दधिको मथन देरे मनके मथनहारे छांड़िदे मथानीको २२॥गिरिधारी॥ सुतसों रिसानी नँदरानी उतपात सुनि गोरस चुराय खात डगर बगरतें। कहै गिरिधारी यह भैया मोहिं भावै नाहिं रोजरोज सहनो उराहनो नगरतें ॥ फारिदीनी फरिया लहरि कितीकनिकी फोरिदीनी गगरिया गगरिया झगरतें। बसो ब्रजमण्डल में तुमहीं गुपाल आज गूजरी तो जातीं सब ऊजरी नगर तैं २३ ॥ अन्य ॥ पूछत बुलाय मात काहे दधिखायो याको मोसों कह साँची बात धरिकर करतें। विविध मिठाई भाई भाजन भराई घर सदको जमायो क्योंन खात मांगि घरतें ॥ आंसु भरिलीन्हो औ सुसुकि रोय दीन्हो कछु नरलीला भीनो ढीठो डोलत न डरतें। दादाकी दोहाई दैया मैंन याको खायो दधि खेलत पकरि ल्याई बंशीबट तटतें २३ ॥ दूजीगोपी ॥ वृन्दकवि ॥ सुनहु यशोदा रानी मोरे कान्हकी कहानी फोरिके मथानी दधि सब अँचवायो है। बरज्यो न माने और काहूकी न शंक आने तैंहीं एक ब्रजमें अनोखो पूतजायो है ॥ वृन्दकहै झूँठेही रिसाय जब बूझे माय लाल याको माखन कितेक चोर खायो है। तबै तिहिं गोपी को कुच ठांढ़ी पकरि कहै एतिक लियो है ताको एतिक बतायो है २४ ॥ ब्रज० ॥

दोहा ॥ झूठो दोष लगायके नित आवत उठि प्रात ॥
सन्मुख बाद्त शंक तजि बिकट बनावत बात २७
मम लोचन आगेसदा खेलहु सखन बुलाय। तेरो बाल
बिनोद लखि मेरो हियो सिराय २८ ॥ गोपिन को
भाग्य वर्णन ॥ अन्य ॥ गुंजगरे शिर मोरपखा चलिचाल
गयंदनकी छबिछावे। ताहि लखैं रतिनाहहुके चित में
लखिबेकी बढ़ै फिरचावै ॥ सांवरो नन्दकुमार अहो ब्रज
में ब्रजराजको बालकहावे। ताहि अहीर की छोहरियां
छिछियांभरि छाछिको नाच नचावे ७ शारद शेश
महेश गणेश जपैं निशिबासर ध्यान न आवै। ब्रह्मस-
नातन गावत बेद न रेख न रूप न ताहि बतावै ॥ नारद
शारद जाहि हिये धरिके नितिही अतिही सुखपावै।
ताहि अहीरकी छोहरियां छछियां भरि छाछिको नाच न
चावे ८ ॥ रसखानि ॥ शंकरसे सुर जाहि जपैं चतु-
रानन चारहु आननगावै। नेकहिये नहिं आनत तू रस-
खानि महाजड़ मूढ़ कहावे ॥ तापर देव भुवंगन वारत
पावन प्रानन पार न पावे। ताहि अहीर की छोहरियाँ
छछियां भरि छाछिको नाच नचावे ९ हरि ॥ यज्ञ
अनेक सदा पद पूजत रंचिविरंचि जिन्हें मन ध्यावे।
सेवत शारद शंकरसे मनहीं मन माँझ समाधि लगा-
वे ॥ वेद पुराण कहै हरिजी कबिकोटि प्रजापति पार न
पावे। ताहि अहीरकी छोहरियाँ छछियां भरि छाछिको
नाच नचावे १० शेश महेश गणेश सुरेश नरेशहु
जाहि निरंतर गावें। जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद
अभेद सुबेद बतावैं ॥ नारदसे शुक व्यास रटैं पचिहारे

तऊ नहिं पारन पावैं। ताहि अहीरकी छोहरियाँ छछिया भरि छाँछको नाच नचावैं ११ ॥ नागर ॥ क० ॥ आवत बुलायो दौरि गावत गवायो श्याम नाचत नचायो नित करे कह्यो कह्यो है। जेंवत जिमायो जल पीवत पिवायो हठ माँगे तरसायो मधुमई वह बह्यो है ॥ टहलमें तत्पर चरावै गाय नितिप्रति बनरखवारे प्यारे घाम शिर सह्यो है। विश्वके चराचर और सब बश जाके सो ह्यां ब्रजबासिनके बश परिरह्यो है २५ ॥ ठाकुरकी उक्ति ॥ ठाकुर कहे है ॥ बेदन के भेदनतें ईश अज जाचनतें ऋषि मुनि तापनतें कैयक बपुखकी। नारदतें शारदतें और सनकादिकतें चाहभरि साधनतें संतनके रुखकी ॥ ठाकुर सोहाई न सबतें पियारी लागे मोहन कहत मोहिं देनहारी सुखकी। रूपभरी रसभरी जोसभरी यशभरी मदभरी बातें ब्रजबासिनके मुखकी २६ लाड़िली जूको बालापन छूटिबे को पश्चात्ताप ॥ श्र० ॥ सवैया ॥ हेरतकुंज भुजाधरि श्यामसों नेक तबै हँसतीन लुगाई। लाजन कानिहुती जिय माँझ सुभेटत जो मग माँझ कन्हाई ॥ हेरें सरै न गुपाल सखी इन योवन आनि कुचाल चलाई। होतकहा अबके पछतायें जोहाथतें छूटिगई लरिकाई ११ ॥ अभिमन्यु ॥ बारेतें हौं अरु नन्दलला रहे बालबिनोदन में मनगारे। एकहि संगजू खेलें हँसें कछु नेक संकोच हुतो न हमारे ॥ तें सखि औरसों औरकरी अभिमन्यु कहा कहिये निज हारे। आवहिंगे उततें मुसिक्यात कहाँ कहिहों मुख देखि सकारे १२ ॥ अथ जमलार्जनमोक्षण लीला ॥ सं० ॥

दोहा ॥ गोरस चोरत ग्वारि यक हरि बहियाँ धरिधाय॥ दै उराहनो वैसही यशुदहि दयो धराय ॥ २९ ॥ तब ताड़नको ब्योंत कछु करन चह्यो जब माय ॥ हरि इच्छा तें दूध तब लख्यो गिरत उफनाय ॥ ३० ॥ हरि कहँ तज जैमें चली दूध सँभारनमाय । तैंमहि हरिहू सँग लगे रिसि करि पहुंचे जाय ॥ ३१ ॥ सो० ॥ तब हरि अतिहि रिसाय दधि भाजन फोरनलगे । दधि माखन पय ल्याय दीनो मह्हिहिं दुरायसब ॥ ३२ ॥ लखि जननी रिसियाय बाँध्यो ऊखल माहिं तिहिं । जनहित गये बँधाय जमलार्जुनकी सुरति करि ॥ ३३ ॥ गिरिधैर दास ॥ चौपाई ॥ उलुखल बाँधि सुतहि नँदरानी । मुदित और ग्रहकाज भुलानी ॥ दामोदर तब चले सुहाये । ऊखल सहित कृपारसछाये ॥ जमलार्जुन के मधि महँ ताहि । दियो फसाय श्याम चित चाहि ॥ तब दोउवे अरजुन महिआये । तिनतैं निकरे देव सुहाये ॥ २ ॥ दोहा ॥ करि प्रणाम धनपति कुँवर नलकूबर मणिग्रीव । शाप कथा कहि ग्रहगये भये भक्तके सींव ॥ ३४ ॥ सं ॥ सो० ॥ लखि सुत नँदबिलखाय बंधछोरि हरि हियधरे । हैं कोउ देव सहाय तिन राखे इन वृक्षतें ॥ १० ॥ जनउपदेश ॥ हरिदास ॥ क० ॥ गायो ना गुपाल मन लायके निवारि लाज पायो ना प्रसाद साधु मण्डलीन जायके। धायो ना धमकि वृन्दाविपिनके कुंजनमें रह्यो ना शरन जाय विट्ठलेशरायके॥ नाथ जूने देखि छक्यो छिनहूँ छबीली छवि सिंहपौरि पर्यो नाहिं शीशहू नवायके । कँहै हरि दास नाहिं ला तट न आवै जिय जनम गँवायो ना क-

मायो कछु आयके ॥ २७ ॥ इति श्रीमदादिगौड़दुर्गा गर्भजश्री काशीनाथात्मजाविप्रवल्लभाविप्रकृतेरसिकोल्ला सभागवते पूर्वार्द्धेबालक्रीडनमृद्भक्षणमुखेविश्वदर्शनान्न प्राशननामकरणआयुर्बर्द्धापनजमलार्ज्जुनमोक्षणोनाम चतुर्थोव्यापारः ॥ ४ ॥

अथ वृन्दावन गमन ॥ सं ॥ दोहा ॥ नन्द यशोदा गोप गण मिलि यहकियो विचार । रहैं वृन्दावन चलि यहां होत उपाधि अपार ॥ १ ॥ सांझ समय यह करिमतो सोये निज गृह ग्वार । हरि इच्छा तहँ पुर भयो तिहीं राति में त्यार ॥ २ ॥ शकटरु वृष पर वस्तु धरि अरु भरिभार कहार । ग्वाल बाल गोपिन सहित आये लखत बहार ॥ ३ ॥ प्रात तहां आवत भये तजिगोकुल ब्रजराज । छवि महिमा नहिं कहि सकत तसु शारद अहिराज ॥ ४ ॥ अथ गोचारण ॥ मुकुट लकुट पट पीत धरि बाल सखन सँगजाय । गो पद रज रंजित वदन तहँ चारत हरिगाय ॥ ५ ॥ रसखानि ॥ स० ॥ मकराकृत कुंडल गुंज की माल बिलोल लसै पग पावरिया । बछरान चरावन के मिसिभावतो गोकरिमोतिन भावरिया ॥ रसखानि बिलोकतही सब ह्वैगई बावरिया ब्रजडागरिया । सजनी यह गोकुल में बिषसो बगरायो है नन्दके साँवरिया ॥ १ ॥ आयो हुतो नियरे रसखानि कहा कहौं तू न गई उहिठैंया । जेती अयानी सयानी निदान अघानी नहीं कोउ लेतबलैया ॥ कातें कहौं कहतै न बनै कछु एक चरित्र कियो यदुरैया । गायगो तान रिझायगो प्राण जमायगो नेह च-

रायगो गैया ॥ २ ॥ राजा बीरबर ॥ एक समय हरिधेनु चरावत बेनु बजावत ऐन रसालहि । दीठि परी मन मोहन की वृषभानु सुता उर मोतिन मालहि । सो छवि ब्रह्म लपेटि हिये करसों कर लैकर कंज रसालहि । शंभु के शीश कुसुंभ के पुंज मनो पहिरावत व्यालिनि मालहि ॥ ३ ॥ वत्सासुर वध लीला ॥ ब्रजबासी दास ॥ छंद ॥ वत्सासुर करिकोप मारन श्यामके सन्मुख गयो। गयो ह्वै निहपाप तबहीं योग सुरपुरको भयो ॥ तब धायके हरि चपरि ताकौं पकरि पाँय फिराइयो । पटक्यो धरणि तनु असुर प्रगट्यो फेरि श्वास न आइयो ॥ १ ॥ गिरिधर दास ॥ दोहा ॥ देवन बरसाये सुमन शिशुन साबसी दीन । कंस अनुज को नाश इमि कृपासिन्धु हरिकीन ॥ ६ ॥ अथ बकासुर वधलीला ॥ ब्रजवासीदास दोहा ॥ धनि धनि ब्रजनर नारि धनि धनि यशुदा धन्य नँद । बिहरत हैं जिनके सदन ब्रह्मसच्चिदानंद ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ कहि कहि देव सिहाय धन्य धन्य ब्रज बाग बन। जहां चरावत गाय सकल सुरन शिर मुकुट मनि ॥ ८ ॥ गिरिधर ॥ तोमर छंद ॥ इकबार बच्छन संग । घनश्याम सुन्दर अंग ॥ निरख्यो नदी बरतीर। बकदैत्य दीह शरीर॥ १ ॥ क० ॥ गिरिधर ॥ गिरिधरदास राजै मोतिन की रास कैधौं रजत को शैल शुद्ध श्वेत ताको धुर है । हीरनको टीला कैधौं गंगाजल जोस लीला यशको समूह कैधौं सोहत प्रनूर है ॥ राका के निवेश कैधौं उठ्यो क्षीरसिन्धु कैधौं राका रजनी को सत काढि धर्‍यो तुर है ॥ शम्भु को ससुर कैधौं सतो

गुन गुरु कैधौं बरुनको पुर कैधौं बैठ्यो बकासुर है ॥ १ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ कहत सखा सब श्याम सों बक भखिहै यह आसु । सुनत श्याम आगे भये गये बकासुर पासु ॥ ८ ॥ गिरिधर ॥ तिहिं छिन बक उठि आसुही देखत सबके दुष्ट। निगलि गयो भगवानको महापाप तें पुष्ट ॥ ९ ॥ सं० ॥ रोलाछन्द ॥ दौरि धाये देवगण तहँ जहाँ बक हरिहीं गिल्यो । करें शस्त्र प्रहार तदपि न तनक ताको तन छिल्यो ॥ बढ़न लागे उदर हरि तत्र असुर असुरुँधि तन किल्यो । भयो सकफक बक तुरतही चंहत यमसों अब मिल्यो ॥ १ ॥ दोहा ॥ रुँधन लग्यो ताको गरो उगल्यों तब घबराय । चोंचपकरि फारयो खलहि बसन सरिस सुरराय ॥ १० ॥ बकहरितें मरि तरिगयो बरषिगये सुर फूल। हरषि सखा बंदनलगे हरिपद पंकजधूल ॥ ११ ॥ ब्रजवासी दास ॥ बलमोहन घरको चले जानि सांझकी बेर। लीन्ही गैया घेरि सब मुरली की धुनि टेर ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ चले बजावत बेन ग्वाल वृंद के मध्य हरि । अंग अंग छबिसेन ब्रजजन मोहन सांवरो ॥ २ ॥ राँभत धाई गाय बच्छ सुरति कै पैस्रवत । हरषि यशोदा माय कहत श्याम आये घरहि ॥ ३ ॥ ठाकुर ॥ क० ॥ आवत हैं देख कैमी मुरली लगी है मुख जैसीही गरैंयां लियें लालहू कि बेटे की । याहीको सराहैं शेष याही को बखानें वेद याही की कहानी कंठ पूतना लपेटेकी ॥ ठाकुर कहत याकी आदि अज ईश लेके खबर न काहू वैसमेटे की बड़ेटेकी । कैयक लपेटे गये कैयक चपेटे एक पेटे

की न पाई पाकरेटे अहिरेटेकी ॥ २ ॥ महबूब ॥ आगे धेनु धारि घेरि ग्वालन कतार तैसें फेरि फेरि टेरि धौरि धूमरी नगन तें। औंछि पुचकारत अंगौछिन सों पोंछि पोंछि चूमि चारु चरन चलावत बचनतें ॥ कहैं महबूब धरि मुरली अधर बर फूँकत हैं षड्ज निषादके सुरन तें। अमित अनंद भरे लकुट सुकंध धरे मंद मंद आवत मुकुंद मधुबन तें ॥ ३ ॥ दत्त ॥ मोर के पखौवनको सोहत मुकुट माथे कुंडल झलक सोंहैं गिरिके धरैया की। कांधे लसे कामरी त्यों फेंटकसी पामरीकी मूरति है सांवरी यशोमतिके छैयाकी ॥ कहै कवि दत्त वारों जिनपै करोर काम कौन छबि बरनों बलभद्रजूके भैयाकी। आगे गोप गैया पाछे आवत हैं पैया गोपी लेत हैं बलैया प्यारे नवल कन्हैयाकी ॥ ४ ॥ अन्य ॥ मोर को मुकुट भ्राजे कर में लकुट राजे छाजे गुंजमाल गरे ललित लरन तें। सुंदर कपोलन झलक लोल कुंडलकी गुलुफ अमोल भरे गोरज के कन तें ॥ गौवन के पाछे पाछे काछनी को काछे आछे गौरी आप गावत गवावत सखन तें। आनँदके कंद ब्रजलोचन चकोर चंद मंद मंद आवत गोबिन्द वृन्दावन तें ॥ ५ ॥ सं० ॥ नव घनश्याम बीच चंचला लसत जैसे तैसे श्याम तन में सुसोहे पीतपट है। कहै विप्र वल्लभ त्यों गुंजनकी माल गरे मुरली अधर बर करमें लकुट है ॥ काम मद तुच्छन को फूलन के गुच्छनको मोरनके पुच्छनको शोभित मुकुट है। गौवनके पाछे आछे काछनीको काछे कटि आवे बलभैया संग धरे वेष नट है ॥ ६ ॥ अथ गो-

दोहन ॥ व्रज० ॥ सोरठा ॥ प्रात दुहैंगे गाय हम तुम होड़ लगायके । दुहन लगे हरि आय निरखि सखा चकित भये ॥ ७ ॥ बछरा पग अटकाय गोथन लीने हाथ करि । प्रिया बदन दृगलाय दूधधार छांड़न लगे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ धेनु दुहावत लाड़िली दूहत हैं नँदलाल । सो सुख कापै जाय कहि देखि रही व्रजबाल ॥ ९ ॥ दुही कुँवर नँद लाड़िले श्री राधा की गाय । दोहनि देत न हँसि प्रिया मांगत हाहा खाय ॥ सोरठा ॥ त्यों त्यों हँसत कन्हाय ज्यों ज्यों प्रिया हहा करत । सो सुख बरणि न जाय अरुझे दोऊ प्रेमरस ॥ १० ॥ नारायणदास ॥ चंचला छंद ॥ धाम सों गुपाल आय चोपसों दुहै सुधेन । शीश पागलाल मुक्तमालही सरोज नैन ॥ रुक्म दोहनी सुअंस पाट नेतिका बिलाल । देखिकै अनूपरूप गोपिका भई निहाल ११ ॥ पुनः व्रजवासीदास ॥ दोहा ॥ दंपति को सुख देखिके मुदित यशोदामाय । बारबार लखि युगल छबि मनहीं मन बलिजाय ॥ १२ ॥ पद्माकर ॥ सवैया ॥ बछरे खरी प्यावै गऊ तिहिको पद्माकर को मनलावत है । तिहि जानि गिरैयांगही बनमाल सुखैंचि लला इंच्यो आवत है ॥ उलटी करि दोहनी मोहनि की अंगुरी थन जानि के दाबत है । दुहिबो औ दुहाइबो दोउनको सखि देखतही बनि आवत है ॥ १३ ॥ अथ अघासुर वध ॥ दोहा ॥ गावत खेलत हँसत सब सखा वृंद के साथ । पहुँचे वृंदावन सघन वृंदावनके नाथ ॥ १४ ॥ सोरठा ॥ फिरत चरावत धेन दीनबन्धु दुष्टनदलन ॥ कृष्ण कमल दल नैन सर्व अंग सुन्दर सु

खद् ॥ १५ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ नित खेलत इत सांवरो वृंदावन मधिजाय। इक दिन ब्रजबालन सहित तहां चरावत गाय॥ १६ ॥ अघ बैठ्यो तहँ व्याल बनि करि मुख दीह अपार। हरि बलबाल बछानको जिहिं मग पग संचार ॥ १७ ॥ गिरिधर ॥ क० ॥ ब्रह्मको वदन कैधौं विश्वको वदन कैधौं वदन अकाशहीको सावधान तनहैं। मायाको वदन कैधौं गिरिधरदास अहै कर्मको वदन कैधौं सागर सघन हैं॥ सात दीपगत विन्ध्यगिरि को वदन कैधौं कैधौं चार वदनको वदन सदनहै। वदन कपालीको है कैधौं महाकालीको है कालको वदन कैधौं व्यालको वदन है ॥ १८ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ अघ मुख गुनि गिरिकन्दरा पैठे सब यकबार। वदनबंद तब तिहिं कस्यो अतिभो हाहाकार॥ गिरिधर॥ इमि लखि सुर हाहा करें डरे ग्वालके थोक। मनहु लोक नय आसुही प्रविशे सकल अलोक ॥ १९ ॥ सं० ॥ शीश फोरि तब तसु कढ़े सखन संग जगदीश। अघ अघ तजि सुर पुर गयो धरि हरिपद निज शीश ॥ २० ॥ बरसाये देवन सुमन हरषि निरषि ब्रजचन्द। जै जै जै यह कहि उठे ग्वाल बाल के वृन्द ॥ २१ ॥ अथ ब्रह्माजूकी मोह लीला ॥ ब्रज० ॥ दोहा ॥ तहां छाक घर घरनतें आई भरिभरि भार। यशुमति पठई कान्हको व्यंजन बहुत प्रकार॥ २२॥ सोरठा ॥ छाक पठाई मात हरषि कहत हरि सखनसों। दधि धवलित बहुभांत सब मिलि भोजन कीजिये ॥ २३ ॥ गिरिधर ॥ चौपाई ॥ हिलिमिलि हरि तहँ ग्वालन संग ॥ छाक खात उर धरे उमंग ॥

लखि विधि माया वश यह जान्यो। ब्रह्म कि होय बा-
लपन सान्यो॥ करहु परिच्छा इच्छा ठई। हरि प्रेरित
प्राकृत मति भई॥ आय बच्छ अरु ग्वाल चुराये।
धरि निज धाम श्यामपहँ आये॥ २५॥ दोहा॥ या
विधि विधि की अज्ञता उर बिचारि ब्रजभूप। आपहि
सब धरते भये ग्वाल बच्छ के रूप॥ २६॥ बरस
एक धरि हरि रहे सकल रूप ब्रजमाहिं। यह लीला
घनश्याम की रामहु जानी नाहिं॥ २७॥ सं०॥ क०॥
स्रष्टासृष्टि रचना को भूलिभ्रम भूलि नित जाय ब्रज
आप निर्जै लोक करैं फेरो है। वहां बच्छ बालन कों
ब्रह्म को स्वरूप लखे यहां निज मन्दिर में सोवतहि
हेरो है॥ बल्लभ बरस बीत्यो ऐसेही करत तब आय
घबराय करि त्राहि त्राहि टेरो है। बच्छ बाल ल्याय
हरि पांय परि बोल्यो अज क्षमिय पराध मेरो जानि
निज चेरो है॥ २८॥ गिरिधर॥ दोहा॥ इमि कहि
बहुविधि बन्दि पद विधि गवने निज धाम। सब बालक
बच्छन लिये घर आये घनश्याम॥ २९॥ यह लीला
भगवान की नहिं जानी कोउ बाल। बिते बरस घर
घर कह्यो आज हत्यो अघलाल॥ ३०॥ जनोपदेश॥
रसखानि॥ क०॥ कंचन के मन्दिरनि दीठि ठहरात
नाहिं सदा दीपमान मानो माणिक उजारेसों। और
प्रभुताई एजू कहांलों बखानों पूरि भूप प्रतिहार भीरट-
रत न द्वारेसों॥ गङ्गाजल न्हाय बहु मुकुत लुटाय बेद
बीस बेर गाय ध्यान कीजिये सकारेसों॥ एतो सबभयो
तो कहा रसखानि जो पै चित दै न करी प्रीति पीत पट

वारेसों ॥ ३१ ॥ इति श्रीमदादिगौडदुर्गागर्भजकाशीनाथात्मजविप्रबल्लभविप्रकृतेरसिकोल्लासभागवते गोकुलसो वृन्दावनगमनवत्सासुरवधबकासुरवधगोपगोवत्सैः सहवृन्दावनप्रवेशब्रह्मासंमोहनंनामपचमोऽध्यायः ५॥

अथ पुनः गोचारणलीला ॥ सं० ॥ दोहा ॥ इमि अनेक लीला करत बितेदयो कौमार। गोचारण पौगंड वपु लागे नन्दकुमार ॥ क०॥ संग में अभीर भीर सुरभी की भीर लियें लसै बलबीर धीर लकुट फिरावते । बेर गउधूली गउधूली सों बिराजमान सप्त सुर लीन पनि मुरली बजावते ॥ गिरिधरदास दास देखि यों पुकारि कहै मेरे जान जनहित प्रभुता करावते । प्रेम के परायन नरायन दुभुज होय गायन करत देखो गायन चरावते ॥ १ ॥ ठाकुर ॥ जैसो मंजु माथे पै मुकुट तैसो कंज मुख कंज दलनैन मैन शरतें उकाढ़े हैं। कानन में कुण्डल बिराजे पटपीत कांधे करमें मुरलि लै बजावैं सुर गाढ़े हैं ॥ ठाकुर कहत अंग ललित त्रिभंग कियें उभरे लकुट सों सुराग रसबाढ़े हैं। गौवनको टेरत हैं बछरान हेरत हैं देखरी गुपाल वे तमाल तर ठाढ़े हैं ॥ २ ॥ गुमान ॥ झुकि रह्यो मुकुट रही है झूमि मोतीमाल चूमि रहे कान नैन कोर अनियारेरी । कलित कपोल छबि छ्वैरहे वदन चारु चैरही अधर अरुणाई चहुँध्यारेरी ॥ भनत गुमान नव बेनु छहराय रही कंध फहरायरहे छोर पट न्यारेरी । हेरिरहे मोतन गोविन्द धेनु फेरि रहे कूलनि कलिंदजा कंदब तर प्यारे री ॥ ३ ॥ गिरिधर ॥ दोहा ॥ निशिमुख हरि मुख लखन कों सन्मुख बनिता वृन्द ।

ठाढ़ी मग जोवैं खरी जब आवैं ब्रजचन्द ॥ १ ॥ जननि उतारति आरती अंचल पोंछति धूरि । भोजन दै पौढ़ावती नितप्रति रसभरि भूरि ॥ २ ॥ अथ चोरमिहीचनी ॥ मति ॥ दोहा ॥ लाल तिहारे संग मैं खेलें खेल बलाय । मूंदत मेरे नैन हौं करन कपूर लगाय ॥ ३ ॥ नवीन ॥ क० ॥ और खेल खेलौं सोतो खेलिहौं कान्हा की सौंह कहां लौं सखीन उपहासनकों पेलौंगी । कौतिक नवीन बीन लावे तू सुजान नित मसके भुजानि कंधसो न अब झेलौंगी ॥ छतिया छुवावे पीठ ठोढ़ी दे गुदीमैं नीठ छोड़न कहत ढीठ कैसें पर हेलौंगी । जांघन में दैके कटि भीचनो बढ़यो न दैया तो सँग कन्हैया आंखमीचनो न खेलौंगी ॥ ४ ॥ लतीफ ॥ स० ॥ इंदुसों आगरी हैं मुख जोति बड़े अति नैन समासम दोऊ । मूंदत हाथ मैं आवत नाहिंन कैसे कै जाय छिपै कहो कोऊ ॥ मावस रैनकी पूनोकरै कल थोरक सो मुख खोलत सोऊ । देखि लतीफ यहै ब्रजबाल सु आवतरी यह खेलकी खोऊ ॥ ५ ॥ चोरमिहीचिनी कै मिस मोहन मोहि न पावैं फिरैं वसुधा कै । देखें जो देव दुकूलन मैं मिलि फूलन मैं ह्वै रहे चहुँधा कै ॥ केसर चन्दन बन्दन मैं मिलि कुन्दन मैं तन मैन छिपा ह्वै । ह्वै मकरंद रहै अरबिंद मैं इंदुके मन्दिर बिंदु सुधा ह्वै ॥ २ ॥ अथ धेनुकवधलीला ॥ सं० ॥ दोहा ॥ खरन सहिन खर असुर बर धेनुक असत सुनाम । रहत तालबन तहँ गये सहरि सखा बलराम ॥ ३ ॥ रोलाछंद ॥ लगे तालफल खान ताल दै खेलन लागे ।

सुनत शब्द सब असुर क्षुभित अतिरिसमहँ पागे ॥ धेनुक धौर्यो आय खरो बल सन्मुख आगे । सुफिरि चलाये चरण दोऊ बलके उर लागे ॥ चहत भयो फिर मारि चरण ते बलहिं खँसायो । तबलगि धरि दोउ चरण ताल पै ताहि नशायो ॥ गिरे तालतें ताल लागि करिटूटि घनेरे । और असुर खर रहे तिनहुँ बल मारि निवेरे ॥ २ ॥ दोहा ॥ करि प्रशंस बलराम की हेरत हरिहिं तमाम । बन बीथिन यमुना पुलिन गे ढूँढ़त घनश्याम ॥ ४ ॥ तृषित गोप गोवत्स सब कालीदह के नीर । पैठे सब अकुलायके बैठ गये तजि धीर ॥ ५ ॥ व्रज ॥ सोरठा ॥ परे सकल मुरझाय जहां तहां बिष झार तैं । ग्वाल बच्छ अरुगाय भये मनहुँ बिनु प्राण सब ॥ १ ॥ दोहा ॥ खोजत हरि आये तहां देख्यो सबहिं बिहाल । सुधादृष्टि के परतही जिये बच्छ गो ग्वाल ॥ ६ ॥ कही कथा सब महरितें यह हैं हमैं सहाय । बल मोहन के बल फिरत बनबन चारत गाय ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ तब तब होत सहाय परत गाढ़ जब जब हमैं । चिरजीवहु दोउ भाय यशुमति ये तेरे कुँवर ॥ २ ॥ अथ बालकेलिके खेल वर्णन ॥ अथलटू ॥ नबीन ॥ स० ॥ आसकै बैठी किती मगघेरि सनेहकी डोर बंधी बिन मोलैं । केती फिरैं भ्रमि घूमि भ्रमीसी सुगुंजि रही हिय गूंजन खोलैं ॥ नंदकी पौरि अनन्द नबीन लिखे जिन भालकरे सुकलोलैं । ज्यों ज्यों फिराबत लाल लटू त्यों भटू व्रजबाल लटू भई डोलैं ॥ ३ ॥ चकई यथा ॥ आज कदंब कदंब की छांहन फूल कलंबु भरे नवताल

के। ठाढ़े लखैं घनश्याम सखानमें कानमें फूल बिरा-
जत हालके॥ शोभा नवीन निहारतमैं मनधायगो चाय
लपेट में ख्यालके। चकित ह्वै चहुँ ओरनसों चकई संग
साथ चल्यो नँदलाल के॥ ४॥ अथ पतंग॥ अ०॥
दोहा॥ तन पतंग मन लगन गुन लहि अकाश ब-
सेसाथ। परि कुबात कितहूँ फिरे तऊ उड़ा यक हाथ॥
२॥ स०॥ देखि गुड़ी सुउड़ी मधि मारुत मैं कह्यो
आसन ये नभचारी। दाहने बाम फिरै कबहूं कबहूं अ-
रा ऊरध लेत उसारी॥ बोली तबै झहराय अरे चुप
बूझे मती कछु बात हमारी। प्रेमकी डोर परी गरमैं
जित चाहे लिये तित जात खिलारी॥ ४॥ ठाकुर॥
आवहु लाल दिखाय ले आवहुँ भूषन मंजु मँजीरसी
बोलैं। झूमैं झुकै लचके औ लफै सुअदा न करे बहु
भांति अमोलैं॥ ठाकुर राजै जरावके जेवर ते वे प्रभान
की खानि सी खोलैं। चंग चढ़ावत बांह चले जनु मो-
तिन हेमलता फरिडोलैं॥ ५॥ बिहारी॥ दोहा॥ उड़ी
गुड़ी नंदलालकी आई आंगन माहँ। बौरी सी दौरी फिरे
छुवत छबीली छाहँ॥ ६॥ अथ गेंद को खेल॥ सं०॥
दोहा॥ काली विष कृत दोष जिमि इहि व्रज तें कढ़ि-
जाय। यह हिय धरि बोले सखनि खेलो गेंद मँगाय॥
१०॥ व्रजवासीदास॥ श्रीदामा यह सुनतही गयो भवन
निज धाय। अपनि गेंद लेआयके दीन्ही हरिको जाय॥
११॥ सोरठा॥ खेलो खेलिये चाय बाहर घोष निका-
सके। जहँ कोउ आय न जाय गेंद खेल बनिहै तहां॥
॥ क०॥ खेलत खिलार बर नंदको कुमार तापें किती

मतिवारि गई गुरुजन ज्ञानतें। लूटू के बिलोके न बि
लोकें लोक लाज तन मन भयो मत्तलाल सुधा मुसु
क्यानतें ॥ कंदुक उछारें पाग पेचन सँभारें पेच पेचन
सों डारे कौन चले चित स्यान तें। लोचन चपल गेंद
गगन निहारें जनु पीत तरवारें धारें उगलत म्यान तें ॥
५ ॥ अन्य ॥ स० ॥ श्रीयमुना तट खेलत गेंद गिरयो
यमुनाजल मध्य तहांहीं। कूदि परयो हरि ताहिके हेत
गयो धसि पैठि पतालहि माहीं ॥ बाल सखा सब रोदन
कै हिय सोचत जाय कह्यो नँद पाहीं। कान्ह तिहारो
गिरयो यमुना बिच ढूँढ़ि थके हम पावत नाहीं ॥ ५ ॥
गिरिधारी ॥ ब्रा० ॥ क० ॥ कदमकी डालीचढ़िकूद्यो बन-
माली कोपि कालीदह भीतर बियोग बीज बैगयो। कहै
गिरिधारी धाय नगरके नारी नर भई भीर भारी नीर
नैनन तै च्वैगयो ॥ नंद नंदरानी अररानी परें पानी
बीच ओक ओक अरर सशोक बिष ह्वैगयो। यमुना
समानो आज ब्रजको सतून हाय यशुमति सून बिनु सून
जग ह्वैगयो ॥ ६ ॥ ब्रज० ॥ दोहा ॥ लोटत अतिव्या-
कुल धरणि पर न चलत जलधाय। कहत श्याम तुम
दुख दयो मोको बैस बुढ़ाय ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ लोग
उठे सब रोय दीन वचन सुनि नंदके। कहत बिकल
सब कोय हरि तुम ब्रज सूनो कियो ॥ ४ ॥ दोहा ॥ ब्रज
युवती सुनि महरिके वचन प्रेम आधीर। अकुलानी रो-
वत सबै बढ़ी कठिन उरपीर ॥ १३ ॥ सोरठा ॥ बरजत
यशुदहिं ग्वाल यह कहि कहि हरि हैं भले। सुत बि-
योग बिकराल जात नहीं सहि मातुकों ॥ ४ ॥ दोहा ॥

कहत उठी बलराम सों बनहि तजे लघु भ्रात । कान्ह तुमहिं बिनु रहत नहिं तुमसों क्यों रहिजात ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ मगन शोच रस मांझ कहत लेआवहु कान्ह को। भूखे ह्वैगइ सांझ आज कछू खायो नहीं ॥ ६ ॥ दो० ॥ मोहिं दोहाई नंद की अबहीं आवत श्याम । नागनाथ लै आवहीं तब कहियो बलराम ॥ १६ ॥ सोरठा ॥ सुनि हलधरके बैन अतिउदार हरिके चरित । भयो कछुक उर चैन जो कछु करहिं सुहै सबै ॥ गिरिधर ॥ दोहा ॥ उहां जाय हरि अहि लख्यो शैन करत शतशीश । ताहि तियनसों कहतभे अबहिं जगाव फणीश ॥ १७ ॥ सोरठा ॥ सुनि बालकके बैन दया सहित तिन इमि कह्यो । जियत जाहु निज ऐन रोवत ह्वै हैं मात पित ॥ ७ ॥ ब्रजबासीदास ॥ अरी बावरी सरप तैं कत डरपावत मोहिं । जैसो मैं बालक प्रगट अबहिं दिखाऊं तोहिं ॥ १८ ॥ सं० ॥ यह कहि हरि अहिनाथकी दाबी पूँछ पिछात । फनफटकत झटपट उठ्यो विष झारत फुफकात ॥ १९ ॥ ब्रज० ॥ दांव घात लाग्यो करन सहसा फन फटकार । बार बार फुफकार करि डारत विष को झार ॥ २० ॥ सोरठा ॥ जरत यमुन को नीर जात फेन उतराय विष । परसत नाहिं शरीर अहि मद मोचन श्यामके ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ पगसों चापि नाक धरिफोरी । लीनी नाथ हाथ गहिडोरी ॥ कूदि चढ़े हरिताके शीशा । मन मन करत विचार अहीशा ॥ १ ॥ पद्माकर ॥ क० ॥ मुरली बजाय तानगाय मुसकाय मन्द लटकि लटकि नये नृत्यभै निरत है । कहै पद्माकर गोबिंदके उछाह अति विष को प्र-

वाह प्रति मुख ह्वै फिरत है ॥ ऐसो फैलपरत फसूकर
मही में मानो तारनको वृंद फूतकारन गिरत है। कोप
करि काली एक फनको उठावे जौलौं तौलौं बनमाली
सवों फनपै फिरत है ॥ ७ ॥ व्रजवासीदास ॥ दोहा ॥
ते गोकुल में अवतरे मैं जान्यो निरधार। ये अविनाशी
ब्रह्म हैं व्रज कृष्णा अवतार ॥ २१ ॥ सोरठा ॥ किये ब-
हुत फनघात बारबार पछितात मन। अस्तुति करत ल-
जात रह्यो दीन ह्वै सकुचि अति ॥ ६ ॥ दोहा ॥ उरग
नारि तब जोरिकर प्रभुके सन्मुख आय। करत विनय
अतिदीन ह्वै पतिहित हरिहिं सुनाय॥ २२॥ सो०।
इत यशुमति उरमाहिं उठी लहर सुत प्रेमकी। कान्हर
आयो नाहिं कहति रोय बलरामसों ॥ १० ॥ सं० ॥ व
चन असत नहिं मोर चरण छूय तुव कहत हम। तबहीं
उठ्यो हलोर प्रगट भये तिहिं जल सुहरि॥ ११ ॥ ल
खत धसे जल दौरि बाल वृद्ध नर नारि सब। जनुतन
प्राण बहोरि आये सबके एकसंग ॥ १२ ॥ पद्माकर।
क० ॥ गोपी ग्वाल माली जुरे आपसमें कहैं आली कोउ
यशुदा के औतरयो इन्द्रजाली है। कहै पद्माकर करै
को यों उताली जापै रहत न पावै कहूं एकौ फन खाली
है ॥ देखैं देवताली भई बिधिकै खुश्याली कूदि किलकरै
काली हेरि हँसत कपाली है। जनमको चाली एरी अ
दभुत ख्याली आज काली की फनाली पै नचत बन
माली है ॥ ८ ॥ किशोर ॥ लोलकल कुंडल कपोल अ
लकावलि अमोल उछलत दोऊ गुच्छ मुकुताली के
जोर भृकुटी तट किशोर खुले डोरे आछे आकरन

फैल बनमाली के ॥ ६ ॥ पूर्व कथा प्रसंग ॥ब्रजव
दोहा ॥ सुनि अहिनारिनके वचन करुणामय यदुराय। उतरि परे अहिशीश तें यमुनाके तट आय ॥ २३ ॥ धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि मुदित सुमन वरषाय। गये देव निज निज सदन हृदय परम सुखपाय ॥ २४ ॥ सं० ॥ ह्वै अनाथ द्विजनाथ तें रह्यो यमुन अहिनाथ। ताहि नाथि ब्रजनाथ अब कीनो तुरत सनाथ ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ द्वीप पठायो व्याल सुरगण सुरलोकै पठै। आये निकसि गुपाल ब्रजवासी जन सुखकरन ॥ १३ ॥ दोहा ॥ नँद यशुदा सों हरि कह्यो आज बसो यहि ठाम। सुख सों भोजन शयन करि प्रात चलो निजधाम ॥ तत्रबाल गोप गोपिकान को प्रश्न सनंदजूसों ॥ गोविन्द ॥ क० ॥ सूखिगे सकल बन सघन सुआस पास घास अनयास चहुँ पासन जरेरहैं। अमल कमल दल कोमल की कहा चली गोविंद सरस सर नेकु न भरे रहैं ॥ दादुर चकोर मोर मधुप मराल मृग ग्वाल बाल विकल बिहाल ह्वै परे रहैं। काली के कराल विष ज्वाल की झपट आये कालीदहकूल के कदम्ब क्यों हरेरहैं ॥ १० ॥ उत्तर यथा ॥ चढ़ि चढ़ि ताहिन पै खेलत कुँवर कान्ह ताही तें सुढार ढार डारनि ढरेरहैं। सींचत सुछंद सुधा दृष्टिहीसों बारबार वाही तें सुकंदमूल फूलन फरे रहैं ॥ भनत गोविंद हित चित अनुरागनिसों भागनि सराहि

॥ काली आह मद मथन सुनि हिये डऱ्यो अति कंस। मोहिं मारन उपज्यो व्रजहि कोऊ देव धरि अंस॥ २७॥ क० ॥ गच्छ व्रज कहत सुकंस दव रच्छस तैं भच्छ बाल बच्छ जिते होय तिहि थल मैं। कहै विप्र वल्लभ गोरक्षकै नरक्षों आज नैननि निरक्ष तें दिधक्षों एक पल मैं॥ कच्छकसि कहत समच्छ रच्छ दच्छनमें वृच्छ पच्छि मच्छिहू न राखौं थल जल मैं। तेरे जो बिपक्ष तिन्हें करिके बिपक्ष फेर तोपद प्रतक्ष लखो तबहीं अनल मैं॥ १२॥ पहुँच्यो कलिंदी तीर सोयो व्रज वृंद जहां घेरे चहुँओर जोर ज्वालन तैं च्वै रह्यो। कहै विप्रव- ल्लभ यों दह दह दहन लाग्यो धुंधुरितधूम धुंव धामन लौं छ्वै रह्यो॥ जरत बराह ब्याल बाघ वृक वृक्ष वन उठत फुलिंग तुंग तारन लौं च्वै रह्यो। गाय बच्छ गोपी गोप मात पित बाल वृद्ध अतिही विकल मुख हरिही को ज्वै रह्यो॥ १३॥ सोरठा॥ इमि लखिकरि घनश्याम आंख मुँदाई सबनकी। दवकर धरि इकठाम पान तुरतही करिगये॥ १४॥ सुखी भयो व्रजधाम दव बाधा सब मिटिगई। गये सुनिज निज धाम हरि गुनगावत सकल जन॥ १५॥ मनोपदेश॥ सुंदर। सवैया॥ मन है तो भले थिर ह्वै रह तू हरिके पद पंकज में गिर तू। कवि सुन्दर जो न सुभाव तजे फिरश्रोर करे तो इहां फिर तू॥ मुरली पर मोरपखा पर ह्वै ल-

टीपर ह्वै भृकुटी भ्रम तू। इन कुण्डल लोल कपोलन मैं घनसे तन मैं घिरिके रह तू॥७॥ इतिश्रीमदादिगौड दुर्गागर्भज श्रीकाशीनाथात्मजविप्रवल्लभविप्रकृतेरसिकोल्लासे गोचारणनेत्रोन्मीलनधेनुकवधबालकेलिकंदुक क्रीडनकालीदमनदावानलमोचनोनामषष्ठोऽयापारः६॥

अथ प्रलंब वध लीला॥ सोरठा॥ सं०॥ वन भांडीरहि जाय सखा बुलाये निकट हरि। द्वै द्वै जोट लगाय फल बूझन खेलन लगे॥ १॥ तहां प्रलंब समाय जोट लगाई रामसों। बूझि फलहिं जो जाय चढ़े कन्ध यह प्रण रुप्यो॥ २॥ भांडीरहि लौंजाय फिर आवे तहँई सुफिरि। यहि विधि सब सुखपाय खेलत अतिहि उमंगसों॥ ३॥ दोहा॥ फूल बुझायो हरिहिं इक बूझि गयो बलराम। तब प्रलंब निज कंध धरि चल्यो सीव तजिधाम॥ १॥ इमि प्रलंब के कंध पै राजत बल बलवान। जिमि सुनीलगिरिकूट पै थित गिरीश भगवान॥ २॥ बल प्रलंबके ग्रीव पै चढ़े मढ़े ईशान। ज्यों करिवर बर असुरके हनन हेत ईशान॥ ३॥ अहै असुर यह कंस ढिग जान चहत तजिसीव। बल करिके बलभद्र तब दाबी ताकी ग्रीव॥ ४॥ हनी मुष्टिका पुष्टिका हलधर धरि अतिरीस। निकसिगयो असु हीयतें तहँ पैठ्यो तसु शीस॥ ५॥ सोरठा॥ हत्यो जबहिं बलदेव हँसे बाल सब तालदै। मुदित भये सब देव सखा सहित हरिहू मुदित॥ ३॥ अथ पनिघट लीला॥ ब्रजवासीदास॥ दोहा॥ कहो सखी कैसे चलें वा यमुनाके ओरं। गैल न छांड़त सांवरो रसिया नंदकिशोर॥ ६॥

सोरठा ॥ धरै न कोऊ नावँ यहै सकुच डरपत हिये
एक मते को गावँ वह चञ्चल मानत नहीं ॥ ४ ॥ गि-
रिधर ॥ दोहा ॥ यमुनाजल भरिबे गईं दृग विशाल
बर बाल । लकुटि लये रोकत भये मोदमये गोपाल ॥
७ ॥ जय पुरेश महाराज श्रीप्रतापसिंह कृत उक्ति गो-
पिन की ॥ क० ॥ पणिघट घाटाँ ठाट ठाढो छोन आ
सुणो गैले जाती गोय्यांनेथे ऊभा ऊभा टोकोछो । र
का रसीला गरबीला भया काईं फिरो काम पड्यां कौ
कौठे जाय पग ढोकोछो ॥ प्याराथांको ताणों बाणोंह्माँसो
अब छानो छैन आया छोईं बाराँईठै जाणो दियो कोको-
छो । व्रजनिधि सांवला सुरापाछें गुणरावलामें कान्ह
ह्माँको गैलोथे किसे काम रोकोछो ॥ १ ॥ व्रजवासीदा-
स ॥ दोहा ॥ यह लीला सब करत हरि व्रज युवतिन
के हेत । भजे कृष्ण जो भाव जेहि तिहि तैसो फलदेत ॥
८ ॥ सोरठा ॥ चिंतामणि जेहि नाम चिंतित फलदायक
जनन । सबही कौं सबठाम जैसे को तैसें सदा ॥ ५ ॥
नीलकंठ ॥ क० ॥ कछू न सोहाय विन देखे तें रह्यो न
जाय हियो अकुलाय हाय ऐसी कछु करिगो । नीलकं
रुचिर सोहाती चितवन बांकी थाती सी हँसनि मेरी
छाती बीच धरिगो ॥ चंदन में चांदनीमें पातनमें पौन
में फूलन दुकूलन दवागिनमें भरिगो । कहांतें धों आ
दुखदाई पनिघट माई कहांतें कन्हाई मेरी आंखिन मे
परिगो ॥ २ ॥ देवकीनंदन ॥ कहति कहा सुनि परत न
मोको कछु बांसुरी शबद कलकाननमें भरिगो । आंखन
में साँवरो सरूप बनमाल वँशी पीतपट कुण्डल मुकु

घरें धरिगो ॥ देवकीनँदन अचलोकौं कैसें एरी आज लाज गेह काजके समाज नेह टरिगो। सांवरो सलोनो दृग ताकि तिरछौनो मोहिं नन्दको ढोठोनो अरी टोनो कछु करिगो ॥ ३ ॥ गिरिधर ॥ सवैया ॥ आज लख्यो यमुना तट पै नट देखतही मनमो अनुराग्यो । नीरज-नैन मनोहर बैन महासुख ऐन निशारति जाग्यो ॥ पूछन नाम लगी तब मैं गिरिधारन कान सुन्यो रसपाग्यो । केसरि श्याम सुवास सुकेसरि केसरिसी कटि केसरि बाग्यो ॥ १ ॥ व्रजवासीदास ॥ दोहा ॥ जड़ चेतन चैतन्यजड़ सुनतहोत कलबैन । कै विष कै मद कै अमिय किधौं भरे रसमैन ॥ ६ ॥ सोरठा ॥ गृह वन कछु न सोहाय सुनत श्रवण वह मधुर धुनि । गृह कारज बिसराय चकित थकित सी ह्वै रही ॥ ६ ॥ दोहा ॥ अब तो मोहिन सूझ नहिं बिनु यह मृदु मुसुक्यानि । कापै न्यारो होत रँग हरद चुनो रस आनि ॥ १० ॥ सोरठा ॥ मेटि लोक कुलकानि पतिव्रत राख्यो श्याम सों । यहै बनी अब आनि भलो बुरो कोऊ कहै ॥ ७ ॥ दोहा ॥ जप तप संयम नेमतें प्रभु प्रगटत पाखान ॥ तातें सब तप कीजिये और उपाय न आन ॥ ११ ॥ सोरठा ॥ कीजे यह दृढ़ नेम प्रात न्हाय यमुना नदी । पूजें शिव करिप्रेम तौ पावहिं पति करि हरिहिं ॥ ८ ॥ शिव पार्वती ध्यान ॥ गंगाधर ॥ क० ॥ एक ओर लसे हैं ललाट माहँ इंदुखंड एक ओर लसे है सुचंद्रिका अमोल की । एक ओर गंगधार जटाजूट राजत है एक ओर राजे शीश बेनी मुक्तलोल की ॥ एक ओर कान में सु-

सोहै फन व्यालनको एक ओर सोहै छवि कुण्डल
डोलकी। एक ओर नूपुर निनाद बहुरंग सोहै एक ओर
नाद सोहै भोगिन के बोलकी ॥ ४ ॥ प्रसाद ॥ एकपांव
हरि पै बिराजे हैं वृषभ एक आधो अंग बाम आधो
पौरुष सों पूरो है । एक कर चूरी कर एक में त्रिशूल
लसे आधे मुख पान आधे चाबत धतूरो है॥ एक ओर
जेवर जरावदार राजत है एक ओर मुण्डमाल जालन
तें रूरो हैं। भनत प्रसाद गति ईशकी अपार देखो एक
ओर जटाजूट एक ओर जूरो है ॥ ५ ॥ प्रथम भगवती
की स्तुति ॥ गोप्यऊचुः ॥ छप्पै ॥ देवदत्त कृत ॥ शुभग
सिद्धि शुभवृद्धि सकल संतत सुखकारिणि। दुर्गति दुर्ग
दुरंत दुःख दारुण दरदारिणि ॥ शरणागतनैपुण्य पु-
ण्य कारुण्य विहारिणि ॥ जगत निरूपित रूप भूप
भूप द्युति हारिणि ॥ निर्मर्ष मर्ष हर्षित वचन सुरनरर्षि
हरि हरनुते । सुमतिघ्न विघ्नमपनय विभो जय जय
जय गिरिवरसुते ॥ १ ॥ शिवजी की तथा ॥ अन्य ॥
जय गिरीश गौरीश जयति जगदीश वरदवर । ज-
यति भाल भूषित बिशाल शशि व्याल मालधर ॥ ज-
यति गंग शिर संग रंग रंजित विभूति कर । जयति
शंभु हरदंदु कंबु दुति अंग अंग भर ॥ जय महेश अमरे
श प्रभु ध्रुव दिनेश दुरमति दरण। जयप्रमथनाथ भव-
नाथ जय भूतनाथ भवभयहरण॥ २ ॥ व्रजवासीदास ॥
दोहा ॥ तुम सरवज्ञ सुजान शिव जानत जन मन पीर।
परम दान दीजै अबै सुन्दर वर बलवीर ॥ १२ ॥ सो० ॥
यह वरदान न आन शिव तुमसो याचत अहै। कृष्ण

कमल पद ध्यान रहे हमारे उर सदा ॥ ९ ॥ सं० ॥ उमा उमापति आय प्रगट कह्यो व्रजतियनसों । नन्दसुवन व्रजराय मो वर तैं वर पायहौं ॥ १० ॥ दोहा ॥ तुलसी हुलसी गोपिके पूजति किती कुमारि । गोपति मोपति होय हरि यह मनमाहिं बिचारि ॥ १३ ॥ गिरिधर ॥ स० ॥ भवताप मृगानके मारनको दुरसी वरकेहरिके कुलसी । गिरिधारन जाके जपेसों सदा दुरबासना जात सबै भुलसी ॥ लखि मंजरी मंजुल पापकी सैन फिरै दशहूं दिशि व्याकुलसी । पुलसी भवसागर को जुलसी हरि हीय सदा तुलसी हुलसी ॥ २ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ हरि मोपै जैसी कृपा राखत गोपकुमारि । मो वर तैं तुमपै सदा राखै कृपा मुरारि ॥ १४ ॥ किती गोपिका यमुनको पूजन करत विशेश । किती धेनु पूजन लगीं जाते मिलै व्रजेश ॥ १५ ॥ यमुनाजी की स्तुति ॥ गिरिधरदास ॥ सवैया ॥ अघ औगुन ओघ नशै छनमें मनमें मुदमेह सदा वरसै । गिरिधारन काम औ कोह रहै नहिं मोह औ द्रोह नहीं गरसै ॥ मद लोभ औ क्षोभ भगोई रहे कलिकाल कबो न मने करसै । दरसै नहिं दुःख सुखै सरसै यमुना परसै यमुना परसै ॥ ३ ॥ क० ॥ आवति अनूप सूर मण्डल तें इयाम रूप भरी भूरि भाग भानु भामिनि अनंदनी । अतिहहरात घहरात थहरात पाप धुज फहरात धारा कलुषनिकंदनी ॥ गिरिधरदास देव नागरी न होवैं नित तिनतैं बिराजमान इयाम चित्त फंदनी ॥ सोहै अरविंद औ मिलिंद वृंद वृंदन सों शिखर कलिंदके कलिंद गिरिनंदनी ॥ ६ ॥ धेनुकी स्तुति ॥

यथा ॥ स० ॥ तोमें बसें सबै देव सदेव भल श्रुति गान करे गुण गीतें । प्यारी महागिरिधारनकी सुखदानि सदा जगकी धरि प्रीतें ॥ साधति लोक दुहूं दुख बाधति ध्यावत आवें सबै रसरीतें । शत्रुन जीतें बितीतें पराजय हे सुरभीतें हरे सुरभीतें ॥ ४ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ यमुना धेनु दुहून यह दियो तिन्हें वरदान । जो नर बरबर चित चढ्यो सो वर [illegible]लिहै आन ॥ १६ ॥ किती गोपिका नियम करि न्हाय यमुन महँ प्रात । व्रजपति निजपति होन हित पूजत है जगमात ॥ १७ ॥ गिरिधर ॥ स० ॥ तेरोई रूप रच्यो जग है यह तोसो बनी सबहीन की काया । तूही रमा परमा औ उमा है तूही अजा औ विरंचिकी जाया ॥ तू गिरिधारन भक्तिहिं दाति है तो गुण वेद पुराणन गाया । संकट मोहन दै पति मोहन तू जग मोहन मोहन माया ॥ ५ ॥ अथ चीरहरणलीला ॥ सं० ॥ दोहा ॥ व्रत पूरण दिन नारिगण नांगी रहीं नहाय । आय श्याम सब बसन लै चढे कदमपै धाय ॥ १८ ॥ गिरिधारी ब्राह्मण ॥ क० ॥ यमुना नहात हरि लीने हरिगोपिनके चारु रंग रंग वारे चीर रूपरासी है । कहै गिरिधारी एके धानी धूरधानी एकै आसमानी कुसुमानी कासनी प्रकासी है ॥ केसरियाँ काकरेजे कंजई सुनीले एके चंपई बसंती एकै पैजनी चिभासी है । एकै गुलनार गुलनारंगी गुलाबी एकै गहब अबीरी आबबासी औ गुलासी है ॥ ७ ॥ नबीन ॥ एकै पत्रिताती एकै खाती हैं बचा की सौंह एकै सतराती करैं बतियां कपटकी । एकै मुसकाती एकै छाती धरै दौड़

हाथ एके थरराती मारे शीतके झपट की ॥ चीर चोरि आपुन अजानसे सुजान दूर दुरि दुरि देखें देखी घात नटखटकी । बंशीबटतट ठाढ़े यमुना पुलिन जहां बंशी को बजैबे रुहरान पीतपटकी ॥ ८ ॥ गिरिधारी ब्राह्मण ॥ न्यारीह्वै हु नीरतें तो देहिंचीर ऐसेसुनि न्यारी भई नीरहूतें तीरहु कढ़े कढ़े। कहै गिरिधारी देत कसन बसन श्याम रमा पिरानी हाहा बिनती पढ़ेपढ़े ॥ मीत जो महीके बीच नीचकरि पावती तो कौतुक दिखावती बिनोदन बढ़ेबढ़े । छीनलेती अंबर पितंबरसमेत अब कहौ कान्ह बातें जु कदम्बन चढ़े चढ़े ॥ ९ ॥ गिरिधारी ॥ अबला हैं एक पुनि ब्रतसों कृशित गात तामें लाज भीतरही मारति बली जिये । आरतिहरण नाम आरति हरहु किन शीत भीत नारिनको दुखन पतीजिये ॥ गिरि-धारीदास मास अगहन पूरोभयो जलमधि प्रातकाल देखि कृपा कीजिये । लागत समीर धीर भागत बढ़त पीर एजू बलबीर मेरे चीर डारिदीजिये ॥ १० ॥ गंग की वा तोखकी ॥ स० ॥ इकदीनी अधीनी करैं बतियां जिनकी कटिखीनी छलामै करैं । इक रोस भरी अफ-सोस करैं इक जोस की आंखें ललामै करैं ॥ कबितोख जुरीजुरि जंघन जोरि सुद्वैभुज श्यामै ललामै करैं। निज अंबर मांगैं कदम्ब तरे ब्रजबामै मुलामै कलामै करैं ॥ ६ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ निकसि नीर इकठौर सब ठाढ़ी ह्वै करितीर । दुहु करजोरि निहोरिहौ तबपैहौ यह चीर ॥ १९ ॥ यों सुनि आईं सकल तब बसन दये हरिडार । और कह्यो मैं तुमनि हित करिहौं रास बिहार ॥ २० ॥

इति चीरहरण लीला ॥ अथ हरि राधा विवाह वर्णन ॥
तहां प्रथम श्रीराधाजीकी शोभा वर्णन ॥ यथा ॥ सं० ॥
बिरची बिरंचि जाकी ज्योतिको उजासो लखि चंद अरु
सूरहूकी भई मंद मतियां । कहै विप्रबल्लभ त्यों ताके
तनक ताके तें अहो ब्रजराजकी जुड़ायजात छतियां ॥
नागरि नवेली ऐसी दूजी ना बिलोकी कोऊ जाके ढिग
आये ते रतीक होत रतियां । सुवरन सो स्वरूप लस्यो
सौरभ सुगंध भरो नेह भरी आंखैं औ सनेह भरी ब-
तियां ॥ ७ ॥ गिरिधरदास ॥ क० ॥ आननकी उपमा
जो आननको चाहै तोहू आन न मिलैगी चतुरानन बि-
चारेको । कुसुम कमानकी कमानको गुमान गयो करि
अनुमान भौंह रूप अति प्यारेको ॥ गिरिधरदास दोऊ
नैन वारिजात पर वारिजात वारिजात मानसर भारेको ।
राधिकाको रूप देखि रतिको लजातरूप जातरूप जा
रूप जातरूप वारेको ॥ ११ ॥ श्रीकृष्णचंदजूकी शोभा ॥
यथा ॥ लोचनकी लोलता लुनाई कहिसकै कौन एकसंग
कंजन औ खंजनको हारिदई । बैन मधुराई सुनि सुधाहू
लजाई नौल नासिका सुहाई कीर किम्मति उतारिदई ॥
गिरिधरदास अंग अंगनकी कोमलता महिमा गुलाब
आदि फूलनकी टारिदई । रसपति रसापति रतिपति
शोभमानो करिके इकत्रबिधि सांवरेमें डारिदई ॥ १२ ॥
पुनः श्रीराधिकाजूकी ॥ सं० ॥ राधाको मुखारविन्द देखि
अरविन्दचन्द बूड़े जाय दोऊकहूँ उदधि अगाधामें । ताके
पद कञ्जन विलोकि विप्रवल्लभकी पूंजी सब साधा पूर्व
पुण्यके अराधामें ॥ चम्पा नहिं सम्पा नहिं कनकलताहू

नहीं पावेना समता कबूँताके अंग आधामें । बिधिना बनाई है न बिधितैं बनैगी ऐसी राधिकाकी छबिसी छबीली छबि राधामें ॥ १३ ॥ पुनः श्रीकृष्णचन्द्रजूकी ॥ नवीन ॥ जैसी कल कलँगीकी झुकीली जोर राजत है तैसिये बँकीली पाग सोहै रंगराती है । कुण्डलकी झलकी कपोलपै अमोल भासै बेंदी सुखरासै शोभा हिये सरसाती है ॥ बाँके श्रीबिहारीकी निसांकी बाँकी झांकी देखि कोटि उपमाकी गति मति होत हांती है । लटक कटीली हिये खटकि खटकि आवै चन्द्रिकाकी चटक अटक मन जाती है ॥ १४ ॥ दुहूँनको दर्शन मिलाप यथा ॥ नागर ॥ सांझी फूल बीनबेको गईही सखीन संग तहां हीं रँगीलेलाल आय द्वारमें ढुरे । रसिक रसाल दियो चाहे उरमाल तब बाल नँदलाल हँसि आगे हाथ लै करे ॥ उरझी चितौनि स्वेद कम्प सुरभंगभयो नागरिया नागर अनंग रंगसों भरे । राधेजू दियो है हार मोतिन को मोहनको मोहनजू छैके हार राधेके गरे परे ॥ १५ ॥ साहस सँभारश्याम आगे आये राधेजूके रूपको अतूल भार परत न सह्यो है । बीच नील अम्बरके बदन मयङ्क मानो चातक चितौनमें चकोरवत लह्यो है ॥ पायँ डिगुलात जात पीतपट छूटगयो नागरिया निरखि मन धीरन गह्यो है । पगे नैनबैननमें चैनन परत मन राख्यो चाहे हाथ पर हाथमें न रह्यो है ॥ १६ ॥ बिक्रमसतसई ॥ दुहुँनकी दशा ॥ दोहा ॥ हरि राधे राधे सुहरि करि निशि, दिन कर ध्यान । राधे मुख राधे लगी रट कान्हैर मख कान्ह ॥ २१ ॥ सं० ॥ निरखि परसपर दु-

हुँन चित अति उपज्यो अनुराग । तब बुलाय अज हरिरच्यो निज त्रिवाहको जाग ॥ २२ ॥ ब्रह्माको राधा जूके अपूर्व दर्शनते मोहभयो सो यथा॥ क० ॥ राधिका की सुखमा निहारिके बिरंचि कह्यो सपनेहू न ऐसी नारि रची करि साधामें । शची रची रती रचीरंभा उरवशी रची पैन छबिपाई याके कोटि अंश आधामें ॥ तब चित चेति बिप्रबल्लभ बिचारयो यह दैववश परी आय मेरी बुद्धि बाधा में । मेरी या बनाई हैन चाहौं तौ बनैन याते राधिकाकी छबिसी छबीली छबि राधामें ॥ २३ ॥ सो० ॥ निरखि रूप अजगूत राधाजूको चकित अज । ह्वै तब अतिहि सकूत भूल्यो रचना चातुरी ॥ ११ ॥ दो० ॥ हरि अजकी लखि यह दशा कह्यो तजहु भ्रमजाल । द्रुत भाँडीर समीप चलि करो ब्याह ततकाल ॥ २३ ॥ सुनि हरि बचन सचेत ह्वै धरि धीरज तिहिं तीर । बैवाहिक हरि राधिकहिं पहिराये वरचीर ॥ २४ ॥ गिरिधरदास ॥ क० ॥ केसरि बसनबर केसरिकी खौरिशिर लटकन बेसरिको बिधुसम बनो है । धरे करकंगन उमंगन सों भरे अंग अंगन सुढंगपनो मनो बिधितनो है ॥ गिरिधरदास इतै मौरी उतै मौर शिरजोरी चितचोरी करे रूप शोभा सनो है ॥ ऐसी बनी ऐसी बनी जाकी जनी सिंधुजनी लागै बनो ऐसोजनो काम याको जनो है ॥ १७॥ स० ॥ सिर सारी जरीकी भरी छबिसों दरसै मणि हेम जरी कुलही । मुसुकानि परसपर सोहतहै रतिमन्मथसी सुखमा उलही ॥ गिरिधारन कीरति कन्या लसै अलकैं झलकैं सुभ्रुलाभ्रुलही । तुलही रतिहै सुलही दुंहुनै

सुलही से लसै दुलहा दुलही ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ हरि इच्छातैं सकल तयारी । भई तहां जग आनँदकारी ॥ सुन्दर तने बितान सुहाये । मणि झालर महँ रतनु जड़ाये ॥ चारु चोप चामीकर केरी । कलश लगे वर कान्ति बड़ेरी ॥ सरस फरस दरसत रुचिकारी । चारु सिंहासन शशि छबि धारी ॥ १ ॥ सं० ॥ द्रो० ॥ रचि बेदी कुशकण्डिका करि लाजाहुति कीन । बिधि बिधिते संकल्प करि राधा हरिकहँ दीन ॥ १५ ॥ करि अस्तुति करजोरि अज कहत सुनहु मम देव । राधा माधव पदनकी जनि भूलै मोहिं सेव ॥ २६ ॥ गिरिधर ॥ इमि स्तुति करि बन्दि पद गये बिधाता धाम । राजें अति अभिराम तन सुन्दर श्यामा श्याम ॥ २७ ॥ सोर कुञ्ज करि ब्याह सुख गये कुञ्जके धाम । केलि करी मनभावती भावत श्यामा श्याम ॥ २८ ॥ इमि दम्पति रसकेलिकै आये निज निज धाम । कोउ न जान्यो चरित यह जो कीनो घनश्याम ॥ २९ ॥ इतिश्रीमदादिगौड़दुर्ग्गागर्भजश्रीकाशीनाथात्मजविप्रवल्लभविप्रकृते रसिकोल्लासभागवते जलानयनेनहरिदर्शनेन पूर्वानुरागजातेनन्दनन्दस्यस्वस्वनिजपतिर्भवतीतिवाञ्छयागोपीनांशिवपूजनव्रतस्नान नियमचीरहरणराधामाधवयोर्विवाहवर्णनंनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ गिरिराजधारणलीला ॥ गिरिधरदास ॥ दो० ॥ सुरपति पूजन हेत तहँ निरखि बड़ो सम्भार । हरि नँद सों तब यों कह्यो पूजत इन्हैं गँवार ॥ १ ॥ इन्द्रादिक ये जीव सब सदा करम आधीन । इनसों का कारज सधे

इनहिं भजें मतिहीन ॥ २ ॥ सबसों पर भगवानहैं जग जिनको खिलवार। पूजहु तिनकहँ ब्रजअहैं सो धरि गिरि अवतार॥ ३ ॥ चौ० ॥ यहीबातसबकेमनमानी। साँचकही केशव सुखदानी ॥ तब सब शकटसाजि नर नारी। गिरि पूजन आये रुचिकारी ॥ तहां पुरोहित आप कन्हाई। सबन पुजावहिं गिरि समुझाई ॥ मंगलगीत बजे बहुबाजा। पढ़ें मंत्र वैदिक द्विजराजा ॥ २ ॥ छप्पै ॥ प्रथमनीर नहवाय बसन सुंदर पहिराये। शीश तिलक आभरन फूल हारन गरनाये॥ धूप दीप करि भोगधर्यो पकवान अनेकन । पूजत सुरभी विप्र अगिनि होमत करि टेकन ॥ तेहि काल सहस भुजधारि हरि गिरि तैं कढ़ि सुखमामये। हमशैल भये परसन्न कहि करन लगे भोजननये ॥ १ ॥ दोहा ॥ अन्नकूटकी छबि कछू मोतें कही न जाय। मध्यशैल तहँ भातको नगसो बड़ो लखाय ॥ ४ ॥ कै ब्रज सुसज इकत्र सब कै सोहत कैलास। कै सगुननकी राशि कै ओदन गिरिधरदास ॥ ५ ॥ सोरठा ॥ इमिकरि भोजन सर्व नग नगजग जगमें करन। दैबर सबन अखर्ब आपुन अन्तरधान भे ॥ १ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ अपर मूर्ति निज श्यामधरि नाम सुकरि गिरिराज । पूजतभे ब्रजजन सहित लोपि इन्द्र मख साज ॥ ६ ॥ क० ॥ लोप लखि मखको सुकोप करि इन्द्र तब ब्रजहिं बहायबेको हुकुम लगायो है । शासन सुनत पाकशासन को मेघ वृन्द उमड़ि घुमड़ि करि चाहत बहायो है॥ पारावार बीचीसी सुवीची ब्रजवीथी लखि गोपतिकुमार विप्र बल्लभ सुधायो है । छपन पहर

ई छताकंसों छिगुनिपर छितिधर धारि ब्रजमण्डल
बचायो है ॥ १ ॥ पदमाकर ॥ मेघराज साजके समाज
दल बादल लै बरसै झकोर बुंद गोकुल शहरमें। कहै
पदमाकर त्यों नीरके झकोरनि तैं गेह भहरान लागे
डगर बगरमें ॥ ब्रजके सुआसपास प्रलै जलधार बहै
रहै नदनदी सिन्धु एकनो लहरमें। गोकुल मै कान्हनै
गोवर्द्धनको छत्रकियो छींट न परनपाई छप्पन पहरमें ॥
२ ॥ घनश्याम ॥ पाय पाकशासन की शासन को मेघ
वृन्द नन्दजूके धामको सुघेरो बेगि आयके । कस्यो
अंधकार चहुँओर घोर कोर निधि करैं ब्रजपात घह-
रात अति छायके ॥ सबै गोप गोपिका पुकारैं घनश्या-
म एजू धारा भहरात अब राखो इतआयके। गाय थ-
हरात कहरात ग्वाल बाल खरे झरी झहरात अब रहे
कित आयके॥ ३ ॥ ब्रजधर बांकुरो बहायबे को आयो
ब्रज बारिवाह वृन्द संग वायुके बरूथलै। शोर चहुँओर
घोर कै कै ठौरठौर दौर दौर सब ढांके निज मेघमाल
जूथलै ॥ भाखैं सब ग्वाल बाल लालजू बचावो किन
खाई तुम भेंट हम पूजे मालगूँथलै। आरत पुकार सुनि
धायआय यदुराय गिरिको उठायके बचायो ब्रजभूथलै
४ ॥ कोपि शुनाशीर बीरधीर लै घटान संग घटाटोप
कीनो ब्रजगोपन प्रचारिके । दामिनी दमकदीह देख
त दरारकरै हियेमें चहूँघां छाई नभशोर पारिके ॥ ग्वा-
ल बाल लालको कहत प्रतिपालकरो सबको जुकाल
इहिकालयों पुकारिके । देवपति गर्वको मिटाय खर्ब
कीनो सर्व धौराधर धाररोकी धराधर धारिके ॥ ५ ॥

ठाकुर ॥ गोपी गोप गैयन पै ब्रजके बसैयन पै का-
मघवाको लोक अकबक जोहेरी। खल बल देखिकह्यो
आवो आवो आवो इतै सबही बचाये चाव आपनो अ-
नोहेरी ॥ ठाकुर कहत प्यारी सांवरो वदन पेखें लेखें
धन्य भाग देखें कौन मनमोहेरी। छिगुनी पै गिरिसोहैं
गिरिपर जलधार जलधार ऊपर सुहाये मेघ सोहेरी ॥
६ ॥ थाम्हैं किती गोपिका उठायकर डंगरको प्यारे कर
भारी भार देखिना सकति हैं। केती पदशीश दरैं चूमैं
भुज केती खरी केती ह्वै चकोरी मुखचन्दहि तकतिहैं ॥
केती गुणगावैं ईश जानिके मनावैं केती केती गोपवारी
गिरि छ्वैबे उचकतिहैं । केती भरैं भांवरी हियेमें धरि
ध्यावैं केती केती भरि आनँदमें बावरी बकतिहैं ॥ ७॥
बावरी बातें यथा॥ भृकुटी कमान तानि फिरति अनो-
खी कहा कहत किशोर कोर कज्जल भरेहैरी। तेरे दृग
देखे मेरो कान्हर डेरात इतै मघवा निगोड़ो अबै रोस
पकरे हैरी ॥ कीरति कुमारी है दुलारी वृषभानुजूकी
मेरी कही मान तेरो कहा बिगरेहैरी । चंचल चपल
ललचौहैं दृग मूँदि तौलौं जौ लौं गिरिधारी गिरिनखपै
धरेहैरी ॥ ८ ॥ जायँ जनि या समै तू राधे सुनश्याम
पाहिं बारबार तोहि करजोरि कहि हारीरी। भारी गिरि
भार करमाहिं लै उचायो हरि तातरे दुरेहैं गाय गोपि-
का बिचारीरी ॥ तेरे नैन तेरे बस नाहिं कहौं सांची मैं
तो लाल ललचैंहैं लखिरूप उजियारीरी। स्वेद कंप ह्वैहै

मोहि हँसे उनकी तिहारी मेरी डीठ इक झोरती। कर कटि लचकी मति गति भईही ढीली ब्रजवन बूड़िबे में कसर न कोरती॥ ताही समै मानकी सहायभई घन-श्याम नातो पकवाननकी कसर अकोरती। गालकाहे मारतहौ गिरिधाख्यो गिरिधाख्यो गिरि गिरि तोई नेक भौंहन मरोरती॥ १०॥ गिरिधारीदास॥ चौपाई॥ सात दिवस बरस्यो जलजोर। परी न एक बूंद कोउ ओर॥ लखि आचरज इन्द्र घन फेरे। आयो लै सुर-भी हरिनेरे॥ तब हरि गोवर्द्धन महिधारो। निकरे गोप भयो सुखभारो॥ गिरि हरिचरण सहस चख तबहीं। कह करजोरि निहारहिं सबहीं॥ ४॥ इन्द्र वज्राछन्द॥ गोविंद गोवृंद गतार्त बंधो। गोपाल गोपाल दयैक सिंधो॥ नंदप्रिया नंदक शत्रु हारिन्। मां पाहि रक्षोंतक शैल धारिन्॥ १॥ दामोदरामोद दमोदशालिन्। कंजाक्षकं जाबरकं जमालिन्॥ शैलांग जे शार्च्य विनोदकारिन्। मां पाहि राधा वरशैल धारिन्॥ २॥ कन्सारिकं जास्य महासुरारे। सर्वाज शक्रार्कपते मुरारे॥ सर्वावतारादि सदावतारिन्। मां पाहि मां पाहि-पशैल धारिन्॥ ३॥ गुंजा धराभीरज कुंजगामिन्। स्वामिन्सुभद्राग्रजभद्र कामिन्॥ गोपांगना पुंजमनो विहारिन्। मां पाहि शैलार्चक शैल धारिन्॥ ४॥ राम प्रियश्याम बकाघनाशिन्। कालिंद्रिका कूल कलाविलाशिन्॥ गोवर्द्धनोद्धारन कुंदहारिन्। मां पाहि लोकार्च्चितशैल धारिन्॥ ५॥ शंखार्य्य कूपार नृसिंहमूर्त्ते। क्षमाधार विप्रा गजयज्ञपूर्त्ते॥ मायापते शत्रु समूह मा-

रिन् । मां पाहि शंभू प्रिय शैल धारिन् ॥ ६ ॥ सीता पते पातक शीतभानो । हेताटिका तूल महाकृशानो ॥ धेनुप्रियानन्तदिगंत चारिन् । मां पाहि पद्मापति शैल धारिन् ॥ ७ ॥ विश्वाकृते विश्व विभाव कारिन् । गोलोकनित्यास्पदशोकहारिन् ॥ वृन्दावनानन्दसदाविहारिन् । मांपाहिशंकारकशैलधारिन् ॥ ८ ॥ अनुष्टुप ॥ ये पठिष्यन्तिमनुजादनुजारिकृतंस्तवम् । तेप्रयास्यन्तिगोलोकमनादिमनघंनवम् ॥ १ ॥ दो० ॥ इमि अस्तुति करि बन्दि पद कामधेनु पय ल्याय । करत भयो अभिषेक तहँ सुरन सहित सुरराय ॥ ७ ॥ हरिगीती ॥ अभिषेक कह करतो भयो सुरराज तहँ व्रजराजको । सुर नारि गावहिं गीत बहुविधि धन्य दिन यह आज को ॥ बरषहिं विवुधगण सुमन बहु विधि वचन जय जय बोलहीं । लखि मुदित सब व्रजनारि नर बड़भाग निज कहँ तोलहीं ॥ १ ॥ सो० ॥ इमि गोविंद न्हवाय शिर नवाय देवनसहित । धाम गयो सुरराय संग लिवाय सुरभी अभय॥ २॥इतो बड़ो अपराधु क्षमा कियो पदपै परे । को जग हरिसम साधु दीनबंधु प्रणतार्ति हर ॥ चौपाई ॥ मुदित गोप गावहिं अरु नाचहिं । मिलत परस्पर अति रस राचहिं ॥ सब हरिभुज पूजहिं छवि छाये । धन्य श्याम गो गोप बचाये ॥ ५० ॥ यशुमति अंक लगावत श्यामहिं । भये नंद मनपूरण कामहिं ॥ तब हरि पै शंका करि गोप । कहत नंदसों भये सचोप ॥ ६ ॥ जादिनसों हरि जनम सुलीनो । करम अमानुष सब कछु कीनो ॥ तातें सांच कहौं व्रजनायक । किहि कारण

सुत सब सुखदायक ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तबहि नंद तिनसों
कह्यो गरग वचन समुझाय । सुनि सब शंका तजि
भये मुदित गोप समुदाय ॥ ८ ॥ इति गोवर्द्धन लीला ॥
अथ वरुण के लोकतें नंदजूको ल्यायबोयथा ॥ सं० ॥
दोहा ॥ एकादशिव्रत जागरण करिनँद गये नहान । व-
रुणदूत जलयमुनतें पहुँचाये निजथान ॥ ६ ॥ व्रजवासी
दास ॥ भयो वरुण अति हरष मन पुनि पुनि पुलकित
गात । नन्दहि ल्याये भवन मंम भली करी यह बात ॥
११ ॥ सो० ॥ जाहि धरत मुनि ध्यान निगमनेति जिहिं
गावहीं । सो प्रभु कृपानिधान ऐहैं धनि धनि भाग मम ॥
३ ॥ दो० ॥ अति व्याकुल यशुमति भई उठी रोय अ-
कुलाय । सुनि धाये व्रजलोग सब खोजत नन्दहिजाय ॥
१२ ॥ सो० ॥ यमुना तट सब जाय नन्दहि खोजत
टेरि सब । ढूँढ़ि फिरे सब ठाँय भये बिकल व्रजलोग
तब ॥ ४ ॥ सं० ॥ इमि व्रज जन लखि नाथ गये वरुण
के धाम तब । तेहि लखि नायो माथ हरि चरणन अति
मुदित ह्वै ॥ ५ ॥ व्रजवासीदास ॥ दो० ॥ विविध भांति
प्रभु पूजिके वरुण कह्यो गहि पाँय । कृपासिन्धु करिकै
कृपा दरश दियो मोहिं आय ॥ १३ ॥ सो० ॥ मैं कीनो
अपराध सो प्रभु उर नहिं आनिये । क्षमा समुद्र अ-
गाध क्षमा करहु निज जानि जन ॥ ६ ॥ दो० ॥ करि
अस्तुति रानिन सहित पुनि पुनि धरि पद शीश । लै
प्रभुको नँदराय ढिग तबहिं गयो जलईश ॥ १४ ॥
सो० ॥ हरषि उठे नँदराय देखि श्यामको शशि बदन ।
लखि प्रभुको प्रभुताय रहे मुदित चकित चितै ॥ ७ ॥

धनि धनि ब्रज नर नारि कहत हमारे भाग वश ॥ हम सँग करत विहार श्रीबैकुण्ठनिवास हरि ॥ ८ ॥ इति नन्दानयन ॥ अथ ब्रजवासीनको बैकुण्ठ दिखरायबेकी लीला ॥ सं० ॥ दो० ॥ ब्रजवासिन हरितें कह्यो दिखरावहु बैकुण्ठ ॥ जिहिं स्वरूप तुम तहँ रहो सोऊ रूप अकुण्ठ ॥ १५ ॥ गिरिधर ॥ तब तिनसों हरि इमि कह्यो मूँदहु अपने नैन । सुनि तिमि तहँ करि खोलि पुनि लखन लगे हरि ऐन ॥ १६ ॥ नागर ॥ क० ॥ महातेजवानहै प्रकाशवान जैसे भान बाढ़े चकचौंध आंख आंखनसों जुरी मै । देख्यो बैकुण्ठनाथ शंख चक्र गदा हाथ लागे भय भारीना कहत बात दुरी मै ॥ बोलत न डोलत कलोल तन नागरये हाहाकार चुपचाप देखी रीति बुरीमै । अब न सहेंगे ब्रजमारग गहेंगे यहां हम न रहेंगे भैया टकटक पुरी मै ॥ ११ ॥ कहां वह वृंदावन कहां यमुना कूल फूलनको हार गुंज गहनो बनायबो । बहुविधि खेल नंदलाल अंग संग सदा आनँद मगन ह्वैके मुरली बजायबो ॥ घनन को घोर पिक मोरन को शोर कहां बंशीबटतट गैया हेरी दै बुलायबो । ब्रजसुख छायो केलि नागर भुलायो मन हमको न भायो बैकुण्ठहूको जायबो ॥ १२ ॥ गिरिधर ॥ सोरठा ॥ इमि दिखाय निज धाम पुनि ल्याये गोकुल सबन । करत चरित घनश्याम बहुविधि जनहित रूपधरि ॥ ९ ॥ अथ दानलीला ॥ मुबारक ॥ स० ॥ मोपहँ मांगत दान मुबारक दानिनियो उपज्यो बलि भूपर । घाटि कहा नँदसों वृषभानु कि गाय कि गोरस गांव अनपर ॥ सो अतिशी पर मेलत

हाथ बिलोकिय लंगर खेलत जूपर। फूल्यो फिरै यह ऐंठ्यो अहीरको दामरि डेढ़की कामरी ऊपर॥ १॥ पद्माकर॥ आखिर जाये अहीरहि के जिय जानत नेक न मेरो सुभाय हौ। दै दधिदान जुपै सुरभ्रों पद्माकर फेर कहा अरुभ्रायहौ॥ जो रस चाहत हौ तुम सांवरे सो रस गोरस रोके न पायहौ। पैहौ कबै जब गोधन गायहौ बेणु बजायहौ मोहिं रिझायहौ॥ २॥ नबीन॥ भोरहिं टोकत खोरहिं तू यह नंदकिशोर है खोर बड़ेरी। देखन संग कुसंग बिचार जिभार बुलावत जीभ घनेरी॥ दूरहिंतें बतरावरे सांवरे जो कहुँ छीगई आंगुरी मेरी। दाऊकी सौं न बचाऊंगी आज मैं छीनही लेहुँगी कामरी तेरी॥ ३॥ नैननतें न टरेरी नबीन लखी छबि आज जो सोह हितूकी। दोना लिये नँदछौनाकी आवन छाछकी नावन बाल वधूकी॥ जाय गड़ी कुचकोर पै छैलकी चञ्चल चारु चितौन अचूकी। नैन नचाय अँगूठा दिखाय त्यों दै गुलचालई छीन पतूकी॥ ४॥ सूखन॥ कालिह परे पलना पर झूलत आज उगाहन दान लगेहौ। कंस कि याद नहीं तुमको जिनके डर लाल उहांतें भगेहौ॥ पाय सुने तौ बिसाय कहा तुव बंदिपरे पितु मात सगेहौ। सूखन छांड़िये मेरी गली इनबातन केतिक लोग ठगेहौ॥ ५ कालिहही कंसको होत बिध्वंस कहो जिनके रस में रसवानी। बाप तिहारे दई उनको तुम ताहितें कंस बिभौ भरुआनी॥ देतिहौ दान लली वृषभानकी धौं मटुकी पटकौं मनमानी। सूखन नंदकि कानिकरौं नतौ आजही तेरो उतारती पानी॥ ६॥

अन्य ॥ मैं न दैहौं दही सो सही कृश ह्वै हीरही सौं लखापरती हौ । नाहक रार करो हमसों फिर या बन औधि कहा धरती हौ ॥ याही तें नगनेघरमै तू ढपीहो सो हेरि हियो हरतीहौ । रावरहो इनबातनतें नगरो तजिहौ तौ कृपा करतीहौ ॥ ७ ॥ सूरतिमिश्र ॥ क० ॥ खरी होहु ग्वालिनी कहांजू हमैं खोटी देखी सुनो नेक बैन मोतैं और ठाम जाइये । दीजै हमैं दान सोतौ आज नापरबकछू गोरसदै सो रस हमारे कहां पाइये ॥ मही हमैं दीजै सोतो महिपाल कोऊ लखो दह्यो दीजे दहेहौं तौ सीरो कछु खाइये । सूरति सुकवि ऐसे बैन सुनि रीझे लाल दीनी उरमाल निज ग्वारि गरलाइये ॥ १३ देव ॥ राज पौरिया को रूप राधेको बनायल्याई गोपी मथुरातें मधुवनकी लतानमें । टेरि कह्यो कान्हतें चलो जू तुम्हैं चाहै कंस कौन के कहेतें दधि लूटतहौ दानमें ॥ सखा सब संगके डगर डराने देव श्याम सिसियाने से पकरिलिये पानमें । छूटिगयो छबि तें छबीलीकी बिलो-कनिमै ढीली परी भौंहैं वालजिली मुसिक्यानमें ॥ १४ पद्माकर ॥ गोरसको लूटिबो न छूटिबो छराको गुनै टू-टिबो गुनै न कछू मोतिनकेमालको । कहै पद्माकर गुवा-लिनि गुनीली हेरिहरषैं हँसै यों करै झंझट खियाल को ॥ हांकरति नाकरति नेहकी निसाकरति सांकरी गली में रंग राखत रसालको । दीबो दधिदानको सुकैसें ताहि भावत है जाहि मनभायो झार झगरो गुपालको ॥ १५ ॥ गोपिनको प्रेम उन्माद ॥ यथा ॥ बंस॥ शीशलै दहेंड़ी दही वेचनको गई बाल बंसमनिलालकों बिलोकि सधि

रही। दौरीसी फिरत भई बौरी सी बारबार इत उत डोलि आय लालन गली गही॥ तन दही मन दही नैन औ श्रवण दही दही लोक लाज कुलकानि की कहा कही। घर दही वन दही यमुना पुलिन दही मैन दही गलही पुकारती दही दही॥ १६॥ आनंदघन॥ एक डोलै बेंचत गुपालहिं दहेंड़ी लिये नैनन समायो सोई बैन न जनात है। और उठि बोलैं आगे लावरी कहा है मोलकैसो धौं जम्यो है ज्यौं सवादे ललचात है॥ आनँद को घन छायो रहत सदाई ब्रज चौपन पपीहालौं सदाई मड़रात है। गोकुल बधून की बिकान पै बिकाय रह्यो गली गली गोरस ह्वै मोहन बिकात है॥ १७॥ अथऋतु-बिहार लीला॥ तत्रहेमंत॥ सेनापति॥ क०॥ वरषे तुषार बहेशीतल समीर बीर कंपमान उर क्योंहूं धीर न धरत है। राति न सिराति सरसात विथा विरही की मदन अराति जोर योवन करत है॥ सेनापति श्यामहों अधीनहों तिहारी सौंह मिलो बिन मिले शीतपार न परत है। औरकी कहा है सबिताहू शीतऋतुजानि शीतको सतायो धनराशिमें परतहै॥ १८॥ कालिदास॥ कामरी की खोही मोही गोपनकी जाई बाल आई लाल चामरी रजाई परिहरिके। कहै कालिदास पासभई है कंत कंत लीजिये लपेट लपटाय अंकभरिके॥ रैन भैन गरह्यो सजनके बगर कीजै जगर मगर ब्रजभूमि केलि करिकै। पूसमैं कलाधर ये धनको न छांड़ै संग तातेरंग कीजैहिये प्रेम ध्यान धरिकै॥ १९॥ सं०॥ स०॥ पौनको नाहिं गौन जहाँ सुभभौननकी इम शोभ अडोलैं।

है परदा पशमीननके सुवितान बिछावनहू अनमोलें ॥ वल्लभ दीपनकी द्युतिदीपति तैंसिय केसरिगंध सुलोलें। तामधि राधिका श्याम हेमंतहि बैठि करें शुभ केलि कलोलें ॥ ८ ॥ सुंदर मंदिर अन्दरमें बहु बंदरवार विताल अडोलें । है परदा मखतूलनके तिहिं मूलबिछी गिलमें गुलगोलें ॥ वल्लभ दीपक सी मणि दीपति त्यों शुकसारिकके गण बोलें। पेखि हेमंतहिं राधिका श्याम करें तहँ रंग उमंग कलोलें॥ ९ ॥ तूलनतें सुअगार दिवार मढ़ी छिति छात तहां इकमेलें। तूलनको करितूल दुवार किवार मढ़े नरमें पहलेलें ॥ व्यापतहै न हेमंत जहां सुखसों जुरिके सुकरें बहुकेलें। वल्लभ राधिका श्याम तहाँ तरुणीननके सँग कंदुक खेलें॥ १० ॥ पंडितप्रवीन ॥ क० ॥ उझकि झुकाय नेक लचकि लचाय लंक रसना कसकि दाबि दशन अमोलरी। बदन विशाल श्रमसेतको ललित जाल डोलत कलित कचकुण्डल कपोलरी॥ पंडित प्रवीनहार हलत उरोजभार चंचल ह्वै अंचलको उघरि निचोलरी। धन्यधन्य गेंदतोहिं गहते गुलाब कर खेलत नवेली करिकेलिको कलोलरी॥ २० ॥ सं० ॥ दोहा ॥ हे हरि तुमि भवभीततें चाहतभयो कबाब। ह्वै हिमन्त शीतल करो ह्वै है तोहिं सवाब॥ १७ ॥ अथ शिशिर ॥ सं० ॥ ग्रीषमको मोरि मद प्रावसको तोरि रद शरद हेमंतहूको कीनों जिन अंतहै। फेरि विप्रवल्लभ यों मकर सवार ह्वैके रिपुके निकर हेरिघेरत तुरंतहै ॥ कांपत है एकै अंग ढांपत अनेके ऐसे तापत अलेखे सेखे सूरस सकंत है। चारोऋतुजीतिे अब माघ

सित पंचमी को शिशिर समाय धाय बांधत बसंत है॥
२१ ॥ तरणि तेज तरुण तमोल तप्त तोय अरु तेल
तूल हसती त्यों अतर मसालाको । कहै विप्र वल्लभ
यों परदे बनातनके नरम गलीचा बिछयो अतिही वि·
शालाको॥सोहत बितानचहुँ मालनके जालनको फै·
ल्यो इतमाम रंग तानसुर तालाको । पालाको प्रवेश
नहिं पावे तिहिशाला जहाँ लसे बहुबाला मध्यरूप नँ·
दलालाको ॥ २२ ॥ नैन ॥ अन्दर सिकन्दरा के बीच
मखतूल तंबू ललित रँगीले चटकीले शामियाने हैं ।
तामें एक तूलदार रावटी जरीकी खरी ताकी समा देखि
सोनसीर ललचाने हैं ॥ लपट अँगैठिनकी फैल रही
आस पास नैन कवि शिशिर की महिमा बखाने हैं ।
खासे खटछप्परमें रसिक रसीली और बाला अनुराग
भरी गावें रागताने हैं ॥ २३ ॥ शिवराम ॥ यँबेदार रा-
वटी बनाती लाल डोरनमें अगर अँगीठी कस्यो शीत
की भजाई है । कहै शिवराम पशमीने की बिछायतपै
तकथकेरूप सेज सरस सजाई है ॥ मोरछली अलकैं
सुभग शीशफूल छत्र सिंजितको शोर काम नौबत ब-
जाई है । प्यारेके मिलन प्यारी पाई बादशाही रीझि
सौतिनको शालैं दई सखिन रजाई है ॥ २४ ॥ स०
नवीन ॥ लाड़िले फूले फिरें लखिरूप नवेलीकी चारु
चितौनकी जाचें । मंजुल कुंज अलीनकी गुंज विहंगम
पुंजनिपुंज कुलाचें ॥ सेजकी सौज सजै सजनी हँसि
कोक कलानिके मंत्रसे बांचें । नाचे पिकी सुखमाचे म-
हारंति सांचें नवीन बसंतकी पांचें ॥ ११ ॥ पुखी ॥ फूले

अनारन पाहिलू डारन देखत देव महा उरमाचे। माधुरी झोरन आमके बौरन भौंरनके गण मंत्रसे सांचे॥ लागीरही विरही जनके कचनारन बीच अँगारक माचे। सांचिहु कारे पुकारे पुखी कहि नाचैं बनैंगी बसंत की पांचे॥ १२॥ लोनेकवि॥ तालरी बाजतभूरि मृदंग छुटे बहुरंग भयो नभलालरी। लालरी गुंजनकी उरमाल अबीर भरो भरि झोरिन सालरी॥ सालरी होत बिलोके विना नँदनंदन आज रच्यो व्रज ख्यालरी। ख्यालरी लोनेकहा बरने मनमोहन नाचत दैकर तालरी॥ १३॥ अन्य॥ फागमचीमें नचावत कान्हरें आपुनहूँ गति मंद चलै लगी। नाचति गावति दैचुटकी चहुँओर कपोत सी ग्रीव हलैलगी॥ भाव के भेदनहीं सौं भुलायके आयके कोऊ गुपाल गरेलगी। हालदै और निहालकै ग्वालिनि लालके ग्वाल गुलाल मलैलगी॥ १४॥ सं०॥ राजत हैं इहि भांति बन्यो गृह बातन बाति जहां बिन काजें। हैं हँसती हँसती चहुँहां अरु त्यों हँसती व्रजबाल बिराजें॥ पाननको सनमान महा बहुतान तरंगन की धुनि गाजें। वल्लभ राधिका श्याम तहां लखु शैशिरके सुखमें शुभ भ्राजें॥ १५॥ मन्दिर तूल तबील मढ्यो जिहिंमें छत छेदिनही हिमहेलैं। कञ्चनके चहुँ दीपनमें बहु वल्लभ पूरित वासित तेलैं॥ त्यों तरुणी सुअमोल तमोलनि लाय बिरी मुख श्यामहिं मेलैं। चौसर औ सतरंज गँजीफनि राधिका श्याम तहां खुलि खेलैं॥ १६॥ सतरंज॥ योबन रूपको मान भयो तब नेकु नहीं रुखसों रुख मेलैं। चंचल नैन चलाय तुरंग-

नि मान की पील पियादहिं पेलैं ॥ बातनकी सहदेत सखी नहिं मात कि घात अघातन झेलैं । है अपने तनकी गरजी बरजी न रहैं फरजीबँद खेलैं ॥ १७ ॥ रसखानि ॥ क० ॥ वृंदावन कुंजनमें विराजैं दोऊ श्यामाश्याम सतरंज बिछाय बाजीरची है बनायके। बाजी लाई बेसर औ बांसुरी रसाल प्यारी ठहर ठहर चाल चलैं फरजी बचायके ॥ पील दोउ ओर पेलि प्यादन सों घेरि लयो फँसि गयो शाह जब पहुँचे रुखधायके। कहे रसखानि घोड़ा प्यादा संग मात कीनों हँसि तब प्यारी लई बांसुरी छिनायके ॥ १८ ॥ सं० ॥ शिशिर निरखि भवसिंधुसम डरिबिनयो तुहि श्याम ॥ भययाको भंजनकरो हे हरिहोय हिमाम १९ अथवसंत ॥ तत्र वसंतागम ॥ अन्य ॥ क० ॥ कूकि उठी कोकिलान गूंजि उठी भौंर भीर डोलि उठे सौरभ समीर सरसावने। फूलि उठी लतिका लवंगनिकी लोनी लोनी झूलि उठीं डालियां कदम्ब सुखपावने ॥ चहकि चकोरउठे कीर करि शोर उठे टेरि उठी सारिका विनोद उपजावने। चटकि गुलाब उठे लटक सरोज पुंज खटकि मराल ऋतुराज सुनि आवने ॥ १९ ॥ पंचमी वसंत ऋतु आगम जनायो आनि अंकुर जनायो जल ऊपर सरोजने। आंबनके मौरनपै भौंर भहरान लागे फूलनकी बासना सुगंधपिय जोजने ॥ एहो यहि औसर विदेश घनश्याम जात आय इत बूझिय बुलाय पिय जोजने । तार साजे गुनिन शिंगार साजे सुंदरिन कण्ठ साजे कोकिलान कैरव मनोजने ॥ २० ॥ मंद मंद डोलत गयंद सम गंधबाह

गुंजत है मधुप मदंध बिन डरके। रामकहे विविध त्रिलोकिके बहार वन बागन वलंत आज आयो ओज भरिके ॥ संत सब सरके असंतकी कहेको सुनु स्वामिन्नि समंत लघु उर गिरिधरके। पंचमैन प्रगट पुकारि कहै पंचन मैं करत प्रपंच पिक पंच पंचशरके ॥ २१ ॥ वसंत वायु हरिदास ॥ मलय गुलाबी हाथ सुमन पियाले आले चटक गुलाब चाटि चाखत दुवारोसो। भन्नि हरिदास मोद चारो ओर छायोजोर मधुप अलापैराग तालकूक भारोसो ॥ मुनिमन वसन लथोरे नेहबोरे बलिहेरि झकझोरे करे कोरे पिय प्यारेसो। सुरभि कलारकुंज सदन सुछाको बांको मंदमंद आवत मरुत मतवारोसो ॥ २२ ॥ अन्य॥ चंपक न चाख्यो चित्तहू न अभिलाख्यो रससार करिराख्यो ऐसो भाखो और कौन है। मोदन कुमोदनसों मुदित मधुकसों न छाड्यो गुल्लाला त्यों गुलाबहू पै गौन है ॥ मालती मुकुल मीड डाख्यो मन मान्योहै न सोनजुही मौन तजि लीनों मुख मौन है। माधुरी को मधुहू न मधुर मधुपमन जादिन तें चली वन चंदनकी पौन है ॥ २३ ॥ सरस सँवारी राज मंदिरमें फूलवारी मोर करें शोर गान कोकिल रबाबके। सैनापति सुखद समीर है सुगंध हेत हरत सुरतश्रम शीतल स्वभावके ॥ प्यारो अनुकूल केहूकरत करनफूल केहूं शीशफूल पांवड़ेरे मृदुपावके। चैत में बिभातसंग प्यारी अलसात लालजात मुसक्यात फूल बीनत गुलाबके॥ २४ ॥ रंग रंगफूले बेलिविटप अनेक संग देवकी नंदन कहै शोभा यों अनंतकी। त्रिविध

समीर डोलें बोलें पिक प्यारेबोल पुंज अति गुंज गति मोहैं मैन मंतकी ॥ सखिन समेत साजे जेवर जराऊ सबै वसन वसंती शोभा भारी प्यारी कंतकी। बेस बंगला पै बैठे सुनत वसंत राग बाग वन बनक बिलोकत वसंतकी २५ ॥ पल्लव अधर अरु सुमन विकास हास झरत पराग वरवारिज वदनमैं । भ्रमत भ्रमर नैन कुच फल पिक बैन श्वास सुखदेति जानि त्रिविध पवनमैं ॥ रूपगुण यौबन सुहाग भाग अनुराग नाना मोर मंजरी सुजोगनके वनमैं। कीन्हों वस कंत श्रीगुविंद विंद विलसत सहज वसंत शील संत तेरे तनमैं ॥ २६ ॥ चैत चांदनीमैं प्यारीजूको बैठबो यथा ॥ अन्य ॥ चांदनी महल बैठी चांदनीके कौतुककों चांदनीसी फूलीराधे चांदनी महालरें । चंदकी कलासी देवतासी दंवदासी संग फूलसे दुकूल गरे फूलनकी मालरें ॥ छूटत फुहारे तारे झलके अमलजल चमकेचँदोआ मणि माणिक विशालरें। बीच जरतारनकी हीरनके हारन की जगमग ज्योतिनकी मोतिनकी मालरें॥ २७ ॥ सं० सवैया ॥ बौर सुअंब कदम्बनि राजत तापर भौंर सुगुंजतलोलैं । त्यों कचनार अनारकी डारन कैसु कुहू कुहुकोकिल बोलैं ॥ फूल गुलाब गुलालनके चहुँघा प्रति कुंजनि कुंजनि दोलैं। राधिका श्याम सुफूले वसंतहिं वल्लभ फूलसे फूलनिडोलैं ॥ १८ ॥ आमके बौरको मौर लसे शिर त्यों कलँगी गुलसोसन द्योतित । सोनजुही की भँगा अँग अंगनि राजतकोर किनारिन सोतित ॥ वल्लभ विप्र करै विनती चित राधिकानाथ के पायँन यो-

जित । मो हियमै जियमै सुखसों तुम फूले वसंतसे फूलेरहो नित ॥ १९ ॥ दोहा ॥ सोनजुहीसी राधिका अतसि कुसुम सों श्याम । मो हिय चमन वसंतमै फूलेरहै मुदाम ॥ १६ ॥ अथ ग्रीष्म ॥ ग्रीष्मागम प्रताप ॥ चंडकर झारत झकोरत सरोख पौन तोरत तमाल गति मंद दिन भारोसो । धमकै धरणि गिरि तमकै प्रताप जाको आतपसों जारो मद जगत निहारोसो ॥ तरु छीनछांह सर सोखत समुद्र सम अरुन विचार देखो अचरज भारोसो । आवत धुँधात धाव छावत गगन धूरि चढ़्यो चाव ग्रीषम गयंद मतवारोसो ॥ २८ ॥ सं० ॥ वन उपवन को समूह चहुँओर राजै तामें आंनि वल्लभ सुबाग सरसानो है । क्यारी है सुफूलनकी फूलनतें फूलीबहु अमित गुलाब जल भरित खजानो है ॥ छूटत फुहारे चहुँओरन सुधारे तहां अति कमनीय लसे तैसो खसखानोहै । ग्रीषम विषम यह देखन परानो अब जात नहिं जानो वह कहँधों हेरानो है ॥ २९ ॥ झांपनतें झहरैं सुगंध की झकोरें जोर चारूओर फैल्यो सो सुगंध है फरसके । पहरैं पटझीन भीनी अतर गुलाबनतें छूटत फुहारें हार सोहैं खूबरसके ॥ दंपति हुलास भरे पूरण विलासहास करत विहार बाढ़े बसकेपरसके । रसके प्रियाको रूपचसकै दुहूँन चित ग्रीषम दिवसके निवास जहां खसके ॥ ३० ॥ हदेश ॥ चन्दन चहल चित्रमहल हदेश मोहै रसबतियानसों प्रमोद सखियानमें । खासे खस फरस फुहारे फुहीफैल फैल फैलभर शीतल समीर छतियानमें ॥ गोरे गात सोहे गरे गजरा चमेलिनके

हि बरसुघर सहेली अतिस्यानमें । गोदलै सरोजकर रस गुलाब जल छिरकत लाड़िलो ललीकी अँखिया- में ॥ ३१ ॥ भूधर ॥ माधो घामतची भूमि तैसो काम धामधूम प्यारे बनवारी जू न जैये बनचारी में । उबटिक- र चारु चरचिके चन्दनसों छूटत फुहारे सुखसेजन वारीमें ॥ भूधर सुकबिकेहू रबिको न हेरो लाल प्यारी अंग संग रंग रीझ रिझवारीमें । दुपहर तहखाने बाला खाने में रहोरात भोरहोत भौन अथवत फुलवारीमें ॥ ३२ ॥ अन्य ॥ भारीहोत भास मानभास जिनिजानो यह फैली चारु चन्दकी सुचांदनी है गहरी । शीतल सुगंध मंदताई वारि डारियत ज्यों ज्यों अतिचलति प्रचं- ड पौनलहरी ॥ नींदभरे सोये सबभीतरके भौननमें कौन काहि तरजै खरोई कामकहरी । आगेकिनजात घनश्याम सुनो बातइही देश अधरात होत जेठकी दुपहरी॥ ३३ ॥ प्राचीन वल्लभ ॥ महल सुमालतीके चंदन चहल बीच सींचिकरि संदलसों तरकरि राखोंगी । भरभर हर हौं- दन गुलाब सो सिताब आब आफ़ताब नेक कहूं तनक न राखोंगी ॥ खसकी खुसीकी चिकें चकित चहूँघा चारु परत फुँहार फुही फुकरत राखोंगी । वल्लभ बिलोकी जैसी आज ब्रजराज साज काल्हहू सुगंध साजि तैसी साजि राखोंगी ॥ ३४ ॥ हीरनके हौदभरे अतर उशी- रनके चंदन चहल चारु चौकन जरावके । खासे खु- शबोइनके खुलत खजाने खूब छूटत फुहारे भारे केसर के आब के ॥ शीतल सुगंध सेज सुन्दर शिंगार अंग अंग अंगं रागं रंग गोविन्दहि ताबके । चंदनके बंद

नंद नंदन विराजमान सुन्दरि सुछंद आज मन्दिर गुलाब के॥ ३५ ॥ कमल बिछाये वर विमल वितान छाये सोहैं वर छज्जे दरवाज नहिं ताब के। घने घनसारनके रूरे तहखाने तहां खुले हैं खजाने पूरे केसर सहाबके ॥ आईहों बिलोकि मैं तो हालही कलिन्दी कूल पौन अनकूल बहै त्रिविध सुभावके। चन्दन चढ़ाय चारु चन्दनकी सेज साज सुन्दरि सुछन्द आज मंदिर गुलाबके॥ २६ ॥ सं० ॥ स० ॥ मोमद मोहरुमान गुमान सबै जुरिके सुभये इकठारे। ये अरिके करिकै अबधूरि सुचाहन मोहिं अकाशहिडारे ॥ तापनग्रीषम लौं त्रयताप सुबांचनहौ परताप तिहारे। वल्लभ यांचत हे इकयावसु राधिकानाथ सुहीय हमारे ॥ २० ॥ ह्वै रविके अति अंशु अखंड गुमानरुमान यही मोहिं जारै। त्यों मदमोह प्रचंड कुबात यहै करिधूरि अकाशहि डारै ॥ तृष्णहि सोखिलियो हियको ह्रद तो बिन मो अब कौन उबारै। वल्लभ तापत हे यह ग्रीषम हे ब्रजवल्लभ तू न निहारै॥ २१ ॥ दोहा ॥ ग्रीषमलौं त्रय तापतें तप्यो हियो ब्रजनाथ । तुव पदधूरि सुमूरिको देहु भूरिमोहिं क्वाथ ॥ २० ॥ अथ पावस ॥ पद्माकर ॥ देखो कदलीन के पतानि आनि छाई छवि मानो पंचबानके निशान आनि फहरैं । कहै पदमाकर त्यों पौनपुरवाई बहै तैसी उठैं यमुनाकी कोरिकोरिलहरैं ॥ हेरि हेरि हरीहरी भूमि लता हेरत है ब्रजवनितानिके कैसे मान ठहरैं । अटनि पै अटा जिन अटनि पै घोर घटा घटनि पै बिज्जु छटा छोर छोरछहरैं॥ ३७॥ ग्वाल॥ वीरवरषाके जे बनाये

बने बानिक हैं तिन बिन बनैना बहार पंचबानकी। चंचलासी चंचल है चंदमुखी चंचलासी शालाहैं विशाला तामें सजी सेज सानकी ॥ ग्वालकवि बलित बगीचा हैं चांदनी हैं मोर हैं चकोर हैं झकोर हैं हवानकी। दीरघ अटा हैं अटा ऊपर घटा है घनी सघन घटानपै छटा है चंचलानकी ॥ ३८ ॥ कालिदास ॥ कुहुँकत मोरबन पौनके झकोर घन कालिदास गाढ़ इ अषाढ गुण पेखिये। शीतल कदम छाँह गोरीधरे गरेबाँह इंद्रको नगर बन बगर बिशेखिये ॥ वारों अलकेशपुरी रसिक नरेश कान्ह ऐसो सुख दूसरैन देश अवरेखिये। नीके नये छप्पर अटानखट छप्पर घटानिके घुमण्ड ब्रजमण्डल में देखिये ॥ ३९ ॥ ग्वालकवि ॥ झूमि झूमि चलत चहूँहाँ घन घूमि घूमि लूमि लूमि भूमि छ्वै छ्वै धूमसे दिखातहै। तूलकेसे पहल पहल पर उठे आवें महल महल पर सहलसोहातहैं ॥ ग्वालकवि भनत परमतम समकेते छमछम छमडारें बूंदें दिनरात है। गरज गये हैं एक गरजन लागे देखो गरजत आवें एक गरजत जातहै ॥ ४० ॥ हिंडोरा ॥ सं० ॥ क० ॥ श्यामा श्याम झूलतहैं यमुनाकिनारे तहाँ गुंजत भ्रमर कुंजफूलन लुँहूँ लुँहूँ। कहै विप्रवल्लभ कदंबनकी डारनपै केकीगण मुदित पुकारत कुँहूँ कुँहूँ ॥ सोहे यों अम्बर मेघडंबर अडंबरके बरिसे अच्छेह मेह बूँदन फुँहूँ फुँहूँ। दोऊ मिलि अलिन झुलावतहैं बारबार उमँगि अलीहूँ त्यों झुलावत दुँहूँ दुँहूँ ॥ ४१ ॥ अन्य ॥ राधेश्याम कंचनहिंडोरे पर झूले दोऊ अद्भुत अनूप राजे सुखमा प्रसंग है।

ांति युत शोभित सिंगार रसकैधौं चारु चंपलता तरु ग तमालही के सँगहै ॥ कैधौं घन दामिनी सरूप धरि-राजमान कविपरमानँद यों उपमा उमंगहै । लैकै रति संग अंग अंगसमताके हेत कनक तुल में अंग तोलत अनंगहै ॥ ४२ ॥ परमानन्द ॥ बँधी जलडोरेबेस बरसत बुंद थोरें घटा घनघोरें बिज्जु छटा छबि छोरेंरी । परमानँद आनँद हिंडोरें चहुँओरें अली झोकन झकोरें वन नाचिरहे मोरेंरी ॥ राधामुखचन्द ब्रजचन्दहीकी ओरें चारु चाहती चकोरे सुख पावती करोरेंरी । दृगनसों दृगजोरें देखिचितचोरें दोऊ मान सुखकोरें आज झूलत हिंडोरेंरी ॥ ४३ ॥ झूलत हिंडोरे श्यामा श्याम रसओरे चित दोउनके दौरे नये नयन नट बट्टामें । चंपलता तरुन तमाल सो मिली है कैधौं दामिनी मिली है वा घनेरे घन घट्टामें ॥ मंजु मुक्तमालसों अरूझी वनमाल किधौं परमानन्द त्रिबिध समीरके झपट्टामें । लाड़िलीको अँचल छबीलो छहरायरह्यो तैसी छबिछाई बीर लालके दुपट्टामें ॥ ४४ ॥ सं० ॥ स० ॥ कालिंदी कूलकदंब की डारन कूकत केकिनके गन एखैं ॥ तुंग तरंगित त्यों यमुना तहँ तामहँ शोरकरैं बहुभेकैं ॥ मंदहि मंद सुगाजत मेघरु राजतबूंद महीन अलेखैं । वल्लभ राधिका श्याम तहां शुभ श्याम घटान अटाचढ़ि देखैं ॥ २२ ॥ सुंदर श्याम सुमेघ सोगातरु बिज्जु सो पीत पितांबर छाजै । शीशलसै धनु इन्दु किरीट गरे बकपांतिसी माल सुभ्राजै ॥ बाजत किंकिनि नूपुरकी धुनि ज्यों घनमंद सुमंदहिगाजै । वल्लभके दृग में यह वल्लभ पावस सो

नँदनंद विराजै॥ २३ ॥ मेदुरमेघ सो श्याम लसै ढिग राधिका बिज्जुके पुंज सी राजै। क्रीट कदम्बके फूलनको शिर बाँसुरी मेघ गँभीर सी गाजै ॥ इन्द्र शरासनसो बनमालरु जींगनसी कटि किंकिनि छाजै। वल्लभके दृग में व्रजवल्लभ पावससो व्रजराज विराजै॥२४॥ दो०॥ वल्लभ चित चातक सरिस घनसो श्री घनश्याम। तिहिंपद जलकण परसि अब चाहत निज विश्राम॥ २१॥ अथ शरद॥ गंगाधर॥ क०॥ शरद सोहाई रैन भूमि सुखदाईभई विमल गगनचंद तारनतें भायो है॥ दिवस अनूपदिगमंडल प्रसन्नभये आगम महोत्सवको आनँद जनायो है॥ गंगाधरकहै शुभ्रगंगा सो भयोहै जग कास कोउजास दिशिविदिशि लखायोहै॥पावस विना।शिकरि सुयश प्रकाशिकरि व्रजरसराशिकरि शरद सुहायो है॥ ४५॥ अन्य॥ चंदनिशि ललना वदन लखिधाई किधौं पारदकी खानि फैलिआई आसमानहै॥ सुखके प्रबोध कैधों सुखितसकल सुरलोकनके कलहासभासे भासमान है॥ कैधों तारागन मुकुताहलके झूमकन चांदनी न होय चारुताईको वितान है। मेरेजान मदन महीप सब जीतिछिति ऊरधचढ़ायो कितिकरखासमानहै॥४६॥ शोभा॥ देखिये पियारे कान्ह शरद सुधारे सुधा धाम उजियारे चौंकी चामीकरदरसै। चोवे चांदीचमके चँ-दोआ गुहे मोतिन के झलकत झालरें जुन्हाई जोति परसै॥ हीरासी हसन हीरा हारकी लसन सोंधें सारी रही सनिक बिशोभ छवि सरसै। कोरिकोरि कला मुख चंदतें सरस प्यारी बादल फरसरूप झलाभलचरसै॥

४७॥ अन्य॥ मुकुले रसालन को गंधलै सुगंधवाह यतन चढ़ाव्रत है पिककी चहककी। बिकसी बसंती कोऊ सेवती सरसवास सौरभसुहायो वरबकुल बहककी॥ प्याय मकरंद सरसाय रसभासउर बिरद बोलाय लाय कीर के लहक को। एतो करिहास्यो पै नपायो है बसंत वह महत शरद को जो मालती महक को॥ ४८॥ किशोर॥ आज रंग रसभीने रसिक विहारी वर विरचि विचित्र ब्योंत चारु चितचोरीके। बैठे वीर आसन कलिंद तनयाके तीर सुखमान चाहै आप रसमान थोरीके॥ कहत किशोर दौन मंजुकर कंजबीन परमप्रवीन गावै गुनगन गोरीके। छकत भ्रमामै लखि अतिअभिरामै श्यामै शरद निशामैं सामै कुवरि किशोरीके॥ ४९॥ सांझी॥ नवीन॥ सवैया॥ आनन आव गुलाबके फूलसी देखिरही अलिया बलिभूल है। रैन सरोजके फूलसे ओज उरोज उतंगन ओप अतूल है॥ सांझसी फूलगी श्यामहियै लग सांझ लखी इम आनँद मूल है। चंपक फूलसे पीत दुकूल मै फूलसी लाड़िली बानत फूल है॥ २५॥ यथा॥ बजै बरबीन नवीन उपंग मृदंग मिले सुरसो मोहचंग। उमंग भरी सुनितान उतंग उठै अँग अंगन जाग अनंग॥ नचै मिलि गोरटी सांवरी संग लखै गति होत अरी मतिपंग। रच्योरचि वारि तरंगके रंग या रंग मै सांझी औ सांझी मे रंग॥ २६॥ सं०॥ होय उदोत अगस्त्य महान सुवारिदकी वरबूंद दवाई। त्यों निजनामको फूल विकासि दिशा विदिशान करी सितताई॥ कास प्रसूनसो रूप लखाय सुशारदकी सब

प्रीति जताई। वल्लभ दर्शनके तिनकी रुचि राधिका माधवके चितछाई ॥ २७ ॥ पुनः ॥ है बढ़िकै सबही ऋतुतैं इहि शारदकी सब बात सवाई । वल्लभ याहि चितै चितमैं अतिचन्दहिचाय बढ़ी रुचिराई ॥ संतन के मनसी सरसी सब देशन मै सबकों सुखदाई। औ-रन की सखि कौन कहै लखिके हरिहू रुचिरास बढ़ाई ॥ २८ ॥ दोहा ॥ पावस के करदम सरिस मो मन भयो म-लीन। शरदकालसो स्वच्छहरि कहकरि कृपा अछीन ॥ २९ ॥ मनोप्रदेश ॥ गुपाल ॥ धर धरि धन धन धामनमें आयो धूत ध्यायो नहिंधरके धरमधुर धोरीतैं। वृंदावन वीथिन विलोकी ना बहारबर बादिनमें बादि बादि वृथा बैसबोरीतैं ॥ गरब गरूरमें गुपाल गुनगायो नाहिं ज्ञान गुरु गह्यो ना गरायो गातगोरीतैं। मोहमय मदन मरो-रन तें मार्यो मान मायामद मातेमन मनी नाहिं मोरी तैं ॥ ५० ॥ इति श्रीमद्वादिगौडदुर्गागर्भजश्रीकाशीना-थात्मजविप्रवल्लभविप्रकृतेरसिकोल्लासभागवतेगोव-र्द्धनोधरणवरुणलोकात्नन्दानयनवैकुण्ठदर्शनदानली-लागोपिकोन्मादऋतुविहारवर्णनोनामाष्टमोऽध्यापारः ८

अथ रासलीला तहां प्रथम वृंदावनकी शोभा ब-र्णन ॥ गिरिधर ॥ क० ॥ फूलिरहे अम्ब औ कदम्बके क-दम्बचारु निम्बनके बिम्बनके तरुवरराजते। केलनके जेलनके वेलन के बेलिन के नागरुपुनागके सुहाग भूरिभ्राजते ॥ गिरिधरदास अँवराके अमराके जूह वकुल के कुलके समूह शोभ साजते। वृंदावन वृंदकी छवीली छवि देखि देखि वन अलकेश औ सुरेश वन लाजते ॥१॥

दोहा ॥ वृंदावन शोभा सरस कहु किहि पै कहिजाय। जिहि लखि निरगुण सगुण ह्वै रमत भये ब्रजराय॥ १ ॥ श्री यमुनाजीकी शोभा वर्णन ॥ क०॥ मोदकीकरैया है कमोदकी विमल ओलि वनिता विनोद कीसो सब मन मोहती। विविध विहंगकरै निकट कलोललोल श्यामता अमोलज्यों सिंगार रस बोहती॥ गिरिधरदास कूल सुखमाके मूलदोऊ लहरैं ललाम कामकलालौं अरोहती। बिंदीवरसारीसी अनिंदी वर शोभा लिये इंदीवर वृंद सों कलिंदी वर सोहती ॥ २ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ लखि सुभूमि नभ एकसो शारद शशि परकास। फूली चहुँ दिशि मल्लिका मालति सरस सुबास॥२॥रुचि राधाकी जानि हिय उपज्यो हरिहुँ हुलास। रस सिंगार पोषक सुखद करन चह्यो वर रास॥ ३ ॥ ब्रजचंद ॥ क० ॥ शरद निशामें कान्ह बांसुरी बजाई बेस जल थल व्योमचारी जीव प्रेमभरिगे। कहै ब्रजचंद तजे ध्यानहू मुनीशन ने त्योंही मानिनीनके गुमान मद झरिगे ॥ चकित शचीश रजनीशहू थकितभए तुरत स्वयंभू मोह जालबीच परिगे। शंभुहू को भूली आधी अंग की विराजी गौरि गौरिहू के गोदके गजानन बिसरिगे ॥ ३॥ गुमानकवि ॥ खग मोहे मृग मोहे नग मोहे नाग मोहे पन्नगपताल मोहे धुनि सुनि जासुरी। सुर मोहे नर मोहे सुरन सुरेश मोहे मोहि रहे सुनिके असुर अरु आसुरी ॥ भनत गुमान कहो मोहिबे की कहां बानि चर औ अचर मोहे उमँगि हुलासरी। गोपिन के वृंद मोहे आनँद मुनिंद मोहे चंद मोहे चन्द के कुरंग मोहे

बांसुरी ॥ ४ ॥ प्राचीन ग्वाल ॥ बांसुरी की टेर सुनी काहू फेर एक बेर दौरी ह्वै विकल ग्वाल कान्ह अनुरागिनी । लोक लीक तजि मनमथ कीसी सेना सजि रही है विराज व्रजबाल बड़भागिनी ॥ आँचर सँभारे नाहिं बेनी ना सुधारे छूटी लट ना निहारे ऐसी लगें रसपागिनी । कंचुलि रहित सब कुटुंब सहित मानो वांईगेके बोलत निकसि आई नागिनी ॥ ५ ॥ अन्य ॥ बाजी उठिधाईं बाजी द्वारन पै आईं अरु बाजी अकुलाईं सुनि बंशी गिरिधरकी । बाजी हँसि बोलैं बाजी संग लगी डोलैं बाजी बाजी सुधि भूलीं अरी अपने शरीर की ॥ बाजी ना धरत धीर बाजी ना सँभारैं चीर बाजिन के छातीपीर दावानल भरकी । बाजी कहैं बाजी अरु बाजी कहैं कहां बाजी बाजी कहैं बाजी बंशी चंचल चतुरकी ॥ ६ ॥ गोपिन को अनेक प्रकार तें रासभूमि में आगमन वर्णन ॥ दोहा ॥ सं० ॥ यों सुनि बंशी मधुर धुनि छोड़ि सकल भ्रमजाल । व्रज युवती आवत भईं जहँ ठाढ़े नँदलाल ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ आईं केतिक नारि उलटे धरि भूषण बसन । जिनके हिये मुरारि सो इमि किमि आवें कसन ॥ १ ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ किती ताफ़दा बाफ़दा पैन्हि सारी । किती लैस मुकेस की कोर वारी ॥ किती स्वर्ण के तंतुतें हैं सँवारी । किती मुक्कहीरा हुँकी छोरवारी ॥ १ ॥ दुरंगी नरंगी किती पैन्हि आईं । किनी सालकी हालकीहैं रंगाईं ॥ बदामी किती किस्मिसी शोभ छाईं । किती पिस्तई रंग दाखी सुहाईं ॥ २ ॥ गुलेनार केनी गुलाबी हरी हैं । बसंती किनी लाल लालेखरी

हैं ॥ किनी चूँदरी सुन्दरी पैन्हि आई । अत्रासी कपासी सुत्रासी सुहाई ३ सुत्रापंखि सालू सुऊदी घनेरी । पियाजी किती पैन्हिधानी सुन्हेरी ॥ कितीतूल मखतूल की पैन्हिसारी । सुआई जहाँ रासलीलाविहारी ॥ ४ ॥ दोहा ॥ सुहीसुरमई सोसनी सारी शुभतनधारि । भूषित बहुबिधि भूषननि तहँ आई व्रजनारि ॥ ५ ॥ जिनके सहजहि अंगकी गन्धरही शुभछाय । वे कछु और सुगंध तनवसननहिं चहेनलाय ॥ ६ ॥ भुजंगप्रयात ॥ भलेपायँ में शुभ्र मंजीर राजै । मनोहंसकेऽदभ्रछौनाविराजै ॥ घनी बाजनी पैंजनी पैन्हिआई । बजैं कामके जीतकी ज्यों बधाई ॥ १ ॥ कसीकिंकिणी लंक निःशंक बाजै । मनोदर्प कंदर्प्प घंटालि गाजै ॥ सुचोली कसी जर्कसी तर्कसीकी । सुशोभा कहाँलौं कहौं उर्बसीकी ॥ २ ॥ हरीरी चुरीतैं भरी बाहुराजै । सुबाजून में बाजुबंदै विराजै ॥ हिये चौसरे नौसरेहार भूलैं । जराऊ लसैं कर्ण में कर्णफूलैं ॥ ३ ॥ गुंधे भूमके घूमके कंधलोलैं । गुलूबंद सोहैं गरे त्यों अमोलैं ॥ भलीभाल में बंदनी शोभसाजै ॥ सुताके तरे इंदु ओ बिंदुराजै ॥ ४ ॥ दोहा ॥ पहिरे जे अँग अंगमें भूषन बसन सुरंग । तिनहूंको भूषित करैं इन गोपिनके अंग ॥ ७ ॥ भुजंगप्रयात ॥ सुभूषा सबै अंग में जे त्रिराजैं । दुनी अंगकी दीप्तितैं वेसुभ्राजैं ॥ घनश्याम के चित्त संमोद काजैं । सबै बिज्जु के पुंजसी ये सुसजैं ॥ १ ॥ सुगोलोकतें आयके भूठई हैं । सभी राधिकारोम तें येभईहैं ॥ ऋचावेदकीहू सुआई इती हैं । सखी राधिकाकी सुहाई तिती हैं ॥ यही प्रेमके पंथको शुभ्रगीता ।

यही वेदके भेदकी हैं अधीता ॥ यही भक्तिकी शक्तिकी शक्ति सोहैं। यही मुक्तिके मुक्तहूकों विमोहैं॥ ३ ॥ इन्हें देखिके होति कान्हैं रतीहै। रतीहू रती देखि होती रती है ॥ नरी किन्नरी औ परी क्यों न मो हैं। सुरी आसुरी आसुरीहू विमोहैं॥ ४॥ दोहा ॥ इमि आवत लखि गोपिकनि हरि अतिही सुखपाय। आगे बढ़ि मढ़ि प्रेमतैं ल्याये सबहिं लवाय॥ ८ ॥ गोपिन की उक्ति ॥ रसखानि ॥ सवैया ॥ अरुझीमहरें सुमनोज के ओजनि फौजनि हारि निशाननमैं। रसखानि ठगौरिसी डारि ठगी सु निहारि कछू मुसक्याननमैं ॥ ठग ठाकुर ठाढ़ भलै ढिगहो अबला जु बचैं इन प्राननमैं। बरु मारिये बाननहीं तैं गुपाल न मारिये बांसुरी ताननमैं २॥ दो० ॥ गोपीगण भगवान की शोभलखी तिहिंठौर। ता क्षणही सब भूलिगो ज्ञान गर्व गुन गौर ॥ ३ ॥ देवकीनंदन ॥ क० ॥ अटपटी चाल त्योंही लटपटी लालपाग ठटपटी खासीखौरि केसर के गारेकी। मणिमई भूषण अकिल अवतंस आदि पहिरि बजावै बंशी शबद पियारेकी ॥ देवकीनन्दनसिंह बड़ी बड़ी आँखनकी झलक तरंग रची अंग रंग कारेकी। बकिरही कान्ह सग थकिरही छकिरही लखिरही जेब जोहि जुलफनवारेकी॥ ७॥ पुनः॥ अन्य ॥ चित्त ललचावै कामभयतें बचावै वन मोरन नचावै रुचि ऐसी अंग अंगकी। प्रीति उपजावै मृदु मुरली बजावै सरसाईको लजावै नैन सुधाकी तरंगकी॥ बहुढंग दरशावै सुखहीको परसावै सब दुखहि नशावै रीति धारे रंग रंगकी। हियरा सिरावै घरबार बिसरावै

लाज गिरिको गिरावै ऐसी मूरति त्रिभंगकी ॥ ८ ॥ पुनः ॥ केलिके प्रसंग और औरही निहारे रंग छिन छिन घरी घरी साँझ औसबारेके। जियके जियारे अंग अंग उजियारेलखि वारिवारिडारे बान मैन मतवारेके॥ माधुरी तरंगभस्यो लोने रूपसागरसों कैसे पियोजात भये लोचन किनारेके। एक रसनासों अलि जात न बखानेगुण मोरचन्दवारे नंदनन्दन पियारेके ॥ ९॥ पुनः॥ उरज उतंगनको नीलमणिहारहै कि एकै महामोहनीके मन्त्रको बिचारहै। लोचन चकोरनिको चन्द अवतार है कि कीचित चातकनको सुधा घनधारहै॥ प्राणनतें प्यारो लोक प्राणन अधारहै कि सौरभको सारहै की शोभाको पसारहै। रूपरस माधुरीको गात सुकुमारहै कि रूपधरैं मारहै कि नन्दको कुमारहै॥ १० ॥ ऐसो रूपदेखि फेर गोपिनकी उक्ति ॥ क० ॥ चन्द नख चन्द्रिका चकोर पदकञ्जनपै मेरोमन मञ्जुल मिलिंद ललकनपै। बंशी त्यों बिशाल लाल अधर अमोलन पै वारों कुरबिन्द दन्त कुन्द कलिकनपै ॥ छविपै छपाकर प्रभाकर प्रतापही पै वारों कोटि काम कमनीय झलकन पै। पन्नगी कुमार औ कदंबिनी सेवारवारो बाँकुरे बिहारीकी अमोल अलकन पै ॥ ११ ॥ दामोदर ॥ वारों श्याम अंगपै अनंग छविहूकी छटा मोरचन्द्रिकापै चंद सुन्दर लसन पै। वारों भ्रुवबंक पै कमान कमनीय अरु दृगन पैं कंजवारों मुकता दसन पै॥ दामोदर कहै त्योंहीं अधरन बिम्बवारों इन्द्रधनु वारों शुभवंशीकी लसनपै। वारों कंबकण्ठ पै सहार हीर वारों कोटि मैंरली मंनोहर

की मोहनी हसन पै ॥ १२ ॥ सं० ॥ भुजंगप्रयात ॥
किती नौसरें चौसरें लै सुधारें । किती कान्ह के कुण्डलै
हीरहारें ॥ किती कंगही संगही लै सुडोलैं । किती पुष्प
बासे सुतैलैं अमोलैं ॥ १ ॥ किती हैं खरीलै सुसौगंध
सीसी । मिसी लै खरीहै किती चारुपीसी ॥ किती अञ्जनै
मञ्जनै लै सुठाढ़ी । किती कज्जलैं सज्जलैं प्रेमबाढ़ी ॥ २ ॥
किती किस्मिसें दाख पिस्ता सुप्यारी । किती है लिये
स्वर्णकी पूर्णभारी ॥ सुएलाल बंगादिकै पूरिपूरे । लिये
चौघरे नौघरे भूरिरूरे ॥ किती पानि में आनि देती ति-
लौरी ॥ किती लै खरी हाथ शीशा बिलौरी ॥ ३ ॥
किती लै सुराही किती पीकदानी । किती लै गिलासैं
खरीं शोभसानी ॥ १६ ॥ दोहा ॥ लै माही ठाढ़ी किती
किती मुर्छले भूर । आसाखासा लै किती हाजिर हुकुम
हजूर ॥ १० ॥ भुजंगप्रयात ॥ त्रिधा वायुके धर्म तैं जेस-
मोई । सुअंखी सुपंखी लियें तत्र जोई ॥ गसी हीरतें हैं
लसी हेमडाँडी । बसी आतपत्रैं लियैं तत्रमाँडी ॥ १ ॥
किती चोपसों चोपकों लै खरीहैं । किती बल्लभैं बल्लभै लै
अरी है ॥ किती लै अड़ानी अड़ी है सुमोदै । किती त्यों रि-
झावै सुकै कै बिनोदै ॥ २ ॥ किती लै खरी हैं छरीसामनैमें ।
किती हाथ जोरें लगी दामनैमें ॥ किती पेशवाई सुहाजिर
हजूरें । नकीबी करैहै किती बोलिरूरें ॥ ३ ॥ करें आरती
ढारती चौंरकेती । तृणै कान्ह पै वारिकै तोरिदेती ॥ च-
कोरी भई कृष्णचन्दै सुदेखै । सभी आपनो धन्यकै जन्म
लेखै ॥ २० ॥ दोहा ॥ लखि गोपिनकी भक्ति प्रभु पुरवन
कहैं तिन आस । राधा राधाधव दोऊ रच्यो समङ्गल

रास ॥ ११ ॥ तहां युगल छवि वर्णन ॥ दोहा ॥ चंद्रकला सी चन्द्रिका लसै राधिका शीश। हरि हरिके हरतें मनो दीनी करि बकसीस ॥ १२ ॥ विहारी ॥ मोर मुकुट की चन्द्रिकनि यों राजत नँदनंद। मनु शशि शेखरकी अकसकिय शेखरशतचंद ॥ १३ ॥ पजनेश क० ॥ जटित नछत्र नग नवशिरपेच बीच पैंची मणिमाल मुकुतालीं झलाबोरकी। कवि पजनेश पट पदरजरीके कटि तट फहरात छहरात छटा छोरकी ॥ कोटिन प्रभाव ते सुपरत प्रकाश पुञ्ज धावत धरापैइन उन चित चोरकी। तीन लोक झाँकी ऐसी दूसरी न झाँकी जैसी झाँकी हम झाँकी झाँकी युगलकिशोरकी ॥ १३ ॥ पुनः ॥ कोटि मारतण्ड मणि मण्डित मुकुट क्रीट चन्द्रिका चमकचकचौंधी चहुँओरकी। शिर पेंचपेंची कल कलँगी कुलिश कन बंदनी विचित्र चित्र अमिल अजोरकी ॥ सनगन गनपरबसन मुकेस राजे एकसी प्रकाशी गति दोनों चितचोरकी। तीन लोक झाँकी ऐसी दूसरी न झाँकी जैसी झाँकी हम झाँकी झाँकी युगलकिशोरकी ॥ १४॥ सं० ॥ दोहा ॥ गोपीगण मधिराधिका छवि तहँ इमि रहिछाय। जिमि नभमें उडुगणनि मधि राकाशशि सरसाय ॥ १४ ॥ तहँ गोपिन के गणन बिच इमि हरिरहे सुहाय। सोनजुही बिच बिच मनो जैसे कुसुम कलाय ॥ १५ ॥ जिती रास मधि गोपिका तिहिं अन्तर सुठि श्याम। जनु बासंती लतनि बिच बिकसी अतसित माम ॥ १६ ॥ देवकीनन्दन सुकुल ॥ क० ॥ गुड़हर गेंदा

[illegible]

मानी है । सूरजमुखीसी गुलपेचासी जपासी सोहैं देव-कीनन्दन गुललाला समजानी है ॥ चम्पासी चमेलीसी जुहीसी सोनजूहीसम सेवती गुलाब गुलदाउदी प्रमानी है। कलपनरोवरसे फूलेलसैं नंदलाल चारोओर ललना लतासी लपटानी है ॥ १५ ॥ अन्य ॥ समाज आज है भली मृदंग बीन बाजही अमंद शुद्धचंद चारु चाँदनी छई छई। नवीन साजहै अली महाप्रवीन साजही प्रबंध बाजुबन्दहार किङ्किणी ठई ठई ॥ सुगंधला समैकही सुनान मान पेखिये गुमान मान छंद अंग माधुरी मई मई। बिलासरासमें सही प्रकाशमान देखिये सुजान श्री गुबिन्द संग सुन्दरी नई नई ॥ १६ ॥ सवैया ॥ बीन बजावत रासमैं बाल रसाल है शुद्ध सुधामृदुबानी। गावत तान तरंग विशाल खुश्याल है प्रेमपगी सुख सानी ॥ भौंह नचाय नचाय कमान अनूपम गोविंदके मनमानी । अंग उमंग सुरंग सुजान सरूपहै तोसी तुही ठकुरानी ॥ ३ ॥ बांसुरीकी तान यथा ॥ नागर ॥ क० ॥ मोहनी लतातें मधु मञ्जुरी स्रवत कैधों काननमैं रीझ की दुहाईसी फिरतरी । मादकसों भरी खरी कोमल मिहीन महा लहलह लई सुकण्ठ माँझ अतिरी ॥ साँच भरी सोहनी चटकदार चिकनौहीं बीनहूँ ते सरस रसीली यह अतिरी। नागरिया सुजानके सुताननके मान मिलि याही के समान अब सबै लेहु गातिरी ॥ १७ ॥ नृत्यगति यथा ॥ गुन सरितासी रसरंगन विलासी चारु चम्पक लतासी चपलासी श्याम घनकी । ग्रीवकी ढुरवनि ढलावनि मलाहनकी मन्दधनि गावन बतावन-

सुतनकी ॥ पारद ज्यों थार थहराती नृत्य अवनी में देखि रवनी में कछू बात न कहनकी । ठोकरनि ठेलठेल पायनते रूँदिरूँदि नागरिया गतिमें कुगति कीनी मन की ॥ १८ ॥ राधे नँदलाल रासमण्डल रसाल नचैं एक तन ह्वैकै एक फूलनके हारमें । जालीदार एक सेत ओढ़नी को ओढ़ें दोऊ नृत्यन सुढंग रंग मिलिततकारमें ॥ मुख नैन भूषन चिकुरकर कान्ति खुली चाँदनी सरस स्वच्छ सागरके वारमें । नागर मयंक मीनमानौ मणि औ सिवार कञ्जकाम धीवर गहे हैं रूपजारमें ॥ १९ ॥ वृन्दा-वन काननपै भौंरहैं विमाननकी देवबधू देखि देखि भई हैं मनंचला । बंशी कलगानकै वितान धुनिवाय बँध्यो रमालोक लोक तहाँ भूली उर अंचला ॥ द्वै द्वै बिच गो-पिनके ललित त्रिभंगी कान्ह नागर पदन्यास बाजे छम छमंचला । रास रंग मण्डल अखण्ड नृत्य होनलाग्यो संग ह्वै भ्रमत मानो मेघचक्र चंचला ॥ २० ॥ सं० ॥ दो० ॥ करते करगहि श्याम सह तहँ निर्तत ब्रजबाल । नन्दलाल मधि बालहैं बालन मधि नँदलाल ॥ १७ ॥ लखि उनको अतिमान तब इक सँगलै भगवान । सब गोपिनको तजि तहाँ ह्वैगये अन्तरधान ॥ १८ ॥ तिहि लै कुञ्जकुटीरमें बैठारी नँदनन्द ॥ हिलि मिलि दोउ खोलनलगे निज हियके फँदबन्द ॥ १९ ॥ गिरिधर ॥ स० ॥ केश सँवारिके कांगही सों कबरी सबरी रचि फूल बनाई । बेंदीदई गिरिधारनजू अँगिया कसि सारी सुरंग उढ़ाई ॥ कङ्कन मुद्रिक हाथनमें उर हार सुढार भरे अधिकाई । चाय भरे ब्रजरायजू आपहि पायछपाय-

नमें पहिराई ॥ ४ ॥ सं० ॥ दो० ॥ परममुदित ह्वै हरि किये तिहि तियको सिंगार । तासु रूप लखिकै हिये निज मन खुशी मुरार ॥ २० ॥ तब बोली मोहिं कन्धधरि चलिये सुघर सुजान । चढ़हु आय इहि कंध कहि ह्वैगये अन्तरधान ॥ २१ ॥ बिन गोपिनहूँते सरस उपज्यो बिरह कृशान । निज ज्वालनि जारनि लग्यो मान गुमानरु प्रान ॥ २२ ॥ गोप्यऊचुः ॥ रोलाछन्द ॥ करि अनाथ हे नाथ गये तुम तजिके कित अब । यह कहि कहि ब्रजनारि लगी तहँ रोवन कहँ सब ॥ अति ब्याकुल ह्वै लगीं ढूँढ़ने गोपीगन तब । कुञ्जकुञ्ज प्रति थकी खोजि नहिं मिले श्यामजब ॥ १ ॥ दो० ॥ बिल- खानी तब गोपिका मिले नहीं जब श्याम । मूर्छित ह्वै महिमें गिरी श्याम श्याम कहि बाम ॥ २३ ॥ कछु धी- रज धरि फिरि चली ढूंढ़न कहँ घनश्याम । यमुना पु- लिन निकुञ्ज मग बन बीथिन बर बाम ॥ २४ ॥ तिहिं सँगलै हरि भजि गये तजि रम रास रसाल । तिहिमग जोवत सोउ मिली रोवतपरी बिहाल ॥ २५ ॥ छिरकि नीर चहुँओरते करि समीर अँचरान । बहुराये इहि बिधि सबनि तिहिं शरीरमें प्रान ॥ २६ ॥ तब सब वे पूछत भई अरी कहां वे कान्ह । मोहूँ तजि अनतैं गये लखि मेरो सखिमान ॥ २७ ॥ फिरि हेरन तब सबलगी बन बीथिन ब्रजबाम । तरु तरुतैं पूछत फिरी कहुँ देखे घनश्याम ॥ २८ ॥ रोलाछन्द ॥ हे कदम्ब कचनार कु- रब कोरक हे कटहर + हे अनार अरु बार बरुन बाकुल हे बड़हर ॥ हे मधूक बन्धूक बकुल बाउल हे गुड़हर ।

हे अशोक हरु शोक कहहु वह कहँ है नटवर ॥ २६ ॥ हे बैरी तजि बैर कहहु वह कहाँ सुघर बर। हे पाकरि करि कृपा कहहु कहँ गये सुक्षिपिकर ॥ हे कुमोद मुद देहु लेहु जस हरि जहँ करिकर। हे तमाल तरु ताल कहो किनहैं कहँ सुखकर॥३॥ हे करीर करबीर कनक केतकिके हे बन। बिन देखे तिहिं अहह होतहै कलप एक छन ॥ बिरह बिथातें भई चहै अब बिना प्रान तन॥ ४॥ जामुनि हरि को खोजिल्याय करि कहि करि जामुनि । ब्रजबनितनि की करीअरी इक बिनतीया सुनि॥ हे रसाल ब्रजबालविकल डोलत इहिं इत बित। करि बिहाल नँदलाल गये तजि के हरि चित कित॥ ५ ॥ हे कपित्थ तुम कहहु तथ्य वह गये कहां हरि। हे पीपर हरिरूप अपर तुम कहो कहां हरि ॥ हे यमुना तुवतीर बीर तजि गये तीर किहिं। बिरह आँसु तिहिं मिल्यो नीर जनु बहै जोर इहिं ॥ ६ ॥ दोहा ॥ इमि ढूंढ़त हरि गोपिकनि भूलिगयो निजरूप। तन्मय भृङ्गी कीटलौं ह्वैगइ कृष्ण सरूप ॥ २६ ॥ तब लीला तहँ कृष्ण की करन लगीं सब आप। कोउ बक बदन बिदारती कोउ मोचत तरुशाप ॥ ३० ॥ कोउ कहै तुम जिन डरहु अब हरिहौं सब संताप। दावानल को पान करि दलिहौं याको दाप ॥ ३१ ॥ रे केशी कित जात भजि नहिं बचिहै इहिबार। तोहिमारि कंसहिहतौं तौ मैं नंदकुमार ॥ ३२ ॥ गिरिधर ॥ चौपाई ॥ इमि हरिकी लीला करिनारी। खोजत चली बिहाल बिचारी ॥ चरणचिह्न प्यारे पियकेरे ॥ परे धरणितल सुन्दर हेरे ॥ १ ॥ छप्पय ॥ स्वस्तिक स्यंदन शंख

शक्ति सिंहासन सुन्दर । अँकुश ऊरध रेख अब्ज अठ कोन अमल तर॥ बाजी बारन बेनु बारिचर बज्र बिमल बर । कुंन कुमुद कलधौत कुम्भको दण्ड कलाधर ॥ असि गदा छत्र नवकोन यव तिल त्रिकोन तरुतीर गृह । हरि चरन चिह्न बत्तिस लखे अग्निकुण्ड अहि सैलपह ॥ १ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ जो रज दुर्लभ हर आजहिं सो रज ब्रजकी नारि । निज शिरकर सरसिज नले धरणि लगी सुकुमारि ॥ ३३ ॥ करि बंदन नँदनंद पदरज सिगरी ब्रजबाल । चली चिह्न मग जोवती अँसुवन धोवति माल ॥ ३५ ॥ सोरठा ॥ ह्वै करि आतिहिं निरास ऊँचे स्वर रोवनलगी । तुव दरशन बिन सांस निकसत तऊन उरदया ॥ २ ॥ दोहा ॥ इमि गोपिन की लखि दशा तहँ प्रगटे रासेश । देत भये दरशन तिन्हैं करि नटवरको बेश ॥ ३५ ॥ सोरठा ॥ आयेगी लखु श्याम समुद उठी कहि एक सँग । युगसम बीत्यो याम जाकेरी दरशन विना ॥ ३ ॥ अन्य ॥ क० ॥ रहैं वर साईं रोय रोय सरसाईं अति योहीं तरसाईं नेक रूप दरसावरे । उठि उठि धाईं लोकलाज बिसराईं वरजी न चितलाईं आय तूही समझावरे ॥ नेह कै लगाईं दिनजामिनी जगाईं आँच जात न बुझाईं तूही आय के बुझावरे । मोह जाल आईं भईं आँखैं दुखिदाईं ऐसे तैहीं अरुझाईं अब तूही सुरझावरे ॥ २१ ॥ जाके अंग अंगन की रूपकी तरंगन मैं बूडि मन जात ताहि कैसे मनदीजिये । जाके बश आईं तिहुँ लोककी निकाईं नीकी लागऊ सुहाईं ताहि कैसे बश कीजिये ॥ वृंदावन

चन्द सुखकंद कोर छन्द निधि नंदको दुलारो भरिनैनन क्यों लीजिये। कैसे करि याहि निशि बासर समीप लै अनंग जुरहरन मधुर मधुपीजिये॥ २२॥ बूड़त गँभीर नाभि रोमावलि गुन लै त्रिवलि अवलँबि करि बैठ्यो उर नीठिकै। घेर्‍यो छबिजालन बिशाल बनमाल चपि कछुक बचावत क्यों ओठन बसीठिकै॥ मन्द मृदुहास सुधारस के प्रवाह बहि बचिगो कपोलतल कुण्डल निईठिकै। कुञ्जनविहारी छवि देखत तिहारी फेरि बेध्यो मनभारी अनियारी युग दीठिकै॥ २३॥ सुन्दर सुलफ घुँघुराकृत जुलफ करिबेकैं कुलफतिहि ठौर घेरिआनी-हैं। देखत त्रिभंग छबि भौंतन सभंग परी अंगन अनंग लोक लाज भैभानी है॥ नैन चित चोरन की तीखी तीखी कोरन की दुरि दुरि जोरन की भांति सरसानी है। रूपके अरोरनकी भौंहन मरोरनकी पीतपट छोरनकी छवि पै बिकानी है॥ २४॥ सं० ॥ भुजंगप्रयात॥ कन्है देखिके प्रान आये सुफेरी। विना कान्ह के प्राणकों का करेंरी॥ लखे लालके लाल अंघ्री सरोजैं। तिन्हैं बाल लै लै लगावैं उरोजैं॥ २१॥ बरौनीन तेलै किती पांय पोछैं॥ कटाक्षैं कितीकै सुआंगे अँगोछैं। हरैं खेद स्वेदैं सुतीखी चितै कै॥ जुड़ावैं हियो ताकि ताकौं हितैकै॥ २२॥ किती ध्यान को धारिकै हीय ध्यावैं। किती नैन ते देखिकै सुख पावैं॥ किती कान्ह के अंग सों अंग छ्वावैं। तपे अंगके तापकों वे मिटावैं॥ २३॥ किती पाय गाढ़ै गहैं चूमती हैं। किती भाँवरी दै तिन्हैं घूमती हैं॥ लगी साजनै धूपदीपैं किती हैं। लगी आँजने पाय धू-

री किती है ॥ २४ ॥ सुनो बीनती गोपियों की मुरारी । न ऐसी दशा फेर कीजो हमारी ॥ यही टेरिके वे कहैं बेरि बेरी । गिरी पाँय पै आयके एक बेरी ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ इमि गोपिनके बैन सुनि बोले करुणायतन॥ करि मेरो हिय ऐन याहीमें तुम नित बसो ॥ ४ ॥ महा-सुमङ्गल रास करन चह्यो गोपीन हित ॥ तजि शिवहू कैलास तहँ देखन आवत भये ॥ ५ ॥ शिवरूप ॥ सवैया ॥ कास प्रसूनसी गङ्गजटा मधि भाल सुचन्द अमन्द विराजे । उज्ज्वल भूति विभूति सुअंगन त्यों संग जौन्हसी गौरि सुराजे ॥ कौमुद सो बहु मोदकरे जग मालति मालन तें अतिभ्राजे । वल्लभ के उर में गिरि वल्लभ शारदके ऋतु सो नितराजै ॥४॥ दोहा ॥ सचर अचर जगजीव सब देव अदेव अशेष । आवत भे तिहिं राशि मधि धरि गोपिनके बेष ॥ ३६ ॥ गिरिधर ॥ क० ॥ अबला अनेक आछे तबला बजावें किती ढोलकी सु-बोलकी बजावैं करि प्यारकों । खञ्जरीटनैनी किती खंजरी बजावें खरी मरमा बजावैं किती चार तरफार कों ॥ गिरिधरदास रसरंगी लै सरंगी किती गाव-ती सुरंगी गीत संगीलै उदार कों । किती लै तितार-न गितारनि बजावैं किनी ठाढ़ी कै किनारन सिता-रन के तारकों ॥ २५ ॥ किती सहनाई लै सुहाई टेर फूँके किती धीरी लै नफीरी कौं अभीरी छवि छावती । किती परबीन बीनलैके सुरलीन किती मुरली सुराग रंगरलीन दरसावती ॥ गिरिधरदास करनाल करताल जाल तालसों मिलाय के रसाल ख्याल गावती । किती

लै सरोद कौं सरोज से करनलसी किती मान पूरी तान पूगी लै बजावती ॥ २६ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ बजी दुन्दुभी देव दिवि पुष्पवृष्टि भई भूरि। गावत भे गंधर्व्वपति स्त्री सहहरि यशपूरि ॥ ३७ ॥ भुजंगप्रयात ॥ लगे बाजने दुंदुभी देवलोकैं। सुआये सबै देखि बे छोड़ि ओकैं ॥ महर्षी सबै देखिकै शोभ हर्षे। सबै देव देवेश पै पुष्प बर्षे ॥ २६ ॥ लगे बाजने साज संगीतवारे। सरंगी सुरंगी रबाबैं सितारै ॥ भई किङ्किणी नूपुरों की ध्वाजैं। तिहीं मध्य बंशीहुकी मंदगाजैं ॥ २७ ॥ भई भूषनों की अवाजैं घनेरी। उठी नाचनै वे सबै एक बेरी ॥ उठे श्याम श्यामा तिन्हीं संग ओऊ। मनो गीत संगीत की मूर्ति ओऊ ॥ २८ ॥ सुअंगी सुरंगी सुढंगी सबीहैं। सबी रासके अंग में बेकबी हैं ॥ बड़ीही उमंगैं तरंगैं मची हैं। जहाँ रासरंगे सुगोपी रची हैं ॥ २९ ॥ खरी कान्ह के अंससों अंसजोरें। लसैं श्यामके संगमें अंग गोरें ॥ सुसोहैं भली बैसवैं यों नवेली। मनो श्याम बेली ढिगै हेम बेली ॥ ३० ॥ दोहा ॥ शम्भु केशसी राधिका उमाकेशसे श्याम। गंगसरिस रस रासभुवि तहँ लहलन रसधाम ॥ ३८ ॥ चन्दन सतसई ॥ सुरी आसुरी किन्नरी नगी पन्नगी देखि। व्रजबनितन के संग नचें मनिमानी सुविशेखि ॥ ३९ ॥ सं० ॥ भुजंगप्रयात ॥ रणन्नूपुरोंकी रणत्कार छाई। क्वणत्किंकिणी क्वाणकी शोर भाई ॥ झणत्कार भूषानिके ध्वान गाजैं। ठणत्कारकारी मृदंगैं सुबाजैं ॥ ३१ ॥ प्रवीना किती बेनु बीना बजावैं। सही कान्हके तानमें लैसुगावैं ॥ कि-

ती गाय के भाव भाये बतावैं । किती रीझिके आय कन्दै जतावैं ॥ ३२ ॥ किती कान्हके गानमें चित्त देती । किती कान्हके तान सी तान लेती ॥ तरीफैं किती श्याम के गानकी कै । रही तानको आप लेती सही कै ॥ ३३ ॥ किती श्यामकी बांसुरीलै बजावैं । किती तानलैं बांसुरी को लजावैं ॥ सबै नागरी आगरी रासरूरी । सुगावैं सबै रागिनी रागपूरी ॥ ३४ ॥ गंगोदक छंद ॥ गोपिका श्याम औ श्याम औ गोपिका श्याम औ गोपिका की छटा छ्वै रही । राधिका वल्लभै यों तहां देखिके देवकी दारहू नृत्य क्वां कैरही ॥ तानकी तालकी गानकी बाद्य की एकही संगही लै जहां ह्वैरही । रासके रंगमें कान्हके संग मैं चित्तमें दंग ह्वै गोपियां ठैरही ॥ १ ॥ राधिका अंसपै कान्हकी बाहु है कान्हके अंसपै राधिका धैरही । तालकै ख्यालपै लालकी चाल है लालकी चालही बालहू लैरही ॥ हावसों भावसों चावसों सोसबै गायके गीत वै त्यों गतें लैरही । रासकी मंडली कुंडली सी मनोचंदकी कुंडलीकौं तरे कैरही ॥ २ ॥ दोहा ॥ करि क्रीड़ा रसरासकी आनँद उमँग अलेल । गोपिनके श्रम हरन हित चले करन जलकेल ॥ ४० ॥ यमुनातट जान समयकी शोभा ॥ सवैया ॥ वल्लभ श्यामलसे सुठि ज्यों गुन गोरिसी त्यों वृषभानुकिशोरी ॥ सोहतजात निकुंजन में अलि पुंजन गुंजन में सुखपोरी ॥ वा छबिकों लखिकै अतिही रतिमारहूकी सुभई मतिभोरी । सो हियमैं जियमैं निनही बिहरै वह राधिका मोहन जोरी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ लै कुभकी जब गोपिका उठैं टारि मुखवार ॥ म-

नहुँ उदधितैं चन्द्रमा उवै सहस इकबार ॥ ४१ ॥ किती धारि सिसुमारगति किती कच्छगति धारि । नागिनिसी पौरें किती किती मीनसी नारि ॥ ४२ ॥ सकुचीसी केती तिरैं किती होय घरियार । बिहरैं हरिसंग गोपिका इमि यमुना मँझधार ॥ ४३ ॥ सवैया ॥ लै डुबकी उबकैं चुबकैं थिरकैं जलमांझ करैं सुकलोलैं । त्यों करके करिके जल यंत्रन छोड़त नीर चहूँ दिशि डोलैं ॥ वल्लभ वै फिरिकैं घिरिके जल जालहिं लालहिं कैरही लोलैं । चंचल नैन नचाय अली हरिकेलय चूमि अमोल कपोलैं ॥ ६ ॥ क० ॥ किती है उतान औ वितान तानि पौरें किती आसन सुधारि किती पौरें ठौर ठौर हैं । कहै विप्र वल्लभ कै मोटरीसी कूदैं किती किती जल थाहिबे किकरती सुनौरे हैं ॥ बनिबजडासी मोरपंखीसी सुपिछमसी खेयगतिलेय किती जलहि हलोरे हैं । डुबि पौरि दौरि दौरि कान्हरकौ छूबैं किती कान्हरहू डुबिपौरि छूवनकों दौरे हैं ॥ २७ ॥ बाँधिबाँधि गोलैं खरी जलमैं अलोलैं किती जलन कलोलैं लोल राकैं तहँ हिलिमिलि । कहै विप्र वल्लभ औ उछालैं जल केती खरी केती जल जेलिनको लेय झेलि झिलिमिलि ॥ केती अवगाहैं केती केती डूबि डूबि थाहैं फिरि केती बांह बांहैं गही खेलैं खेल पिलिपिलि । जलके हलोलनमें केलिके कलोलनमें श्याम हँसि बोलनिमें गोपी हँसैं खिलिखिलि ॥ २८ ॥ दोहा ॥ करि जलकेलि सकेलि सुख लहि लहि मान अछेह । धरि हरि हिय चित गोपिका गई सुनिजनिज गेह ॥ ४१ ॥ वेदसंमतिकविकी उक्ति ॥ सं० ॥ वल्लभ

ब्रह्महिं ढूँढि रह्यो चहुँ वेदनके तरु शाख असंखन । ढूँढि पुराननि आगमहूँ सुलह्यो तिहि को न कहूँ कछु अंकन ॥ ढूँढ़त ढूँढ़त यों ब्रजकुंजन पायो निरंजन अंजि सुअंखन । गोकुल मध्यहि ताहि निशंकन मैं लख्यो गोपवधूनके अंकन ॥ ७ ॥ प्रार्थना ॥ स० ॥ जन्म अनेकनि माँहिं सदा मोहिं राधिका श्यामको दासहि बोलैं । वल्लभ विप्र यहै ब्रज खोरि न याचै पसारि पसारिनि चोलैं॥ मो हिय अंगन माहिं करैं निति प्रेम उमंग तरंग कलोलैं । राधिकारूपभयो शुभसांवरो श्यामभई भई राधिका डोलैं ॥ ८ ॥ मनोपदेश ॥ छिनछिन छाकयौ छकि छल छर छंदनमैं छलिबेकी छोड़ी छिन छोरलौन छोरीतैं । निरखे न नैननि निकुंज नँदनन्दनकों नरदेही पाय नीकी नीति न निहोरीतैं ॥ जिरहजराखो जग जालके जंजाल जग जीवनसों तोरी प्रीति जीवनसों जोरीतैं । मोहमय मदन मरोरनते माख्यो मान माया मद माते मनमानी नाहि मोरीतैं ॥ २९ ॥ इति श्रीमदादि गौडदुर्गांगभजश्रीकाशीनाथात्मजविप्रवल्लभविप्रकृते रसिकोल्लासभागवतेरासमहारासवर्णनोनामनवमो ऽध्यापारः ॥ ९ ॥

अथ सुदर्शनशापमोचनलीला ॥ ब्रज ॥ दोहा ॥ भक्तन के हितलेतहैं प्रभु युगयुग औतार । असुर मारि थापत सुरनि हरन भूमि भयभार ॥ १ ॥ सं० ॥ सोरठा ॥ इकदिन सरसुति तीरगये पूजन शंकर उमा ॥ संग कान्ह बलवीर गोप गोपिका नन्दलै ॥ १ ॥ दोहा ॥ पूजन करि सोये सकल तहँ इक अहि नंदपाय । पक-

स्यो अतिही जकरिके छुटत न कोटि उपाय ॥ २ ॥
व्रज० ॥ सोरठा ॥ अतिभय व्याकुल ग्वाल तबहीं
श्याम जगायके ॥ कह्यो महा इक व्याल लपटानो पगनंद
के ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ सुनत उठे आतुर गोपाला । नि-
कट जाय देख्यो सोइ व्याला ॥ परस्यो ताहि कमल
पद पावन । पाप शाप संताप नशावन ॥ १ ॥ सं० ॥
दोहा ॥ छुवत चरण तनु दिव्यधरि बरणन गुण हरि
केर । दीनबन्धु मोपै कृपाकरी कहत ये टेर ॥ २ ॥ व्रज० ॥
हौं यशगायक श्यामको नाम सुदर्शन होय । सु-
न्दर विद्याधरनमें मोतें और न कोय ॥ ३ ॥ सोरठा ॥
ऋषि अंगिरा धामगयो धरें अभिमान तन । कियो न
तिन्हें प्रणाम रूप दरबके गरबनें ॥ ४ ॥ सं० ॥ तब
ऋषि दीनो शाप अजगर तन धरिहै यहैं । कृष्णद-
रश ते पाप कटिजैहैं पैहै वपुष ॥ ५ ॥ दोहा ॥ विद्या-
धरपर करि कृपा आये हरि निज धाम । व्रजवासी
नँद मुदित मन लिये संग बलराम ॥ ४ ॥ अथ
शंखचूडवधलीला ॥ सं० ॥ दोहा ॥ इकदिन सुन्दर
श्याम अरु बल बालन के संग । बनशोभा देखन
चले गावत तान तरंग ॥ ५ ॥ व्रज० ॥ चौपाई ॥ व्रज
वनिता हरि चहुँदिशि घेरे । चली सुनत बंशी धुनि टेरे
तिनके तन मन बसे कन्हाई । बिना दरश इकपल न
सुहाई ॥ २ ॥ पहुँचे श्रीवृन्दावन जाई । मँगन भये लखि
छवि अधिकाई ॥ प्रफुलित चारु मालती सोहै । कुमुद
सुगन्ध पौन मनमोहै ॥ ३ ॥ दो० ॥ करत गान मिलि
मुदितमन भरे प्रेमरस माहिं । भये मगन गजमत्त जिमि

रही देह सुधि नाहिं ॥ ६ ॥ सोरठा ॥ बाजततालमृदंग बीन चंग मुरली मधुर । छाय रह्यो रस रंग उठत तरंगें तानकी ॥ ६ ॥ चौ० ॥ अबचक धनद अनुग इकआयो । शङ्खचूड़ नामक जक्ष जायो ॥ घेरि गोपिकन चल्यो लवाई । तब गोपिनके सुधि कछु आई ॥ ४ ॥ कहांजात हम काके साथा । भई विकल जिमि परम अनाथा ॥ कृष्ण कृष्ण तब टेरन लागीं । महादुखित अतिभय सों पागीं ॥ ५ ॥ सो० ॥ सुनतहि आये धाय मति डरपौ तिनतें कह्यो । अबहीं लेत छुड़ाय तुम्हैं मारि या दुष्टकों ॥ ७ ॥ ताके आय समीप मूकी मारी शीश इक । शीश गये चपि ग्रीव मनि निकारि बल को दई ॥ ८ ॥ दोहा ॥ देखि देखि हरिके चरित मरम विचित्र उदार । निशि दिन सब प्रमुदित रहत ब्रजजन प्राण अधार ॥ ७ ॥ अथ वृषभासुरवधलीला ॥ सं० ॥ दोहा ॥ कंस भजत अरिभाष हरि हरिहु भजत तिहिंभाव । ब्रज ब्रजेश मारन असुर पठयोऽरिष्टहि राव ॥ ८ ॥ ब्रज० ॥ नृपकों शीश नवायके कह्यो अरिष्ट सुनाय । कितक काज महराज यह मैं करिआवत जाय ॥ ६ ॥ सोरठा ॥ तुम असुरनके राज इनने को सोचत कहा । पल में मारौं आज बालक नंद अहीर के ॥ ६ ॥ गिरिधर ॥ कंसको पठायो धायो बादरलौं दीह देह गरजत घोर शोर जोर महा करिकै । शृंगनसों शृंगन गरजके उखारि फेंके भूमिकों बिदारे खुरखुन्न खिन्न करिके ॥ गिरिधरदास जाको रूप जोय गोकुल के ग्वाल वृष गाय गई भाजि डरिडरिके । असुर अरिष्ट गुरु गरब बरिष्ट आयो ब्रज

को अरिष्ट वृष धृष्टरूप धरिके ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ देखि त्रसित तिहिं ग्वाल त्राहि त्राहि बोलत भये। तबहीं आय गुपाल ललकार्यो वृषभासुरहि ॥ १० ॥ ब्रज० ॥ दोहा ॥ आगे ह्वै हरिहांक दै तासों कह्यो सुनाय। रे शठ कततन तरु घँसत फिरत बिडारत गाय ॥ १० ॥ सो० ॥ मों सन्मुख इतआय तो तन उपज्यो कंडु जो। अबहीं देउँ मिटाय कहत नंदकी सौंहकरि ॥ ११ ॥ गिरिधर॥ चौपाई ॥ गहि विषाण पटक्यो महिमाहीं। क्षणहु न प्राण रह्यो तनताहीं ॥ वृष वृषभानुसुतापति मारो। हरि वपुधरि हरिसदन सिधारो ॥ ६ ॥ ब्रज० ॥ दोहा ॥ चकृत भये लखि परस्पर कहत सकल ब्रजग्वाल। हम जान्यो कोउ वृषभ है हो यह असुर कराल ॥ ११ ॥ सोरठा ॥ दुष्टदलन गोपाल मुदित कहत नरनारि सब। भक्तन के रछपाल ब्रजवासी नँदलाड़िलो ॥ १२॥ अथ केशीवधलीला ॥ सं० ॥ सोरठा ॥ सुनिके मरण अरिष्ट कंस क्षुभित औ क्रुधित ह्वै। सोचत मंत्र गरिष्ट ब्रज पालक घालक निमित ॥ १३ ॥ केशी बड़ो बलिष्ट डरे सुरासुर तिहिं लखैं। पठवत ताहि अघिष्ट नँदनन्दनके कदन हित ॥ १४ ॥ ब्रज० ॥ दोहा ॥ कैसे मारों कह करों निशि दिन यही विचार। साल रहे नृप कंस उर हलधर नंदकुमार ॥ १२ ॥ ब्रज आयो केशी असुर जानिलियो नँदलाल। सन्मुख ताके हरषिकै चले कंसके काल ॥ १३ ॥ सोरठा ॥ शीशमुकुट बनमाल कटि कसि बांध्यो पीतपट। उर भुज नैन विशाल असुर विमोहन जनसुखद ॥ १५ ॥ सं० ॥ क० ॥ हेलासुनि जाकी

पुरहूतहू सकूत होत मूत होत बरुणरु यम कुबेरकै। कहै विप्र बल्लभ सो केशी हय आयो ब्रज चाहै ब्रह्मंड यह फोरनको फेरकै॥ टापकै अघात तें सुफूटि तल छूटे आप देखि इमि दाप प्रभु लीनी तेहि टेरिकै। फारि विकराल मुख धायो हरिओर तब मास्यो ततकाल मुख ताके भुज पेलिकै॥ २॥ सोरठा॥ पटक्यो असुर फिराय धमक उठ्यो ब्रजभूमि थल। चकि नृप गोमुर छाय जान्यो केशिहिं हरिहत्यो॥ १६॥ बल मोहन दोउ भाय चिरजीवहु जोरी युगल। देत अशीश मनाय ब्रजवासी प्रभुकों सबै॥ १७॥ अथ व्योमासुरवध-लीला॥ सं०॥ दोहा॥ असुर गये ब्रज में जिते ते न फिरे सहप्रान। यह कहि कहि पुनि पुनि नृपति कंस लग्यो पछितान॥ १४॥ व्योमासुर कह कंससों केहि कारण पछतात। मोहिं कहो नँदनंदको मारौं पलमें तात॥ १५॥ व्योमासुरको वचन सुनि जनु पलट्यो नृपप्रान। अतिआदर सतकारके कह्यो व्योमहि ब्रजजान॥ १६॥ गोचारन जहँ हरिकरत बालवृंदके संग। तिहिं बालन महँ आप मिलि करत व्योम सोइ ढंग॥ १७॥ चोरमिहचिनी को तहां खेल रच्यो शुभ श्याम। लुकैं जहां नहिं कोउ लखे कंदर अंदर धाम॥ १८॥ व्योमासुरहू बालबनि खेलत तिनके संग। गँव लखि हरिकहँ मारिहौं यह मन करत उमंग॥ १९॥ बालनको लैलै धरे मूँदि गुफनके माहिं। गोपबालसो होय करि फिरि आवे हरिपाहिं॥ २०॥ इमि लखि करि हरि तिंहि दई करतलकी इकठाम। कुनन त्यागि ततखन

मिल्यो जाय व्योम में व्योम ॥ २१ ॥ गिरिधर ॥ तब सब ग्वालन काढ़िके गिरितें गिरिधरलाल । प्रमुदित ब्रज आवत भये जयजय बोलत बाल ॥ २२ ॥ सं० ॥ नारदमुनि गय कंसपै अतिआनँद उरछाय । बैठारे पद पूजिकरि कंचन पीठ बिछाय ॥ २३ ॥ सोरठा ॥ पूछत निज कुशलात सुनी लखी जो कछु कहूँ । तिहूँ लोककी बात तुम जानत सरवज्ञ मुनि ॥ १८ ॥ तब नारद सब वृत्त कह्यो कंसते पूर्वको । सुनिके अतिभय वलृत्त कह्यो कहा अब मुनि करौं ॥ १९ ॥ दोहा ॥ करहु यज्ञ नृप धनुषको जो लगि जैहै पार । तेरो नहिं कछु करिसकै हरि लीन्हेहु अवतार ॥ २४ ॥ क० ॥ यज्ञकी तयारी भूप धनुकी करत भारी जेजे अधिकारी तिन्हें पान मान दैदैके । कहै विप्रवल्लभ हां शिव को धनुष थापि आहुति सुदेत द्विज साकलिको लैलै के ॥ ताके चहुँवार रखवार असवार खड़े जाय नहिं कोऊ बिनामनिज धैधैके । पूजे भूतनाथ भूतदिनकी अवधिराखि आनँद उमंग अंग अंगन में छैछैके ॥ ३ ॥ दोहा ॥ शिवतिथि महँ शिव पूजिकरि करे कुहूमहँ रंग । राम श्याम अभिराम दोउ लरैं मल्लके संग ॥ २५ ॥ महसतंभरँगभूमि में थापिरचे बहुमंच । ता चढ़ि लखि हैं नारिनर दंगल मंगल मंच ॥ २६ ॥ अयुत द्विरद बलरद करे ऐसो द्वार द्विरद । करि मद मद महद तुम मारेहु हरि बलभद्द ॥ २७ ॥ शल तोशल कूटादि तैं कंस कह्यो तुम योध । राम श्याम रँगभूमि में हनिहहु तुम करि क्रोध ॥ २८ ॥ बड़े असुर उदभटनको थापि

यज्ञके हेत । कहत कंस अक्रूरसों जाय इकंत निकेत ॥ २६ ॥ नंदनँदन नवनंदकहँ देहु निमन्त्रणपत्र । धनुष यज्ञ नृप करतहै चलहु सकल मिलितत्र ॥ ३६ ॥ तब दोउ बालनि मारिके अरु गोपन को मारि । फिरि उन के हित मारिहौं कही बात निरधारि ॥ ३० ॥ गिरिधर ॥ बाण भौम मागधद्विविद इनहिं आदि लै संग । करिहौं राज अनंद सों सांच सुनहु ममढंग ॥ ३१ ॥ मुनि बोले अक्रूरइमि यह तुव सकल विचार । करिहै देव तथापि मैं करत हुकुम अनुसार ॥ ३२ ॥ प्रात होत चढ़िसुरथ पै व्रजहिं चले अक्रूर । परममुदित हरि मिलन हित भयो मनोरथपूर ॥ ३३ ॥ रोलाछंद ॥ कंस यह उपकार कीनो मोहिं पठयोअत्र । दरश करिहौं श्याम को बल-रामसह एकत्र ॥ धन्यहौं हरि जाहि अपने अंकलै हैं चा-हि । पूछिहै मम कुशल करुणा समुद हरि अवगाहि ॥ १ ॥ करत इमि अगणित मनोरथ मुदित चित यदु-वीर । सांझ पहुँचे जाय व्रजजित गोप गोपीभीर ॥ देखि गोकुल छवि सुमति अतिदान पति हरषाय । कियो गां-वप्रवेश तहँ की रजहि शीशचढ़ाय ॥ २ ॥ रजमहिमा ॥ क० ॥ गावै जाहि वेद पै न पावै कछु भेद वाको सुमिरेते जातखेद श्याम भक्ति सरसी । जेते व्रत दान ध्यान ती-रथ प्रधान अहैं सब को गुमानहरे जाकी शानदरसी ॥ गिरिधरदास सदा ब्रह्मको निवासजामैं ब्रह्म ब्रह्म पद्म नसो जात नित घरसी । ध्यावैं अज ताहि देखे जात यमदूत भज ऐसी व्रजरेनु सो अक्रूर शीश परसी ॥ ४ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ आगे नियरे जायके तिहिं रज हरिपद

अंक । लोटतभे अक्रूर तिहिं रथतें उतरि निशंक॥ ३४॥ गिरिधर ॥ सुफलक सुतसम औरको सुफल जिअन बड़भाग । चढ़ी परमपद पद्मकी जाके शीश पराग॥ ३५ ॥ सं० ॥ सो० ॥ नंदनँदन नँदराय तहँ पहुँचे अक्रूर जब । करगहि कण्ठ लगाय पूछतभे कुशलात तब॥ २० ॥ दो०॥नन्दादिक अक्रूरको कीनो अतिसनमान। असन बसन भूषादि दै दये पाणिमें पान ॥ २१॥ चौ०॥ तात कहहु मामाकी बातें । किमि पठयो शोची का घातें॥सुनि अक्रूर सब कथा सुनाई। जो नारदमुनि नृपतें गाई॥ ७ ॥ सं० ॥ सो० ॥ यज्ञ करत धनुष्कंस मोहिं पठयो तुम लेनकहँ । जे व्रजमें अवतंस बाल वृद्ध अरु तरुण सह ॥ २२ ॥ गिरिधर ॥ दो० ॥ इमि मातुलको हाल तुम जानहुजू नँदलाल। परिपूरण चूरण करहु भक्तनको जंजाल ॥ ३६ ॥ सुनि सो हँसि बल सहित हरि कही नन्दसो बात। कंस बुलावत सबन कहँ यज्ञ लखन कहँ तात॥ ३७॥ गोपगणनतें कहत यह हरिवच सुनि नँदराय। चलहु कालिह सब भेंट सजि शकटन माँझ लदाय ॥ ३८ ॥ कालिह श्याम मथुरा चलत पटह फिस्यो व्रजमाहिं । सो व्रजबालनने सुन्यो मुरछित गिरी तहाँहिं ॥ ३९ ॥ चौ० ॥ व्याकुल अतिहि देह सुधि नाहीं । हाहा हरि कहि करि बिलखाहीं ॥ सुमिरि सुमिरि मोहनकी गाथा । घुमरि घुमरि महि गिरि इकसाथा ॥ ८ ॥ लोचन जलमोचन बहु करहीं । दीरघ सास परसपर भरहीं॥ वल्लभ विरह असह तन तायो। सुनि हरिगौन ज्वाल हिय छायो ॥ ९ ॥ जहँ तहँ सुनि

सुनि आतुर धावत। राधा निकट भई सब आवत॥ होय इकत्र तत्र ब्रजबाला। रोवन ऊँचे लगे बिहाला॥ १०॥ मबारक॥ स०॥ इयामको गौन सुन्यो सजनी अँखिके दुबि ज्यों रबि राहुकी ओटन। चौंकि मबारक राधे जगी दुखके नख लागे करेज खरोटन॥ हा जगबन्दन हा नँदनन्दन हा हरि लेत न पीरकी चोटन। लोहू की घोंटन घोंटि गई गिरि लोटनसी अबला लगी लोटन॥ १॥ गिरिधर॥ आयो पठायो महाखल कंसको दुष्टपनो घनो चित्त भरो है। लै गिरिधारन जान चहै सबसो मिलि याहि विचार कियो है॥ जाने कहा करिहै तित्त जाय अभीसों तियानको प्रान हरो है। धूरहै वाको सहूर मेरी जिहि कूरको नाम अक्रूर धरो है॥ २॥ सुखयोगहिं देत महादुख है दुख योगहिं लै सुख मानतहै। गिरिधारन जाहि संयोग सुयोग बियोग दशा तिहिं आनतहै॥ अबला गउ बाल न बूढ़ गिने शठ आपनही हठ ठानतहै। करिबे न नहीं करिबेकी अरी विधिना विधिना कछु जानतहै॥ ३॥ हेत समेत सुनावत बात खरोरहै ज्यों मिलै बालकही है। कै मनुहार घनी गिरिधारन कारज आपनो साधतही है॥ आयो अक्रूर बुलावनको तजिकै ब्रजको अब जात वही है। साँच सखी हम आज लखी मनमोहनके मन मोह नही है॥ ४॥ सं०॥ दो०॥ इमि कहिकै सब गोपिका रोयउठीं इकबार। हिय जिय हरि हरिजात कत हे हरि लेहु उबार॥ ४०॥ व्याकुल लखि इमि तियनको दीनबन्धु सुखदानि। बहु बिनती करि हरिकह्यो पुसों मिलिहौं आनि॥ ४१॥ सो०॥ फिरि

आवनकी आस धर्यो सास हिय गोपिकन। फिरिफिरि लेय उसास इकटक निरखत रहिगई ॥ २३ ॥ यशोदा जूकी वात्सल्य रसपूरित वाक्स्मरणी॥ दीनदयालगिरि॥ क० ॥ प्रानके अधारे मेरे बारे ये पधारे चहैं भूपके अखारे जहाँ भारे सजे शूरमैं। बढ़ी है शरीर पीर बूड़त वियोग नीर धीरधरों कैसे करों आँखिनके दूरमैं॥ डारो बरु कंस कारागारमें जँजीर भरि एरी बीर जाउ जरि धन धाम धूरमैं। जोपै ये कन्हैया बल भैया दोऊ लाल मेरे खेलैं कहि मैया बैन नैनके हजूरमैं॥ ५ ॥ जाय जनि प्रानके पियूष मोहिं मागन दै कौन अनुरागनसों आंगन विहारिहै। अरिके मथानी धरि माखनको खैहै कौन भौनबिच लाखन खिलौननको सुधारिहै॥ एरे मेरे छैया तू कन्हैया मैं बलैया जाउँ मैया मैया टेरि कौन मोहिंको पुकारिहै। कंसधूत दूतको सँदेशो सुनि चले पूत कौन पुरहूत धार धराधर धारिहै॥ ६ ॥ दारुणदुखद बन्द याके हैं करमकूर कहत अक्रूर पूर बाँकुरो ठगनमें। लायके ठगौरी दौरिगोरी मनमोहनलै भोरी रही गोरी सब शोचति मगनमें॥ करति पुकार हाय बरजोरे बार जाय धरति न धीर धाय परत पगनमें। मात बिललाति भूरि जीवनकी मूरि हरे दूरि रथजात धूरि पूरित गगनमें॥ ७ ॥ हरिके मधुपुरी जानसमयमें गोपिनकी विकलता यथा॥ बंशीधर॥ कुटिल अक्रूर कूर बैरी बहुजन्मनको चेटकसो डारि करिलैके व्रजमूरगो। व्याकुल बिहाल बाल बंशीधर हरिबिनु मीनसी तलफ सरहीन तन भूरगो ॥ चरन उचाय चितवत ऊँचेधाम चढ़ि

चिन्तासो चकित चितचैन सब चूरगो। बारबार कहत बिसूरि जलपूरिनैन धूरि न दिखात आली अब रथ दूरि गो॥ ८॥ गंग ॥ स०॥ जौलौं रहीं रथकी रज देखतीं और ध्वजा पटपीतकी फाहर। तौलौं रहीं सब ध्यानधरे जौलौं प्राणगये दृग पैंडके बाहर॥ गंग भुकीं भुकिहू के चलीं धरणी परीं पियके ह्वैके जाहर। कागदकी पुतरीसी भई जल भीतर भीजि सबै इकठाहर॥ ५॥ लाल॥ क०॥ पर्यो व्रजबालनमें बिरह अचानकही बाढ़े नेह गिरिधरलाल गुनरसीको। देख देख कुञ्जनके आलं पान सूखपूरे कूकपरे जारे कोयलान रंगमसीको॥ भौंर भटकाने चिन्ता चित्त अटकाने वे गुलाब चटकाने सीखे मन्त्र मानो बसीको। पीरी परी प्रातमें जुन्हैया मुरझाय गई कारोपरि हियरा हिरायगयो ससीको॥ ६॥ अन्य॥ हाय हाय करैं पास ठाढ़ी जे सहेली सबै बिपति न मेटी मिटे बिपति कृशानकी। सिमिटी सकाय दुख दारुण चपेटी लेटी भूपर बिकल ह्वै ससेटी पञ्चबानकी॥ बिछुरत श्याम प्रान रहे हैं गरेटी लागि रोवें सारिकादि खेटी कहा कहों आनकी। अतर लपेटी कालिह कुञ्जनमें भेटी आज धूरमें धुरेटी लेटी बेटी वृषभानकी॥ १०॥ चंडीदत्त॥ बिरह बिहारी के बिकल बिलखत बाल बौरीसी लगति द्युति अतिशै मलानकी। आहिकै धरे हैं पग इत उत चण्डीदत्त घूमिके गिरे हैं ज्यों धरी हैं देह आनकी॥ सांस ना भरतहैं शिथिरसी दिखाई देत होनी ना मिटाई मिटे बिधि बलवानकी। अतर लपेटी कालिह कुञ्जन में भेटी आज धूर में धुरेटी लेटी बेटी वृषभान

की ॥ ११ ॥ गोपिनकी उक्ति मनसों ॥ पद्माकर ॥ स० ॥ रे मन साहसी साहसराखि सुसाहसतैं सबजेर फिरैंगे । ज्यों पद्माकर या सुखमें दुख त्यों दुखमें सुख सेर फिरैंगे ॥ वैसहि बेनु बजायके श्यामजू नाम हमारो सुटेर फिरैंगे । एक दिना नहिं एक दिना कबहूँ फिर वे दिन फेर फिरैंगे ॥ ६ ॥ सं० ॥ दो० ॥ यों कहि गोपीगन सकल राधहि साहस देय । फेर मिलनकी आशतैं जीवन तज्यो न तेय ॥ ४२ ॥ गिरिधरदास ॥ उत हरिको रथ वेगसों पहुँच्यो यमुना तीर । उतरि सबन मज्जन कियो पाप हरणिके नीर ॥ ४३ ॥ सं० ॥ क० ॥ ढिग हरिछाँड़िके समायो कूर सूरसुतै हिय अरु आँखहू लखात यह सूरहै । कहै विप्रबल्लभ त्यों न्हायके सुदैके अर्घ ध्यावत हरिहिं हिय जानिके सुदूरहै ॥ ध्यानमें न आये ढिग जलहि लखाये तब शीशहि उठायदेख्यो रथहि अक्रूर है । डूबि जल ऊबि रथ माँहही बिलोकि भयी चेतचित चातुरी सुताकी चकचूरहै ॥ १२ ॥ दो० ॥ तब पद गहि हरिसन कह्यो मैंहौं अतिहीकूर । मोपर कृपाकटाक्षकरि करिमाया निजदूर ॥ ४४ ॥ इमि कहिकरि चरणन पर्‌यो तब हरिके अक्रूर । सो माया हरि हरि कह्यो नहिं मैं तोतैं दूर ॥ ४५ ॥ तब तिहिं रथ बैठारिकरि हँसि पूछत भगवान । कहा लख्यो तुम नीरमें लखत लख्यो सोइ थान ॥ ४६ ॥ सो० ॥ उतरे उपबन माहिं नन्दादिक मथुराढिगाहिं । श्याम सबलहू छाँहिं सखा सहित राजत भये ॥ २४ ॥ हाथ जोरि अक्रूर कह्यो चलहु मेरे घरहिं । है कछु काज जरूर ताहि साधिकरि आयहौं ॥ २५ ॥

दो० ॥ तब प्रणाम करि श्यामको गये अक्रूर नृपपास। हरि आगमन जनायकरि नँदसह गे निजबास॥ ४७॥ श्रीदामादिक सखन सह चले लखन ब्रजनाथ। मथुरा पुर सुरपुर सरिस रचि रचि रचे सुपाथ॥ ४८॥ गिरि-धर ॥ क० ॥ उन्नत अवास सबै परसैं अकाश जाके उज्ज्वल प्रकास छाजैछबिशशि साजकी। गोपुर बिचित्र चित्र रतननके सांचे मनो गान तानमाननते पूरित अवा-जकी॥ गिरिधरदास जाके शोभकी प्रकासीलखे सुरपु-रवासी मुरि राहलेत लाजकी। जाकैनहिं सानी तिहुँलोक रजधानी कोऊ ऐसी सुखदानी लखीसुखमा दराजकी॥ १३॥ कहूँ गज बाजी कहूँ पत्तिनकी राजीकहूं सुजन समाजी कहूँ राग रंग राचे हैं। कहूँ द्विज बृन्द कहूँ रा-जत नरिंद कहूँ धनी हैं अनन्दी कहूँ बन्दी यश बाँचे हैं॥ गिरिधरदास कहूँ देवके अवास कहूँ बापी कूप खास गढ़े विधिहीके साँचे हैं। कहूँ असवार कहूँ वीर तरवार वारे कहूँ बरबार बर बारबधू नाँचे हैं ॥ १४॥ सं० ॥ क० ॥ मथुरापुरीकी शोभ लखत गोपाल बाँको राजत सुवेष धरैं नटवर धोखामें। कहै विप्रवल्लभ क्यों बरनि सकत कोऊ जाकी रूपराशि नहिं आवत सुजोखामें॥ वापुर बधूटी जूटी शोभको सरूप सुनि दर दर द्वारन किवारनके मोखामें। दृगनिते ताको रसरूप मधु चाखि चाखि भुकि २ भूमि २ भांकत झरोखामें॥ १५॥ सो०॥ मथुरापुरकी बाम आगम सुनि हरिको सबै। तजि गृह को सबकाम भाँकत भुकभुकि झरोखतें॥ १६॥ दो०॥ किति छिनितैं किति छातते किति द्वारनके ओर। लगि

लगि लगि झाँकतखरी इकटक हरि की ओर ॥ ४६ ॥
स० ॥ गुञ्ज गरे शिरमोरपखा कटि पीतपटी लकुटीकर
भ्राजै । त्यों बलदाऊ सुहाउतहै अरु ग्वालगुवालहु संग
विराजै ॥ यों लखि वल्लभ चित्रहिकी जनुपूतरिसी युव-
तीन समाजै । ऐसी न देखी सुनी सजनी जिहि मूरति
देखि रतीपति लाजै ॥७॥ सोरठा ॥ हरि हलधरको रूप
निरखि कहत तिय परसपर । हैं यह जगके यूप कंस
कदन हित अवतरे ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ लखि हरि कहँ
नर नारि समाजा । बरसावत दधि अक्षत लाजा ॥
सहित मुदित मन बालक वृन्दा । चलत जहां जहँ
जात गुबिंदा ॥ ११ ॥ दोहा ॥ रजक मिल्यो इक चल-
त मग तिहिते कह्यो मुरारि । ये नृप पटमें सुपटजे
दे मोहिं तू द्वै चारि ॥ ४० ॥ सुनि शठ बोल्यो कोपिक-
रि रेगोचारकवार । लाज न आवत तोहिं उर नृपपट
चहत गवांर ॥ ४१ ॥ सुनतहि शिर तिहिकंधतै हरि
हरि कियो कबंध । बसन यथा रुचि ग्वालसब पहिरे
बांधि सुबंध ॥ ४२ ॥ रजक अनुग सब भजिगये तहँ
दरजी इकआय । जो जहँ जैसे चाहिये तैसे दये बना-
य ॥ ४३ ॥ दैवर तिहिं वर बाल सह चले सबल नँद-
लाल । खल बल दल बल मचिगयो सुनि पुरमें यह
हाल ॥ ४४ ॥ लखिसुदाम मालीहरिहिं धरि डालीपरि
पांय । बहु पूजन बिनती सुकरि दई माल पहिराय ॥ ४५ ॥
गिरिधरदासमालिनीछन्द ॥ हरि दृगनि निहारे । पुण्य
मेरे सुभारे ॥ सफल अब हमारे । जन्म कर्मादि सारे ॥
अघ अखिल सिधारे । लोक दोऊ उधारे ॥ जनहित

बपु धारे। भक्तिही देहु प्यारे॥ १ ॥ दोहा ॥ इमि कहि पद्गगहि महिपस्यो प्रीति प्रतीति निधान। बनमाली माली बरहि वर दै चले सुजान ॥ ४६ ॥ सं० ॥ कुब-जा दासी कंसकी हरिहि लखत हरचन्द। जानि प्रेम ताको तबहिं हँसिबोले ब्रजचन्द ॥ ४७ ॥ चन्दन क-नक कटोरि मधि तुबकर अधिक सोहाय। सुनत बैन हरिके तुरत अंगन दयो लगाय ॥ ४८ ॥ गिरिधर ॥ क० ॥ देखिकै त्रिभंगिनि को प्रेमसों त्रिभंगी लाल बक्रता हरन चह्यो लखि गुन दूबरी। बोले बरबैन तेरे नैन तेरे नीरज से नैन अरु कोकिल से बैन अंग खूब री ॥ गिरिधरदास गहि करसों चिबुक चारु ऊँचीउच-काय वाहि वक्रतासों ऊबरी। जैसे वनमाली हेम ल-तिकाको सूधी करे तैसे वनमाली गहि सूधीकरी कूब-री ॥ १५ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ तब कर पकरि गुपालको क-हति चलहु मम गेह। ऐहौं फिरि कहिके चले धरिहरि अतिही नेह ॥ ४९ ॥ गिरिधर ॥ मिले महाजन बहुत मग तिन पूज्यो शिरनाय। ह्वै प्रसन्न तिनको दयो गि-रिधर वर वरदाय ॥ ५० ॥ सोरठा ॥ धनु थल पहुँचे जाय लख्यो ताहि गिरिखंड सम। लीनो आशुउठाय यदपि निवास्यो रक्षकन ॥ २८ ॥ सं० ॥ क० ॥ मत्त-गज जैसे लघुलतिका उठावे तैसे धनुष उठायो लखि रक्षक घबराये हैं। चकेसे खरे हैं केते बावरे बकेहैं केते भाजि न सकेहैं केते भभरि पराये हैं ॥ लाग्यो पुर कां-पन औ जागी लगे जापन यो आयो फल पापन यों कहत डेरायेहैं। वल्लभ लखत सब शत्रुन अखत धनु

खंड खंड करिके तिहिं बखत गिरायेहैं ॥ १६ ॥ सोरठा ॥ टूट्यो हरकोदंड भयो शब्द अति चंड तहँ । जनुफूट्यो ब्रह्मंड पाटि गयो नव खंडमहँ ॥ ५० ॥ दोहा ॥ धंनु रक्षक रनदक्ष बहु लागे लरन प्रचण्ड । हरि हलधर मारे तिनहिं गहिकर धनुके खण्ड ॥ ५१ ॥ परशुराम कंसहि दयो यह कहि हर कोदंड । जो नर याको खंडि है सोइ तुवकरिहै खंड ॥ ५३ ॥ ह्वां टूटे धनुके भई जनक कामना पूर । ह्यां टूटेधनु कंसकी भई चेतना चूर ॥ ५४ ॥ इमि मथुरा निरखत सबल ग्वालन सहित गुपाल । गृह अक्रूर आवतभये नन्द निकट नँदलाल ॥ ५५ ॥ धनुषभंगको शब्द सुनि नृप तलफत भयेभीन । तप्तबालुका मधि पर्‍यो तरफरात जनुमीन ॥ ५६ ॥ रैनि अचे नहिं मैं गई भोर भोजपति आय । बिमना बैठ्यो रंगथल ऊँचे मंचहि जाय ॥ ५७ ॥ मंचगतकंस वाक्य ॥ क० ॥ दारुन दराज यह बारन विशाल हाल कुवलै कराल व्याल ठोकर दै ठोकेगो । ताहिते बचेतो द्वार दुन्द अभिलाखी बन्धु युद्धकै तमाम ततकालतेहि रोकेगो ॥ डारे चीरि मुष्टिक औ मरोरि चाणूर डारे हारि करि घोष तब सोक बहु सोकेगो । मल्ल दलमल्लनितैं मरिकै अहीर वह आज यमधाम जाय यमहिं बिलोकेगो ॥ १७ ॥ यहसुनि मंचथित अपरजन अपने कानमें कहत भये ॥ दोहा ॥ गिरिधर कर पर लैरह्यो श्रमनहिं बासर सात । सो कुबलय रददरनको ताके केतिकबात ॥ ५८ ॥ सोरठा ॥ रंगभूमि वृत्तान्त सुनि हरि बोलेसखनतें । मैं जो बात नितान्त कहों सुनो तुम कानदै ॥ ५० ॥ श्याम

वाक्य ॥ सोमनाथ ॥ क० ॥ ग्वालनपै कुंजर तुरंग लुट-वाऊँ अरु बंधनतें पीर पिता माताको छुड़ाऊँ मैं। ठोकरसों फोरि करों मंदिरन खंड खंड ठौरठौर गायनके खिरक बनाऊँ मैं ॥ सोमनाथ बारबार भृकुटी चढ़ाय कान्ह कहै बलजूसों तुम्हें मनकी सुनाऊँमैं। जो हौं नँद नंदतौ मैं आज मथुरा के बीच कंसको निपट निरबंस करिआऊँ मैं ॥ ३१ ॥ सूदन ॥ खैंचि बांध्यो मुकुट समेटि घुंघुरारे बार कुंडल चढ़ाय कान कलँगी सुघट की। जांघिया जकड़ जंघ अंगन अकड़ राखि पेटी कसिबांधी कटि पेटी पीत पटकी ॥ भृगुपद चिह्न त्योंही ललितप्रियाको चिह्न सूदन सराहै छबि लालतन तट की। कोटिन सुभटकी निहारि सुधिभटकी या कान्हर सुभटकी धरनि वेष नटकी ॥ ३२ ॥ गिरिधर॥ चौपाई ॥ नन्दादिक सब गोप सुहाये। लै लै नृपहिं उपायन आये ॥ एकमंच पर तिनहिं बिठाये। निरखहिं रंगरंग छबि छाये ॥ ११ ॥ दोहा ॥ ता छन बलसानुज तहां आये ग्वालन संग। निरख्यो दूर दराज बर अति मद मत्त मतंग ॥ ५६ ॥ हथिवानहिंतें हरिकह्यो हाथी नेकु हटाय। यह सुनि गज गजबागदै रेल्यो कोपकराय ॥ ६० ॥ क० ॥ झूकत झुकत मतवारो अतिभारो गज गरजन गरजे महा प्रलयकालकी। कोमल कमल सम दाऊ औ बिहारीलाल फेरन फिरत तहां केशरीके बालकी ॥ देखादेखी होत शुण्ड चापिके द्विरद दौर्‍यो केहरी सों सरस गरूर नन्दलालकी। रंगभूमि द्वारे मची दौरन दुहूँननकी धाँवन द्विरदकी औ आवन गुपालकी ॥ १८ ॥

सं० ॥ दो० ॥ क्रीड़तवसुधरि पुच्छ भुज निजभुज करि हरिदाउ । दाव घाव सोऊ करत दुनहुनते गजराउ ॥ ६१ ॥ अमृतध्वनि ॥ कुबलय करतें हरितबहिं कियो ताहि आपीड़ । सफल भयो गजको तबहिं नाम कुवलयापीड़ ॥ पीडक्करभर पुच्छग्गहि करि तुच्छक्किय मद । शुण्डस्सहि भुज दण्डग्गहिय उखण्डिल्लियरद ॥ रद्दग्गहि बल भद्दग्गज पहि दल्लिहिय लय । सद्दत्तवहि भयहल्लखिअसु तज्जत्कुवलय ॥ १ ॥ इहिविधि कुवलयपीड़को हस्तिप सहकरि अंत । अभय चले हलधर सहित कन्धद्धरि करिदन्त । कन्धद्धरिकरिदन्त चलत सुरंगभ्भुवि महँ ॥ कंसच्चकित अपरस्सत्तिनकह मंचत्थित जहँ । कालल्लखि महिपालज्जनगुन मालस्सहखिधि ॥ बालस्सहित गुपालज्जहँ अति राजहिहिविधि ॥ २ ॥ दो० ॥ रंगभूमिकी शोभ शुभ लखी श्याम बलराम । इन दुनहुँनको विनलखो रहे जुजे तिहिठाम ॥ ६२ ॥ सं० ॥ बल्लभ नगारे भारे कंसके अखारे बीच बाजत जुभ्कारे सुनि कम्प सुरराऊके । बैठे चढ़ि मंचन नृदेव अवतंस तहां बाँधिके मुकुट मणि माणिक जराऊके ॥ हहरे प्रबल मल्ल रंगभूमि आवतही भभरत बाल जिमि नामलिये हाऊके ॥ लोक तमध्वंस भयो वंस परशंसभयो कंस अधशंस भयो देखे हरिदाऊके ॥ १६ ॥ अन्य ॥ कामिनी बिचाख्यो काम सन्तन बिचाख्योराम योगी योग धाम सिद्धि सिद्धन विशेखिये । गज जान्यो शारदूलमाल जान्यो वज्रतूल शत्रु जान्यो शूल प्रजा प्रजापति लेखिये ॥ घनाघन मोरजान्यो चन्द्रमा चकोरजान्यो भ्रमरजान्यो

कंजमंजु मकरंद पेखिये । कंस जान्यो कालसम गोप जान्यो रक्षपाल एकै नँदलालको अनेक रूप देखिये ॥ २० ॥ सं० ॥ रंगभुवि नारिन अनंग धरे अंग जान्यो यादवन जान्यो निजवंश को जुगुप है । वल्लभ श्रीरसिक सिंगार रसरूप जान्यो भूपनने जान्यो सब भूमिहीको भूपहै ॥ विप्रनने देव जान्यो ग्वालनने मित्र जान्यो योगिनने जान्यो यह योगही को यूपहै । नन्द निजबाल जान्यो मल्लनि कराल जान्यो कंस ततकाल जान्यो श्याम कालरूपहै ॥ २० ॥ दो० ॥ निरखि रूप नर नारि सब कहत सु लगि लगि कान । राम श्याम दोउ अवतरे दुष्टदलन भगवान ॥ ६३ ॥ मधुकैटभसे शूरको मारि कियो जिनधूर । तिनते चाहत लरन ये शल तोशल चाणूर ॥ ६४ ॥ क० ॥ बोल्यो लखि कंस निज मल्लन ते क्रुद्ध ह्वैके मुद्ध ह्वैरहेहौ कहा करो युद्ध श्यामते । उठे सब माल निजकाल ततकाल जानि ताल ठोंकि ठोंकि धाये उठि उठि ठाम ते ॥ देखिबे को आये तहां सुर वर सिद्धवृन्द वल्लभ महानमुनि निज निज धामते । बालक समान हम कुलिश समान तुम ह्वैहै धर्महानि यामें किये युद्ध ब्रामते ॥ २१ ॥ मल्लनकी उक्ति हरिप्रति ॥ दो० ॥ जो हजार गजराजको धारत ओज विशाल । ताहि मारि महिडारि अब आप बनतहौ बाल ॥ ६४ ॥ गिरिधर ॥ छन्द ॥ हेरि मल्लन लरत हरिसँग कहति तिय इमि बैन । बड़ो अनरथ होत यह नृपसभामहँ अघ ऐन ॥ ६५ ॥ कहांबालक सुमनसे कहँ बज्रसे बरबीर । तिहि लरावत कंस धिक धिक बोलत बरजत धीर ॥ ६७ ॥ सं० ॥

दो० ॥ जुटिकरि हरि चाणूरते मुष्टिकते बलराम । बाहुयुद्ध
लागे करन धरिकर दाहिन बाम ॥ ६८ ॥ क० ॥ अन्य ॥
तालको ठकोरि कर पेलिके पकरि मोजा खैंचि निज
ओर तहीं डारत सड़ाकदै । थपकी दिखाय कसै जाय
डंड कसा पाछे हाथी चिकार बांधि रगरे झड़ाकदै ॥
रूमीकरि नालबन्द करिके रुमाली फेर सखी दांवकैके
दाबि लेतहै तड़ाकदै । हस्तीको चलाय डारि लंगर ल-
पेटि भुज घालि कलाजंग महि पटके पड़ाकदै ॥ २२ ॥
इलो० ॥ दामोदरकराघातविह्वलीकृतचेतसा । दृष्टंचा
णूरमल्लेन शतचन्द्रंनभस्तलम् ॥ १ ॥ दो० ॥ मुष्टिक
के मुख मुष्टिका दई एक बलराम । फिरकी सो फिरि
घूमिगिरि मरिकरि गो सुरधाम ॥ ६९ ॥ अमृतध्वनि ॥
तब इहिं मल्लन मरन लखि कह्यो अपरके सत्थ । लरु
यह सुनि अति कोहकरि धस्यो हत्थतें हत्थ ॥ हत्थद्धरि
भरिबत्थप्पकरि सुगत्थग्गथिकरि । मत्थत्थरि परिपत्थि
ज्जकरि सुतत्थिभ्भुवि परि ॥ गल्लप्फारिकरि मल्लम्मलि
तहँ बल्लज्जुत जब । दल्लस्सहित दहल्लाच्छिअतिप सुफुल्ल
द्धरि तब ॥ ३ ॥ गिरिधर ॥ छं० ॥ जानि तिनको कूर
हरि चाणूर कीनो चूर । मारि मुष्टिक मुष्टिकहिं बलवध्यो
संगर शूर ॥ कूटकों पुनि कूटके तहँ कियो प्रान बिहीन ।
श्याम शल तोशलहि मास्यो मृगहि जिमि हरिपीन ॥ १ ॥
मरत पाँचहु मल्लके डरिभगे तिनके भृत्य । लरेग्वालन
से तबहिं हरि लखत जन कृतकृत्य ॥ कंस बिन सब
तहाँ बोले साधुसाधु सुजान । किये वादन बन्द नरपति
रोषभय उरआन ॥ २ ॥ अमृतध्वनि ॥ लखिकरि म-

ल्लनको मरन अङ्गग्गहि कर खग्ग । चाह्यो तब कछु लगि प्रथम मंचच्चढ़ि बल अग्ग ॥ मंचच्चढ़ि बल अग्गग्गहित कचग्गहिलियहरि। खग्गस्सहित उदग्गच्छिति पहिं मेलिच्छिति धरि ॥ भारम्भर निज धारद्धरितब कंसग्गय मरि । मंचग्गतनर खग्गग्गत सुर मुद्ल्लखि करि ॥ ४ ॥ सो० ॥ कंकादिक वसुबन्धु रहे कंसके अनुजजे । तिनहिं हते वरबन्धु बलदाऊ सबके लखत ॥ ३२ ॥ सं० ॥ स० ॥ केशव कंसहि मारि दयो जगमें जगजीवनको सुखभारी । बल्लभ मात पिता जनको सु दयो दुखके सब संशय टारी ॥ बोधितकै तिहिकी पतनी ननि आये जहाँ यमुना बह प्यारी । कान्ति बढ़ी सिरि-काँतिहुकी लखिके बिसरौंतिकी कान्ति दुरारी ॥ ३२ ॥ नबीन ॥ बका औ बकीको उतपात मेट्यो गोकुलमें तैसे तृण आवृतको आवृतहू छीनो है । काली पुरहूतहू की कला हति केशी दाव वत्सासुर वधिके नचीत व्रजकीनो है॥ भेज्यो अकरूरै कूर लायबे गरूरै मानि आये मथुरामें श्याम सो यश नबीनो है । रङ्गभूमि आये अंस धारि कुबलैके रद केशन पकरि आज कंस मारिलीनो है ॥ ३३ ॥ सं० ॥ सो० ॥ इमि लखि सुरगण सर्व बरसावत सुमनासुमन । गावत गुण गन्धर्व नाचत सुरवर अप्सरा ॥ ३३ ॥ हो तुम सत्यप्रतिज्ञ अज आदिक सुर मुनि कहहिं । हम सब अति अलपज्ञ जानें कह तुव पद महिम ॥ ३४ ॥ दो० ॥ इहिविधि अस्तुतिकरि गये सुरमुनि निज निज धाम । मात पितहिको निगड़ते काढ़े ततखन श्याम ॥ ७० ॥ तुरत बोलि तब विप्रवर प्रीति

सहित परिपांय । प्रथमहिं संकल्पी हुतीं दई लक्षते गाय॥७१॥सो० ॥ और दियो बहुदान बन्दीजन आये सुनत। परितोषे सनमान अति उछाह वसुदेव सब ॥ ३५ ॥ दो० ॥ जातिपांति परिजन प्रजा बधुन सहित सब लोग। लै लै आवत भेंटसजि हरषत निज निज योग ॥ ७२॥ सो० ॥ भई भवन अति भीर नट नाचत गावत गुणी। धरिधरि मनुज शरीर मानहु सुर आये सकल ॥ ३६ ॥ हुते श्यामके साथ बाल तिन्हैं पुनि देवकी। पहिराये निजहाथ जानि कृष्ण प्रीतमसबै॥३७॥ कह्यो नन्दसों श्याम तुम कीनो प्रतिपाल बहु । जाय कहो निजधाम जननी ते मेरी कुशल ॥ ३८ ॥ ब्रज० ॥ दो० ॥ झझकि परे जिय नन्द सुनि कहा कहत गोपाल। मोसों कहेकि आनसों किन कीनो प्रतिपाल॥ ७३ ॥ सो० ॥ अस कस कह नँदराय मति ऐसै मोसों कहैं। गहवर हिय भरिआय ढारि सकत नाहिं नैनजल॥ ३८ ॥ चौ० ॥ तुमसम तात पिता न हमारे। जहां रहैं तहँ तात तुम्हारे ॥ बिछुरन मिलन मोह अरु माया। यह प्रपंच जगबिधि उपजाया ॥ १३ ॥ ह्वै है दुखित यशोमति मैया। मो बिनु ब्रजतिय अरु सबगैया॥ ताते गवन वेगि ब्रजकीजे। जाय सबनको धीरजदीजे॥ १४॥दो० ॥ निठुर बचन सुनि श्यामके भये बिकल अतिनन्द। उमँगि नीर नैनन चल्यो परे दुःखके फन्द ॥ ७४ ॥ सोरठा ॥ दुखित सखा अरुगोप चकित रहे हरिमुख निरखि। करत मनहिं मनकोप कियो चरित अक्रूर यह ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ परे नन्द तब चरणन धाई। ऐसे कबहुँन क-

हन कन्हाई ॥ मोहन तुवतजि चरण न जैहों । तुमबिन जाय कहा व्रज लैहौं ॥ १५ ॥ मधुबन तुम्हैं छांडि जो जाऊँ । यशुदहिं उत्तर कहा सुनाऊँ ॥ सनमुख सुनत दौरि जब ऐहैं । तुम बिनु काहि गोद करि लैहैं ॥ १६ ॥ पंथ निहारत कैहैं मैया । चलहु बेगि व्रज कुँवर कन्हैया ॥ क्यों जीहैं बिनु दरशन पाये । होत निठुर कत मथुरा आये ॥ १७ ॥ डारि न दयो कमलकर गिरिवर । दबि मरते व्रजजन ताकेतर ॥ कहत नन्द यों बिकल अधीरा । भई कठिन हरि बिछुरन पीरा ॥ १८ ॥ दोहा ॥ देखि प्रीति अति नन्दकी मन वसुदेव सिहात । सकुचि रहे सब प्रेम वश कहिन सकत कछुबात ॥ ७५ ॥ सोरठा ॥ व्याकुल सबै अहीर मानहु पन्नगके डसे । हरि मुख लखत अधीर ठाढ़े काढ़े चित्रसे ॥ ४० ॥ सं० ॥ दोहा ॥ नन्दादिक कहँ बिकल लखि कहत भये इमि श्याम । भुविको भार उतारिकरि ऐहौं व्रज तुवधाम ॥ ७६ ॥ यह सुनिकरि व्याकुल सकल चले लेत अतिसास । जीवन तन धारत सम्हरि फेरि मिलनकी आस ॥ ७७ ॥ बिरह उदधि डूबत डगत अति अचेत अकुलाय । श्याम राम तजि दुखित ह्वै आये व्रज नँदराय ॥ ७८ ॥ व्रज० ॥ सोरठा ॥ उतहि गये हरिगेह उग्रसेन वसुदेव युत । व्रज वासिनको नेह पुनि पुनि श्री मुखसों कहत ॥ ७९ ॥ चौपाई ॥ बारबार जोवत मगमाता । व्याकुल बिन मोहन बलिताता ॥ आवत देखि गोप व्रज ओरी । हरषि हृदय आतुर उठि दौरी ॥ १९ ॥ धाई धेनु बच्छ कहँ जैसे । माखन प्यारे हैं धौं कैसे ॥ कनियां लेबे

को अकुलानी ॥ आये बल मोहन यह जानी ॥ २० ॥
दोहा ॥ धाई अति हरषित हिये सुनत रोहिणी माय ।
दरश आश धाईं सबै ब्रज तिय हिय हुलसाय ॥ ८० ॥
सोरठा ॥ नहिं देख्यो ब्रजचन्द आवत सँग नँदरायके ।
तिहि छिन अतिहि अनन्द डूबिगयो दुख उदधि महँ ॥
४१ ॥ चौपाई ॥ आतुर सकल गई नँदपासा । मनमोहन दरशनकी आसा ॥ नन्दादिक गोपन सब देखे । श्याम राम दोउ तहँ नाहिं पेखे ॥ बूझति यशुमति अति अकुलाई । हैं कहँ श्याम राम दोउ भाई ॥ सुनत वचन व्याकुल नँदराई । नैन नीर भरि नारिन आई ॥
२२ ॥ निरखत सूखि गई ब्रजनारी । जनु प्रफुलित कुमुदिनि हिममारी ॥ अति व्याकुल सब बिनु ब्रजनाथा । परे धरणि नर नारि अनाथा ॥ २३ ॥ परत भूमि सब टेर लगाई । कौने दोष हमैं बिसराई ॥ यशुमति अति बिलपति बिलखानी । कहत सरोष नन्दसों बानी ॥
२४ ॥ दोहा ॥ कैसे प्राण रहे हिये बिछुरत आनँद कन्द । सुनी नहीं दशरथ कथा कहूँ श्रवन मतिमन्द ॥
८२ ॥ सोरठा ॥ लीजे ठोंक बजाय अब अपनो ब्रजनंद यह । मैं मधुपुरही जाय रहिहौं हरिकी धायह्वै ॥ ४२ ॥
दोहा ॥ मैं अपनोसो बहुकियो वै प्रभु त्रिभुवननाथ ।
जो चाहैं सोई करैं कहासु मेरेहाथ ॥ सोरठा ॥ ८३ ॥
कहिके तोहि प्रणाम । बहुरि श्याम ऐसे कह्यो ॥ करिके कछु सुरकाम मिलिहौं तुमसों आय ब्रज ॥ ८४ ॥ सं० ॥
यह सुनि कछुइक बोध यशुदा के हिय जबभयो । तब सब कथा सुशोध कहन लगे तहँ जोरिकै ॥ ८५ ॥

दो०॥राजद्यो उग्रसेनको मारि कंसको श्याम। यह यश गावत नारि नर सुख सोवत निजधाम॥ ८६॥ देवकि अरु वसुदेवको तात मात कहि भ्रात। बोलत अरु कुबिजाहुको कही नन्द सब बात ॥ ८७ ॥ सो सुनिके गोपीनको भयो खेद अति चित्त। बरनारीन बिसारि कै भये कूबरी मित्त॥ ८८ ॥ ब्रज० ॥ भयो नयो अब राज अरु नयो मात पितु गेह। नई नारि कुबिजा मिली नये सखा नव नेह ॥ ८९ ॥ सोरठा ॥ नँद यशुदाको श्याम बिसराये ब्रज निजसखा। बिसराई ब्रजबाम कुंज केलि रस रासकी॥ ४३ ॥ बिनु श्वासा की देह और रूप ह्वै जात जिमि । तिमिलागत ब्रज गेह हरि बिनु सखी भयावने ॥ ४४ ॥ रहे नयन जलछाय सुमिरि सुमिरि गुण श्यामके । एकहि एक सुनाय भये पराये कान्ह अब ॥ ४४ ॥ मगन सकल ब्रजबाल ऐसे हरिके विरह रस । नहिं बिसरत नँदलाल सोवत जागत दिवस निशि ॥ ४५ ॥ बिसरे सब व्यवहार और न दूजी गति कछू। अंध लकुट आधार एकसुरत नँदनंदकी ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ नन्द यशोमति गोपिकनि निशिबासर यहध्यान। ब्रज बासिन प्रभु दरशके आशरहे लगिप्रान ॥ ९० ॥ मनोपदेश ॥ सं० ॥ क० ॥ सुतबित दारनको अमित अगारनको ऊसर बिचारि जनि प्रेम बीज बोवेतू। जानतहै मेरे सो न होयँ यह तेरे विप्रलम्भ कहेरे मन इन्हैं जनि जोवेतू ॥ हाथी कस एरे लेरे गये संग साथी सब तूहू इहिं बेरे फिरि फेर मति सोवेतू । काटि यमफन्द ताहिं करिहै अनन्द अब वृन्दावन चन्दको चकोर क्यों

न होवेतू ॥ २४ ॥ इतिश्रीमदादिगौड़दुर्गागर्गजश्रीकाशीनाथात्मजविप्रवल्लभविप्रकृते रसिकोल्लासभागवतेसुदर्शनशापमोचनशंखचूड़वधवृषभासुरवधकेशीवधव्योमासुरवधअक्रूरागमनकृष्णसहनन्दादि मथुरागमनआसायागोपीनांजीवनोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

सं० ॥ दोहा ॥ मधुपुरि देवरु देवकी करि कुलकी निजरीत ॥ कह्यो गर्ग मुनिते अबै देहु दुहुँन उपवीत ॥ १ ॥ व्रज ॥ सकल वेद विधि मंत्र पढ़ि करि अभिषेक पुनीत । दोउ भैयन कहँ गर्ग मुनि दयो यज्ञ उपवीत ॥ २ ॥ सोरठा ॥ अंत न पावत शेश वेद श्यामजाकी सकल । ताहि कियो उपदेश गायत्री गुरु गर्गमुनि ॥ १ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ गुरु आचारज ऋत्विजनि पूजे बसु बसुदेव । मंगल गावत नारि नर बरषत सुमन सदेव ॥ ३ ॥ राम श्याम विद्या पढ़न गे संदीपन गेह । विद्या पढ़ि गुरुचरणपरि बोले बचन सनेह ॥ ४ ॥ दक्षिना गुरु जुइतुम चहौ सुइहमसों लैलेहु । मांगतभे ऋषि ममसुवन मरे ताहि तुम देहु ॥ ५ ॥ सुनतहि प्रभु उनके वचन तुरतहिं दये सुलाय । ऋषि ऋषिपत्नी सुतनि लखि दइ अशीस हरषाय ॥ ६ ॥ पढ़ि सुवेद वेदांग दोउ राम श्याम इकसंग । आवत लखि मधुपुरि जननि अतिशय बढ़्यो उमंग ॥ ७ ॥ ऊधव अरु अक्रूर ये रहैं श्यामकेसाथ । इनहीं ते कहिबो करैं ब्रजवासिनकी गाथ ॥ ८ ॥ व्रज० ॥ सो० ॥ व्रजवासिनकोध्यान व्रजवासी प्रभुके सदा । यदपि ब्रह्म सुख खान तदपि भक्तरस प्रेमवश ॥ ६ ॥ सं० ॥ दो० ॥ ऊधो तुम व्रज जायके कहुमेरीकुशलात । विरहनिवारन

ज्ञान कहि कहियो औरहु बात ॥ १० ॥ गिरिधर ॥ ब्रज गोपी गोपाल ये मोउर करत निवास । मोसम आदर कीजियो तिनसों करि बिश्वास ॥ ११ ॥ मतिराम ॥ क० ॥ हम परदेशी परदेशही में रहैं आय तुम ब्रजबालनकों यमुनापे लहियो । जग अभिलाखें तजि मनमें वे योग राखें याहीविधि बातन लगाय ताहि मेरी उन राधिका सों राधाकृष्ण कहियो ॥ १ ॥ पदुमनदास ॥ सुन्दर सँवारे रथ सोनेही को साज सबै तैलेई तुरंग तीखे जोते चारोंधुरमें । श्यामगात पीतपट मोतिनकी माल गरें चन्दनकी खौरकिये आप पैठे पुरमें ॥ सखमख भेखसखी एक भृगुरेखपैन और कहूँ कहा नेक भेदहू न सुरमें । धाय धाय धोखें प्रभु पदुमन आयगई दई दई दई इन नई छोभ उरमें ॥ २ ॥ सं० ॥ दो० ॥ ऊधव श्याम सँदेश लै आये ब्रज नँदपौर । सुनिआई सब गोपिका सह राधा तिहिठौर ॥ ११ ॥ ललिता विशाखा सखीकी उक्ति ऊधवप्रति ॥ शिवलाल ॥ क० ॥ बाँचत न कोऊ अब ऐसही रहत खाम युवती सकल जानि गई गति याकी है । झूठ लिखिवेकी उन्हें उपजे न लाज कछू मिले कुबिजाके संग नलज तियाकी है ॥ दूसरी अवधि शिवलाल राधिकाके आगे बाँचे कौन नारि जौन पोढ़ छतियाकी है । वैसही मुखाखर कहो सो कहो ऊधो यहां उठगई ब्रजतें प्रतीति पतियाकी है ॥ २ ॥ सं० ॥ दो० ॥ नन्द यशोदा आदितें कही श्यामकी खेम । ता पाछे गोपीनतें कह्यो योगको नेम ॥ १२ ॥ श्रीराधाजूकीसखीनकीउक्ति ॥ पद्माकर ॥ राधाराधा

नाथके मन पठयो है साथ। ऊधो ह्यां तुम कौनतें कहो योगकी गाथ॥ १३॥ क०॥ जादिनते माधो मधुबनको सिधारे ऊधो तादिनते याको सुधि नाहींहै शरीरकी। द्वारे लगि ठाढ़ीरहै चित्रकीसी पूतरीलौं बाढ़ीरहै हियमें वा मूरति अहीरकी॥सुधिके सम्हारतहीं सुधिऐहै फिरि वाही तब उठि चलेगी नदी नैननके नीरकी। मिलिबो कठिन ह्वैहै पारवै रहैंगे श्याम वारये रहैगी जैसे सीता रघुबीरकी॥ ३॥ अपरा॥ लाल॥ पहिरेंगी कंथा शिर भसम चढ़ाय अंग काननमें कुंडल गरे सेलियां लगावैंगी। करलै कमंडलु शिर खप्पर भरायबेको जायजाय देशनमें सींगियां बजावैंगी॥ लालकवि भनै बैठि यमुनाके तटजाय हरिजूको ध्यानधरि हरिगुण गावैंगी। एकबार ऊधो वा गोपालजूसों पूछिआवो एती ब्रजबाला मृगछाला कहां पावैंगी॥ ४॥ अपरा॥ भंजन॥ योगी छेदे कानहैं हमारे कान छेदेइहैं छेदकी कहा चली करेजे बीच छेदहै। योगी लावे कंथाहै हमारे कंथा कंचुकीहैं योगी को लबेद हमें बिरह लबेदहै॥ योगी मांगे भीख हम भिखारी भई दरशकी हमभई छार योगी छारतें सपेदहै। भंजनजू ऊधो तुम योगदेन आवतहौ योगी औ वियोगी में कहो कहा भेदहै॥ ५॥ रसरास॥ अपरा॥ बसन मलीन बन बन तन छीन डोलैं मौनही सो बोलैं बेनी जटापद पायो है। आठोंयाम जागीरहैं रूपरस पागी देखो भूख प्यास भागी मन शून्य में समायो है॥ बिरह दवागी दूनी धूनी धधकायराखी एक रस एकरस रास दरशायोहै। ऊधो तम[illegible]य यहां योग

का सुनावो हमैं सांवरो सिधायो योग तबहींते आयो है ॥ ६ ॥ अपरा ॥ सूरति ॥ बिरह बिथामें कहो कैसेकै कहाय जाय मलय कपूरनकी धूर उड़जायहै। पियरे परागहूने दूबरे बदन भये डगैं डगमगी प्राण सूरति बचायहै ॥ चन्द जरिगयो सो कलंक जरि कैलाभयो यमुनाकी तरंगनमें श्यामता दिखायहै। जाकी बरदासी नित्य ताहीकी उपासी ऊधो आछत खसम किम भसम लगायहै ॥ ७ ॥ अपरा ॥ लाल ॥ काम योग भई तब योग लिखि दई बीर बिरह बियोग बिथा कान्ह जिय ठानीहै। जादिनते श्यामजू सिधारे लाल मथुराको सुख की गिरानी भई दुख गरुआनीहै ॥ प्रेम बीज बोयगये सींचे बिना सूखतहै उपजेगो कहा बलुहालिये हिरानी है। औरनके सूत अरुझैतैं सरुझत ऊधो इहांतो कपासही हमारी अरुझानीहै ॥ ८ ॥ अन्य ॥ अपरा ॥ सवैया ॥ ज्यों अहि त्यों हियहार बिराजत पंकज सेज शिलातल भावै। ज्यों रवि त्यों रजनीकर ज्यों घर त्योंहिं सदा बनमाहिं सुहावै ॥ ज्यों निशि ज्यों दिन त्यों सुख त्यों दुख ज्यों अरि त्यों हितु एकसुभावै। वाके वियोग में योगलियो पिय संयम साधि समाधि लगावै ॥ १ ॥ अपरा ॥ सुजान ॥ सुखाय शरीर अधीन करें दृगनीरकी बूंदमों माल फिरावैं । नेहकी सेली वियोग जटा लिये आहिकी सींगी सपूर बजावैं ॥ प्रेमकी आंचमें ठाढ़ीजरें सुधि आरालै आपनि देह चिरावैं। सुजानकहै कलाकोटि करो पै वियोगी के भेदको योगी न पावैं ॥ २ ॥ अपरा ॥ मबारक ॥ श्याम समेत सखा इनके शिर बांधि

पखा जो मृखाक गयेहैं। कोकिल कोपि कहै कि कुहूकहि मैंहूं महाबल बोल दये हैं॥ जानिपरे कलिकाल के मीत मबारक मानि अनीत लयेहैं। प्यारे हमारे के प्यारे मयूर ये न्यारे भये ते हत्यारे भयेहैं॥ ३॥ अपरा॥ बेनी॥ बेन होय विशाल जटा कसतूरी न कंठ धस्यो विषभारी। सोहत शीशन केतकिको दल है यह चन्दकला उजियारी॥ होंहिं न अंग वियोगसों ऊजरो अंगन अंग विभूति निहारी। मार बिडारन कारन आज सबै शिव भेष सज्यो ब्रजनारी॥ ४॥ अपरा॥ कुन्दन॥ बावन ह्वै पहिलेई छल्यो बलि पावनह्वै ब्रजको पगुढास्यो। बांसुरि सों पतिनीजू मुनीनकी कुन्दन भूरि महाव्रत टास्यो॥ चेरी निशंकसों अंकभरी यह डंक बजी न कलंक बिचास्यो। कान्ह वियोग ते दूबरी देह जो ऊबरी नेक सो कूबरी जास्यो॥ ५॥ अपरा॥ मबारक॥ क०॥ छल करि छैल तजी गोकुलकी गैललगी कुबिजा चुरैल पगी मन बचकायहै। आप सुखकारी हमैं करत भिखारी प्रीति पाछिली बिसारी कहौ एहुकहा न्यायहै॥ ऊधो घनश्याम जीते येजी ब्रजकाम बीते मबारक अनीते ते ऊपर सुकायहै। मेरे न उपायहै न देखियत पायहै जो काहू कलपायहै सो कैसे कलपायहै॥ ६॥ रविनाथ॥ अपरा॥ जोपै कंत अंतहेत कूबरसों कीबे होती हमहूं विचारि नीके बास मगुलाइये। कुलचढ़ी कालिमा कनौडी भई कबहीकी कैसे ऐसे ब्रज बसि बासर बिताइये॥ कहै रविनाथ मननाथके बिकानो हाथ योग करि ऐसे जपै दूजो मनपाइये। खीभिझि कहत ऊधो

बूझिये न ऐसी तुम्हैं दाँवन लगाय ताहि दावन लगा-
इये ॥ १० ॥ ईशकवि ॥ अपरा ॥ पानकियो रूपसुधा
छकिके छबीलेजूको एहो इन नैननसों बारिहिं बहावैंना।
चाह जो तिहारी मतवारी बनवारी पाय निरदै मनोज
हाथ देहको दहावैंना॥ अवध बिसासन बितीतैं ब्रजई-
शकीसों आनन कढ़त बान प्रानन गहावैंना। बिनती
हमारी ऊधो प्यारे घनश्यामजूसों तिहारे कहाय काहू
और के कहावैंना ॥ ११ ॥ गोपनाथ ॥ अपरा ॥ कहा
लिखिपठयो संदेशो आली ऊधो हाथ उनके तो मनमां-
झ वहै बसी खूबरी। बारेके बहेवा कान्ह कारे अतिअंग-
हीके कारीकारी बातैं सुनि होतहै अजूबरी ॥ कहै गो-
पनाथ प्राणनाथ जियऐसी ठानी जोपै जियआनी ऐसी
गही दांत दूबरी। कहिबेके शरमी हैं देखिबेके नरमी हैं
बड़ेई कुकरमीहिं कूबरी न ऊबरी॥ १२ ॥ गंगापति ॥
अपरा ॥ इत हरि फेरीपीठ उतकरि टेढ़ीडीठ तबहींसो
पंचशर बैठ्यो बांधि बरकस। छिनछिन छीनभई बिथा
नित नित नई दुखमांझ नईनई कौन धरे धरकस ॥
गंगापति कहै उरबढ़त अंदेश एक पठयो संदेशहू न
ऐसे हरि करकस। इतनेपै घावकरि लोनभुरकावतहो
हमको बिभूति ऊधो कुबजाको जरकस॥ १३ ॥ स-
वैया ॥ अपरा ॥ ढाकन ॥ ऊधो चले कहँ योगको आं-
खन कान्हहिं आंखनजी दुखिया हैं। छूटे सबै दधिमा-
खन चाखन दाखन खात सुने सुखिया हैं॥ सोवत सौं-
धतलै मनिताखन भूलि ये ढाकनकी रुखिया हैं। खों-
सत जे शिखिमोरकी पांखन ते अबलाखनके मुखियाहैं॥

६ ॥ गदाधर ॥ अपरा ॥ बमके मुरली सुरलीन किधौं किधौं कूल कलिंदीके टोहनगो । किधौं पीतपटा लखि या लकुटी किधौं मोरपखा छबि गोहनगो ॥ किधौं लाल के मालके मध्य फँस्यो किधौं काम कमानसी भौंहन गो । हम कासों गदाधर योग करैं मनतो मनमोहन गोहनगो ॥ ७ ॥ लीलाधर ॥ क० ॥ अपरा ॥ भूल्यो दानलैबो और बंशीको बजैबो भूल्यो भूल्यो कुंज जैबो जहां कीन्हों जो संयोगहै । लीलाधर लीलाथल देखत-हीं लीलेलेत यमुना भईहै यमप्रीति कहारोगहै ॥ तजी हम भूख प्यास नींदको न बिसवास कूबरी करे बिलास बात या अयोगहै । आप ह्वैहैं योगी तब ऊधो हम योग लैहैं होत कान्हभोगी कहा हमैं योग योगहै ॥ १४ ॥ अन्य अपरा ॥ नई भई बेदन निबेदनकी गईभई जई भई योगकी संयोग सपनेभये । तनभये तूल औ अतन भये ज्वालामूरु सोमभये शूल सो तपत तपनेभये ॥ गोकुल के चन्द नन्दनन्दन उदासभये वै बन बिलास निशि द्योस जपनेभये । लीनभये लोचन अधीनभये रोमरोम दीनभये प्रान पै न कान्ह अपने भये ॥ १५ ॥ परवतकवि ॥ स० ॥ अपरा ॥ फैलि रह्यो बिरहा चहुँ ओरन भाजिबेको कोउ पार न पावे । जानतहो परबत्त सबै तुम जालको मीन कहालगि धावै ॥ चाहों कछूक संदेशोकहूँ सोतो जीमहँआवत जीभ न आवै । ऊधो जू वा मधुसूदनसों कहियो जो कछू तुम्हें रामकहावै ॥ ८ ॥ अन्य ॥ अपरा ॥ क० ॥ ठाढ़ेरहो ऊधो नेक सूधो सो सनेसो सुनो औरतें हमारी हरिपदाजै गहियो ।

भूलिगये बातें घातें चोरी औ छछोरिनकी माखनकी कौकहै बचत न महियो ॥ अबतो भये हैं बस जाय कुबजा के हाथ पाछिलो सनेसोहू सुरतिके रहियो ॥ प्रेमसिंधु थहियो नेक कानूमों न कहियो मेरी बा गुपाल जूमों जै गुपाल कहियो ॥ १६ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ इमि सुनि गोपिनके वचन ऊधो भूल्यो ज्ञान । तब मथुरा में जायके हरिते करत बयान ॥ १६ ॥ ऊधवको भगवान प्रति कथन ॥ ठाकुर ॥ स० ॥ आनि जुरी बिजुरीसी सभी फिरि आयके श्यामकथा उनबांची । ऊधो सुनोजू ऊधो सुनोजू ऊधो सुनोजू यहीधुनि मांची ॥ ठाकुरहौं चकवायगयो उनप्रेम प्रमानकी रेखसी खांची । फेरिहमैं कहनांई पर्यो यह सांचीहै सांचीहै सांचीहै सांची ॥ ६ ॥ सं० ॥ सोरठा ॥ यह सुनिके भगवान कह्यो उद्धव ब्रज जायफिरि । दै गोपिनको ज्ञान ढिग आवो मेरे तुरत ॥ १ ॥ जै पुरेश श्री सवाई प्रतापसिंह भूपवर कृत संपुटित गोपी उद्धव संवाद यथा ॥ क० ॥ आयो मधुबन ते तू बात कहिभज्यो माधो साधो योगपंथकोजू कैसो ल्यायो झटपट । अटक हमारी लागी वाही मनमोहन सों खटकत हियेमें मिलन मन हटपट ॥ जाने नाहिं कपटी हैं ब्रजनिधि प्राण प्यारे न्यारे ह्वै करत सुख फिरैं हम सटपट । लपटी डरी रहैं चटपटी परीरहैं बात अटपटी ऊधो काहे करे खटपट ॥ १७ ॥ कहां यह योग कहां सरस संयोग भोग कहां गानतान कहां प्राणायाम प्रानको । कहां बनकुंज मंजु कहां गिरि कन्दराहै अंबर अनूप कहां भसमी निदानको ॥ कहां वह

व्रजनिधि निरगुण ब्रह्म कहां कौनभांति माने मन तेरो गुन ज्ञानको । ऊधो यह तेरी बात डांवांडोलसी दिखात बबूरेको पात ज्यों न जमीं आसमानको ॥ १८ ॥ नाचे ज्योंहीं नाचे हम गाये त्योंहीं गाये सब अब यह ज्ञान बात हमको सुहावे यौन । अधर सुधाको पान कियो जिननै निधान तिनको प्राणायाम केहूँ विधि नाहिंहोन ॥ व्रजनिधि भेजे तुम जाने सुखदेन आये आय योग रोग लाय लागे सरबस खोन । ऊधो अरे रहि मौन बीती है सुजानै कौन रागमें बिराग देत खीर माहिं डारे लोन ॥ १९ ॥ देन लाग्यो योग छटा कह्यो शिर बाँधो जटा ऐसे बोल बोलै मति पाछे पछितायगो । दासी हैं त्रिहारी जूकी खासही खवासीहुती पूछि लीजो उनहीं सों शोच जब जायगो ॥ व्रजनिधि बिरह में बरी शिर पाँवतक तापर यह करी योग लोन सो लगायगो । कछू नहीं कही जात प्राणनकी घात हमैं ऊधो करे खोटी बात मुहँ जरि जायगो ॥ २० ॥ जेवै रंगमहल में रसकी चहल करी तिनई को बन में कहे हैं तनतावरे । जेवै चोवा चन्दनरु अतर लगाये अंग तिनको तू ल्यायो अब भसमी को भावरे ॥ आनँद की केलि जिनकीनी व्रजनिधि संग तिन्हें तू कहत सीखो प्राणायाम दावरे । ऊधो चुप रहो अब ऐसी बात कहो मति नेक जिय लाजगहो एरे मति बावरे ॥ २१ ॥ योग अब हमैं है हम नाहिं योग लायकहैं मोहन संयोगी करि कब यशलेगोरे । तेरी कहा गावैं बात बात तू हमारी सुनि शीशको धुनै को जब हाय हाय केगोरे ॥ और ज्ञान नाहिं हमैं कौन व्रजनिधि

जू को वाने तापताये त्योंही तूऊताप तैगोरे । अकबक रही जकनेक न हियेमें सक होत प्रान हक हमैं कहा योग दैगोरे ॥ २२ ॥ ऊधो तुम ल्याये योग बड़्यो है सँयोग सब कान दैकै सुनिलै तू कान्ह प्रेमगाथही। संग हम नाचे राचे अधर सुधासों सींचे ताहीको बिगोवे मूढ़ पकरिके हाथही॥ कौनको करेंगे गुरु गुरु है हमारो वह ब्रजनिधि प्यारो ताहि लियो धरिवाथही । प्राणायाम साधैं शुद्ध प्राणहोय ताके अरे बावरे गयेरे प्राण प्राणनाथ साथ ही ॥ २३ ॥ देनलागे योग सोतो हमसों कहूँ न होत भोग कुबिजासों सुने याही दुख मरिये । हमको बैराग बकसीस होत भांति भांति दासी करी दुलहिन रीझि देखि जरिये ॥ कहां अब करैं ह्याँ तिरे है नाव पाहनकी ब्रजनिधि ऐसी करी कौलों दिन भरिये। बाँचै ज्ञानपोथी करै सबबात थोथी ऊधो अनहोती सुनै कैसे धीर धरिये॥ २४ ॥ योगकी युगति सींगी भसम अधारि मुद्रा ज्ञान उपदेश सुनि सुनि मनमें डरैं । इहाँ हम सबही सवादी रस रंगनकी श्याम अंग संगनमें पागि मनको धरैं ॥ तुमतौहो नेमी हम प्रेमी ब्रजनिधिजूकी कागज समेटि लेहु देखि अँखियां जरैं । आगिहुते ताती अतिछाती हहराती यह प्राणघाती काती ऐसी पातीलै कहाकरैं ॥ २५ ॥ मानकबि ॥ एक बिललाती सुनि चैनहै न दिन राती सिख नख बिरहमें माती आठौ यामकी । एक मुरझाती सुधि एकनकी जाती मान एकनके छाती करकत काती कामकी ॥ एक भई राती ताती एकनको प्राण घाती सरस सकौंती सारी नारी ब्रजधामकी । एकन

अनखाती एक नाहीं अनखाती हाय बड़ी उतपाती इत पाती आई श्यामकी ॥ २६ ॥ राजाराम ॥ ठौर ठौर हमैं प्रति यही समझाय लिखी करो योग ध्यान और सीखो गति गीताकी । मति नाहिं मतै औ बिमति सुकहै कौन बिमति मतै में मधुकर मति मीताकी ॥ राजाराम ऐसी गति हमसों करन लागे ऐसी गति कबहूँ करी न राम सीताकी । हियो चल्यो निकसि हवाईसी छुवत हाथ कान्हजूकी पाती किधौं बाती है पलीताकी ॥ २७ ॥ पुनः ॥ ह्यांलौं नेकु आवैं आप हमैं समझावैं हरि यामें कहौ उनकीधौं कौन हरकतहै । देख देख कुञ्जनके पुञ्जनको राजाराम साँवरी सलोनी छवि हिये खरकतहै ॥ गोपिनकी आधि औ समाधि मुनिगणहूँकी नीके कै बिचारि देखो कामें बरकतहै । बाँची सुनो बाची अब हाती करो नैननते पातीके सुनेते ऊधो छाती दरकतहै ॥ २८ ॥ चतुर ॥ बरवै ॥ घेरि रही दिन रतिया बिरह बलाय । तापर यह हरि पतिया आई हाय ॥ १ ॥ व्रजनिधि ॥ कियो है सिंगार अंग प्रीति हुती एक रंग लह्यो सुख श्याम संग जिन्हें देत योग तुम । उनहींको ध्यानकरि रसनासों गानकरैं हमतें मिलन कह्यो रह्योजाय वोहीं रम ॥ व्रजनिधि दै वियोग योगभरि झोरी भेज्यो तापै तुम लखे परो मानो इत आये यम । ऊधो अब बोलि कमनाहिं हम मांझ दम सुखभयो दुखसम तोउ नाहिं खात गम ॥ २९ ॥ स० ॥ रंचकहू सुधि नाहिं हमैं जिन झोपाढ़ि योगकी देत कहासिख । जैसे वे वे तुम तैसेई हो अब जानिपरे सुदिखावे कहा लिख ॥ कैसी पियारी

करी व्रजकोनिधि वे सुनिबात उठे हियमें तिख। साँवरे साँप डसी है जिन्हें तिन्हें ज्ञानसो मूढ़ उतारे कहाविख॥ १०॥ रसखानि॥ लाजके लेप चढ़ायके अंग पची सबसीखके मन्त्र सिखायके। गारुड़ ह्वै व्रजलोग थके करि ओषध बीसक सौंह दिवायके॥ ऊधोसों को रस-खानि कहै तुम चित्तधरो जनि ऐसे उपायके। कारे बि-सारे को चाहै उतारयो अरे विष बावरे राख लगायके॥ ११॥ अन्य॥ मौनगहै न कहै कछु भोगकी खप्पर मे-खली नाद समेटें। एकहि आसन बैठी रहैं कबहूँ उठि ठाढ़ी न होयँ न लेटें॥ कानछिदाय बिभूतिचढ़ाय लटें छि-टकाय जटालों लपेटें। ऊधो सिधारिये आजते राखिहैं अंग अंगारलों राख लपेटें॥ १२॥ दोहा॥ अन्य॥ अहो पथिक कहियो उते गिरिवरधरसों टेर। अब दृग जलसों राधिका व्रजहिं डुबावत फेर॥ १४॥ सं०॥ इमि गोपिनके बैनसुनि गये ऊधो हरिपास। तबते उड़-वति कागसब हरि आवनकी आस॥ १५॥ महेश॥ स०॥ सुनिबोल सुहावन तेरोअटा यह टेक हिये में धरैं पै धरैं। मढ़ि चोंचन चोंच पखौवनमें मुकुताहल गूँदि भरैं पै भरैं॥ सुख पिंजर पालि पढ़ाय घने गुण ओगुण कोटि हरैं पै हरैं। बिछुरे हरि मोहिं महेश मिलैं तुहि कागसों हंस करैं पै करैं॥ १३॥ भूषण॥ क०॥ पहि-लेहों आछेकरि आरचा तिहारी करों पाछे भेंटि आगम की चारचा चलायहों। बैरकरि कोकिलाको छिनमें छ-ड़ाय देहों सानि दूधभात चारो नितही चुगायहों॥ भूषण भणत जोपै आवतहैं कान्ह आज रावरी बड़ाई

एजू कहांलों गनायहों। हाहा नेक फेरि फिरि वाहीभांति उड़ि बैठो रोगलेहो कागतेरी चेरीहौं कहायहौं॥ ३०॥ अपरा॥ कारो जल यमुनाको कालसों लगत आली जानियत फैलिरह्यो विष कारो नागको। बैरिनि भईहै कारीकोयल निगोड़ी और तैसोई भँवर कारो वासी बनबागको॥ भूषण भणत कारे कान्हको वियोग हमैं सब दुखदायी भयो कारे अनुरागको। कारो घन घेरि आयो खायो अब चाहतहै तापर तू करत भरोसो कारे कागको॥ ३१॥ ऊधोको वचन श्री भगवान् प्रति॥ ग्वाल॥ क०॥ रावरे कहेते हौं गयेहों ब्रजबालनपै देखतही मोहिं कर्यो आदर अपाराहै। सुनत तिहारी बातगातते भभूके उठे परत बिरच्छ ब्रजभांति ज्यों अंगाराहै॥ ग्वालकविकहै लागी दहन दवागिनिसी दौर्यो सैन ह्वांते तऊ भुरस्यो दुबाराहै। गोपी बिरहागिनिते योग उड़गयो ऐसे जैसे उड़िजात परे पावकमें पाराहै॥ ३२॥ आलम॥ माठहो मलीन कुंज खांखरो खरोही छीन मन न लगत उदबस लागे आनसो। बिरह विकल गोपी परीहैं वै ठौरठौर मानो अलसानी योगी थकिकरि गानसो॥ आलम कहैहै जात भनक न परी कान मेरे जान खोयोगयो बालनको प्रानसो। दूलह बराती लैकै रातही सिधारे जैसे ऐसो ब्रज देख्यो माधो ब्याहके बिहानसो॥ ३३॥ तोष॥ स०॥ गोपिनके अँसुवानके नीर पनारे बहे बहिके भये नारे। नारे रहैं सो भई नदियां नदियां नद ह्वैगई काटि करारे॥ वेगि चलोलो चलो ब्रजको कवितोष कहै ब्रजनाथ हमारे।

सो नद चाहत सिंधु भयो अब सिंधुते ह्वैहै जलाहल सारे ॥ १४ ॥ भिखारीदास ॥ दोवैछन्द ॥ तुम बिछुरत गोपिनके अँसुवा व्रज बहिचले पनारे । कछुदिन गये पनारे तेवै उमँगि चलैं जिमिनारे ॥ बह नारे नद रूप भयेहैं कहोजाय कोइ जोवै। सुनि यहबात अयोग योग की ह्वैहै समुद नदोवै ॥ १ ॥ प्रहलाद ॥ क० ॥ योग दै गयोहो वियोग वारि वारिधिमें बूड़त बच्योहौं नाथ नारीनैन योंबहै। गंगाकी सहसधार अधिक दुधारधार इन्द्र कोपनाहीं जोरहोंगे गिरिको गहै ॥ एतो जलसागर न देख्यो अवनिपै कहूँ मुनिपै अच्योन जैहै कानिखोलिके कहै। कवि प्रहलाद प्रेम पाजजौं न बांधिहो तौ बटक बटूके पात रावरे भलेरहै ॥ ३४ ॥ अन्य ॥ कबहूँ रसालकी लतानिसों करति बात कबहूँ के मालती के जालन घिरतिहै । कबहूँ के चायभरी चम्पाके समीप जाय जाय परी भौंरनिकी भीरनि भिरतिहैं ॥ आली केलि केलिनसों रंगभरी बेलिनसों फूली रायबेलिनसों बोलिके ररतिहै। दैगये बिसासतौ न आये घनश्याम क्यों न पौनहले रूखनसों पूछति फिरतिहै ॥ ३५ ॥ नवीन ॥ बावरीलौं कूपन झँकत डोलै ठौरठौर तालन तमालन तकत बिलखातीहैं । कुंजन में कबहूँ कछारनमें कूकतीहैं छातीकरि राती बिन श्याम अललातीहैं ॥ पीवती हैं पलमें नवीन विषकीसी घूँट जीवतीहैं आशा चिल मिलबेकी लातीहैं । पीरन पिराती नीर नैनन सिराती सब तीर यमुनाके वै अधीर बिललातीहैं ॥ ३६ ॥ पदमाकर ॥ एहो नँद नंद अरबिंद

मुखी गोकुलकी तुम बिनु चन्द चांदनी ते डरिबो करें। कहै पदमाकर पुराने पीरे पानऐसी निपट निदान पीरी पीरी परिबोकरैं ॥ वृन्दावन कुंजनकी आगली गलीवै भली नैननके नीरसों नदीसी करिबो करैं। मिलि बि· छुरे हैं त्योंही बिछुरि मिलैंगे फेर याही एक आशा पर श्वासा भरिबो करैं ॥ ३७ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ हनूमान जानकि दशा लखि करि कहि जिमिआय। त्यों ऊधव गोपीनकी कही दीनता धाय ॥ १६ ॥ ऊधवकी कहनूति सुनि जब न कियो हरि रूयाल। तब सनिंद बोलन लगे जिमि सरोष वर व्याल ॥ १७ ॥ नागर ॥ स० ॥ नागर वेद पुराण पढ्यो सब बादिकै कीनी कई मति पांगुरी। गंगरु गोमती न्हाय फिरयो अतिशीतमें प्रीति सों लैकर कांगुरी ॥ गंडक न्हाय सरस्वति न्हायके त्याग के अन्नरु खावत मागुरी। प्रागहु न्हायो सुमेंनबदी जुपै नेह नदीमें नदीपग आंगुरी ॥ १५ ॥ बोधाकवि ॥ अतिखीन मृनाल के तारहूते तिहि ऊपर पांवदै आवनोहै। सुइबेहको बेध सुकीनतहां परतीतको टांडो लदावनोहै ॥ कविबोधा अनीघनी नेजहूकी चढ़ितापै न चित्त चलावनोहै। यह प्रेमको पंथ करार हरे तरवार की धारपै धावनोहै ॥ १६ ॥ किशोर ॥ क० ॥ पावै कोऊ बिरले से पूरन परमभाग जाये कोऊ भूलजावै अतिही उपैड़ाहै। जात जात कोऊ चकिजात थकिजात कोऊ छकिजात कोऊ जकिहोत बात बेड़ाहै ॥ कोऊ घिरिजात गिरिजात फिरिजात कोऊ कोऊ तिरिजात खिरिजात खेड़ खेड़ाहै। कहत किशोर ओर पैंड़ापर पंचन

के देख्यो हम ऐंडा एक प्रेमहीको पैंड़ाहै ॥ ३८ ॥ नागर ॥ गहिबो अकाश पुनि लहिबो अथाह थाह अति विकराल काल ब्यालहि खिलायबो । शेल समसेर धार करिबो प्रहार और गज मृगराज दोऊ हाथन लरायबो ॥ गिरिते गिरन पंचज्वालमें जरन अरु काशी में करौत तन हिमहि गरायबो । पीबो विष विषम कबूल कविनागरपै कठिन कराल एक नेहको निबाहबो ॥ ३६ ॥ अन्य ॥ सीखे रसरीति सीखे प्रीतिके प्रकार सब सीखे केशोराय मन मनसों मिलायबो । सीखे सौंहखानि नट जानि मुसिक्यानि सीखे सीखे सैन बैननिमें हँसिबो हँसायबो ॥ सीखे चाह चाहिबेकी चाह उपजायबेकी जैसी चाह चाहै कोऊ तैसी चाह चाहिबो । सीखे जहाँ जहाँ ऐसी बातैं घातैं प्राणप्यारे तहाँ क्यों न सीखे एक नेहको निबाहबो ॥ ४० ॥ खानखाना ॥ दोहा ॥ जो रहीम करनोहुतो ब्रजको यही हवाल । काहेको नखपर धस्यो गोवरधन गोपाल ॥ १८ ॥ श्रीभगवान् उद्धवप्रति ॥ सं० ॥ इमि ऊधवके वचन सुनि विहँसि कह्यो भगवान । गोपी अँसुवन उदधि तुव बूड़्यो ज्ञानपखान ॥ १६ ॥ गोपीमेरी इष्टहैं उन हींमें मोप्रान । अनुछन उनबिनु रहत नहिं यह ऊधव हिय जान ॥ २० ॥ ऊधवते यह कहि कह्यो चलहुप्रात तिन पास । कछुदिन ह्वांरहि आयफिर हरैं भूमिको त्रास ॥ २१ ॥ प्रातहोत रथ आप चढ़ि लै ऊधव निज साथ । निज जन जननी जनक हित आये ब्रज ब्रजनाथ ॥ २२ ॥ गोवछ गोपी गण सखा आये देखन धाय । नन्दव्यशोदाके परे पांयन हरिहू जाय ॥ २३ ॥

सोरठा ॥ व्रजमें लखि व्रजराय नन्द यशोदादिकनि
को । हियते गयो हिराय विरहज दुख सबको तुरत ॥
२ ॥ श्रीदामादिक संग गोचारत व्रज वननमें । वैसहि
रंग उमंग करत भये नित हरितहां ॥ ३ ॥ गोपी हृदय
निवास गोपिनकी रुचि निरखि प्रभु । श्रीराधा हित
रास करन चह्यो फिरि हरितहाँ ॥ ४ ॥ वृन्दावन बांसुरी
दूतीरूप वर्णन ॥ नागरिया ॥ क० ॥ ठौरठौर वृन्दा-
वन मुकुलित मालती यों उलहैं कदम्बकेल तूतन सु-
नूतिका । चन्द्रिका किरन द्रुम रंध्रनह्वै आई सोव मानो
छवि देति छरी कामकलि धूतिका ॥ ऐसे लखि मोहन
लगे हैं मुरली के कान दई लै पठाय मन्त्र पढ़िके अभू-
तिका । नागरिया जहाँ तहाँ श्रवननि रली आय बोलि
तिय लैचली वंशीवर दूतिका ॥ ४१ ॥ प्रेम कवि अधर
सुधानते सिधारी धुनि बाँसुरी की प्रेम पनपाय भूरि
भाइनमें भाइहै । भाइनते सैलके बिसैल गरबीली ऐसी
अतिही अरैल धाम धामनि में धाई है ॥ धामनिते ध-
निनेके धीरन धुकाये देत गैलगैल गूढ़गुन गाननमें गाई
है । गूढ़ गुनगाननते मूढ़ मृगमाननते वृन्दावन कानन
ते काननमें आई है ॥ ४२ ॥ सं० ॥ स० ॥ है उडुराज
की ज्योति महा तिहिकी दिवि भूमि भली छविछाई ।
सो लखिके व्रजराज हिये रसरासकी खास हिये रुचि
आई ॥ मोहिनी मन्त्रनि बाँसुरीमोय सुमोहन मोहिं सु-
बाल बुलाई । कञ्चनसी युवती गणमें तहँ मर्कतसो शुभ
सोह कन्हाई ॥ १७ ॥ गिरिधरदास ॥ क० ॥ किती लै
रबाब कर अतिही रबाब भरी किती सुरपुञ्ज रुञ्ज मंजुल

बजावहीं। किती अलबेली अलबेलालिये बेलाकर किती तुमड़ी में गीत उमड़ी शुभ गावहीं॥ गिरिधरदास किती करमें चिकारा धरि अति रुचिकारी चटकारी छबि छावहीं। किती गोपदारा लिये दाराको बजाय रहीं किती लै नगारा नाद धाराको बहावहीं॥ ४३॥ किती लै सुझाँझ रासमाँझहिं बजावैं किती इन्दुमुखवारी मुख गोमुख बजावहीं। उरज गुरजवारी मुरज बजावैं किती किती वर वामा लै दमामा छवि छावहीं॥ गिरिधरदास कर झरझर लिये किती निरझर सुरनके शबद बहावहीं। चंग मुरचंग अंग उपँग मृदंग संगलै जलतरंग राग रंग उपजावहीं॥ ४४॥ नवीन॥ जैसी शरद शशि मण्डली अमन्द द्युति वृन्दावन भूमि भूमि लतन मढ़ी सीहै। मुरली ने सुरलीने मधुर नवीने तैसी कालिन्दी थकित भई चित्रकी गढ़ीसी है॥ ठाढ़े नभमण्डल अखण्ड देखै देखैं देव नारिहू सुचावन सुचावन चढ़ीसी है। रासरस रंगन अनंगन मढ़ीसी सबै तरल तरंगनि तरंगनि बढ़ीसी है॥ ४५॥ श्रीगुविन्द॥ शरद उज्यारी फुलवारी में विहारीप्यारी श्रीगुविन्द जैसी बनी मंडली सखीनकी। रूपको प्रकास रासरसको विलास जामें राग रागरानी है सुरसात ग्राम तीनकी॥ उरप तरपके सँगीतनके भेदभावनीकी धुनि नूपुरकी किंकिणी चुरीनकी। लीन भई मुरली मृदंगकी नवीन गति बीनकी बजन औ बजावन प्रवीनकी॥ ४६॥ अन्य॥ भूल्यो गति मानि चन्द चलत न एक पैंड़ प्राणप्यारे मुरली मधुर कलगानकी। फूली कुसुमावलि विविध नवकुंजन

में सौरभ सुगन्धताई जात न बखानकी ॥ बाजत मृदंग ताल झाँझ मुहचंग बीन उठत संगीत जहाँ अति गति तानकी। आज रसरासमें अनूप रूप दोऊ नचैं नन्दलाल लाड़िली किशोरी वृषभानकी ॥ ४७ ॥ उक्त नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह ॥ स० ॥ कर बाँसुरिया शिरमोरपखा मकराकृतकुण्डल कान लसें। मुकुतानके माल विशाल गरे पगनूपुर काञ्चनी पोतकसें ॥ सँग प्यारीके मण्डली माहँ लसै रति कोटि मनोजन दोऊ हँसें। त्रिकसें बिहँसें बिलसें हुलसें सरसें बरसें दरसें परसें ॥ १८ ॥ भृकुटी दृग आनन नासिकाते नवहू रसके बहु भाव रचें। करते अँगुरीनते भांति अनेकके हस्तकभेदनको बिरचें ॥ अतिही गति वेगनकी गतिमें गति बानी सुदेवहूँ की ललचें। हरिएक मनो बहुरूप धरे तिनके बिचबीचन बीच नचें ॥ १९ ॥ जलविहार ॥ स० ॥ सूरसुतामें अन्हात सबै इमि बाल मनोहर ज्योति रही फबि। बार सिवारसे ऊँचे तिरें शुभ आनन भीतर छाय रही छबि ॥ प्यारे प्रवीन विलोकि लुभाने सुआने कहा उपमा उरमें कबि। बूड़त देखि सरोजके शोच मलिंद के वृन्दपरे जलमें दबि ॥ २० ॥ नृपशम्भु ॥ क० ॥ आज जलकेलिमें विलोकी वृषभानु सुता तन द्युति दमकत कासमीर पीसीसी। बिहँसनि दन्तनिकी पन्ति चमकत मानो हीरन कनीनकी लगाय राखी मीसीसी ॥ शम्भुराज बारि वारिधारमें लसत ऐसे यमुनामें श्याम नदी जुदी मिली दीसीसी। सींधुनिकसीसी श्याम उर में बसीसी लसै जाके मुख सीसी ढरकत सुधा सीसी

सी ॥ ४८ ॥ सं० ॥ दो० ॥ याविधि कछुदिन रहि वहाँ करि सबको सनमान । फिरि सबते ह्वैके बिदा चहत मधुपुरी जान ॥ २४ ॥ व्रजवासीन उक्ति ॥ अन्य ॥ बरवा ॥ प्रेमपातके बिरवा चलेहु लगाय । सींचन की सुधि करिहहु बिसरिन जाय ॥ सं० ॥ दो० ॥ गोप गोपिका मात पित करहु न तुम अति तर्श । मास मास प्रति आयकरि देहौं मैं निज दर्श ॥ २५ ॥ इमि कहिके व्रजजननिते गे मथुरा भगवान । जरासन्ध अरु यवनके हरिहरि मानरुप्रान ॥ २६ ॥ बसेजाय हरि द्वारका यदुबंशिनके साथ ॥ उग्रसेनको राजदै कीन्हो सबन सनाथ ॥ २७ ॥ गंग ॥ क० ॥ काहू यहकही आन भनक परी है कान मथुराहू छाँड़ि वे तो दूरि केशोरायगो । कोऊ अरी बातैं यहाँ राधिके सुनावो मति मुरझानो गात सो निपट मुरझायगो ॥ चन्दनते छिरकि कपूर छाती छायरह्यो विरहकी लागै आँच वह उड़िजायगो । गंगकहै वृन्दावन चन्द विना चन्दमुखी चन्दहि निहारे गी तो चन्द जरिजायगो ॥ ४६ ॥ बैठी हुती सखिन माँझ कान्हको गमन सुन्यो सुखके समूहमें वियोग आगि भरकी । कहै कविगंग तन त्रिबिध समीरलागे लागत समीर उठी व्यथा जोर जरकी ॥ प्यारीको परसि पौन गये मानसरपर परसत वही गति भई मानसरकी । जलचर जरिगये सेवार जरि छारभये जलज रिगये पंकसूखी भूमिदरकी ॥ ५० ॥ द्वारकामें श्री भगवान्को पछतायबो यथा ॥ नागर ॥ क० ज्यों ज्यों इत देखियत मूरख विमुख लोग त्यों त्यों व्रजवासी सु-

खरासी जियभावे हैं । खारेजल छीनत दुखारे अंधकूप चितै कालिंदी के काज महा मन ललचावे हैं ॥ जैसो अबबीते तैसो कहत न आवै बैन नाहीं सुखचैन पस्यो प्रान बिललावे हैं । थूहर परास देखि देखिके बबूरे हाय हाय हाय हरे वे तमाल सुधि आवे हैं ॥ ५१ ॥ भीम ॥ ऊधो यह सांची आह गोपिन कही निबाह भूखनकी कहा जहां माल मरकतहैं । रूखनकी कहां जहां कोटिन कलप रूख कुंज कुंज धायबेको पांय फरकतहैं ॥ कंचन के भाजनन सुधारस पानतऊ दोना पात दूध तऊ भीम हरकतहैं । मन्दर ते ऊँचे मेरु मन्दिरये द्वारका के ब्रजके खरक तौहू हिये खरकतहैं ॥ ५२ ॥ रघुनाथ ॥ ग्वाल संग जैबो ब्रज गायन चरैबो ऐबो वृन्दावन बीथिनकी शोभा करकतहै । मोतिनकी माला वारिडारों गुंजमालनिपै कुंजनकी सुधिआय हियो धरकतहै ॥ गोबरको गारो रघुनाथ कछू ह्यांते प्यारो कंचनके महल जो जड़ाऊ मरकतहै । मन्दरते ऊंचे ये सुमन्दिर हैं द्वारकाके ब्रजके खरिक तौहू हिये खरकतहै ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ प्रेमरत्न ॥ वह वृन्दावन सुख सदन कुंज कदम की छाहिं । कनकमयी यह द्वारिका ताकी रज समनाहिं ॥ २८ ॥ सिंहासन नरपति सभा जिहि लखि लजत अनंग । नहिं बिसरत वह सखनको गाय चरावन संग ॥ २९ ॥ राज साज साजे सकल तिमि नहिं नेकु सुहाहिं । गुंजमाल वन चित्र जिमि मोरमुकुट मणि माहिं ॥ या विधि बहुविधि शोचकरि बोले श्री भगवान । फिरि बूझन कुशलात ब्रज कह्यो ऊधो सों जान ॥ ३१ ॥ इहां

गोपिन को परस्पर पश्चात्ताप ॥ अन्य ॥ स० ॥ कोऊ न आयो उहांते सखी सुजहां मुरलीधर प्राण पियारो । याही अँदेश में बैठीहुती उहि देशको धावन पौरि पुकारो ॥ पाती दई धरि छातीलई दरकी अँगिया उर आनँद भारो । पूछनको पियकी कुशलात मनो हिय द्वारकेवार उघारो ॥ २१ ॥ सं० ॥ क० ॥ ललिता ललित बूझै गोपिनके संग जुरि ऊधो व्रजराज एहो बसे ठाम कामे हैं । सुनि दृगमूँदि कान्हे खोजन लगेहैं जाहि जो हैं चहुँ वेदनकी श्रुतिहूते लामे हैं ॥ तब घबराय दृग खोलि यह बोलि उठे योगकी जुगुति भई मेरी ह्यां निकामे हैं । भक्ति योग जामेंहै बसत श्यामतामें नितकान्ह द्वारकामें हैं पै प्राण राधिकामेंहैं ॥ ५४ ॥ गोप्यऊचुः ॥ स० ॥ अन्य ॥ हरि ऊधव योग दियो हमको चित चेति चितै जु गरीबिनी हैं । उनकी निठुराई कहांलों कहों निशिवासर प्रेम जकीरिनी हैं ॥ प्रिय सोलहजार भई उनको तिनमें हमहीं सु अजीरनीहैं । हमको न अहीरिनी कोऊकहौ व्रजवासिनी खासी फकीरिनी हैं ॥ २२ ॥ सिंह ॥ तुम योग ले आये मयाकरिके उनके जिय सिंह ठईसो ठई । अजि जानतहौ जु सबै मनकी हम नेहकी गांठि दई सो दई ॥ सुनि ऊधो संदेशन ते न मिटै विरहागिनि घेरि लई सो लई । निदई संग नेह दई न करे सुगई करिजाहु भई सु भई ॥ २३ ॥ सं० ॥ दो० ॥ इमि गोपिनके प्रेम लखि ऊधो हरि चितचाय । कछु दिन इन के संगते हरि बसिहैं हियँ आय ॥ ३२ ॥ ऊधोकी उक्ति ॥ पदुमनदास ॥ दो० ॥ जबते पदुमन प्रभुगये व्रज

तजि यदुकुल माहिं । सारी ब्रजनारी मलिन सारी पलटी नाहिं ॥३३॥ मोहन ॥ गोपिनकी उक्ति ॥ क० ॥ जाही कुंज कुंज तरे गुंजत भ्रमर आली ताही तरे जाय जाय शीश धुनियतहै । जाहि रसनाते करी रसकी रसीली बातैं ताही रसनाते अवगुण गुनियतहै ॥ मोहन विहारी विना हृदय अचेत भयो खेत सम देह आये मीचु चुनियतहै । जोई कान्ह निशिदिन नैनन तरेरीरहै सोई कान्ह कानन कहानी सुनियतहै ॥ ५५ ॥ सेन ॥ जबते सिधारे श्याम मधुपुर तबहींते मधुवन भयोहै मधुदानव बिषमसों । सेन कहै सारिका शिखंडी खंजरीट शुक मिलिके कलेश करैं कालिंदी कदमसों ॥ जामिनी बरन यह जामिनीमें जामजाम बधिककी जुगति जनावैं टेरि तमसों । देहकरि करज करेजो लियो चाहतहैं काग भई कोयल कगायो करै हमसों ॥ ५६ ॥ दूलह ॥ चारु चैत चांदनी चितासी चमकत मन्द अनिलकी डोलनि अनलहूते तातीहै । कहैकवि दूलह ये फूलेहैं रसाललाल कूकिउठे कैलिया मधुर मधुमातीहै ॥ औधि अधिकानी हरिहूकी बात जानी हम काहे ना छटूकह्वैके दरकत छातीहैं । गुनो आये बासर बसंतके बितैवे सखी सुन्यो आये आये वे ना बहुरि आई पातीहै ॥ ५७ ॥ अन्य ॥ राते राते पत्तनते नवतन तमाल फूले भांतैं भांतैं भौरनको सदन हितैहैको । भोर भोर आवनकी कोकिला पुकार दहै पंचशर तापनकी कामिनी कितैहैको ॥ ऐसे बड़े कहरमें कैसेकै बचैंगे प्राण चैत चारु चांदहूकी चांदनी चितैहैको । ऐहै पौन मन्द जब शीतल सुगन्ध

लिये कंत बिन बासर बसंतको बितैहैको ॥ ५८ ॥ रवि
नाथ ॥ मारिदेरी कोयल उजारिदेरी फूलेबाग टारिदेरी
उन्हें जो धमारि गावैं तंततें । वारिदेरी पौनहू मलयकी
सुगंध भरी झारिदेरी भौंर ये उड़ैं जो मैन मंततें ॥ जा
दिनाते बीती औधि तादिनाते गोपी इमि बकें रविनाथ
दन्त दाबि दाबि दंततें । कौन समझावै और कौनके
हिये में आवै कंतते बसात ना रिसातहै बसंततें ॥ ५९
पदमाकर ॥ पात बिन कीन्हे ऐसी भांतिगन बेलिनके
परत न चीन्हे जे ये लरजत लुंज हैं । कहै पदमाकर
बिसासी या बसंतके सु ऐसे उतपात गात गोपिनके पुंज
हैं ॥ ऊधो यह सूधोसो संदेशो कहि दीजो भले हरिसों
हमारे ह्यांन फूले बनकुंज हैं । किंशुक गुलाब कचनार
औ अनारनकी डारनपै डोलत अँगारनके पुंज हैं ॥
६० ॥ अन्य ॥ यमुनाके कूल जिन कीनी बटमूल केलि
तेई लगैं शूलसी न जात दृग धरी है । केतकीको कानन
करेजो कतलाम कियो कोकिला कसाइनिके केतीकूक
परी है ॥ जानत मधुप धूम धारनको देखिये पलाशकी
न डार फूल भारनसों भरी है । देखन वियोगिनीन रूखन
चढ़ी है आगि केती जारिडारी केती जरैं अध जरी है ॥
६१ ॥ मोतीराम ॥ कैसेकै बचैंगी वै अधीर गति धीर
वारी मलय समीरनकी झालै झुकि झूलैंगी । नद्दत
निहारै मकरन्द भरी फूलमाल भाल भ्रमरावलि भ्रमर
आनि भूलैंगी ॥ मोतीराम सुकबि सनेही श्यामप्यारे
बिन तैसी कोकिलानकी कुहूक हिय हूलैंगी । नजब
बचैगी हाय हेरत गजब ह्वैहै जब वे अजब बेली बागन

में फूलैंगी ॥ ६२ ॥ शिव ॥ कुञ्जकुञ्ज कूजैं अति कोकिलके पुञ्जपुञ्ज कहं कह कहा कह कहांलौं धीरधरिबो। त्रिविध समीरतन लागेआय तीरसम उमँग हमीर बीर कैसे दिन भरिबो ॥ शिवकवि कहै आनि प्रगट्यो बसन्तऋतु बिना बनमाली आली भो जरूर मरिबो। किंशुक अपारनमें सेमरके डारनमें भयो कचनारन में न्हारनको फरिबो ॥ ६३ ॥ जोपै सहिरहों चन्दकिरनि करौतनको फेरनहिं ऐसे तनतापते तचौंगीतौ। कोकिला की कूकनको काननते टारिसकौं मत्त मधुपनके उपायन रचौंगीतौ ॥ ऐसे समय जोपै ब्रजराज आय मिलैं आली मानिकै मनोज उतसाहन नचौंगीतौ। होहुँगी न न्यारी सदा पिय हिय लागीरहौं भागिनते अबके बसंतते बचौंगीतौ ॥ ६४ ॥ कोऊ कहौजाय कान्ह आयोहै बसंत ऋतु कोकिलकी कूकहूक हियमें समाने हैं। सोई सुलगत आग ऊधो आनि फूँक दई भनत न बनत वचन जे बखाने हैं॥ इतैपरकाम कमनैतकै गही कमान नेही ब्रज लोचन के तारका निशाने हैं। खिले अधखिले अनखिले ये पुहुपनाहिं एक बानमारि एकछोड़ि एक ताने हैं॥ ६५ ॥ अथ ग्रीष्मविरह ॥ अन्य ॥ स० ॥ भारी बियोग रह्यो तपि भानु ज्यों फैलत अंगन ताप घनेरो। नेहके संग खरो पजरै हिय कामदवागिनि ज्वाल करेरो ॥ ताते उसास समीरनसों झुरसी बनबेलिन होत निबेरो। ऊधौ बिना घनश्यामके देखो भयो ब्रज ग्रीषम हीको बसेरो ॥ २४ ॥ गेह छवाये नये खससों ज्यों जमाये हरे तेकरे तरनीरसों। बेनी घने घनसार लिपाय

न मिटैं बिरहागिनिकी लपटै ॥ ३२ ॥ गणेश ॥ क० ॥ बिछुरि मिलेते बिसरेते चित चेति चेति बैठिसेज केलिरंग करत खरे खरे। जुटि जुटि लूमि लूमि हुटि हुटि झूमि झूमि झुकि झुकि झूमि झूमि झुरत गरेगरे॥ बि- हँसि गणेशयों रसीली प्राणप्यारेउर जोरत उरोज दोऊ आनँद भरे भरे। हाटक कलश भरि ढारत पियूष मानो प्यारी बिरहागिनि बुझावति हरे हरे ॥ ९० ॥ सं० ॥ दो० ॥ निरखि ब्रह्मवैवर्त्त अरु निरखि संहितागर्ग्ग। संग्रह वल्लभ यह कियो अहै ऐन अपवर्ग्ग ॥ ३७ ॥ लीला पूरबभागकी बरणी बहुविधि जोय। उत्तर उत्तर रसभरी उत्तरमें सबसोय ॥ ३८ ॥ जनोपदेश॥ अन्य॥ कुण्डलिया ॥ हरिया हरिसों हेतकरि निशि दिन आठौ याम। भवसागरके भँवरमें यहै एक विश्राम॥ यहै एक विश्राम काम जब यमसों परिहै। मात पिता सुत बन्धु पीर कोऊ नहिं हरिहै॥ हरिवल्लभ यह कहत देख रा- हटकी घरिया। निशिदिन आठौ याम हेत हरिसों करि हरिया ॥ १ ॥ छप्पै ॥ अन्य ॥ झटक अटक मन श्याम सों छांड़ि धाम कर काम। इन्द्रीगण चाहत विषय ह- टकि हटक भजु राम ॥ हटकहटक भजुराम खटक जिय तनक न किज्जिय। नटक ठटक तजि चटक पटकअरि गण सुख लिज्जिय ॥ सुख लिज्जिय मोदक मधुर हरि जस रुचिसों गटक। नटवर लटक अहीर छवि छटक जाय जनि झटक ॥ २ ॥ अन्य ॥ क० ॥ तरुनी कनक दोऊ प्रबल रचे हैं विधि जातचलि मन याहि राखिये ह- टक हटक। देह धरि स्वारथ परमारथ न बनिआयो

योंहीं गँवायो दिन उठत खटक खटक। झूठो जगजानि साँचो नाम उर आनि अब रैनि दिन खोवतहै काहे भटक भटक। वेदऔ पुराण सुर सन्तहू कहत ऐसे छाँड़ि धाम काम श्यामा श्याम सों अटक अटक ॥ ६१ ॥ सं० ॥ गौवन चरिन्दे संग गावे सुरनन्दे तीर निबिड निकुञ्जे जहां गुंजत मलिन्देरे । कूदिके कलिन्दे हृदै मथिके फनिन्दे मद करलै नगिन्दे जिन गंज्यो मद इन्देरे ॥ जगहि अनन्दे करि कंसहि निकन्दे करि वृन्दारक वृन्दनके काटे बहु फन्देरे । एरे मतिमन्दे सब छोड़ि फरफन्दे अब नन्दके सुनन्दे ब्रजचन्दे क्यों न बन्देरे ॥ ६२ ॥ इति श्रीमदादिगौड़दुर्गागर्भजकाशीनाथात्मज विप्रवल्लभविप्रकृते रसिकोल्लासश्रीभागवतेमथुरागमन कंसवधद्वारकागमनान्तरब्रजागमनोनामएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

समाप्तोयं पूर्व्वार्द्धः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

रसिकोल्लासस्य उत्तरभागःप्रारम्भते॥

श्रीरास बिलासिन्यैनमः ॥

सो० ॥ जो रहिगइतिहिठौर ब्रजलीला पुर्वार्धमें। सो करि अति चितगौर उत्तरार्धमें कहत अत्र ॥ १ ॥ ब्रज निधिकी निधिराधिका श्रुति सारहुकी सार। सोई वल्लभ विप्रको करिहैं भवते पार ॥ २ ॥ क० ॥ छोंड़िसुरलोक वह आवेनहिं फेर यहां भूलि इकबेर जिनराधा कहि टेरी है। कहै विप्रवल्लभ सुगायें गुनवाके नर पावे बरह्यांहूँ बहुआनँदकी ढेरीहै ॥ कीरति किशोरी शुभ श्यामरंग बोरी अरु श्यामपद कंजके सुधूरिनकी चेरी है। वृन्दावन बासिनी है रास परकासिनी है हरि उर बासिनी उपासिनी सु मेरीहै ॥ १ ॥ हरिकवि ॥ सूरतको भेद औौर सूरतको भेदनहीं मोहनसों भेदमति वेदनके ग्रामको। नेह भरपूर वृषभाननन्दनी को नूर देखिजात रूपको गरूर कामबामको ॥ आपुन अनूप वारिजात को है भूप किधौं भासे भास भानउपमान सुधा धामको। करुणाअगाधा हरे संतनकीबाधा ऐसी कहे बिनुराधा फल आधा कृष्णनामको ॥ २ ॥ठाकुर॥ कीरतिकुँवरिकहे कीरति बढ़ति अति गोरीके कहेते गरुआई अधिकाती है। लाड़िली कहेते लाल परमदयाल होत प्यारीके क-

हेते सखी सुनत सिहातीहै ॥ ठाकुर कहत ठकुराइनि कहेते ठकुराइस बढ़त महा ममता बढ़ातीहै । कहत किशोरीके न थोरी लाभ मेरेजिय राधाके कहेते कोटि बाधा मिटिजातीहै ॥ ३ ॥ अथ महल वर्णन ॥ कीनेहैं सुधाम जिन दायक अराम हाथ लायक इनामहै वा उसता सपूतके । आले आले अतुल निराले त्यों तरास वाले उदित अवास ये मराले मजबूतके ॥ सहन सफाई सानसीनकी उँचाई थिर थंभन गुलाई मनो ढारे कलबूतके । उपमा अकूतके बनाये पुरहूतके हैं सांचेभरे सूतके कलस कलधूतके ॥ ४ ॥ श्री राधाजूको आविर्भाव वर्णन ॥ सं० ॥ कीरति महारानीकी कीरतिको गायकौन आपनो प्रताप वृषभानुसो बढ़ावतो । गोपी गोप गाय ब्रज बसन न आती और कौन गऊ लोकहू को सुख बिसरावतो ॥ वल्लभ या नागरी जो राधा न प्रगट होती तौतो कहो कान्ह कैसे धरामधि धावतो । छायजाती जड़ता बिलायजाते कविसब जरिजातो रस तो रसिक कहा गावतो ॥ ५ ॥ हरिजू ॥ वर सूकर ह्वै कबरासरच्यो अरु बामन ह्वै कब गोपि नचाई । तनमीनजु ह्वै कब चीरहरे अरु कच्छपह्वै कब बेनुबजाई ॥ तुम होय नृसिंह कहो हरिजू ब्रजमें कब धूमधमारि मचाई । वृषभानुसुता प्रगटी जबते तबते तुमकेलि कलानिधि पाई ॥ ६ ॥ प्रभावर्णन ॥ युगुलकिशोर ॥ क० ॥ राधा ठकुरानी पास बानीलिये पानी खरी आसपास चेरी चौंरढारें देवदारसी । अंगराग अंगनि लगाइबे को ल्याई रती अम्बर अमल लिये फूलनके हारसी ॥

युगुलकिशोर कहै नन्दके किशोर जहां जोहैं करजोरे जोति जीननकी चारसी। मोदक बढ़ायबेको हरकी हराहैं लिये एक हाथ फूल गेंद एक हाथ आरसी॥ ६॥ देव॥ उज्ज्वल अखण्ड खण्ड सातयें महल महा मण्डल चौबारे चन्द्रमण्डलके चोटहीं। भीतरहू लालनके जालन बिशाल जोति बाहर जुन्हाई जगि जागत सुजोटहीं॥ वरणत बानी चौंर ढारत भवानी करजोरे रमा रानीठाढ़ी रमनके ओटहीं। देव दिगपालनकी देवी सुखदायिनि ते राधा ठकुरायिनिके पाँयन पलोटहीं॥ ७॥ हठी॥ अतरें पुताये भौन महकैं सुगन्धनसों द्वारे गजमोतिनकी तोरने तनीरहैं। चन्दन चहल चारु चांदनी चँदोवालगे पन्नालाल माणिकन कोरन घनीरहैं॥ रमा चौंर ढारैं उमा आरती उतारैं ठाढ़ी रम्भा रति मेनका सी कोटिक जनीरहैं। हठी देवतानकी दिमागदार रानी तेऊ राधे महरानीजू के हाजिर बनीरहैं॥८॥ देव॥ द्वारे दिगपाल पिछवारे मुनि नारद औ शारद अमन्द द्युति बीनाको रख्योकरैं। दहिने दिवाकर निशाकरहैं बाईंओर अणिमा प्रसिद्ध सिद्ध भांवरि भख्योकरैं॥ बारभारलागे लकुटनके यों देवकहैं मोतिनके मुकुटनिसों अवनि भख्योकरैं। शम्भुसे स्वयम्भूसे शिरीपति शचीपतिसे महल महरानीजूके टहलकख्यो करैं॥९॥ कवीन्द्र॥ रचत विरञ्चि संचि जीवनकी खानि तामें तत्त्व चारि आनि सानि एक बुन्द पानी के। पायजाके शासन कृपालै जगदीश पालै आसन असन सो है बसन सदानीके॥ भनत कविंद जाके हुकुम हदीसहीसों संघारत ईश

सुने त्रिगुन कहानी के। मची हैं चहूँके चहूँ चहल प-
हल होत अहल हुकूमत महल महरानी के॥ १०॥
पौरिही में ठाढ़ेरहो बाढ़े घरही के लला चौकी है हमारी
यहाँ बूझनो सहलहै। अरजतिहारी घरी द्वैकमें करौंगी
अबै मोजराई सखिनकी चहल पहलहै॥ गोकुलके नाथ
आये गोपनके साथ दीजै सिगरी बिसारि यहां गुरुता
गहलहै। अदबसे रहौ बेअदबकी कहौ न बात वृंदावन
राधा महारानीको महलहै॥ ११॥ प्यारीजूको गद्दीपर
बैठिबो यथा॥ अतर पुताय चौक चन्दन लिपाय बिछी
गहब गलीचनकी पगतें प्रमानकी। श्याम पीत हरी लाल
झालरैं झिलरिरहीं तैसी छबि छाई चारु चांदनी वि-
तानकी॥ तैसी श्वेतसारी झीनी मोतिन किनारदार
फैलिरही आसा हठी राधे सुखदानकी। नाह नेह नद्दी
करि रमारूप रद्दीकरि बैठी आनि गद्दीपर बेटीवृषभान
की॥ १२॥ पद्माकर॥ गिलम गलीचा गुलदार गद्दी
गेंदवाहै गाँसिया गुलाब गजमुक्तनकी मालहै। झँझरी
झरोखा मोखा झालरैं झुकायेझर झिझिक झिझाये
ऐसी झांके नभबालाहै॥ चम्पक चमेली चंद चांदिनी
सी चपलासी चूनीसे चरन एक एकहीसों आलाहै।
राधिकाकी दासी खासी पूरनकलासी जहाँ रतिसी रमा
सी संग बैठी चित्रशालाहै॥ १३॥ शयनाशन वर्णन॥
भोजनकै भामिनी सुभौनबिच ठाढ़ीभई चूनीसे चरन
चारु चौकी रँगामेजपर। पन्ननके पानदान पानन की
बीरीभरे सखी कर दीनी लीनी मनकी मजेजपर॥ फू-
लनकेहार भारी हीरनके भार देव आली पहिरायेते

सुहाये तनतेजपर। सौसौ शशिकैसो आसपासते उदै सो करि आनि बैठी सीसाके महल सोंधें सेजपर॥ १४॥ सं० ॥ पौढ़ी है अटापै जाय राधिका नवेली जाको रूप रमा रतिहूते उत्तम तुलैरह्यो। उभरे उरोजनपै जालसो प्रकाश पेखि भ्रमित अलीको भ्रम बल्लभ मिटैरह्यो॥ वदन मयंक अकलंक लखि गोखनि ते रिसिकरि कूद्यो अरी मेरेमन ठैरह्यो। कुच गिरिशृंगके दरेरनि दरायो याते देख यह चन्द मन्द टूक टूक ह्वैरह्यो ॥ १५ ॥ प्यारी जूको भ्रम ॥ देव ॥ बैठी सीसासागरमें सुन्दरीसवारही ते मूँदिके किवार देव छबिसों छकतिहै। पीतपट लकुट मुकुट बनमाल धरि करिबेष पीको प्रतिबिम्बमें तकति है ॥ ह्वैके निरशङ्क अति अंक भरि भेटिबेको भुजनि पसारति समेटति जकतिहै । चौंकति चकति चितवति उझकति उर भूमि लचकति मुख चूमि न सकति है ॥ १६ ॥ सिंगारिबो यथा ॥ बेनी ॥ मुकुर मञ्जुलैकै सन· मुखखरी एकै करिबेको मञ्जन पदपङ्कज धरैयांसी। शीशफूल एकै पहिराय चन्दकोर एकै गूँधके त्रिगुन बेनी मोतिन लरैयांसी ॥ चूनरी चुनावदार चुनि पहिराई श्याम कञ्चुकी चटक द्युति दामिनि करैयांसी। महल महानपै बिराजै चारु चन्द्रमासी ताके आसपास भ्योर तरुनी तरैयांसी ॥ १७ ॥ मनोपदेश ॥ सं० ॥ स० ॥ तात तज्यो अरु भ्रात तज्यो औ तजे जननी भगिनी वर वामहि। दाहत तोहिं रहै नितहूँ तबहूँ नहिं छाँड़तहै धनधामहिं ॥ कामन तेरे न ऐहैं कबूँ जगके सब कामनि जान निकामहिं। वल्लभ बैस गई बहुबीति

तऊ चितरे नहिं चाहत श्यामहिं ॥ १८ ॥ इति श्रीमद्वादिगौड़दुर्गांगभंज श्री काशीनाथात्मजविप्रवल्लभविप्रकृतेरसिकोल्लासभागवतेउत्तरार्द्धे श्रीराधिकाआविर्भावप्रभावशयनाशनवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ नखशिख॥तत्रयुगलध्यान यथा॥ क० ॥ कंकन करनफूल एकओर राजतहै कुण्डल करन दोऊ पहुँची गुपालकी। एकओर चन्दनकी खौरि नीकी राजति है एकओर राजतहै बेंदी बीचभालकी ॥ एकओर सूही सारी जूहीहार राजतहै एकओर श्यामतन शोभा बनमालकी ॥ एकओर भूलें छूटी अलकें कपोलनपै एकओर भूलरही लालपाग लालकी॥ १ ॥ पदवर्णन॥ केशवदास ॥ क० ॥ गंगाजूके जलमध्य कंठके प्रमान बैठि पढ़ि पढ़ि सूरमन्त्र आनँद बढ़ावहीं ॥ केशोदास घाम जल शीतसहै एकरस ठाढ़े एक पांवकोटि कलप नशावहीं ॥ कोमल कमल भये कमलानिवास भये सुन्दर सुवास मन यदपि भ्रमावहीं। पायोपद ब्रह्मसुत पद्मिनि पद्मिनि तेरे पद पदवीको पदपै न पावहीं ॥ २॥ अथ पदतलवर्णन ॥ गिरिधरदास ॥ सुखमाके हद किधौं कुमकुमके नद किधौं अरुनकै आसनकै आछे सरसात हैं। किधौं शिला ईंगुरकी माणिककी भूमि किधौं छबि कहिबेको कबि दबि रहिजातहैं ॥ गिरिधरदास किधौं मूँगाकी रुचिर चौकी चतुर बनाई करै शोभा बरसात हैं। मंगलकै भाल धौं विशाल भक्त अनुराग किधौंलाल तरवा प्रियाके दरसातहैं ॥ ३ ॥ पदचिह्नवर्णन ॥ किधौं अनुराग भूमि अंकुर अनेक भाँति गिरिधरदास

दिये छिरकाय गुलाब गँभीरसों ॥ ग्रीषमकी यों करी जतनै पर एकलहोतन सीरेसमीरसों । को बलबीर सों जायकहै तिय जात मरी है वियोगके पीरसों ॥ २५ ॥ बरषा बिरह ॥ प्रवीनवेनी ॥ क० ॥ केकीभेकी कौन टेक टेकी है कुटेकी भये एकी अबिबेकी बकै नेकी नेक कहै को । घनकी गरज सुनि दरज हिये में होत तड़ित त-रज याही मरजसों दहैको ॥ बुन्द तुन्द दुन्दकै प्रवीन वेनी बरसत सरसत मदन बदन मुदरैहैको । चलौ सब बामै तजि धामै तिहि ठामै कहै बिना घनश्यामै धूम धामै अब सहैको ॥ ६६ ॥ आयो घनश्याम देखो सा वन सघनश्याम बन घनश्याम ललकारे श्याम कामरी । शोर घनघोर आये चातक चकोर आये मोर आये-श्यामघनघेरि आये जामरी ॥ जुगुनू चमकि आये जा-मगी जगाये मानो मारआये मारिबेको बिरहीजन आ-मरी । जीवन कहत आये सकल बराती काम आये घनश्याम पै न आये घनश्यामरी ॥ ६७ ॥ घन आये अम्बर सघन छाये छोनीघन पादपके पल्लव ललित काम धामरी । आई सुधि साँवरे सलोने लोने गातन की दृगभरि देखेहौंजू ओढ़ें श्याम कामरी ॥ मोर आये शोरबर बनत कहत नाहिं झिल्लीगन भूलैं देखि आवे ना अरामरी । जीवन कहत कैसे धीरज धरैंगी आली आये घनश्याम पै न आये घनश्यामरी ॥ ६८ ॥ नन्द-लाल ॥ अमित शिखण्डिनकी मण्डलमें मण्डलीसी झींगुर झकोर झिल्ली झरप झरापैरी । चञ्चल है चञ्चला चमंके चण्ड चारोंओर चातक चुनौती पीव

पीवही अलापैरी ॥ कहै नंदलाल गाढ़ आगम असाढ़ आयो दादुर दरेरनिकी दरत दरापैरी । एरी उर काँपै प्राणनाथ कुबजापै अब कौन सहै दापै धुरवानकी धरापैरी ॥ ६६॥ सावन सोहावन या लागत भयावन सो आवन अवधि अब सोचैं गजगामिनी। ऐहैं कबहूँधौं बलबीर ह्याँकि नाहिं ऊधौ कैसे धरैंधीर ये अधीर व्रजकामिनी॥ जहां तहां जींगनकी जोति जगी ज्वाल जैसी जमकी जमातसी जनात जात जामिनी । जारे है पपीहा ये पुकारि पीवपीव टेरि घेरि मारे बादर दरेरिमारे दामिनी ॥ ७० ॥ अन्य ॥ कैसे कै बितैबो दिन रैन अकुलैबो पस्यो घटा घहरैबो थहरैबो हियरानको । अबनारुकैबो बिरहागिनि फुकैबो धुरवानको धुकैबो औ कुकैबो मोरवान को ॥ दिल दहकैबो मन्द पौन महकैबो अंग अंग चहकैबो औ नचैबो चंचलानको । अजब गजब लखि लैबो री सबुज भूमि जैबो नँदनन्दकोरुऐबो बदरानको ॥ ७१ ॥ मोरनकी कूक ये करेजे छेद पारेदेत कौनधौं बढावे दुख काहूके न मानको । फूली बनबेली त्यों समीर मुकमेल उर लागे मनो सेल सुर कोकिलके गानको ॥ अबके बचावनको उपाव न बिलोकियत आय लग्यो दांव या निगोड़े पञ्चबानको । अजब गजब लखि लैबो री सबुज भूमि जैबो नँदनन्दकोरुऐबो बदरानको ॥ ७२ ॥ शरदबिरह ॥ स० ॥ सेत पहार अगार भये अवनी जनु पारदभा परवारी । होतहि इन्दु उदोत लसे चहुँ ओरमें शोर चकोरके भारी ॥ फूली कुमोद कलीन कली अवली अलिकी बलिमें निरधारी । कोपिकै चन्द ति-

यानके प्रानपै आज मियानते तेग निकारी ॥ २६ ॥
क० ॥ कोरत करेजो कर पत्रसे करेरे कर करत करूरो
काम नेक न सकातो है। सिन्धुके मझार बसि लावत
जहर धँसिकैधौं लैकहरसिदेत न अघातो है ॥ सीरो
कौन कहै सखि शारद सुधाकरहिं बाड़व अगिनिज्वाल
जामधि समातो है। चहूँदिशि बिथुरत तारागन तेज
कन तन मन तापन तपनहूते तोतो है ॥७३॥ अन्य ॥
मज्जनकै मन्दिरको सबनि सँवारे सेत राते पीरे रंगनि
बिचित्र चित्र भरिये। घर घर आंगन अटान बार बा-
रनमें दीपक्क सँवारि बारि बारि पाँति धरिये ॥ जोति
जगै अवनिपै अधिक अँधेरो नभ दरशकी रैनि जामें
कला शशि हरिये। शोभाको समूह नाथ सबै व्रज दे-
खियत कातिक में आय लाल दीपमाल करिये ॥ ७४॥
हेमन्तबिरह ॥ सं० ॥ स० ॥ शीतसमै न सिरातिहै राति
अराति अनंगकमानचढ़ाये। नींद न भूख न भूषनकीसुधि
भूलिगये सिगरे सुखदाये ॥ बल्लभ श्रीनँदनन्द बिना
बिरहा हियरा कहँ देत जराये। होतहै अंत अरी सुनि
तन्त अजौं नहिं कन्त हिमन्तमें आये ॥ २७ ॥ राम
कवि ॥ क० ॥ परत तुसार भार कांपै हिय हारहार र-
जंत पहार दिन आगि जैसे फूसकी। द्वारद्वार परदे परे
हैं भरे तूलनके भीतर सँवारि धरी पलँगै जलूसकी ॥
रामकवि कहत हनत शीत अब तब आवरे सुजान तेरी
छाती आबनूसकी। जैसे तैसे कान्ह षटमासलौं व्यतीत
कस्यो निपट जवाल भई कालरैनि पूसकी ॥ ७५ ॥
गोकुल ॥ हेमंत महरके किरन ते अहर लघु द्रौपदी दु-

फूलसों बढ़न लागी रातिहै। पानीकी कहानी कहैं काँपि उठै काय व्रज योग भोगवारिसे वे प्यौनप्यारी ख्याति है॥ शीतते सभीत जग देखो अचरज यह पजरै प्रबल उर आगि अधिकातिहै। प्रान करे अंतकूर काल बिना अंतऋतु होय न हिमन्त किरतन्तकी जमातिहै॥ ७६॥ शिशिर बिरह॥ शीत महा तापनतें मीत तो संतापन तें बरैं सीरे आपनतें पलपल यामहै। बरषति बरफैं हैं त्योंहीं त्योंहीं तरफैं हैं ज्वाल चहूँ तरफैं हैं ज्वालामुखी धामहै॥ जपैं तुव नाम एक यही बिसराम सुधि भूली दाम दाम हमैं और नहीं कामहै। जारी नित्त काम बि-रहागिनि किमामहै सुदेह मैं न माम है भयो हियोहि यामहै॥ ७७॥ मधुमें न आये और माधौ में न आये ऊधौ जेठ अरु अषाढ़ ये निठुरनितानकी। सावनकी झरी में न भादौंकी भरी में न क्वारमें न कातिक दिवारी दीपदानकी॥ मारगके मास पिय मारग विलोकिहारी पूस अरु माह सही बिरह बिथानकी। फागुनके मास यहाँ आय खेलो होरी नातो होरी भई चाहत किशोरी वृषभानकी॥ ७८॥ स०॥ फागुरी आई सखी हमको बिन प्रीतम प्रीतिकला कस लागुरी। लागुरी मेरी गु-हार त्रिया इहँ एकसमै गँवपाव तो जागुरी॥ जागुरी राग चहूँदिशि होतहै मैन हिये अति देतहै दागुरी। दागुरी मेरो तबै मिटिहै जबहीं सँग मोहन खेलिहौं फागुरी॥ २८॥ सं०॥ दोहा॥ गोपीगण पछताय इमि बितये बारह मास। कढ़िबो इहतें प्राणभल यह कहि लियो उसास॥ ३४॥ गोपिनकी उक्ति प्राणतें॥ क०

अन्य ॥ बहुत दिना पहिचानिकी बानि ताते बोलियत तुमसों वचन अति दीनह्वै । हरिके बिरह सब देहजरि खेह ह्वैहै पंचभूत तुम जनि जाउ छिन छीनह्वै ॥ वाके पाय पंकजमें पंथनकी धूरिहोहु होहु जल वाहीके सरोवरमें लीनह्वै । आरसी में तेज अरु व्यजननिपौन होय आंगनमें नभह्वैके वाहीके सुलीनह्वै ॥ ७९ ॥ मुबारक ॥ लागी सुलगन ज्योंहीं त्योंहीं सुलगन लगी भागी न सचत जागी बिविध विधानसों । फूंकि उरगास्यो मैन औटि गास्यो मन एरी जास्यो जुर चैन अनुसास्यो अब सानसों ॥ बुझै न बुझायेते मुबारक न लायेजल ज्वाला जगी योगकी छमीन काहू आनसों । नेह धोये देहसों औ गेहसों सनेह धोयो नैन धोयो लाजनसों औ हाथ धोयो प्रानसों ॥ ८० ॥ मंडन जैपुरवारो ॥ हित उपजाय चित चोरि ब्रजवासिनको रूप उजराय प्रान प्यारो महबूबगो । जगत प्रशंस कंस दासी प्रान प्यारीकरी एक छनहीमें अंग अंगनको कूबगो ॥ दिन दिन दूनो दूनो दुख ब्रजसूनो भयो मंडन विचार बिन प्रेमपन छूवगो । देह सुधि बुधि नहीं पावत न हेस्यो सखी मेरोमन बिरह समुद्र मधि डूबगो ॥ ८१ ॥ सं० ॥ दो० ॥ गोपिनके इमि बिरह लखि कह्यो ऊधव घबराय । मैंजैहौं हरिपास अब मोते रह्यो न जाय ॥ ३५ ॥ यह सुनि गोपिन पत्रिका दई ताहि लिखवाय । और कह्यो ऊधो यहां ल्यावो हरिहि लिवाय ॥ ३६ ॥ नागर ॥ क० ॥ सिद्धिश्री सनेहीलाल रसिक रसाल योग्य लिखितं वियोगिनको पायन परसहै । ढांकेभल समा-

चार पलपल चाहैं प्यारे लालके लखेतें ह्यांके सिगरैं सरसहैं ॥ करिकरि ध्यानतेरो अबलौं सुराखेप्रान यहई निदान बेगि मिलिबो सुरसहै। कागद कहांलों लिखौं नागर नवल सुख सागर सयानतो दरसको तरसहै ॥ ८२ ॥ दयानिधि ॥ जैसे लोकलाज कुलकानि भूली तुम्हैं हरि जानगये गुरूजन ये तबते अरैना फेर। ज्यों तुम संयोग सुख देके अपनाई टेर वे दिन न भूले वैसे सुखहू करैं ना फेर ॥ अब बिरहागिमें जरैं यों डारैं आंसूढेर ताको विचारजो करो तो पै जरै ना फेर। दया- निधि प्यारे या वियोगमें जो एकबेर दरश दिखावो तो वियोगते डरै ना फेर॥ ८३ ॥ पद्माकर ॥ पाती लिखी गोपिन गुमानतजि गोबिंदकों श्रीयुत सलोने श्याम सुखनि सनेरहौ। कहै पद्माकर तिहारी छेम छिनछिन चाहियत प्यारे मन मुदित घनेरहौ ॥ बीनती इतीहैकै हमेशाही हमैंतो पदकञ्जनकी पूरी परिचारिका गनेरहौ। याहीमें मगन मनमोहन हमारे तुम लगन लगालगमें मगन बनेरहौ ॥ ८४ ॥ यथा ॥ स० ॥ यह प्रेमबिथाकी कथाहै बड़ी बिनबीते वृथा व्रतठाने कहा। पद्माकर भोग संयोग वियोगको लोगइतो पहिंचाने कहा॥ इन नेहिनके तनको मनको दुख औ सुख दूसरो जानेकहा। २९ ॥ बरवै ॥ प्रेमपातके बिरवा गयउ लगाय। सींचन की सुधि करुहरि फिर हरिआय ॥ २ ॥ सं० ॥ दो० ॥ पायमान सनमान बहु बसि गोपिनके साथ। ऊधव वि- नते ह्वै बिदा गये जहां ब्रजनाथ ॥ ३७ ॥ अथ गोपिन की अभिलाष ॥ अन्य ॥ क० ॥ ऐसो कबह्वैहै आली

श्रवन सुनैहैं आनि कान्ह आये कान्ह आये ऐसो आय कहिहैं। द्वारहीते बोलिआय ऊँचे नाम लेसुनाय सुसज समान सेज संग बैठि गहिहैं॥ मदन बिरह बैरी देहमें दिवारो देत आजकालिह आये बिना कैसे प्रानरहिहैं। जिय तबह्वैहै जब हँसिके करैंगे बात नैनन सँतोष मुख देखे सुख लहिहैं॥ ८५॥ शशिनाथ॥ गायहों मंगल चारघने सखि आवतहीं तनताप बुझायहों। झायहौं पांय गुलाबनिसों कमखाबके पांवड़े पुंज बिछायहौं॥ छायहौं मन्दिर बादलेसों शशिनाथ सुफूलनकी झरि लायहौं। लायहौं सौतिनके उरशाल जबै हँसि लालहि कंठ लगायहौं॥ ३०॥ सं०॥ दो०॥ मन प्रसन्न गोपीनके अकसमात सबकेर। लखि अनुभव यह करत भइ ऐहैं श्याम न देर॥ ३८॥ सोमनाथ॥ क०॥ आली बहुबासर बिताये ध्यान धरि धरि तिनहींको फल नैन दरश सुपावेंगे। होतहैरी सगुन सुहावने प्रभातहीतें अंगनमें निपट विनोद अधिकावेंगे॥ सोमनाथ हँसि हँसि बतियां अनूठी कहि गूढ़ बिरहानलकी तपत बुझावेंगे। सबनते प्यारे प्राण प्राणनते प्यारे पति पतिहूते प्यारे ब्रजपति आज आवेंगे॥ ८६॥ ऊधवकी उक्ति हरिसों॥ सं०॥ दो०॥ ब्रजमहँ कबहुँन होतहै तुम बिन सुबह न सांझ। ऊधवके यह वचन सुनि चह्यो आवन ब्रजमांझ॥ ३९॥ कला कलित मूरति ललित उग्रसेनके साथ। द्वारावतिमें राखि प्रभु ब्रजआये ब्रजनाथ ४०॥ ठाकुर॥ स०॥ दिलसांचो लग्यो जिनको जिनपै तिनको तितहीं पहुँचावत है। बलि हंसचुने मुकताहल

को अरु चातक स्वातिको पावत है ॥ कहि ठाकुर या निजभेव सुनो उरझावत सो सुरझावत है । परमेश्वर की परतीत यहै मिल्योचाहे ताहि मिलावत है ॥ ३१ ॥

क० ॥ ऐसी गृहचाहकी हियमें गुमराह होत लोकलाज कुलकानि हारिबोई करिये । चाहे कोऊ नांवधरे चाहे सुबड़ाई करे रूप औ अनूप हिये धारिबोई करिये ॥ ठाकुर कहत तुम ऐसे लोने लागोश्याम अति अभिराम काम बारिबोई करिये । बरसन युग अँखियान लगो प्यारेलाल दरशन रावरो निहारिबोई करिये ॥ ८७ ॥

पदमाकर ॥ और भांतिहीको प्रेम पूरनको पूर-अरु औरे कछु देखो मैन नैननसों लागहै । कहै पदमाकर सु औरेही सोहाग कछू औरे अनुराग जामें लागत न दागहै ॥ औरे योग औरे भोग औरेही वियोगरोग औरेही संयोग मिले बड़भागहै । नेह नगरीके बस बासिनको आली कछू औरे रूप औरेरस औरेरंग रागहै ॥ ८८ ॥ नवीन ॥ रूपसिंधु रावरो चितौनि रसछाकी आज आखैं पीरपाकी पेरितौ तस छकरि भरि । चौसरे चमेलिनके चंपकली हार गूँदि बारबार मोतिनके सिंगार चारु करिकरि ॥ बसन रँगीले ते सुबासके बसीले अंग झूमत नशीलेसे सचिक्कन अतरि तरि । रंगभीनी दतियां उमंगभीनी बतियां तैं सीरी भई छतियां गुपालै अंकभरिभरि ॥ ८९ ॥ सिंहकवि ॥ स० ॥ दोउ चाहत चाहसों चाह भरे मिलि प्राणन प्राणनसों चपटे । कविसिंह कहै अपनी अपनी पै वियोग विथाकी कथा न घटे ॥ बिछुरे बहु बासरके जुमिलैं कइ काम कलोल उपाय ठटे । लपटे मिलि दोऊ भुजानतऊ

कढ़े जग मनभावने । किधौं लालपाटी पै बिधाताने लिखे हैं अंक रमा उमा आदि भाग अंकन लजावने ॥ किधौं कामदेवने विचित्र चारु चित्ररचे माणिकके पीठ पै परम छबिछावने । अम्बुजमुखी के पद अम्बुजके चिह्न किधौं दरशैं अनेक अम्बुजादिक सुहावने ॥ ४ ॥ पदलावण्यतावर्णन ॥ मून ॥ बिम्बमें प्रबालमें न इंगुर गुलाबमें न चम्पक रसालमें न नेसुक निहारे में । दाड़िम प्रसूनमें न मनधरा सूनमें न इन्द्रकी बधूनमें न गुञ्जा अधिकारे में ॥ कुसुम सुरंगमें न किंशुक पतंगमें न जावक मँजीठ कञ्जपुञ्ज वारिडारे में । राधेजू तिहारे पद अरुण समान ताको हेरिहारे कबिता न आवत बिचारे में ॥ ५ ॥ अन्य ॥ किंशुक कुसुममें न प्रातके पतंगहू में ईंगुर में लाली में न जातिमें न जति है । यशुदाके बालमें प्रबालमें न सेंदुरमें लालमें न रंग औ गुलाबमें न गतिहै ॥ इन्द्रबधू जावक न पावक जपा में ऐसी जैसी पद जोति जगदम्बकी जगतिहै । मनमें बचनमें दृगनमें ठई है मेरे और छबि हेरे सब फीकीई लगतिहै ॥ ६ ॥ राम ॥ बारिजारिजात पारिजात हारिजात दोऊ प्रबल प्रबालकी कुमाच कुम्हिलातिहै । तावना रहत आफताबऊ भुलाय देखि गालिब गरूर मगरूर गरगातिहै ॥ रामकबि कहै जाहि देखत प्रकाश होत पापकी प्रणाली जासु पासही बिलातिहै । राधा ठकुरायनिके पाँयनके तीर उक्ति कबिकी डेराय भभराय भजि जातिहै ॥ ७ ॥ कर्णकबि ॥ चन्दनमें बन्दनमें है न अरविन्दनमें कुरुविन्दमें न भानु सारथी बरनमें । मोहर

मनोहरमें कोहरमें है न ऐसी गुञ्जनकी पीठमें मजीठ अबरनमें ॥ जैसी छबि प्यारी के निहारी मैं तिहारी सौं लाली यह चरन करन अधरनमें । है न गुलनारमें गुलाब गुड़हरमें न चन्दबधूमें न बिम्ब नारंगी फरनमें ॥ ८ ॥ फेरन ॥ अमल अनार अरबिंदनको बृंद बारि बिंबाफल बिद्रुमनिहारि रहे तूलि तूलि । गेंदा औ गुलाब गुललाला गुलबास आब जामैं जीव जावक जपाको जात भूलिभूलि ॥ फेरन फबत ऐसी पायन ललाई लाल ईंगुर भरेसे डोल उमड़त भूलि भूलि।चाँदनीसी चंदमुखी देखो ब्रजचंद उठैं चाँदनी बिछौना गुल चाँदनीसी फूलि फूलि ॥ ९ ॥ स० ॥ पदुमनदास ॥ राजिवसे रमणीय सुकोमल शोभित रेख महाउर थोरी । कैथल को लहि बिद्रुमके द्रव डारि मनोज निकारि धरोरी ॥ पल्लव पत्र कहा बपुरे जिहिं जोहतहोंहिं लजाय हरोरी । हारिरहे उपमान सबै निरखैं पगु श्रीवृषभानकिशोरी ॥ १० ॥ सं० ॥ जावक लाल गुलालनिकी छबिछीन लई अरुणाई सहाब की । औ गुलनार इनारुन की सुभई लखिकें उपमा बिन आवकी ॥ बल्लभ राधिका पायन की द्युतितें दबिके बुधिहोत अताब की । पंकज पातकी बात कहा जिन कोमलतालई जीति गुलाब की ॥ ११ ॥ पदद्युतिवर्णन ॥ सेवक ॥ चमकि चमकि चली पग ढिग आयरली देखि दुखदली फिर चली अकुलायके । कामना बिसारी फिर पीछे नानिहारी फिरी बिजुरी बिचारी भजी भरम गवायकै ॥ सेवक कहत एरी राधिका दुलारी तेरी सर्व कहँ आइगई दूनोंदुख पायके।

पद चमकाहट की समता न पाई यातें बहुरि लजाय घुसीबादर में धायके ॥ १० ॥ पदांगुलीवर्णन ॥ चंपकली भली किधौं गिरिधरदाससोके किधौं सरसाती पाँति पांच तड़ितनकी । चामीकरकामी किधौं अतिही चमकदार किरन प्रकाशैं पीर नाशैं सब जनकी ॥ मीन छबि पीन किधौं शोभाके समुद बीच ऐसो कबि कौन कलापावै जो बरन की । कैधौं लसैं आँगुरी अनूप अणिमा की हद राधिका रसिक रस साधिका पदनकी ॥ दयानिधि ॥ नख अग्र भाग श्यामताई यमुनाहै सोई मध्य श्वेतताई दरशाई गंगतनमें । अंत अरुणाई महँदीकी कहँदीहै अति परसे लाल उपमा सार सुति छन में ॥ आँगुरी अँगूठा मेरु श्रृंगसे दिखात तामें कढ़ी बढ़ी मढ़ी दयानिधिउकतनमें । बसुधा सो न्यारी रस धारा बहै जामें ऐसी दसधा त्रिबेनी प्रिया पाद पदमन में ॥ १२ ॥ पादांगुलिभूषणयुतवर्णन ॥ कालिदास ॥ राधा ठकुरानी सोई चांदनी महल बीच पग आंगुरीन झलकत छबिजालहै । कालिदास जावक में कहा छबि पावक में हेरि हेरि भयो ब्रजनायक निहालहै ॥ रतन कलित बिछुवान के बदन पर कलित ललित जोये ऐसे नख लालहै । मोतिनके बिरह बिसूरि मनु सोच लाल लालचूनी चापिरहे चोंचन मराल हैं ॥ १३ ॥ नख वर्णन ॥ कान्ह ॥ कैधौं मरयादा बिधिना की बिधि ताके सखी गहब गुलाब आब राखे प्रेम बोरी के । कैधौं मणि माणिक ललाई अवरेखियत मानो द्युति मुकुर सोहाये मझरोरी कै ॥ कान्हभने पद युग सागर कुसुंभ रँग ता-

में दश कमल परागनि झकोरीके। नवलकिशोरजू के नवल सनेहभरे नवल नख राजैं ये नवलकिशोरीके॥ १४॥ एड़ी वर्णन॥ गिरिधर॥ रजोगुण रंगवारी जावक सुरंगवारी आनँद उमंगवारी स्वच्छ छबि छाकी है॥ सौतिगनभंगवारी सखी सतरंगवारी नवल नरंग वारी अंगवारी ताकी है॥ गिरिधर कहै सो है संपुट सरोजवारी बशीकर मंत्रवारी यन्त्रवारी बांकी है। पियमन बेड़ी अच्छ लच्छन निबेड़ीबेस उपमा न छेड़ी राजै एड़ी राधिकाकी है॥ १५ ॥ गुल्फवर्णन ॥ किधौं करि कर में बिराजै छबिभरे दोय मोदक प्रमोदकरबर सरसात हैं। किधौं रंभ खंभमें लगेहैं लोने लघुफल बरतुल दोऊ बरतूल दरसातहैं॥ गिरिधर दास किधौं कनक नदीके फेन परम अनूपकरैं छबि बरसातहैं। अमल अमोल लोलमनके अडोलकर कैधौं राधिकाके गोल गुलुफ बिभातहैं॥ १६॥ ऊरूजानुजंघयुत पद वर्णन ॥ कान्ह ॥ सोनेके सितून ब्रजराज मन मंदिरके रचिबेको चारु चतुरानन कहांकेहैं। कैधौं रसराज महराज के निशानखंभ कान्ह कहैं कैधौं सौतिमान भंजनाकेहैं॥ कौन उपमा के अतिराजै सुखमाके गज गवन बिथाके राजहंस गतिनाकेहैं। मोहन बनाके मनमोहिबे को नाके खंभ काम पलनाके कैधौं पायँ ललनाकेहैं॥ १७॥ नितंबवर्णन॥ गिरिधर॥ किधौं चक्रवाकनके थल बिचित्रने चारु किधौं तुंगमेरुके शिखर मनभायेहैं। किधौं सीम सुखमा के सुखके करैया अहैं कंचन कँगूरा किधौं धनद लगाये हैं॥ गिरिधरदास काम धामके शिखर कैधौं सोनासों

रचित शुचि सुन्दर सुहाये हैं। लखिके नितंब युग कामिनी के प्यारे सुठि श्याम अंग अंग में उमंगन समाये हैं॥ १८॥ कटिवर्णन॥ पदुमनदास॥ स०॥ खीन महा अनुके अनुमान समान न सूचिकै अग्रहु आवै। संशयता अतिशून्यकी आवति भृंगिनि सिंह सुभाव लजावै॥ पीन उरोज नितंबके भार अधारबली त्रयतै गतिपावै। देखि मुरारि निहारि तियाकटिहै कि नहीं हियमें उपजावै॥ ३॥ सं०॥ देखि न मैं कबहूँ सजनी उहि देखनिकी बहुतै अभिलाखी। या बिधितें बिधिने बिरची जिहिको न लखै सहसानन आंखी॥ बल्लभहै अनुतैं अनुरीतिहि की चहुँ बेदनमें श्रुतिसाखी। ब्रह्मलौं सुच्छम है कटि राधेकी देखि न काहू सुनी सुनि राखी॥ ४॥ नीबी वर्णन॥ सुंदर॥ क०॥ चांपि चिहुँटीसों चुनि नाभिके निकट नीकी नवेलीकी नीबी ऐसे रंगनिकरति है। बांधि बांधि कसिराखी राखीकीसी फूँदी जोरि सुंदर गुलाब कीसी कली ज्यों हरति है॥ ठाढ़ी बाल आलिनसों कहै बात हँसि हँसि तासमय तमासे ऐसे खासे उघरति है। हूँकरें उकसि आवै हांकरें दबकि जाति हँसिपरे औचक ही चौंकिसी परति है॥ १६॥ झबा वर्णन॥ गिरिधरदास॥ किधौं कामलतिकाके लटके हैं दोयफल किधौं कोक नद हठि तपको करत हैं। बिज्जु रज्जु पोय दोय रबि लटकाये किधौं गिरिधरदास भाये प्रभा बितरत हैं॥ कैधौं लचकीली लंकजानिकै सुजान बिधि लंगर बनाये तेई अंगको धरत है। ललनाके सुनीबीके झब्बा सुख साने कैधौं सुखमा के डबा किधौं सुखमा भरत

है ॥२०॥ उदर वर्णन ॥ अन्य ॥ कैसो अनियारो एरी अजब निकाई भरो क्षामोदरी पातरो उदरतेरो पानसों। सकल सुदिश अंग बिहरि थकित ह्वैके पीबेको विमल तेरे मनकी कमानसों ॥ उरज सुमेरु आगे त्रिबली विमल सीढ़ी शोभा सरनाभि सिंधु तीरथ समानसों। हारनकी पांति आवागवन की बँधी हैही मुमुकुत सुमन बृंद करत अन्हानसों ॥ २१ ॥ त्रिबलीवर्णन ॥ गिरिधरदास ॥ उदर अनूप अंबुनिधिकी लहरि कैधौं गिरिधरदास शुद्ध शोभाधरे नीकी है। सुबरण सीढ़ी किधौं सुबरण सरसाति किधौं सुबरण गर्भ्भ गर्भ्भहारी हीकी है ॥ किधौं करतार आय हरिमन हरिबेको दृढ़करी तीनहू ललामलीकलीकी है। किधौं हेम अलीअली रली भलीभांति तीन लाजथली त्रिबलीकैकीरति ललीकी है॥ २२ ॥ नाभिवर्णन ॥ घासीराम ॥ सुखकी नदी में कैधौं परत गंभीर भौंर धरातन खोत पिय लोचन अरथकी। कैधौं बरबामी रोम राजीरहै पन्नगकी कैधौंखानि खुली है जवाहिरके गथकी ॥ घासीराम कैधौं सौति मुखनकी भाकसी सी भानभई खिरकी उरजगढ़ पथकी। एरी मेरी बीर तेरी नाभी रसभरी कैधौं दोतकर्तारकी कै मथानी मनमथकी ॥ २३ ॥ पदुमनदास ॥ सवैया ॥ कूप सँवारि सरूपक वारिभस्यो जिहिते तनु पानिपपाटो। प्रीतमके परिताप रसातल भेजनको बिधिने पथठाटो ॥ कै त्रिबली तटिनीपर बाहन भौंरपरो मनपावन घाटो। नाभिगँभीर अगाधकिधौं हृदथाह न प्रेमरसी हरिबांटो॥ ५ ॥ रोमावलीवर्णन ॥ क० ॥ लागे लाल चौकीमें बि-

राजै हरिराम कहै रोमावलि दंड है अकाल दिया काम कों। कैधौं एक धारासों जलधर बिराजत है कैधौं कबरी की परछाईं छाईं बामकों ॥ कैधौं गज शुंड नाभि कुंड जलपान करै कैधौं कामदेव लिखिराख्यो रतिनाम कों। कैधौं कुच भूप सीमा बांटि लीनी आधेआध कैधौं हैं पिपीलिकाकी पांति चली धामकों॥ २४ ॥ पदुमनदास॥ निसरि निलयतें मलयशैल जानि युगभुजगी चढ़ी है बास चंदनको पायके। कैधौं अलि औली कली पंकज की पेखि धाई कैधौं रूप सरमें सेवार लाग्यो आयके॥ सुधागंध पाय कैधौं पंगति पिपीलिकाकी कनक लताके पथलागी सबधायके। सौति मद हबि होम्यो नाभि कुंड मध्य काम ताको धूमधार रोमराजीधौं सुहायके॥२५॥ सुंदर ॥ सवैया ॥ कान्ह गही बृषभानुसुताकी अचानक ही अँचरा की किनारी। देखि रुमावलि रूपकी राशि रहे मनही मन रीझि मुरारी ॥ पूरब बैरहि शंकरके हिय सुंदर ऐसी अनंग बिचारी। ईशके तीसरे नैन में दैन कों मानहु मैन सलाक सँवारी ॥ ६ ॥ उरोजवर्णन ॥ उरोज के उपमान प्रवीनरायपातुर ॥ छप्पै ॥ कमलकोक श्रीफल मँजीर कलधौतकलसहर। उच्च मिलन अति कठिन दमक बहु स्वल्प नीलधर ॥ सरवर सरबन हेम मेरु कैलास प्रकाशन। निशिबासर तरुबर कांस कुंदन दृढ़ आसन॥ कहि प्रवीन जलथल अपक अबिधि मंजित तिय गौरिसँग। कलि खुलित उरज उलटे सलिल इंदु शीश इमि उरजढँग १॥ अन्य ॥ स०॥ है करतार की कारीगरी सुलखी तिहकी यह रीति नई है। श्याम

सुबिंदु रच्यो प्रथमें तिहिमें फिरि अंकुरताई ठई है ॥ नीचेते ऊँचे उरोज उठे अँग अंगन ओप अनूप ठईहै। काम महीपके मन्दिरपैं कलशा धरिके तब नेवदई है॥ ७॥ कविराज ॥ धूरि कपूर की पूरि रही तनद्यूरितें देखिय दामिनिसी घन। कंज से कोमल हाथ औ पायँहिं खेलत खेलके बीच दियेमन ॥ चाल चितौनिवहै कविराज पै कालिहहितें कछु और भये तन। शैशवमें झलकैं इमि योवन भालमें जैसे पताल धरयो धन ॥ ८ ॥ अन्य॥ अंबुज कंज से सोहत हैं अरु कंचन कुंभ थपे से धये हैं । गोरे खरे गदकारे महा बटपारे लसे अरु मैन छये हैं ॥ ऊँचे उजागर नागरिके कुच पीयके चित्त के मित्त भये हैं। हैं तो नये सुनिये सजनी पर जौलौं नये नहिं तौलौं नयेहैं ॥ ९ ॥ कंदुकसे करिकुंभसे गुच्छ से कंजकली सम ठीक ठये हैं। श्रीफल दाड़िमसे दरसे परसे तैं निहारि निहाल भये हैं ॥ पूरे उजागर नागरि के कुच प्यारे पियाके समीप ठये हैं। हैं तो नये सुनिये सजनी पर जौलों नये नहिं तौलों नये हैं ॥ १० ॥ दयानिधि ॥ ठाढ़े रहैं दृढ़ आसनकै कुटी कंचुकी के पटखोलतना। माल सुगंध प्रबाह बहै तिहिंमें उठि नेक कलोलतना ॥ कारभये करि कृष्णको ध्यान डुलायेतें कांहुक डोलतना । ये तपसी है गरूर भरे दुनियातें दयानिधि बोलतना ॥ ११ ॥ अन्य ॥ वै धरे अंग भुजंग के भूषण एऊ भुजंग धरे कचकारे। वे धरे चंद सँवारि के भालमें एऊ नखच्छत चंद सँवारे ॥ शंभुकी औ कुच की समता सुकबीइवर भेद इतोई बिचारे । शंभु

सकोपहै जारे मनोज उरोज मनोज जगावनिहारे॥ १२॥ कंचुकी युत कुच वर्णन ॥ तोष ॥ पौढ़ीहुती पलँगा पर बालखुले अचरा नहिं जानत कोऊ। ऊँचे उरोज नि-कंचुकि ऊपर लालनके चरचे दृग दोऊ ॥ सो छबि प्रीतम देखिकै कबि तोषकहे उपमा अतिसोऊ । मानो मढ़े सुलतानी बनात सों साह मनोज के गुम्मज दोऊ ॥ १३ ॥ अन्य ॥ प्रातसमै इक गोपसुता चलि आवतही यमुना जल न्हाँयें। नीरसों चीर गयो लगि देहसों दमकतदूनी ओपचढ़ायें ॥ हरी दरियाई की कंचुकि में कुचकी छबि कबिदेत बतायें। बाजके त्रासमनो चकवा जल जातके पातमे गात छिपायें ॥ १४ ॥ सुखराम ॥ कंचुकी कौंचसी कैसी कसी लसीसी परसै लसैं गुच्छ विशालहै। मोतीलरैं बिहरैं खँजरैं खँगरैंसी जरी जरी जाल रसालहै ॥ एती लहे छबि चेती कहा कुच केतीक है सुख राम सुमाल है । आइये लीजिये दीजिये जू कछु बीच किनारे लगे लखो लालहै ॥ १५ ॥ सं० ॥ क० ॥ गेंदसे सुडौल औ अडोल गुरु गोलासे गोल गोल गुंमजये गुरज भलीके हैं। कहै विप्र बल्लभये बल्लभ खेलौननसे रचित अजब्र काम कनकथलीके हैं ॥ जैसे यह राखे तैसे मैन नहिं पेखे कहू काहूं नहीं देखे कबूं कंजकी कलीके हैं। ललित डलीके चारु दाड़िम कली के श्याम चितहि छलीके एरी उरज ललीके हैं ॥ २६ ॥ परमानंद ॥ शंभु से सुढार ताल फलसे उदार बीज पूर से अपूरब कठोरता धरत हैं। कंज कलिका से नार केलि फलिका से गुच्छ फूलन के भासे कंदुकासे उघर

तहैं। परमानंद गहब गुराई पीनताई भरे खासे काम नटके बटासे सुधरतहैं॥ रोजरोज बाढ़त उरोज कामिनी के जातरूपके कुंभगजगुंभनिदरतहैं॥ २७॥ अन्य॥

॥ अचल चकोर की कली है कोक नदकीसी दाडिम जंबीरकैधौं फटिकके पौवाहैं॥ श्रीफल सोहाये कैधौंको कनिके सावक हैं श्रृंगगिरिशंकरकी कंचनके लौवाहैं॥ कंजकी कलीहै की सिंधोरा रूप राशिभरे योबनके मदकैधौं पकेसेबटौवाहैं॥ अतिही कठिनये बखाने नाहिं जातके हूँ प्यारी के पयोधरकी कामके गटौवाहैं॥ २८॥

गोरे गात गेंद से गसे हैं गदकारे गोल गजब गुजारतये गोरीके उरोजद्वै। सफरी सुमेरु श्रृंग श्रीफल सरीफाकैधौं सम्पुट सरोज रोज दूनी द्युति रही छ्वै॥ भनत दयाल कै गुरिंद गोला गालिबहै कनक कलश नीलमणिते जटे हैं कै। कामचक्रवे के कसे कंचुकी नगारेकै कुन्दके सिंधोरेकै सुघर नटबटाहै॥ २९॥ नैन॥

जितवार श्रीफलके दाड़िमके नारंगीके कुम्भके कलश के सदन कमनीयके। गोरे गदकारे प्यारे ठाढ़े हेम गुम्मजसे उलटे नगारे कामवारे बरनीयके॥ नैनकवि नगद खिलौनासे निहारे आज ऊँचे ऊँचे उरज अनोखी नई तीयके। गोल गोल गटवारे अँगिया अंगोटवारे चोटवारे हियके बकोटवारे पियके॥ अन्य॥ कैधौं चक्रबाक शुभ शोभाके सरोवरमैं कैधौं गुच्छ सोहत सरूप छबि डारके। मोहनी के मोदककै मोदक मनमोहन के कैधौं दान कन्दुक करेरी करिमारके॥ कामके बिधाता सुख दाता नैनप्रानन के सुन्दर सरस सुधा कुम्भहैं सु-

ढारके। रूप है मनोजके हैं चारु छबि मोजप्यारी तेरे ये उरोजकै सरोज प्रेमबारिके॥ ३१ ।छबिके कुबेरकैधौं कञ्चन सुमेरु दोऊ रहै शोभाघेरि मानो शोभाके सदन हैं। खेलिबे शिकार दृगमीनके पहार जहां मन मृग छौना आय फन्दत फँदनहैं ॥ कैधों युगकञ्जसो हैं शोभाके सरोवरमैं बरणिसकैं न याहि सहस बदनहैं। आजलौं न देखे सुने काहू कहूँ प्यारी एरी तेरे ये उरोज युगमादक मदनहैं ॥ ३२ ॥ तारा ॥ कैधौं वेविनीलकण्ठ बसत सुमेरु पर मधुकर माथे धरें सम्पुट सरोजहैं। उलटे अछिद्रताल श्रीफल रसाल कैधौं योबन भुवाल कैधौं राजैं छबिओजहैं ॥ पियके चौगानके निशान कैधौं ताराकहै तूमातरु नाइ सिंधु तरिबेके चोजहैं । करिनके कुम्भ कैधौं कैधौं कुम्भ कञ्चनके मदनके मठ कैधौं कठिन उरोजहैं॥ ३३ ॥ सुखदेव ॥ मीनकी चिकनता कठोरताई कच्छपसी हिये घाव करबेको कोलसे उदारहैं । बिरह बिदारिबेकों बली नरसिंहजूसे बावनसे छली बलदाऊ अनुहारहैं ॥ द्विजसे अजीत बलबीर बलदेवहीसे रामसे दयाल सुखदेव या विचारहैं। मौनतामें बौध कामकलामैं कलंकीचारु प्यारीकेउरोजओज दसौंअवतारहैं॥ ३४॥ कच्छप कठोरतासे चिकनेहैं मीन ऐसे रामसे उदारतामें जानत संसारहैं। कृष्णसे रसिक अरु शान्त शुभ बौध ऐसे रंगतमै मानो देवहूती के कुमारहैं।विरहविदारिबेको प्रबलनृसिंह ऐसे शूकरसे भलीभांति सहै अतिभारहैं। कलकी से तेजमान बीर जामदग्नि ऐसे प्यारीके उरोज मानौ दसौंअवतार हैं ॥ ३५ ॥ रघुनाथ ॥ श्यामताई

जटाजाल सुरसरि मोतीमाल शशिकला भाल नख शेष केश काले हैं । मलय विभूति श्याम कंचुकी सो रघुनाथ फटिक फनी सो गज खाल गरेघाले हैं ॥ बनक बिलोकि बांकी वरणौं कहांलौं पर एतिक कहत सोवे ताके बड़े ताले हैं । पाले हैं मनोज इन प्रेम करिआले प्यारी शंकरसौं तेरे कुच शंकर निराले हैं॥३६॥ कंचुकी युत कुचाग्र अन्तर गर्भित उत्प्रेक्षायुत वर्णन॥ प्रवीन॥ कंचन के गोला गोल गोल अनमोल ढारे श्रीफल सुडौलसे चटकदार गेंठे हैं। झीनी कंचुकी में कुचढांपे हैं प्रबीन प्यारी उपमा बतायबेको ही येआनि पैठेहैं ॥ जौहरी मदन कैधौं सुखमा जवाहिरलै कंचन के संपुट में धरिके अंगेठे हैं। आबदार आननपै डीठिलगबे के डर योबन नवाबके नकीबदार बैठे हैं ॥ ३७ ॥ सेख ॥ प्यारी पर्यंकपै निशंकपरी सोवतहो कंचुकीदरकि नेकु ऊपर कौंसरकी । अतर गुलाब औ सुगन्धकी महक पाय देखो उठि आवन कहांतैं मधुर करकी ॥ बैठ्यो कुच बीच नीच उड़ि न सकतकेहूं रही अवरेख शेख दुति दुपहरकी॥ मानहु सुमेरु से सुमिरि बैर शंकरको मारी शंबरारि फोंकरहिगई सरकी ॥ ३८ ॥ गिरिधारी सुकुल ॥ भये पतिझार पतिभार मैं उघरिगयो हुतौजौनके लि कुंजकालिंदी किनारा में। कहै गिरिधारी सो बिलोकतैं बिहालभई बाल थहरानी जिमि मुक्ता हलथारामें ॥ छीटदार कंचुकी कलित कुच कोरनि में सुखमा बढ़ीयों ताकी उपमा बिचारामें। डारैं मेघडंबर बघंबर अनूपमानो शंभुके सरूपके अन्हात छिन्न धारामें॥ ३९ ॥ मुक्तमाल

युत वर्णन ॥ कंजकी कलीके उपमानहूँ भलीके सो हैं सुखमा थलीके लखि सौतिमति छरकी । कोकजुग नीके पीकेहीके मोहिबो कौं करैहेम कुंम्भकाम करतूति निजकरकी ॥ गिरिधरकहै कुचनीके कामिनीके इमितापै मुकुतानि मालछाजै छबिनरकी । मानौ शंभुशीश तें भगीरथके साथ काज निकसी अपार युग धार सुर सरिकी ॥ ४० ॥ सं० ॥ चांदीके चबूतरापै चन्दसे चंदोवातरें फरस फबीहै चारु फूलनके ढेरकी राधामहरानी तहां राजिरही गद्दीपर आवत सुगंध मंदपौन चहुँफेरकी । बल्लभ सुहीर हार उलटि उरोजनिपै अटकि रह्योरी गिरिघूमनि मैं घेरकी ॥ ताकी तकि शोभकहौं नखत सुदेतमानो पुण्यहेत पूरन प्रदच्छिणा सुमेरकी ॥ ४१ ॥ बाहु वर्णन ॥ गिरिधरदास ॥ मेरुमैंतैं कैधौं कढ़ी कंचन की नदी दोययेई कैधौं लताहै सरस सरूपकी । कैधौं आदि पंकजकी नाल दरसायदोय किधौं है कुमारी पीत रंग अहिभूपकी ॥ गिरिधरदास कैधौं दामिनी युगल येई सम बिधि रचीफांस सांवरे सरूप की । मोहन मनमोहैं शुभ ऐसी भुज सोहैं युग अमल सुढ़ंगअँग अंगना अनूपकी ॥ ४२ ॥ अन्य ॥ सुंदर सुरेबजेब्र आपनो उरेब तनमानिके मृणालरहै पंकज लजायके । कंचनके शृंखल सुधारे न सुभग तैसे मनसिज पास वैसेहेरि अकुलायके ॥ कोमल ललितके गता गमलता मे कौन मौनरहै कबिकुल कह्यो न बनायकै । बाहुलता समताको ममता बिहाय बिज्जुभागी ब्योम जलदमें लागीलाज पायके ॥ ४३ ॥ सं० ॥ भुजबंदवर्णन ॥ दोहा ॥ प्यारी के भुज जटित नग सो-

हत शुभभुज बंद। तिहिं लखिलखि लज्जित रहत सूर नखत गण चंद ॥ १ ॥ सावयवकलाईवर्णन ॥ कालिदास ॥ हाथ हँसिदयो भीति अंतर परोसि प्यारी हाथ साथ थकी मति कान्हर प्रवीनकी। निकस्यो झरोखा मैंसें विकस्यो कमल जैसें ललित अंगूठी बीच चमक चुनीनकी ॥ जैसी लाली कालिदास मेंहदी के बूंदनकी चारुनख चन्द्रिकाकी चारु अंगुरीनकी। तैसी छवि छलकत छाप कीं छलाकी और कंचन चुरीनकी जड़ाऊ पहुँचीनकी ॥ ४४ ॥ अथ कंकन वर्णन ॥ गिरिधर ॥ रबि कला घेरि कैधौं कलित कलाई रही कमलके नातें अति अमल बिभाति है। कैधौं जोति दीपकी सिमिटि आई एक संग मंडल स्वरूप सो बरणि न जाति है ॥ गिरिधरदास कैधौं केतकी की पांखुरी नैं घेरि हेम बेलि सोई शुचि सरसाति है। कैधौं कर राधिका के कंकन कनक रच्यो बनक बखानिबेको वानी सकुचाति है ॥ ४४ ॥ चूरी वर्णन ॥ कैधौं पद्मनाल मै लपेटि दीनों इंद्र धनु गिरिधरदास बाढ़ी प्रभा अतिरूरी है। बैजयंती माल कै लपटी रमाल अति कैधौं कला ग्रहनकी शोभा परिपूरी है ॥ कैधौं बेलि कामके अरामकी अनेकरंग लपटी ललित सोई सौतिकाज छूरी है। कैधौं बहुरंगकी अनंगकी लपेटी पास कैधौं कर राधिकाके सोहैं चारु चूरी है ॥ ४५ ॥ हथोरी वर्णन ॥ काशीनाथ ॥ ऊदीहोती नील मणि बरणिसकत कौनचूनी छिपिजात नीठिनीठि डीठि नापरै। जानि जानि जौहरी जवाहिर धरै हैं ढापि पीरेहोपै गूसो भगोंई छबिकों धरै ॥ लेत देत बनिहै न

घटिहै हमारो माल आपनी अनोखी येते रहौं सौगुना करै। बालहाथ मुकुता प्रवाल सम ह्वै ह्वै जात काशी-नाथ रजत रुपैया होत मोहरैं ॥ ४६ ॥ शिव ॥ गोरीके हथोरी शिवकबि मेंहदीको बिंदु इंदुनी को गनजाके आगे लागे फीको है । अंगुठ अनूप छाप मानों शशि आयो आप करकंज के मिलाप पाप तजिक्षीको है ॥ आगे और आंगुरी अंगूठी नीलमणि युत बैठयो मनों चापभरयो चेटुवा अलीको है। दबिकै छलासों कोमलाई सों ललाई दौरि जीतत चुनीको रंगछोर छिगुनीको है ॥ ४७ ॥ करपीठवर्णन ॥ किधौं हेम पंकजके उलटे अनूप दल गिरिधरदास आवै उपमान नीठ है। किधौं बिंब सूरको सरस शोभा पूरबनो रतिको गरूर करे दूरपरें डीठ है ॥ किधौं चारु चंपककी पांखुरी हैं मंडल ज्यों द्वापर को आसन अनंग की बसीठ है। कैधौं कामिनी के नीके कर कमलनकी कलित सुखमासों सोहै प्रभा भरी पीठ है ॥ ४८ ॥ अंगुली वर्णन ॥ किधौं पंचदल को विराजै अति मंजु कंज किधौं कढ़ी किरण दिवाकर की लसै चारु । किधौं शोभा सरके निकरिगये सोता पांच गिरिधरदास देखि मोहै नंदके कुमारु ॥ किधौं विधि आरती संजोई हेम थारी बीच हेमही की बाती परमाधरे अपार। किधौं करआंगुरी प्रियाकी दरसाहिं किधौंजोरेशर आपने शरासनके मध्यमार॥ ४९ ॥ संग्रह० ॥ नखवर्णन ॥ भूसुत की कोतिकोऊ सरसुति दोति कोऊ कोऊकहै मानिक ललाई छबिछोरीके। कोऊ रवि बाल कहैं सुमन सलाल कहैं बल्लभ निहाल होत

सुनि गुन गोरीके ॥ हरि अनुरागको प्रकाश यह कोऊ कहै मैं हूं अब कहूं जो बिचार्यो इकठोरीके । महत्तेज ब्रह्महिं बतावै श्रुतिगावैताहि सोई नखजोति अहैं कीरति किशोरीके ॥ ५० ॥ ग्रीवावर्णन ॥ पदुमनदास ॥ ग्रीवाकी निकाई पटतर मैं नआई कहूं कारीगर काम मानोंकूंदि कै बनायो है । निरखि लजाय संख दूरे है जलधिजाय तहां तप कैकै निधिगन में गनायो है ॥ मुकुता गरभ भये सुस्वर सुरेबभये हरिकर मंडिल येतौहू ललचायो है । पदुमनदास ताने कीरति किशोरी कंठरेखके समान भेष भीखहू न पायो है ॥ ५१ ॥ गिरिधरदास ॥ चौकी चंद्रमा की चारु चामीकर रची कैधौं बिधिने अमोल गोल गालिब अजन्य है । कैधौं कलधौतही को शोभित कपोत कैधौं बिधुके सुपास पुण्य पोत अग्र गण्य है ॥ गिरिधरदास आस पास मैं प्रकाश कर परमानिवास कैधौं अन्य पंचजन्यहै । पीवजीव मोहन अतीव सुख सीव किधौं ग्रीव गुनभरी लसै राधिकाकी धन्यहै ॥ ५२॥ कंठ भूषणवर्णन ॥ केशव ॥ लेतमोल लालको अमोल चित्त गोलग्रीव लोल नैन देखि देखि जात गर्व भागि के । इयामश्वेत पीतलाल कंबुकंठ कंठमाल जाति नहिं नेकही रही जुजोति जागिके ॥ केशवदास आस पास बास कै रहै मनो समेत रागिनीन रागराज रंग रागिके । सूरके निवासतैं प्रकाश शोभजू कह्यो अनेक भांति की रही मनो मयूष लागिके ॥ ५३ ॥ पीठवर्णन ॥ केशव कुँवरि देखी राधिका कुँवरिआज सोवत शुभाय सेज जनी जनककी । बेनी मैं बनाय गुही काहू अलीभाँति

भली कुंदनकी कली तन तनक तनक की॥ पीठमें तिनकी प्रति मूरति बिलोकियत पूरत नयन युग सूरति बनककी। हरिमन मथिबेको मानौ मनमथ लिखे रूपके रुचिर अंक पट्टिका कनककी॥ ५४॥ चिबुकतिलवर्णन॥ शोभन सिंगार रसकी सी छींटि सोहै फोंक काम शरकीसी कहौं जुगतनि जोरिजोरि। राहुको सो रदन रह्यो है चुभि चंद्रमाँहि तमीको सोहाग किधौं डारो तृण तोरितोरि॥ चतुर बिहारी जीको चित्तसो चिहुँटि रह्यो चितयेते केशवदास लेत चित चोरिचोरि। तनक चिबुकतिल तेरेपर मेरी सखी वारौं डारि तरुणीतिलोत्तमासी कोरिकोरि॥५५॥देवकीनंदन॥कैधौं श्यामबरण सिंगाररसरूपधारै ललित कपोल पर जाग्यो सुखमूल है। कैधौं काम खेह ह्वैकै ऊग्यो छबि नेह बीज देवकीनँदन कैधौं सौतिनको शूल है॥ कैधौं चंद्रमंडल में भीम के गयंदन को बाल मति भ्रमर रह्योई भ्रमभूल है। प्यारी तेरे सरब सोहागभरे मुखपर वारियत तीनोंलोक तिलके न तूल है॥ ५६॥ पद्माकर॥ कैधौं रूपराशिमें सिंगाररस अंकुरित कंकुरित कैधौं नभतड़ित जुन्हाईमें। कहै पदमाकर या कैधौं कामकारीगर नुखतादियो है हेम फरंश सुहाईमें॥ कैधौं अरबिंद में मलिंदसुत सोयो आय ऐसो तिल सोहत कपोल की निकाई में। कैधौं फँस्यो इंदु में कलिंदीजलबिंदु यह गरक गुबिंद कैधौं गोरी के गोराई में॥ ५७॥ अधरवर्णन॥ परशुराम॥ जपाके कुसुम ताकी छबिके चतुर चोर माणिकके मीत अतिरोचक कलींवके। बिद्रुमके दल द्वै बिराजै हेम सं-

पुटमें राजत अनूप शोभ शोभनके सींवके ॥ भाँवतीके अधर मयूखके धरनिहारे परशुराम प्यारे रसदानी प्राण पीवके। बिंबनके बादी अनुराग प्रतिबिंबकेसे रजोगुण नायकके बंधु बंधुजीवके ॥ ५८ ॥ पदुमनदास ॥ स० ॥ बिंब कहा कटु अंतर श्याम जपाकर बीर बधूकन पूजे। पल्लव चैतके चित्त न आवत कर्कश बिद्रुमहाथ न छूजे॥ चित्रलता फल ऐसो फल्यो बिब्रिताबिच में कलकोकिल कूजे। संतत धार सुधाकी बहै तिहिं देखनको हरि मो संग हूजे ॥ १६ ॥ दशनवर्णन ॥ क० ॥ बारन ॥ इंदुके बधू से मुकुतासे नीलमणि ऐसे बिजुरी बचासे दमकत देखे नितमें। हीरा ऐसे माणिकसे दाड़िमके दाने ऐसे लालसे बिराजत सो शोभा छाई चितमें ॥ जींगनसे कुंदसे बकाइनिके फूल ऐसे देखिके त्रिबेनी तौ सुमिरि आई हितमें। श्याम औ सुरंग श्वेत दशनकी छबि अजू बारन कहत कबि एकही कबितमें ॥ ५९ ॥ केशव ॥ सुच्छम सुबेष सूधी सुमनबतीसी मानो लच्छनबतीसहूकी मूरति बिशेखिये। राती हैं रतीक रुचिसेत सब किधौं शशिमंडल में सुरनकी सभा अवरेखिये ॥ किधौं पिय युगति अखंडताके खंडिबे कों खंडनके केशव तरकफुल लेखिये। दीनी दूनी कला बिधि तेरे मुखचंद को सुन्यायही अकाश चंद मंद द्युति देखिये ॥ ६० ॥ मुसक्यान वर्णन ॥ जुगुनू जमक जैसे हीरन दमक जैसे बिजुरी चमक जैसे ओरा चमकान है। सौरभ सुरंग जैसे उडुगन संग जैसे जलकी तरंग जैसे करत पयान है॥ मोतिनके हार जैसे गंगजलधार जैसे ओपी तरवार

जैसे मंजित मियान है। कंज बिकसान जैसे रतन की खान जैसे जोतिन सुभान जैसे तेरी मुसुकानहै॥ ६१॥ हास्यवर्णन॥ झरी फूलझरी कैधौं मोतीलर भरी कैधौं हीरनकी झार कैधौं जरतार खासी है। अमीके उमंग कैधौं क्षीरकेतरंग कैधौं किरन सुढंग कैधौं जोन्हतैनिकासी है॥ बिजुरीकी बेगसी है तरपत तेगसी है कृष्णलाल सूरतिकीमूरति बिकासी है। सुखकी जमासी रसराजकी रमासीएहो राधा तेरीहासी किधौंमदनकीफाँसी है॥६२॥ मतिराम॥ बानीको बसन कैधौं बातको बिलास डोलै कैधौं मुखचंदचारु चांदनी प्रकास है। कबिमातिराम कैधौं कामके सुजस कै परागपुंज प्रफुलित सुमन सुबास है॥ नासानथुनी के गजमोतिनकी आभा कैधौं रतिवंत प्रगटित हियको हुलास है। शीत करिबेको पिय नैन घनसार कैधौं बालको बदन बिलसत मृदुहासहै॥ ६३॥ अंबुज कबि॥ क्षीरधिके क्षीरकैधौं तीरसुर आपको है कैधौं हीर हारनकी हाटही सँवारी है। हंसनकी पांति कैधौं गुनकी है भांतिभली कीरतिकी सांति कैधौं शारदकी सारी है॥ अंबुज कहत बसुधामें कै सुधाकी धारकैधौं हासरस की हरोल भीर भारी है। चंद उजियारीकी बिहारीकी बशीकरन शीकरन बारिकैधौं हसनि तिहारीहै॥६४॥ मुखवासवर्णन॥ गिरिधर॥ जाही जुही केवरा गुलाब पारिजात मंजु कैधौं कंजकोशतें सुबास बिसतारी है। सौरभ समूहहीको भभको भरीलो कैधौं सबको सुखद सदकबिन बिचारी है॥ मृगमद भरो एरी महकेमृगांक कैधौं मोहनको मोहन महत रुचिकारी है।

राधा मुखकमल सुबास इमि धाई कैधौं एक संग आई लूटिकेसरकी क्यारी है ॥ ६५ ॥ हावभावहास्यत्रासबाणी रागयुतमुखवर्णन ॥ मलूक ॥ अलंकार छंदकाव्य नाटक को है अगार राग रागिनी भंडार बानीको निवासहै। कोककारिकानिखात पंकजको कोशमानो निकसतजामें भांतिभांतिकोसुबासहै ॥ फूलसे भरतबानीबोलत मलूक प्यारी हँसनि में होत दामिनीको परकासहै। ऐसो मुख काकेसम पटतर दीजे लाल जामें कोटिहाव कोटिभावको प्रकास है ॥ ६६ ॥ मुखरागवर्णन ॥ भरो भूरिभाग भोर भानु अनुराग कैधौं होयके पराग कंज कोशमें बिभात है। किधौं भारतीकों अन्हवायो नीर भारती के बाढ्यो रंग पगे किधौं दास दरसात है ॥ कैधौं द्विज होरी खेल खेले रंग पगे कैधौं सुबरण संपुटमें मीनो सरसात है। कैधौं आय अरुण समायो मुख आय कैधौं राधा मुख मध्य मुखराग अधिकात है ॥ ६७ ॥ रसनावर्णन ॥ केशव ॥ देखतही आधपल बाधिजात बाधा सब राधा जीकी रसना सरूपकीसी रानी है। आछी आछी बातन की जननी जगमगात रसनकी देवी किधौं पचि पहिचानी है ॥ केशोदास सकल सुबास कीसी सेज किधौं सकल सुजानताकी सखी सुखदानी है। किधौं मुखपंकजमें शक्ति कौनो सेवें द्विज सबिताकी छबिताकी कबितानिधानी है ॥ ६८ ॥ बाणीवर्णन ॥ नवलकिशोर ॥ सखी बेलि बृंदनके सुखको बलाहकभौ भांतिभांति दाहकभौ सौतिनके छातीको। नवलकिशोर नेह नाहको निबाहकभौ ज्ञानको उमाहकभौ गौर गुरुंजातीको ॥

एरी प्रियबादिनी अमोल बोल तेरोई तो एकहीबिलोकी रीति जैसो बुंद स्वातीको । व्यालनको विष भौ पियूष भौ पपीहनको सीपन को मुकुता कपूर केरपांतीको ॥ ६९ ॥ सं० ॥ कपोलवर्णन ॥ लखत लईतीकै सुगोपिनके बृंदनकी परीजाय डीठि इकाएक बरजोरीके। ताकी रुचि सुखमा बिलोकि सबभाखैं इमि ऐसे सुठिनाहिं कबूँ देखे कोउ गोरीके ॥ याके सरि बनक बनाय बिधिहारेतऊ बल्लभ तदपि नाहीं भये इहि जोरीके । दर्पन युगल दर्प दर्पन अनंगहूके अमल कपोल गोल कीरतिकिशोरी के ॥ ७० ॥ अन्य ॥ शीतलादाग ॥ दो० ॥ दाग शीतलाको लसै कलकपोलके पास । मानो पाई कूपते कढ़ी रूपकी रास ॥ नासिका वर्णन ॥ पदुमनदास ॥ स० ॥ लोचन तिन्न नराचकी नालि गह्यो मकरध्वज भ्रू धनुधैकै । कै रजनीपति पूरन प्रेमनि पूषतकी रहिं कोरहिं लैकै ॥ कै कुसुमेषु सरोज के बानहिं राख्यो अनी तिल फूलहि दैकै। प्रीतमके दृग मीन कुबेनि किधौं बिरचे बिधि नाँकबनैकै ॥ १७ ॥ नासाबेहवर्णन ॥ बलभद्र ॥ क० ॥ शोभा सुरसदनको बातायन बलभद्र कैधौं महामोहि पिपीलिकाको गेहुहै । पैने पञ्चबानको छबीलो छिद्र छाजतकै देखिबेको देहमें अदेहजूको देहु है ॥ पियमन रोकिबेको निगड़ किलीको रन्ध्र सुख मधुकरको सुखिर जासों नेहुहै । मानके मवासे में धनन्धर को मोरचो है कैधौं बाम नासिकामें बेसरको बेहुहै॥७१॥ नथवर्णन ॥ नैन नटवानकी निकसिबे की कुण्डलीकी पारस त्रिदसकै चरन चन्द्रथको । कैधौं बलभद्रकीनो

सुन्दर सुहाग जानि जातरूप कुण्ड पिय मनके सुपथ को ॥ कैधौं जगजीति काम दीनो है कि तोहि बाम कामदेव चक्रवै कि तोहि आप हथको। नीकी नासा पुट नीकी नथुनाई किधौं नाह मन फन्दिवेको फन्दरोप्यो मनमथको ॥ ७२ ॥ बेसर लटक गुणबन्धनयुतवर्णन ॥ ऋषिराम ॥ बेसर विशाल गुही मोतिनकी माल तामें माणिक रसाल बर भूलत बनीको है । हंसकेसे छौना दोऊ मुकुता कपोल राजैं नीलमणि तामें काम कोटि रमनीको है ॥ श्याम पटतार मनमोहनके मोहकारि बिधिसों ऋषिराम रच्यो मन्दिर फनीको है। धराधर धनीको बिधु पूरन मनीको शुभ बन्ध नथनीको वृषभाननन्दनीको है ॥ ७३ ॥ नथ लटकन वर्णन ॥ माधव ॥ गोरी मुख राजत सरोरी ज्यों शरद शशिमण्डल सहित महामंजु मटकनहै। बैंगनी दुकूल कूल कंजन किनारी कल तामधि छबीली छाजै छबि छटकनहै ॥ छूटे केश कारे नैन कारे अनियारे भारे माधव निहारे हारे भूली भटकनहै। चिन्ता चटकन लोकलाज पटकन मन रथ हटकन नथनीको लटकनहै ॥ ७४ ॥ गोरी तो बदन गोरो सुखमा समूहबोरो नैननिको जोरो तामें राजत सुपथको । छूटे केश घुघुरारे कारे चटकारे भारे बसन अबीरी हटकन मनरथको ॥ भालमें बिराजे बेंदी रोरी की रँगीली ताकि माधव छक्योरी भूल्यो पैंड़ों सुधि गथको। अटकन छांड़ि सब भटकन दूरिकरि खटकन लाग्यो उर लटकन नथको ॥ ७५ ॥ नथमुक्तालटकन वर्णन ॥ सं० ॥ वृन्दावनकुञ्जनमें बैठी इक तोती हरि

देखो चलि तहां बात होती अनहोती है । सोती बिप्र बल्लभ या प्रचारि दृगद्योती कहै करि सगुनौती सो सु आयो इहिकोती है॥पानिपतै पूरोअहै अर्जुनते रूरो अरु गुननि गरूरो ताकी फैली चहुँ जोती है । फिरि फिरि फेर फेर लौटि लौटि लौटिकरि अधर अमीको पीवे बेसरको मोती है ॥ ७८ ॥ बलभद्र ॥ स० ॥ करणी कछु पूरबकीनी बड़ी बिधुकोलै संयोग सुजीवो करे । हुलसे बिलसे झुलनी में झुलै लखि सौतिनको सुख लीवोकरे॥ निशि बासर प्रीतम नैननको बलभद्र बड़ोसुख दीवो करे । मतवारो भयो नथको मुकुता अधराको अमीरस पीवोकरे ॥ १८ ॥ बरुनी वर्णन ॥ आंखिन आगे बिराजत सुन्दर मोरपखौवनकी छबिछाये । कारि महाउपकारी अन्यारि बिहारि निहारिहै औ समुहाये ॥ यों तरुनी कि बनी बरुनी पढ़ैं ब्राह्मण वेद ज्यों हाथउठाये। ऊँचेको टेढ़ सुढ़ैकरिलेत मनो मनमोहन को उकसाये॥ १९ ॥ अथ पलकवर्णन ॥ बलभद्र ॥ पातुरी पुतरी पवित्र पीत बास पहिरै कैधौं ये सकल सुख बासना को थानहै । पीयरूप पीबेको अधर बलभद्र आछे सौतिन को एक पल परत निद्रानहै ॥ खंजननि पञ्जुरी कि कैनकके सम्पुटहैं जिनमें बसत प्यारे प्रीतमको प्रानहै। कामतुलाप लाहैं पलक तेरे कामिनी कि त्रपाके कपाट हैं कि तारनके त्रानहैं ॥ अथ तारकावर्णन ॥ बलभद्र॥ पयभरे भाजनिपै पैरत मधुप मधि किधौं क्षीरनिधि नीके मधि द्वीपकारे हैं । बिशद बसन मधि सौंधेकी सुबिन्दु मानो मुख देखिबेको मैन दर्पन सँवारे हैं ॥ कमलदलनि

पर मनिमय देव मानो पिय मन द्विज पूजिबे को पाँव धारे हैं। छितिधर छिति जीतिबे को काम बलभद्र तम की तुरगीकी तरुनी तेरे तारे हैं ॥ ७८ ॥ नेत्रवर्णन ॥ सुजान ॥ शफरी से कञ्जसे कुरंग बरसायकसे आम कीसी फाँके सब कहत सुजानहैं। नटवासे नटसे तुरंगमसे खंजनसे बालक हठीले जैसे ऐसे ठानठान हैं ॥ एढ़ी टेढ़ी कोरैं मानो नखनैयाछोरकैहै बान ऐसी अनीपैं लागे लेत प्रानहैं। ठग बटपारे मतवारे कवि तुच्छमति इतनेही नैननके कहे उपमानहैं ॥ ७९ ॥ सं० ॥ आब न आबहै रुचिरताई के निलय शोभाके आकर अमीर मनमौजके। नेहके निधान औ विधान पतिदेवनके गुनके वजीर औ मुनीब चितचौजके ॥ मीननके राज सिरताज हरिनीननके बल्लभ नयन ये प्रधान रतिफौज के। लाजके जहाज महाराज शुभ कञ्जनके खञ्जनके नायब सुसाहेब मनोजके ॥ ८० ॥ रघुनाथ ॥ काननके चारी तनभारी हैं चपल महा थिरता न गहैं केहू एक घरी हारिकै। कहै रघुनाथ पर पलक न फरकाय कौतुकै करत मद योबनको धारिकै ॥ कजरारे चीकने विशद भारे रंगनिमें द्रुचिताई डारैं देखैं सुचिताई टारिकै। बाहिर न जाहिं कोउ लेयगो बभाय देखि तेरे नैन खञ्जन ये खञ्जन बिचारिकै ॥ ८१ ॥ अन्य ॥ बोभें लाजभाररूप सागरमें सदा रहै दयेहैं चलाय साज बाज प्रेमपथके। गाहे लालडोरनते शील सोई गुनभयो बरुनी न होहिं मानो खेवै बैठि हथके ॥ अंजन निशान चितवनि सोचहर जानि कहांलौं करौंबखाग नाहींजात

कथके। केवट कटाक्ष कर नैया तो लुनाई भई नैना तो न होहिं ये नवारे मनमथके ॥ ८२ ॥ राम ॥ भाजेहारि खञ्जन लजाने कीच कञ्जनहैं मार रसमञ्जन अनोखे नैन ऐनहैं । तीखे तीखे नैनबान भृकुटी कमान तानि बेधे तन प्रानकरैं अचैन चैनहैं ॥ कहै कबिराम याकी कौलौंधौं बड़ाई करौं मोहनी जगतकी पढ़ाई गुरु मैन हैं । पीन मृगराज वन दीन दुखभंजन ये लाल मनरंजन नवेली तेरे नैनहैं ॥ ८३ ॥ मुबारक ॥ दीरघ उजारे कजरारे भरे प्रेमनद कोकनद केसे दल राजत भँवरसे। सुघर सलोने कै मबारक सुधाके दोने छबिके बिछौने कै अमलताके घरसे ॥ लाजके जहाज कैधौं मानके बिराजमान राधिका सुजान आज तेरे दृगदरसे। चाकर चकोरभये मृगदास मोललये खंजन खवासभये शफरीनफरसे ॥ ८४ ॥ ताराकबि ॥ गुंजगिले खंजन की भोरभये कंजनकी बारिबिधु मंजन औ अंजन समेतहैं। नेहभरे सागर सनेहभरे दीपकसे मेहभरे बादर सलोने लखि खेतहैं ॥ तरल त्रिबेनी के तरंगनि में ताराकबि मानो सालिगराम अस्नान के निकेत हैं। मृगमुंद लागे शाखामृग दृगदागे मैन छाजन में पागे नैन ऐसे शोभादेतहैं ॥ ८५ ॥ माखन ॥ ऐसे भैनकाहूके न ऐसे मैनकाहूके न ऐसे मैनकाहूके सँवारे दीह दौरके। भौंरहै न कारे ऐसे भौंरहै न कारे ऐसे भौंरहै न कारे कंज मंजुल मसौरके ॥ सरसुखमाके हैं सरसुखमाके हैं सरसेहैं माखन कटाच्छ पैन कोरके। देखे हरिनीके नैन देखे हरिनीके नैन देखे हरिनीके नैन नीके हैं न और

के ॥ ८६ ॥ परमेश ॥ कायन की कुरसी में करिके क-
माच बैठी बरुनी बरीक बीर बिलस निवेरे हैं । पूतरी
प्रबीन तेई पातुरें बिलोकियत पलकन प्यादनके पेखि-
यत फेरे हैं ॥ चारु चंचलाई चोपदारहैं हमेश बेश
कहै परमेश डीठि भौंहनके डेरे हैं । आब महताब भरे
किम्मति किताबभरे मानत न दाब ये नवाब नैन तेरे
हैं ॥ ८७ ॥ अन्य ॥ कारे झपकारे रतनारे अनियारे
सोहैं सहज ढुरारे मनमथ मतवारे हैं । लाजभरे भारे
भोरे चपल अन्यारे तारे सांचे कैसे ढारे प्यारे रूपके
उज्यारे हैं ॥ आधी चितौवनिही में कियेतैं अधीन हरि
टोनेसे बशीकरकी लोने परिहारे हैं। कमल कुरंग मीन
खंजन भँवर वृषभान की कुवँरि तेरे दृगनि पै वारेहैं ॥
८८ ॥ मननिधि ॥ लसत सयानि तिच्छ ढारे खरसान
महा मनमथ बानके गुमान गरियतहैं। भारे अनियारे
देखे तरल तरारे ये सुलच्छनीन तारे मीन हीन भरि-
यतहैं ॥ मृगबन लीन ज्योति मोतिन की खीन ऐसे
जलज नवीन जलधाम धुनियतहैं । आजकी अजूबी
लखि मननिधि नैनन में खूबी खंजरीटन की खाम क-
रियतहैं ॥ ८९ ॥ कमलेश ॥ रम्भासे रसिक नीके चं-
चल तुरंगनसे शंखसे सफेद चारु चन्दसे गनाइये।
कहै कमलेश कामधेनु से सखीन चित सौतिनको चि-
न्तामणि चायसे जनाइये ॥ पयकों पियूष श्रीसुरतरु
धनन्तरसे छाके बिष मदसे मतवारे से गाइये । रूप-
निधि मथिके मनमथने निकारे जे रत्न दशचारि प्रिया
नैननमें पाइये ॥ ९० ॥ कृष्णसिंह ॥ कानन समीर वै

भृकुटी अपांग अंग आसन अजिन मृगअंजन अबाधाके। अरुन बिभोगी कोर विशद विभूति अंग त्यागे नींद विषय निमेष विषबाधाके। कृष्णसिंह कामकला बिबिध कटाच्छ ध्यान धारना समाधि मनमथ सिद्धि साधाके॥ प्रेमके प्रयोगी सुख सम्पति सँयोगी अति श्यामके बियोगी भये योगी नैन राधाके॥ ६१॥ अन्य॥ उड़िगे चकोर मोर खंजसिली मुरूयजोर जंगलगे उरग तुरग स्वर्ग द्विपनाह। झखहारि मनमारि कंजकारि बूड़े बारि ऊपर परीनकी परीनकी परी न आह॥ औध अकाल औ बहाल हरिहाल लाल सौतिशाल बोलचाल बाह बाह आह आह। लखत सखत दसखत ये तखत भाव बखत बुलन्द प्यारी तेरे नैन बादशाह॥ ६२॥ नोकीले नैन वर्णन॥ अन्य॥ नखतसे मोती नथ नासिका बनक जोती सदा नइकोती एती तीर तेरे तोरदार। तरलसे कानन तरौना इन्दु आननसे अलकें अरूझे मोती मालन मरोरदार॥ उलहैं उरोजनपै जरकसी लसैं उर तैसी कसी कंचुकी कुसुम्भी रंग बोरदार। बोरदार अम्बरके ओट दुरि डोरदार करत कजाकी कजरारे नैन कोरदार॥ ६३॥ अंजन धनुषधारी बरुनि त्रोन तीरकारी तामें लाल जाल लसैं लाल लाल डोरदार। पलक पनाहकारी श्यामता सनाहवारी सैन शेलतीखी चितौनि चित चोरदार॥ मैन मदपीके नैन नदमें सनद बैठी पूतरी महामार मूरति मरोरदार। प्रेमके पथिक पथ प्रीतिके चलतकैसे करतकजाकी कजरारे नैनकोरदार॥ ६४॥ भगवद्वाक्य॥ सोरठा॥ इन

नैननकी फाँस, करकि करेजेचुभिगई । गड़िगइ हाड़न मांस कसकतहै निकसत नहीं ॥ १ ॥ माखन ॥ क० ॥ खंजन नवीन मीन मानके उमाकेदेत नाके देत मृगमद कंजके कहाकेहैं । ठौर ठौर भँवर भ्रमत जाके ताके संग माखन चकोर कहै चंचला चलाकेहैं ॥ ऐसेना रमाके ना उमाके ना तिलोत्तमाके प्रबल हरौल पंचबान प्रतनाकेहैं । हैंनमंजुघोषाके बखाने मैनकाके मैन ऐन सुखमाके नैन बांके राधिकाकेहैं ॥ ६५ ॥ एकही झमाके में छमाके मनमोहै द्रग ऐसे नारमाके ना उमाके ना रंभाकेहैं । दशहूदिशा के मनशाके फल देनिहारे करन निशाके इमिजाकी ओर ताकेहैं ॥ जायके जहांके तहां मीन जलढांके गये हरिन हहाके ऐसे कमल कहाँकेहैं । मदन समाके सुखमाके उपमाके चारु चंचल चलाँके नैन बांके राधिकाकेहैं ॥ ६६ ॥ मनसा ॥ लालची लजीले लोल ललित रसीलेलखे लोगनि ललकिलैलै लूटतलरांकेहैं । छिनमें छलीन चित छैलहूको छोमै छरै छोरैं छरकीलेसों छबीले छबि छाकेहैं ॥ मनसा कहत डेराडौंडीके न डांड़े डांका डारत डगर डगडारत में डांकेहैं । ऐसे और काके मैनकाके अबलाके मैन बाननितें बांके नैनबांके राधिकाकेहैं ॥ ६७ ॥ कवींद्र ॥ भृकुटी चढ़ीके योधामान की गढ़ीके सौतें दोखिक द्रढ़ीके रंग करत रदीसेहैं । भनत कवीन्द्र इंदु आनन गुबिंदते वे चाहत चकोर मत्तपावकहिदीसे हैं ॥ कोकनद मुद्रित मलीने मृगकीने और खंजन नवीने हेरि हारे सेहदीसे हैं । ईशाके असीसेके कमानके कसीसे मैन मदके मदीसे नैन

तेरेसे न दीसेहैं ॥ ९८ ॥ जीते मृग मीनते वनीनमें बसा-
ये जीते खंजन नबीनते वे ठहरे न ठानके । जीतिलीने
भौंरतें भ्रमत ठौर ठौर डोलें जीते हैं चकोरकैं असन
कृसानके ॥ भनत कवीन्द्र तानि भृकुटी कमान प्यारी
कान्हजीते जीते मान सुर बनितानके । अब कजरारे
नैन ग्रसित गुमान सान कौनपै धरेहैं फेरि बान पंचबान
के ॥ ९९ ॥ बीर ॥ उज्ज्वल प्रबाह तट गंगाके बिलो-
कियत बीच लालडोरा सरस्वती सुखदेनी है । पूतरी
पलक भौंह कज्जल झलकजामें यमुना जगततामें ताप
हरिलेनीहै ॥ तनक निहारेतें पाप तन कटत कोटि मं-
जन कियेतें सरगुन फल देनीहै । एरी मेरी बीर अब
तीरथ न जानो आन प्यारीके दृगनि माँझ प्रगट त्रि-
बेनीहै ॥ १०० ॥ रघुनाथ ॥ स० ॥ आपने हाथनिसों
करतार करे अतिही जगबीच उज्यारे । देखतही रहिये
रघुनाथ जुदे नहिं कीजे लगें अति प्यारे ॥ सौरभसों
परिपूरन पुष्ट पवित्र भरे रस आनँदवारे । बारि बिना
उपजे अति सुन्दर प्यारी के लोचन बारिज न्यारे ॥
२० ॥ केशव ॥ लोल अमोल कटाक्ष कलोल अलो-
लकसों पट आलिके फेरे । पानिप सों अति पैने रसाल
बिशाल बने मनभावते मेरे ॥ केशव चीकने चौगुने
चोखे चितैकेभये हरिना इहि बेरे । शोच सँकोचन
श्रीपतिरोचन धीरज मोचन लोचन तेरे ॥ १०१ ॥
अंजनयुत नेत्र वर्णन ॥ व्रजचंद ॥ आनन चंदसों खं-
जन से दृग हैं हरके रिपुके रसछाते । प्रेम अमी अनु-
राग रँगपै भ्भगेरस सिंधु में मानों चुचाते ॥ युतअंजन

रंजन है मन के ब्रजचन्दभने बने झूम झुमाते। माना कलानिधिपै बिबिकंज द्विरेफलसे तिनपै मदमाते २१ ॥ मुबारक ॥ कटाक्ष वर्णन ॥ कान्हके बांकी चितोन चुभी चित कालिह जूझांकीरी बालगवाक्षन। देखी है नोखी सी चोखी सी कोरनि ओछे फिरैं उभरे जित जाक्षन॥ मार्यो सँभारि हियेमें मुबारक हैं सहजें कजरारे मृगाक्षन। काजर देरी न एरी सोहागिनि आंगुरीतेरी कटैंगी कटाक्षन ॥ २२ ॥ द्विजार ॥ कान्हकी उक्ति ॥ सोरठा ॥ इन नैननकी फांस करकि करेजे चुभिगई। गड़ि गइ हाड़न मांस कसकत है निकसत नहीं ॥ २ ॥ घासीराम ॥ कवित्त ॥ पुंडरीक पंकज औ पौष्कर पद्मशत पत्र सरसीरुह नलिन नीरबारी के। तामरस अंबुज अंभोज औ सरोज पत्र सारस सुअंबुरुह मोदयुत बारी के॥ घासीराम इंदीवर नीरज जलज बिंब कुबलै कुबिंद खरदंड हितकारीके। कोकनद कमल अमल अरबिंदवर कंजसे लसत मंजु एरी दृगप्यारीके॥ १०२॥ मुबारक॥ तामरस इंदीवर बारिजसरोज मंजु पुंडरीक पंकज कुमेसे शतपात हैं। कोकनद नीरज नलिन कंज कुबलय पाथोज अरबिंद श्री मदन सोहात हैं॥ अंबुरुह अंबुज सनेही भौंर पंकरुह पंकज जलज बारिजात सरसात हैं। एते नाम नीरहुँमुबारक निहारेनैनपदपद प्रहरबारिजात जलजात हैं ॥ १०३ ॥ कज्जल करारे रतनारे औ कटाक्ष धारे ढारे काम सांचे पुनि पानिप भरारे हैं। राते पुनिमाते अलसाते पुनियौं जँभाते पुनि मुसकयाते इतराते मतवारे हैं ॥ अधिक दुरूयोहैं चपलोहैं निठुरो हैं

सुबसो हैं मनमो हैं दृग दुल्लह पियारे हैं। तीखे फिरिरूखे बिषबांधे शरसाँधे हनिडारें फिरि मारे दइमारे हतियारे हैं ॥ १०६ ॥ प्यारीके दृगमें प्यारे के दृग वर्णन ॥ हरदयाल॥प्यारीके दृगनिमें झमकैं दृग प्रीतमके प्रीतमके नैनदृग प्यारी जनुरंज हैं। चाउ में सिंगारसाज मैनहींके सुधासार दूधमें पखारि धरे माधुरीके मंज हैं ॥ हरद्याल सुकबि रसाल उपमा बिसाल लालमन लाल है कै मैन सरसंज हैं। कंज बीच खंज है कि खंजबीच कंज है कि कंज है कि खंज है कि दोऊ कंज खंजहैं ॥ १०५ ॥ भौंह वर्णन ॥ बोधा ॥ ऐसे अनियारे मानो समुदकरारे भारे मानो मच्छधारे सो एमैन मतवारे हैं। काजरसे कारे खरसानसे उतारे कारीगरके सँवारे सो बिरहबान मारे हैं ॥ घूँघट जमनिकासों निकसिके चोट करैं कहै कबि बोधाये बिषमज्वाल जारे हैं।ऐसे अति तीखे नैन बाननि छिपायराखे भौंहकी मरोरसों करोरमारिडारे हैं ॥ १०६ ॥ केशव ॥ किधौं लागी पंकजके अंक पंकलीक किधौं केशव मयंक अंक अंकित सुभायको। यंत्र है सुहाग को कि मंत्र अनुरागको कि मंत्रनिको बीज अध ऊरध अभाय को ॥ आसन सिंगार को कि कामका शरासन है शासन लिख्यो है प्रेम पूरन प्रभायको। रोषरुख बेष बिष पियूषमबिशेषमे भामिनीकी भौंहैं किधौं भौनहाय भायको॥ १०७॥ भृकुटीकेमध्यको तिलकवर्णन॥ अन्य॥ दोहा ॥ नैन त्रिबेणीके निकट मैनकटाक्ष बिछाय। तिल मुनि मौनीह्वै रह्यो भृकुटी कुटी लगाय ३ ॥ गिरिधर ॥ श्रवनवर्णन ॥ किधौं तनरूप सिंधुहीकी सीप शोभाभरी

कैधौं अति लोनी दोनी कंचनके पातकी । कीधौं राग बृंद की निधान गिरिधरदास मदनध्वजा धौं लसै छवि अवदातकी ॥ कैधौं पिय बैननके ऐनद्वार देखियत कैधौं छवि गोलक बनाई बरभांतिकी । राधिका श्रवनके भवन मनोजहीके कहत लजात मति गिरा लोक मात की ॥ १०८ ॥ ताटंकवर्णन ॥ बलभद्र ॥ जटित जराय जगमगत सहसकर बलभद्र बृषकी कुमारिका के भान हैं। धरत त्रिधार हैं अपार तीखे नैननकों तेरवे अनंग आनि रोपीखरसान हैं ॥ उपमा न आन प्रान रंजन बिहारीबर रतितंडवके तारजानत सुजानहैं । चंद्रथ चरनकी काम चक्रवेके चक्रकैधौं तियतरल तरौना तेरेकान हैं ॥ १९ ॥ खुटिलायुतवर्णन ॥ केशव ॥ खुटिला खचित मणिसोहत बनक बनि कनककर सरुचि रुचिर रवन हैं । तनक तनक तनतीतरी तरलगति मानहुं पताकापीत पीड़ित पवन हैं ॥ कालिंदी के कूल कूल जात जल केलि कहँ कलिहही सराहैं मेरे काली के दमन हैं । केशोदास सुंदर श्रवण व्रजसुंदरी के मानौ मनभावते के भावते भवन हैं ॥ ११० ॥ बलभद्र ॥ भालवर्णन ॥ थाथी त्रिधि यश की जनमभूमि शशिवत उपजत जहां सब सुकृत को जाल है । तिलक तरोवरकी छाया सुख तलपकी रसके अगारनको अजर रसाल है ॥ भागको सुबास न सुहाग को सो आसनहै मोहनी को शासन कर्यो तें बसिलाल है। कामके तुरंगनिकी धावका धरनि यहै कैधौं बलभद्र भोरी भामिनी को भाल है ॥ १११ ॥ गिरिधर ॥ हाटक को उन्नत कपाटधौं सुघाट बैठ्यो अनंग महीप को धौं

आसन विशाल है। कैधौं भागभूरिकी जनमभूमि शोभा भरी गिरिधरदास कैधौं आरसी सुढाल है॥ कैधौं बिंब चंदको अमंद मुदवन्त कैधौं हरि चितचावनको चौतरा रसाल है। कैधौं गुन गट्टनके लेखनको पट्टा कैधौं राधा बरभालको बिराजत सुभाल है॥ ११२॥ भालबिन्दु युतवर्णन॥ काशीराम॥ लख्यो मुखचंद पै सुराजत रुचिर बिंदु मानो इन चंद की बिकावनि सिताब की। काशीराम नोखी छबि बरनी न जात मोपै हरनी हितू जनके हियके हिताबकी॥ रतिकी न रंभाकी न शची उरबशीकी न वारिवारिडारी सब उपमा किताब की। गालिबगुलाब की न पंकज के आबकी न है न आफ़ताब की न आब महताबकी॥ ११३॥ लालबिंदु वर्णन॥ माधव॥ केतिक बनायनिबनायहारी ब्रजबधू ब्रजराजबारक न काहूघांतक्योरी है। बारबारमनमें बिसूरतीं उपायकौन माधवे रिझैये चारुचित चिहुट्योरी है॥ हेरिके हठीलिनको हठिकें हरत हियो हेरे न बहुरि तकि तो तकि रह्योरी है। रूरेरूप रलीभली सुखमा समूह ढली गोरी भाल रोरी कैधौं मोहनी किशोरी है॥ ११४॥ बानक बनाय सखी सजी सुख पाय सबै सुघर सहेली बर पूजनकी ठानहै। औरौ पुरबधूरुचि रुचिर रँगीलीबनी भूषन वसनशोभा सरस समान है॥ तोहि जिन तक्यो तिन तोही तन तक्यो तिय माधव तकत ठगे सुन्दर सुजान है। गहने दुकलन की कहने मैं आवै कछू घर घर सुरावरी ही रोरी को बखान है॥ ११५॥ औरनि सकल सिंगारनि सिंगारयो सोहै बैंजनी बसन पग पैंजनी बि-

चारिबो। आँगी उर केसर अरुन चित्र चारु चितै माधव चितौत शोभा सकल बिसारिबो॥ नथ लटकन बिंदु श्यामल चिबुक चाहि चतुर कहाय नेक सुधिहिं सवांरिबो। गोरी भाल थोरीसी ठगोरी भरी लाल धरी थोरी बातजानो जनि रोरीको निहारिबो॥ ११६॥ कई बारगई अरी यमुना किनारे जहां सुन्दरी सवाँरि तन ओप उमहतहै। भूषन बसन बर बेंदी युत राधिका की छाजत छबीली छबि छटा छहरत है॥ आनन उदित इंदु नैन कजरारे भारे केश घुघुरारे प्यारे माधव चहतहैं। जादिनतें रोरी भाल लालहि लखायपरी तादिनतें द्वारे छैल छायोई रहत है॥ ११७॥ गुलाल कोबिंदु वर्णन॥ मुकुंद॥ स०॥ पिय देखन कैधौं रमा उझकी किधौं कुंकुम मंडित राजतहै। कि सती उरको अनुराग सुहाग छपाबधुको किधौं भ्राजत है॥ किधौं पूरन चन्द सुछन्द उदोत मुकुंद सबै सुख साजत है। किधौं प्राची दिशा रबि बालके भाल गुलाल को बिंदु बिराजत है॥ २३॥ मृगमद बिंदुवर्णन॥ बलदेव॥ अंबर सुधारे अंगराग अंगधारे दृग अंजन सँवारे कारे कंज मद छीने है। भालमें बिशाल लाल रच्यो है रसाल बाल तामधि कुरंगमद बिंदुचारु दीनेहै॥ आरसी में हेरे बैठी ताहीको बिलासमंजु उपमा सकोचि बलदेव सोचिकीनेहै। मानो सूरअंक इंदु इंदु अंक अरबिंद अरबिंद अंकमें मलिंद बासकीनेहै॥ ११७॥ कपोल परलटकी लट वर्णन॥ सुंदर॥ स०॥ मानो भुजंगिनि कंजचढ़ी मुख ऊपर छूटि रही अलकैं त्यों। कारी महा

सटकारी है सुन्दर भींजिरही मिलिसौंधनि त्यों ॥ वा लटके ढिग औौर लटैं लटकी मुखकी छवि गौ बढ़ियों। अंकहि दोय बिकारी दिये जिमि होत रुपैनतें मोहरें ज्यों ॥ ११८ ॥ प्रसाद ॥ दृग मीन बाझबेको बनसी बिशद कैधों नागिनिके बच्चे पीवें अमृत अमन्दहैं। प्रेमके कपाट खोलिबेको आँकुसी है कैधों के प्रसाद मनके फँसायबेको फन्दहैं ॥ रूपके जहाज बीच लंगर परे हैं कैधों मोहनी महलपर लसत कमन्दहैं । चन्दकी चटक पर राहुकी झपट कैधों लटकि रही है लट साहब पसन्द हैं॰॥ ११९ ॥ प्राचीनबल्लभ ॥ हटकी परीसी पग मटक धरनि लखि पायलकी ठमक सुठौनि अनवटकी। झीनपट खीन कटि मदन फटिक लिखी सटकि सकुचि चली गली ह्वै निकटकी॥ बल्लभ रसिक लाख चमक बदनमेऊ लवटपार युगधार परवटकी। हटकी निपट तौऊ अटकी ललनिमनि लटकी लपेटमें लटीक आई लटकी ॥ १२० ॥ अन्य ॥ कमलपै राजें अलि छौननकी राजी कैधौं कैधौं तन्तु रेशमके शीशन पै छलकें । कैधौं सुधाकन्दजाको आनँद अमन्द चन्द चारु मुखचन्दपर नागिनिसी ललकें ॥ लटकत लता कैधौं सरस सिंगारही की मरकत सूतकी जंजीर जुग झलकें। अमल अमोल वृषभानुके सुताके गोल मृदुल कपोलनपै छूटी छाजें अलकें॥ १२१ ॥ सुन्दर सजीले परलम्ब सहजीले राधे परम लजीले शुभ काजन कजीले हैं। बेलिन हँसीले अलि बेलिन बसीले आदि रसमें रसीले रूप जसमें जसीले हैं॥ नेह हरसीले पर

तेह परसीले अनु नैन चहकीले चटकीले मटकीले हैं। तेरे कचनीले छूटे छबिके छबीले मानो पन्नग रँगीले मैन मन्त्रवत कीले हैं॥ १२२॥ मुखमण्डल वर्णन॥ रघुराज॥ युगल कुहूके बीच देखी रेख जोन्हहीकी ताके अधअर्ध इन्दु अंकमें अवनिजात। सावक भुजंग जुग जोहत जुगलओर जलचर जुगल जलूसकन ठहरात॥ रघुराज आरसी है ताके बीच बारिज है शुक मुख लीने एक मध्यमें सुजलजात। बिम्बफल अंदर बिलोके हैं अनार बीज कौतुक सकल शशिमंडलमें दरसात॥ १२३॥ रघुनाथ॥ कोऊकहै गगनकी गंगाको सरोरुहहै कोऊकहै व्योमबानी रानीको सदन है। कोऊकहै जलको जम्यो है बिम्ब रघुनाथ कोऊकहै सागरको सुधामें नदनहै॥ कोऊकहै यामिनीको कन्द है अनन्द मढ्यो कोऊकहै यशजाको करता मदन है। मोहिं परी जानि मेरी मति अनुमान यहै चांदनी तिया है जाको चन्द्रमा बदनहै॥ १२४॥ दलेलसिंहराजा॥ पीयजीय कुमुद प्रकाश करवैया युग लोचन चकोर छबि सुधाधार टरतो। सौति चकवानी बिलगानी नन तीय लगी करे सो विचारी काम सानिनते गरतो॥ भनै दलसिंह देखे सुखको उदधि बाढ़े वचन श्रवन अहलादनते भरतो। राधामुख चन्दमाहँ भेद न तनक हुतो जोन विधि शशिहिं कलंक चिह्न करतो॥ १२५॥ देवकी नन्दन॥ देखि चतुरानन निज रचना विचित्र चारु एकहू न भाई मन पूरन जहानके। देवकी भनत विधिजाय रतनाकर पै हेरिहेरि सकल सकेलि रस-

खानके ॥ बिरचन बिरंचि लागे एक राधिकाको रूप र-
चिके निहारे मुख सुखमा निधानके। तोयसों पखारे
कर शरद सुधाकर भये भारे करतारे भये सारे आस-
मानके ॥ १२६ ॥ प्रवीन ॥ बेनी ॥ मानव बनाये देव
दानव बनाये यक्ष किन्नर बनाये पशु पक्षी नाग कारे हैं।
द्विरद बनाये लघुदीरघ बनाये केते सागर उजागर ब-
नाये नदी नारे हैं ॥ रचना सकल लोक लोकन बनाई
ऐसी युगातिमें बेनी परवीननके प्यारेहैं। राधेको बनाय
मुख धोयोहाथ जाम्यो रंग ताको भयो चन्द कर भारे
भये तारेहैं ॥ १२७ ॥ अन्य ॥ बारिध बसेको गुनि
बारुनीगसे को पुनि बाड़व उछंग कालकूटहूके कन्द
सो। राहुने चबायो तब काहूना बचायो मूढ़ भागि
के चिचायो बच्यो दैयत के फन्दसो ॥ घटिबेको न
सोच मिटिजैबे को संकोच ना रजनी में चोर समरहत
अनंद सो। एरे मतिमंद चंद लाज नहिं आवे तोहिं
होन चाहै राधामहरानी मुखचंदसो ॥ १२८ ॥ सेवक ॥
बारिधि में फेरि बूड़ि बारबार धोय धोय देहको कलं-
क निरशंक जो छुड़ावतो। यामें कहा लाज जोपै हो-
य कछु काज अरु सुंदर सुंगधलै शरीर में लगावतो ॥
सेवक कहत सम समता की सरिवर में हीनपद पाय
कौन आनन दिखावतो ॥ राधामहरानी मुख चंदकी
बराबरी को यहू बिधि किये छंद चंद नहिं पावतो ॥
१२९ ॥ केशव ॥ ग्रहनि मैं कीनो गेह सुरनिदै देख्यो
देह शिवसों कियो सनेह जाग्यो युग चाख्यो है। तपन
में तंप्यो तप जलधि में जप्यो जप केसोदास बपु मास

मास प्रतिगाख्यो है ॥ उडुगन ईश द्विजईश औषधीश भयो यदपि जगतईश सुधासों सवाँख्यो है ॥ सुनिनँद नन्द प्यारी तेरे मुख चन्द सम चन्दपै न भयो कोटि छंद करि हाख्यो है ॥ १३० ॥ बेनी ॥ भृकुटी तनीको नकबेसर बनीको लट नागिन फनीको फूल्यो कंज कदनीको है । मैनकी मनीको नैन बानकी अनीको चोखे चैन रचनी को जामें मृगमद नीको है ॥ रूप अवनीको अवनीपै कौन रमनीको बीन नदनीको नीकीपाँति रदनीको है। बेंदी बंदनीको बेनीहास फन्द नीको मुख चन्दऊ तैं नीको वृषभान नन्दनीको है ॥ १३१ ॥ अन्य ॥ अवनि अकाश की प्रकाशित बनाई पला दिशनकी जोती कांति ओज अति ऊरोभौ । मारुत की डंडिका बनाई सुघराई सुतौ सुघर सुनार चतुरानन सुरूरोभौ ॥ लै करि सुराधे को अमोल तौल तौल्यो तहां गयो वह ऊँचे यह नीचे अति भूरोभौ । तारागन यदपि चढ़ाय समुदाय दीने तदपि न चन्द मुख चन्द भरपूरोभौ ॥ १३२ ॥ हरलाल० ॥ आनँदको कंद वृषभानुजा को मुख चंद लीलाहीते मोहन के मानसको चोरे है । दूजो तैसो रचिबेको चाहत बिरंचि नित शशिको बनावै अजौं मन को न मोरे है ॥ फेरतहै सान आसमानपै चढ़ाय फिर पानिप चढ़ायबेको बारिधिमें बोरे है । राधिका के आनन के जोड़ न विलोके बिधि टूक टूक तोरे पुनि टूक टूक जोरेहै ॥ १३३ ॥ मुख ज्योत्स्ना वर्णन ॥ ब्रज भूषण ॥ काज बश ज्यों ज्यों फिरै डोलती छबीली त्यों त्यों दीठ ब्रज भूषनकी टरत न टारीतैं । टारि नेक नीलपट चाहे

मुसिक्यायो तब इंदु सो उकसि आवे अंबुज अँध्यारीतें ॥
जगमग नगमय आभरन अंग संग दूनी ओपचढ़े अं-
ग जरकस किनारीतें । मदन चिराकसौं रतन जोति
जागे लागे सदन मैं दीप फीको बदन उज्यारीतें ॥ १३४
अन्य ॥ रैनि अँधियारी सोई कारी सारी शीशपर मोतिन
सवांरी मांग दीप सरसात हैं। देवल सो देह तामें केवल
सो बदन दिपै नैननकी जोतिचंद जोतिहू लुभात है ॥
मातै गजराज जैसे चालले मरालकीसी आवन प्रिया की
मन भावन सुहातहै । कामके कपाट पट घूँघट के दूर
किये प्यारी मुख देखेतें दिवारी दरसात है ॥ १३५ ॥
घनश्याम ॥ आज राधे रावरेको आनन बिलोक्यो घन-
श्याम तब प्रेमकी घुमारीसी धराधरैं । रतिकी रमाकी
उरबंशीकी तिलोत्तमा की दीपति दमाकी धाम रावरी
है धरा धरैं ॥ दीपको दबायके सरोज सकुचायके सुआ-
रसी निकाई ताकी बांधीहै बराबरैं । छाय रतनाकर छ-
पायके प्रभाकरको छूटि के छपाकर के ऊपर छरापरैं ॥
१३६ ॥ बैठी चढ़ि चांदनी में चन्द्रमा बिलोकनि कौं
उन्नत उरोजनितें उछरि हरापरैं । दमा छमा केतिक
तिलोत्तमा हैं घनश्याम रमा रतिरूप देखि धसके धरा-
परैं ॥ जेवर जड़ाऊ मौर जगमगे अंगन में नेवर जड़ाऊ
तेज तरुन तरापरैं । राधे मुख मंडल मयूषनतें महाराज
छूटिके छपाकर के ऊपर छपापरैं ॥ १३७ ॥ सारीकी कि-
नारीतें आच्छत मुख बर्णन ॥ देव ॥ गोरे मुख गोलहरे
हँसत कपोल लोने लोचन बिलोल लोभ लीने लोक ला-
जपर । लोभ लागे लाल लखिशोभा कबि देवकहै गोभा

से उचत रूप शोभाके समाज पर ॥ बादलकी सारी जगमग जरतारीदार कंचनकिनारी कीनी झालर के साजपर। मोती गुहे छोरन चमक चहुँओरन ज्यों तोरन तरैयनके ताने द्विजराज पर॥ १३८॥ गिरिधर॥ स०॥ देखि सखी वृषभानु कुमारिको रूप समुद्र अनूप बढ़ोहै। सोलखि शोभ सुहागिनिको गिरिधारनके मनमोद मढ़ो है॥ सारि किनारि किये परिवेष लसे मुख चौगुन चाव चढ़ोहै। मानोदिनेशको बिंबविशेश द्विजशको अंकलैशे-शकढ़ोहै॥ १३४॥ घूंघट युतमुख॥ क०॥ घूँघट खुलत अबै उलट ह्वै जैहैं देव उद्धत मनोज जग युद्धजूटिपरैगो। कोकहै अलोक ब्रात सोकहै अलोकतिय लोक तिहुँलो-ककी लुनाई लूटि परैगो॥ दैयन दुराय मुख न तरु तरैयनके मंडलते मटकि चटाक छूटि परैगो। तो चितै सकोचि शोचिमोहमद मूरछाकै छोरसों क्षपाकर छतासो टूटिपरैगो॥ १३६॥ खुले केश वर्णन॥ नागकेसे छौना विराजत मरकत तंतु तीसीके कुसुमभार मखतूल तार हैं। भौंरन के हारके सिंगार रसरूप धारे कैधों तमधार कैधों केकी पखवारहैं॥ कैधों मकरीकेतारपगे सूधे श्याम रँग कैधों सुरसरिजूके सोहत सिवारहैं। कैधों कामसाटी की मयूषनकी टाटी कैधों सूधे सटकारे अनियारे तेरे बारहैं॥१४०॥ श्रीपति॥ श्रीपति सिवार कैसे शोभित सिंगार जैसे शोभित सिंगार कैसे जैसे तमधारहैं। तमनके धारकैसे मरकत तारजैसे मरकत तारकैसे जैसे घन भारहैं॥ घननके भारकैसे मोर पखवार जैसे मोर पखवार कैसे जैसे अलिहारहैं। अलिनके हारकैसे

पन्नगकुमार जैसे पन्नगकुमार कैसे जैसे तेरे बारहैं ॥ १४१ ॥ अन्य ॥ कारे कजरारे सटकारे औ दुरारे भारे धाराधरवारे अँधियारे शुभजालहैं। कारेनाग छौनाके चिहुर चटकारे कारे कारी रैनि भादव अमावसके हालहैं ॥ कोकिलासे कारे कारी यमुना तरंगवारे कारीलट छटकारे कारे तममालहैं । विषके अलेलवारे कामदेव जेलवारे भौंरन सकेलवारे भौंरवारे बालहैं ॥ १४२ ॥ कोमल अमल चल चीकने चिकुर चारु चितयेते चित्त चकचौंधियत केशवदास। सुनहु छबीली राधा छूटेते छवानि छूवैं कारे सटकारे हैं सुभावही सदा सुबास ॥ सुनिके प्रकास उपहास निशिवासर को कीनोहै सुकेश बसुवास जायके अकास । यद्यपि अनेक चन्द साथ मोरपच्छ तऊ जीत्यो एक चन्दमुखरुख तेरे केशपास॥ १४३ ॥ सजल केशवर्णन॥ सुन्दर॥ स० ॥ प्रातसमय यक गोपसुता चलिजात लखी यमुना जल खोरन । मंजन न्हाय अन्हायके सुन्दर बैठीहै बाहर बार निचोरन ॥ उपमा मनमौजकी नीकीलगे जलके कनुका चुवैं केशके छोरन । मानहुँ चन्दको चूसतनाग अमी निकस्यो बहि पूंछकी ओरन ॥ २५ ॥ सं० ॥ गोपसुता यमुनाजल न्हात सुवल्लभताहि लखी दृगकोरन । पोंछि दुहूँ करते करिचिक्कन बाललगी शुभ बार निचोरन ॥ यों सुखमा सरसाय रही जलबिन्दु स्रवें तिहिकेश सु छोरन । मानहुँ चन्दहिं चूसत नाग अमी निकस्यो बहि पूँछकी ओरन ॥ २६ ॥ क० ॥ ठाढ़ीभई न्हाय दियेकेश छटकाय अरी आपने सुभाय शीश पोंछत दुकूलसों ।

कारे सटकारे मनो विधिही सँवारे आप एड़िनसों लागे छूटि बंधन सुमूलसों ॥ ताभैं बसे कहूँ कहूँ बसीकर आखतसे सीकर लसत मिलि मालतीके फूलसों । बड़े बड़े बीनबीन जौहरी मदन मानो पोहराखे मेरे जान मोती मखतूलसों ॥ १४४ ॥ कांघीते केशको सँवारिबो यथा ॥ योबनको योबन सिंगारको सिंगार कैधौं रूपही को रूप ऐसो रूप देखियतहै । तेरे ये अधरनकी मधुर ललाई लखें लालनके लोचन सुधाते सींचियत है ॥ पहिरेते चीरको धरेगो धीर मेरी बीर मांगहीके चीरबे में हियो चीरियतहै । ज्यों ज्यों कर कांखिनते केशन सँवारे त्यों त्यों सौतिनके आंखिन करोत दीजियतहै ॥ १४५ ॥ पाटीवर्णन ॥ चन्दसे बदन पर ऊठी घनघटा कैधौं कैधौं घनश्याम मन घेरिबेकी घाटी है । कैधौं मृगनैनी शिर मरकत पातयुग कैधौं श्याम रेशमकी लसत सुटाटी है ॥ ताहि गुहि उलटि सुपीठ बर पाटी पर बेनीपरी पन्नगीसी फनपाति सार्टाहै । करतल पोंछि पोंछि औंछि पारी पाटी कैधौं कैधौं काम विद्याके पढ़िबे की सुपाटी है ॥ १४६ ॥ मलूक ॥ कैधौं राहुडरतैंधरीहैं चन्दढाल बिबि कैधौं राहु घेरिरह्यो चन्द्रमाकौं आयके । प्रेम की कसौटी तम भूमिमें मलूक कैधौं कैधौं बिधि पढ़िबे की पाटी कढ़ी चायके ॥ कैधौं रसआदिकी बनाई उभै क्यारी भली कैधौं मेघ घटारही चन्द्रमासो छायके । सुन्दर सुहावनी सी चितकी चुरावनी सी पाटी बटपारी प्यारी बैठी है बनायके ॥ १४७ ॥ पृथुराज ॥ स० ॥ कै पृथिराज छिप्यो अलिको गन कैघनकी उमड़ी ठटियां ।

कैनगसो मखतूल सिंहासन कै शनिमंदिर की टटियां॥ कैबिवि ब्यालजुरे फनसों फन आननचंद अमी डँटियां। कैदल कामके रोकनको तियकी पटियां तमकी घटियां॥ २७॥ भरीमांगवर्णन॥ कैधौंहै सिंगार बीच रौद्ररसरेख कैधौं है युग कसौटी बीच कनक सराफकाम। कैधौंतम ऊपर रजोगुणकी लीकमृदु कैधौं घनदामिनी लसत महा अभिराम॥ कैधौं श्याम भामिनीकी भूमिकेबिधान ताके नापबेको नीकी बनी रेशमकी डोरीछाम। कैधौं प्यारे प्रीतमके बशकरिबेको भानु सेंदुर सुबेस मांग सुंदर सँ-वारी बाम॥ १४८॥ मांगवर्णन॥ बलभद्र॥ तमकेवि-पिनमें सरलपंथ स्वातिगको कैधौं नीलगिरिपर गंगाजू की धारहै। कैधौं बन बावरी बीच राजत रजत रेख की-नोचंदकर अंधकारपै प्रहार है॥ मापत सिंगार भूमि डोरी हासरसकी कि बलभद्र कीरतिकी लीक सुकुमार है। पयकी असार घनसारकी असार मांग अमृतकी आपगा उपायी करतार है॥ १४९॥ दत्त॥ कैधौं तम मंडलके मध्य बिधुमंडलकी रेख अवरेखी छबिदेखी तुं-गताराकी। कैधौं शनिभौन में दनुज गुरुभौन कैधौं नी-लमके सदन सबीह देवदाराकी॥ दत्तकहै कैधौं श्याम शिखर शिखाके मध्य शोभित सुभगलीक मलयज गा-राकी। सरस सिंगारमें मरालनको चारा कैधौं यमुना मझारधार सुरसरि धाराकी॥ १५०॥ जूरोवर्णन॥ रस-रास॥ कैधौं शशिमन्दिरपै श्यामल कलश सोहै कैधौं देहदामिनी पै तिमिर समैठो है। गुननको गूटो कैधौं शोभाको समूह छूटो कैधौं मखतूल जूटो राजत बिजैठो

है ॥ काजर समूह कैधौं धूमनसमूल रसराजको सिंगार कैधौं प्राणपिय पैठो है । प्यारी शीश जूरो ऐसी शोभा देत रूरो कैधौं मानो हेमगिरि पै बियाल ऐंठि बैठो है ॥ १५१ ॥ बेनीवर्णन ॥ हरिदास ॥ लैहै बांधिजूरो तऊपानिसोन पूरो निज गुणनि गरूरो कुण्डलीको रूपरैहैरी । हरिदास ऐसेही जो एडिनलौंलोटे तो या मोतिनकी कांचुरी सी शोभा सरसैहैरी ॥ जाय मति गोकुल बिलोकि तोहिं दूरहीते कुंजनते बांसुरी बजाय आयजैहैरी । कालीजानि आलीरसख्याली पन्नुएहे कहूँ ब्याली समबेनी बनमाली लखिपैहैरी ॥ १५२ ॥ उमेद ॥ राजत रुचिर सुमन सको रहत संग पानिप कलित मोद करत अतिसैनीकी । सोहत सुरंग गुनगूंदे हैं बिशद जामें लांबी है घुठीलौं कहत चित चैनी की ॥ जामें जलजावलि लसत नीकी भांति बनी सुकबि उमेद रूप रसकर जैनीकी । प्यारी प्राणनाथजूकी गावत चतुरमुख भूतलकी बेनी कैधौं बेनी पिकबैनी की ॥ १५३ ॥ अन्य ॥ पीठितन ताकतही डीठिडसिलेतो तोपै फैलिकै विषमविष रोम रोम धावतो । छनकमें ऐसो हाल होतो केतहूननको एतेकोऊ गाडरू कहांते ढूँढ़ि लावतो ॥ ईश्वर दोहाई ताके होती ऐसी ब्यालिनी तो कालीको नथैया कान्ह काहेको कहावतो । मुरि मुसक्यान मंत्र जानती न राधा तो या बेनी के डसन ब्रज बसन न पावतो ॥ १५४ ॥ गंग ॥ स० ॥ मृगनैनीकी पीठपै बेनी बिराजत शोभासमूह समोयरही । पुखराज शिलापर मानो गिरी तमधार अचेत सुहोय रही ॥ कबिगंग कहै उपमा सुयही रबिकी तनया तन

तोयरही। जनु कंचनके कदली दलऊपर सांवरी सांपिनि सोयरही ॥ २८ ॥ भिखारीदास ॥ भुजंगीछंद ॥ लला लाड़िलीकी लखी पीठमें। तहां श्याम बेनीपरी डीठमें ॥ मनो कंचनी केदली पत्रपै। भुजंगी परी सोवती तत्र है ॥ १ ॥ शीशफूलादिवर्णन बेनीपाटीमांगशीशफूलयुतवर्णन ॥ कलानिधि ॥ सुन्दरीकी बेनी हेम फूलनकी सेनी युत अमित अपछरनिकी शीश छबि छरिलै। सुघर सखीन कर कमलनि घोटी पाटीपारी मरकत की मयूख द्युति हरिलै ॥ कलानिधि फैलिरही शीश शीशफूल रुचि उपमा अनूप मांग मोतिन की लरिलै। मानो बस्यो तिमिर अखिल परिवारलैके रबिकी शरण सोह बीच सुरसरिलै ॥ १५५ ॥ केशव ॥ दोहा ॥ मांगफूल शिरफूल शुभ बेनी फूल बनाव। रूप भूप जग ज्योति जनु सूरज प्रगट प्रभाव ॥ ४ ॥ बेंदी ॥ मोतिन की लर शीश पर शोभित है इहिं भांति। चारु चन्द्रमा की चमू घन मरालकी पांति ॥ ५ ॥ बेणीवर्णन ॥ क० ॥ नोने ॥ तारागन तापै सोहै छौना कल हंसनके मुरवा सुतापै तापै कदली युगबिहै। केहरि सुतापै तापै कुंदनको कुण्डतापै लसत त्रिबेनी मानो छबिहीकी छबिहै ॥ नोने कवि कहै नेही नागर छबीले श्याम दरश निहारे देत चारो फल सबिहै। कनक लतापै तापै श्रीफल सुतापै कंबु कंज युगतापै चंद तापै लसे रबिहै ॥ १५६ ॥ शीशफूलवर्णन ॥ श्रीपति ॥ कंचन कलश पर पन्नगकुमार राजे आछे अतसीमें रूप मुकुता मचत है। बिम्बपर कीर कीर ऊपर कमल तापै मनमथ धनुहाव भावसों रचतहै ॥ द्विजराज श्रीपति परम

आचरज यह मुनिगनहूके लखि मानस लचतहै । धनुपर बिज्जु बिज्जु उपर शरद चन्द चन्द पर राहु तापै सूरज नचत है ॥ १५७ ॥ अंगबासवर्णन ॥ केशव ॥ कमल बदन कर नयन चरन कुच पूरन कुरंग मद दृगनि बिलासहै ॥ भृकुटी कुटिल कच मेचक सुगंधमय कुंदकलिकासे दन्त चंदनसो हासहै ॥ कुंकुम शरीर कुमकुमानिके स्वेद नीर अंबरको केशोदास अंबर बिकासहै । मनकरषन विधि किधौं इष्ट देवता अदृष्ट गति दूतिका की सहज सुवासहै ॥ १५८ ॥ सं० ॥ मोतिया सोहाग अंबर पानड़ी अगरलौंग बल्लभ सुकेवड़ाकी सुरति सोहाईहै । केसरि कुसुंभ कंज बसुधा अतर पुंज एला घनसार बेला केतकीकी भाईहै ॥ मौलसरी मल्लिका औ जाहीबर चन्दन की पारिजात सेवती सुमालती की छाईहै । कुमुद चमेलीजुही नरगिस गुलाब खस इनकी सुवास तेरे तनही में पाईहै ॥ १५९ ॥ अंग मृदुतावर्णन ॥ प्यारेपै सिधारी प्यारी पौरीलौं हारिपरी कुञ्जलौंधौं कैसे जैहैं शोचसो करत हैं । हारनके भार अरु मंडन सिंगार भार बारनके भारनते ञ्त्रासही भरत हैं ॥ जित जित चलत पसीजि दोऊ तरवान तित तित महाउर की छापैंसी परत हैं । कोमल कुँवरिराधे कमलकी सुपांखुरिन पांवड़े सुडारिडारि पावन धरत हैं ॥ १६० ॥ पद्माकर ॥ सुन्दर सुरंग नैन शोभित अनंग रंग अंग अंग फैलत तरंग परिमलके । बारनके भार सुकुमारिको लचत लंक राजे परयंकपै सुभीतर महलके ॥ कहै पद्माकर बिलोकि हरिरीझै जाहिं अंबर अमलके सकल जलथल

के । कोमल कमलके गुलाबनके दलके सुजात गड़िपाँ-
यनमें बिछौना मखमलके ॥ १६१ ॥ वसनवर्णन ॥ मु-
बारक ॥ कनक बरन बाल नगन लसत भाल मोतिनके
माल उर सोहैं भलीभांति है। चंदन चढ़ायचारु चंद-
मुखी मोहनी सी प्रातही अन्हाय पगधारे मुसिक्यात
है ॥ चूनरी बिचित्र श्याम सजिके मुबारकजू ढांकिनख
शिखलौं निपट सकुचात है। चंदको लपेटिके समेटिके
नखत मानो दिवसको प्रणाम किये रात चलीजात है ॥
१६२ ॥ केशव ॥ कैधौं यह केशव सिंगारकीहै सिद्धि कैधौं
भाग की सहेली कै सुहागकी सुहाव है । लाख लाख
भांतिनके प्रीतिहीकी अभिलाख पहिरै बनाय कैधौं शो-
भाके सुभाव है ॥ योबन की जाया कैधौं माया मन मो-
हिबेकी काया कैधौं लाजकी कि लाजही को आब है ।
सारी जरकसी जगमगत शरीर कैधौं भूषण जरावहीकी
ज्योतिको जरावहै॥१६३॥सर्वांगवर्णन॥कंजसे चरणचा-
रुजानु रंभतंभ ऐसी चंपाके सुमन ऐसो सोहै जासुरंगहै।
कहै विप्रवल्लभ त्यों बिंबसो अधर और कंठ कंबु ऐसो
औसरसुतिसी मंगहै॥ रंभाऔसुकेशी मंजुघोषाकी कहा
है बात जाकी सुनि सूरति रतीहू होति दंग है। जात
है उमंग भरी ताहि चलि देखो हरी जाके अंग देखे
अंग गहत अनंग है ॥ १६४ ॥ देव ॥ सूरजमुखी सो
चंदमुखी को बिराजै मुख कुंदकली दंतनासा किंशुक
सुधारीसी । मधु से लोयन बधूक दल ऐसे ओठ
कुच कंजकली कच बेलि तिमिरारीसी ॥ मोती बेलि
कैसे फूले मोतिनके भूषणन सुचिर गुलचाँदनीसी

चम्पककी डारीसी । केलिके महल फूलिरही फुलवारी देव ताही में उज्यारी प्यारी फूली फुलवारीसी ॥ १६५॥ गदाधर ॥ राधिकाके चरण विराजैं चारु माणिक से मूंगाकी फरीसी भली आंगुरी सुभाखेहैं । गदाधर कहै करीकरसे युगलजानु छीन कटिकेसरीसी बेस अभिलाखे हैं ॥ पानसो उदर हेम कूंभसे उरोजबर बाहु लतिकासी खासी कामतरु शाखेहैं । इन्दुसो बदन कुरबिन्दसे अधरलाल कुन्दसे रदन अरबिन्दसम आंखेहैं ॥ १६६ ॥ केशव ॥ चन्द कैसी भागभाल भृकुटी कमान ऐसी मैन कैसे पैने शर नैननि विलासहै । नासिका सरोज गन्धबाहसे सुगन्धबाह दारयोंसे दशन केशव बीजुरी सोहासहै ॥ भाई ऐसी ग्रीव भुजपानसो उदर अरू पंकजसे पायगति हंसकीसी जासहै । देखीहै गुपाल एक गोपिकामें देवतासी सोनेसो शरीर सबसोंधे कीसी बासहै ॥ १६७ ॥ ब्रजभूषण ॥ क्षितिपर निरज निरज पर रंभा युग रंभापर केहरि लगत लग लोनी में । केहरि पै सुपेई पेई परसि बसेई शिव पर कोकिल कुहूक ठक ठोनीमें ॥ कोंकिल पर सावक तापर सुवा सावक तापर मृगभावक चापहै चलोनीमें । कविब्रज भूषणनि नवसतकीये अंग छपाकरहूकी छबिलई छीन छोनीमें ॥ १६८ ॥ अन्य ॥ कारेकीने कोकिल कुरंग रंग कारेकीने कुढ़िकुढ़ि केहरि कलंक लंक हदली । जरजर जम्बूनद बिद्रुम बदरंग होत अंग फाटि दाड़िम तुचा भुजंग बदली ॥ एरी चन्दमुखी तैं कलंकी कियो चन्द हूको बोलैं ब्रजचन्दपै किशोर आय अदली । मुण्डछार

डारैं गजराजयों पुकारकरैं पुंडरीक बूड़योरी कपूरखायो कदली ॥ १६९ ॥ तेरे दृगदेखे मृगसेवत उजाड़ बन कटि देखे केहरी न कूढ़त जी गयांहै । दंतनके देखेते सुदाड़िम दरार खात नासिकाके देखे कीर बनोबास लयोहै ॥ चालगति देखे गजराजहू पछारखात मौहन के देखे काम धनुषहू नयोहै । प्यारी तेरे अंगनको निरखि उजास आसु भाजिगो पतंग दीप जरिबेतैं रह्यो है ॥ १७० ॥ कृष्ण ॥ केसरिको कंचनने कंचनको चंपकने चंपकको जीत्यो प्यारी रूपने अमन्द है । गजगति छीने भूप भूपगति छीने हंस हंसगति छीनिबेको तेरी गति मन्दहै ॥ हारे सब बाननते बान पंचबाननते कृष्णलाल तोहिं देखि रीझे नँद नन्दहै । गजमुख मूंदे कंज कंजमुख मूँदे चन्द चन्दमुख मूंदिबे को तेरो मुख चन्दहै ॥ १७१ ॥ अनुनय ॥ स० ॥ द्युति देखत दंतन की हिय हारत हीरनकेगन दाड़िम है । बसुधा बिच चारु सुधाकी मिठाई सुधाधरसों धर सालिमहै ॥ अनु नैन बनी भृकुटी कुटिलैं कल मैनके चापसों आलिमहै । जग जाहिरे जोर जनाय सकै अंखिया यमराजसौं जालिमहै ॥ १७२ ॥ किशोर ॥ आनन ओप उजासो लसे फरकैं दृग काननलौं चलितामें । और किशोर कहांलौं कहौं न लहै सुर कोकिलहू कलितामें ॥ जैसीलसी लखी छबि राधिका अंगन तैसी अनंगहुकी बनितामें । सिंधु सुतामें न सुन्दरता में न हेमलतामें न है तड़ितामें ॥ १७३ ॥ मलूक ॥ चन्द कलंकी कहा करिहै सर कोकिल कीर कपोत लजाने । विद्रुम हेमकरी अहि केहरि कंज

कली औ अनारके दाने ॥ मीन शरासन धूमकी रेख मलूक सरोवर कम्बु भुलाने । ऐसी भई नहिंहै भुवपै नहिं होयगी नारि कहा कविजाने ॥ १७४॥ दीप्तिवर्णन॥ दास ॥ जोतिके गंजमें आधोबराय बिरंचि रची वृष-भानु दुलारी । आधोरह्यो फिरिताहि में आधोलै सूरज चन्द प्रभानमें डारी ॥ दास द्विभाग कियो उबरेको त-रैयनमें छबि एककी सारी । एकही भागते तीनहूँ लोक की रूपवती युवती न सँवारी ॥ १७५ ॥ काशीराम ॥ रूप तिहुँलोकको अलीकही अनूप पायो गायो कविपंडित अठारहू पुरानमें । रामके निहोरे बामभूलि जनि आवो धाम काशीराम और कामकहो किन आनतें ॥ तेरो मुख देखेते घनेरो उतपात ह्वैहैं मेरो सिखमान शोर परिगो जहानमें । सारथी समेत सूर मुरछि गिरेगो आली खालीरथ भटकत फिरेगो आसमानमें ॥ १७६ ॥ मणि-देवजूके पुत्र हनुमान ॥ सुखमा सदन भूरिभूषित बदन जाको सोहत सलोने चारु चन्दहूते चोखोसो । छांड़ि कुंज मंजु रहे घेरिभौंर पुंजपाय अंगवारो सौरभ समूह अनजोखोसो ॥ वचनविलास बेसजाकोहनुमान कहै रा-तौ दिन रहत पियूषहूपै रोखोसो । छबिसों अपार बैठी भौनदै किवार तऊ बारबार बीर होत बीजुरी को धोखो सो ॥ १७७ ॥ छप्पय ॥ करि हरि मृग मंजीर कलानिधि अहि ब्रिम्बाफल । चलन लङ्क दृग उरज बदन बेनी अधराधर ॥ मत्त तरुन वन कनक पूर्ण परिपक्क रुचिर दुति । सुरस छुभी शिशु उपीदोष बिनु असित बेलि युति ॥ सिरताज सरोष भीत बिनबेध शरद नव निकट

जल । सुनु बालगात ऐसो निरखि कस न होहिं लालन विकल ॥ २६ ॥ हाटक कंज मयन्द चन्द दाड़िम गयन्दगति । कुन्दन अरुण एँड़ात एक पक्षी मदन्ध अति ॥ मिलि सोहाग जल छुधित शरद दरक्यो जँजीर युत । तपत छपत कृश तरुणगात ततकाल रोष हुन॥ हरिनाथ ओप ग्रीषम शिशिर अमरलोक लाली चलत । यह रूप देखि तन सुन्दरी जहँ ब्रह्म विष्णु मुनि मन डुलत ॥ २७ ॥ कान्ति लङ्क ऊरू उरोज बेनी सुअधर वर । केसरि केहरि कदलि कोक संपिनि सुबिम्ब फर ॥ काशमीर वन सुथल ताल पाताल बेलिपर । हिमिय पुरुष अनफरिय दिवस क्रुद्धित सिंचियसर ॥ चुनिघसिय छुधित घनसारधर मत्त असित पक्षी सरस । जित्तवेनारि योवन इतौ सुजगतपत्ति कि पतिहिं सुबस ॥ ३ ॥ करनि रम्भ हरिचक्षु इन्दु दीपक मृग विषधर । तरुण तक्ष सिखपुन अदिवस अरु खोह अफलसर ॥ नील सजल जुहरम्भ शरद निशि दम्भ अकञ्चन । चन्दन वन ग्रहगगन सरस केहरि कूपर सुबिज्जव ॥ गति जङ्घ लङ्क उरु बदन नासा चक्रितबैनियन । इहि रंग रूप पीथल कहै मिलै कान्ह राधारमन ॥ ४ ॥ सर्व भूषण वर्णन ॥ केशव ॥ क० ॥ बिछिया अनौट बांक घूंघुरू जरायजरे जेहरि छबीली क्षुद्रघण्टिकाकी जालिका । मूंदरी उदार पौंचीकंकन औ चूरी चारुकण्ठ कण्ठमाल हार पहिरे गुपालिका ॥ बेनीफूल शशिफूल कर्णफूल मांगफूल खुटिला तिलक नक मोती सोहै बालिका । केशवदास नीलबास ज्योति जगमग रही देहधरै श्या-

मसंग मानो दीपमालिका॥१७८॥अन्य॥ फूलनकी पायजेब त्यों अनौट फूलन को घांघरो घनेरो औ लसैं फूलसारी में। फूलन की कंचुकी में फूलनके बन्द लसैं फूले बाजुबन्दनके बन्द छन्दचारीमें ॥ फूलनतें गूंदेबार फूले फूल बेशुमार फूलनकी बेनीझूले झबाझलकारीमें। फूलन सँवारी बर फूलसी बिहारीसंग फूलिकै सुबैठी राधा फूल की अटारीमें ॥ १७९ ॥ अंगद्युति वर्णन ॥ केशव ॥ स० ॥ राधाके अंग गोराईसी और गोराई बिरंचि बनावन लीनी। कै सतबुद्धि बिबेकसों एक अनेक बिचारन में द्दग दीनी ॥ बानिक तैसी बनी न बनावत केशव प्रत्युत ह्वैगई हीनी। लै तब केसरि केतकि कञ्चन चम्पक केदलि दामिनि कीनी ॥ १८० ॥ गति वर्णन ॥ क० ॥ कैधौं गजराजन को राजतहै अंकुशसी चरन बिलासन को आरस सजति है। बलित अनन्तगति ललित सिंगारबेलि फूल हावभाव फल फूलनि फलति है ॥ कैधौं कलहंसन की शङ्का शक केशौदास कैधौं राजहंसन की लाजसी लगति है । कैधौं नन्दलाल लोललोचन की शृङ्खला की तेरे लोललोचनि अलोल अतिगति है ॥ १८१ ॥ सम्पूर्णमूर्त्ति वर्णन ॥ स० ॥ तारासी कान्ह तरैयन संग औ चन्दकला निशि चन्दकलासी। दामिनिसी घनश्याम समीप लगे तन श्याम तमाल लतासी ॥ आधिकी औषधिसी कहिके सब कामके धाम में दीपशिखासी । सोनेके सींकसी दूरभये तें लसै उर में उरहार प्रभासी ॥ २९ ॥ दत्त ॥ क० ॥ चोपकरि बिरची बिरञ्चि रूपराशिकीसी कोककी कलासी चारु

चातुरी की शालासी। चन्द्रमासी चांदनीसी चामीकर चपलासी सुधासी सखीजन कौ सौतिनकौं हालासी॥ कहा मञ्जुघोषा उरबशी ना सुकेशी दत्त जाकीछबिआगे वारियत मैनबालासी। चम्पक की मालासी लगे सो बरिस कालासी शिशिरमें दुशालासी ग्रीषम में पाला सी॥ १८२॥ अन्य॥ चूनी से चरन चांदनीमें चिलकत चकचौंधत चकोर चिनगीके चाप दूनरी। चामीकरहू से चाप चौगुनी चमक चोखी चम्पकबरन चोली चूभी चञ्चु भूनरी॥ चन्दमुख चन्द्रिकातें चकई चपत चित चौंपत्त प्रबीन बेनी चैत चन्द सूनरी। चूईसी परत चपलासी चैचफल चख चञ्चल चितौनि चटकीली चारु चूनरी॥१८३॥ कंकन करनफूल किङ्किणी कलित कटि कंचन कँगूरा कुच केश कारी यामिनी। कानन करनफूल कोमल कपोलकंठ कंबुक कपोत कीर कोकिल कलामिनी॥ केसरि कुसुम कलधौत की कछू न कांति कोबिद प्रबीन बेनी करिवर गामिनी। कोककारिकासी किन्नरीकी कन्यकासी किल कामकी कलासी कमलासी खासी कामिनी॥ १८४॥ मनोपदेश॥ अन्य॥ स०॥ तू ममता मदमाहिं पग्यो रचिके पचिके बहु धाम सँवारे। लोभ अधीन जू पाप को मूल रह्यो चितभूल न आप सँभारे॥ काल ढिगेरहि श्वास गिने छिन मांझ लवा जिमि बाज पछारे। नन्दके नन्दहि क्यों न भजे जो सदा अपने जनको प्रतिपारे॥३०॥इति श्रीकाशीनाथात्मजविप्रवल्लभविप्रकृतेरसिकोल्लासभागवतेउत्तरार्द्धेश्रीराधिकानखशिखवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः२॥

अथ श्रीकृष्णचन्द्रजी को नखशिख वर्णन ॥ चरण वर्णन ॥ रनधीर ॥ क० ॥ मंजुल सुरंग बर शोभित अचिंत्य रेख फल मकरंद जन मोदित करन हैं । प्रमित विराग ज्ञान केसर अव्यक्त देश बिरद अशेष जस पाँसु प्रसरन हैं ॥ सेवत नृदेवमुनि मधुप समाधि हीके रूयात रनधीरद्रुत इच्छित करन हैं । ईशहृदिमानस प्रकाशित सदाई लसैं अमल सरोज बर श्यामके चरन हैं ॥ १ ॥ नखवर्णन ॥ ओजकरि आपनो पयोज पृथिवीपै रोज रोजहू सरोजनके ओज हरिबोकरे । बारिनिधि बसिके कपाली शीश लसिके प्रदक्षिणा सुमेरु आस पास भरिबोकरे ॥ छोटो छोटो ह्वैके फेरि षोड़श कलालौं बढ़ै नीके बुंद अमल अमीके झरिबोकरे । वृन्दावन चंद नखचंद समता के हेत चंद यह मंदकोटि छंद करिबोकरे ॥ २ ॥ जानुजंघ वर्णन ॥ सं० ॥ दो० ॥ जनु मरकत करिकर सरिस जानु जंघ हरिकेर । कहत कोऊपै मैं कहत जगसतून हियहेरि ॥ १ ॥ कटिवर्णन ॥ हरिकटि अति सुठि निरखि के यह हिय होय हमेश । क्षुद्रघंटिका होयके कटितट बसों बिशेश ॥ २ ॥ बक्षस्थलको वर्णन ॥ पदुमनदास ॥ स० ॥ पीन बिलास उतंग मनोहर मोतिक हारनि जोतिहिं जागी । छाहँ लसे तिहिं माहँ मनो मनि नीलकेदर्पण में दुतिजागी ॥ चारु कपाट के पट्ट शिलाबिच कुंकुम लेखकी प्रेमनि पागी । कौन तियानि कियो तपलच्छ रहै हरिबच्छ अनुच्छन लागी ॥ १ ॥ बनमाल वर्णन ॥ आज गईहुती हौं यमुना जललेन धरेंशिर गागरि खाली । देख्यो जो

कौतुक मैं तट जायके सो अब तोसों कहौं सुनिआली॥ गुंफित पल्लव फूलन की बनमाल हिये यों लसे बनमाली। नील पहारके मध्यविहार करैं मिलिके मनोहंसरु व्याली॥ २॥ भुज वर्णन॥ डोलतबाहु प्रलंब लसै परसें युगजानुहिं पानिसरोजैं। कै जगजीतनको रथ जोतन हेत जुबाजुग कीन्ह मनोजैं॥ बक्ष बिशाल कपाट के अर्गल कै उरगेश बसे निज मौजें। दंत रहै रदमैं कर लाय चिताय गुपाल भुजानि के ओजें॥ ३॥ क०॥ कीरति कलाहैं युद्धजयकी सलाहैं चाहैं देत कसलाहैं रोज निजजनतानपै। कहै विप्र वल्लभ औढाहै मेरु मंदरको पकरि पछारेहै पुरंदरें शिलानपै॥ शिवही की सुसींवा हैं असिवाहै असिवनको जीवनकीजीवाहैं चारोयुग मानपै। दाहैं दैत्यदानवकों प्रनकों निबाहैं तदा श्यामकी सुबाहैं करैं छाहैं देवतान पै॥ २॥ दो०॥ ब्रज कपाट की अर्गला की फणिपतिको भोग। की हरिकी दोउबाहु की दैत्यबधू हियरोग॥ ३॥ पीठ वर्णन॥ पदुमनदास॥ क०॥ सुंदर परम पीठ राजे बलबीरजूकी जाके और जगके अयश दूरिथापै है। सुखमा समान आनउपमान पुहुमी मैं पटतर देत दल कदलीके कांपे हैं॥ मरकत मणिके कपाट रेखतामें मानो राधा करकंकन के अंकन तैं छापैहैं। करै न प्रवेश और नारिनके नैन याते पदुमन पीरेपट डारि प्रभुढापैहैं॥ ३॥ स्कंध वर्णन॥ मघवाके मेघमें बहत जिन्हथेघ दीन्हो सरिताकों करैकौन करनी अपारहै। बादिन के घोर महाघोरताकों घरिक में घेरि कै घसीटिभारो तेई इतबारहै॥ बपहा वृषभको बिलो-

क्यो बलगौंठही में ओठअठि मारो ताहि तनकु न बार है। पदुमन प्रभुतेइ करैगो उबार ब्रज पुंगव मतंगजैसे जाको कंधभारहै॥ ४॥ हरिलाल॥ अधर वर्णन॥ केसर निकाई किसलय कीरताई लियें झांई नाहीं जिन की धरत अलकतहैं। दिनकर सारथी तें देखियत एतेसैन अधिक अनारकी कलीतें अरकतहैं॥ लीलासी लसनि जहां हीरासी हँसनि राजै निरखत नैन अलकत असकतहैं। जीते नग लालहरि लाललाल अधरन सुघर प्रबालके रसाल झलकतहैं॥ ५॥ दशन वर्णन॥ सं०॥ दो०॥ द्विज अवलीमुख श्यामके सोहत इमि विधिपंति। जनु चहुँ वेदन की ऋचा बैठी मूरतिवंति॥ १॥ मुसक्यान वर्णन॥ रसखानि॥ स०॥ काननदे अंगुरीरहिहों जबहीं मुरली वह मन्द बजैहैं। आननताननि ते रसखानि अटाचढ़ि गोधन गैहैं पै गैहैं॥ टेरिकहौं सिगरे ब्रजलोगहि कालिह कोऊ कितनो समुझैहैं। सांवरे या मुखकी मुसुक्यानि सँभारि न जैहैं न जैहैं न जैहैं॥ ४॥ मुखवास वर्णन॥ ग्वालकवि॥ दंडक॥ पारिजात जातिहू न नारगी सरुयातहूँ न चंपक पुलातहूं न सरसिज ताबमैं। माधवी न मालती में जुही में न जोहियत केतकी न केवड़ाकी लपट सिताबमैं॥ ग्वालकबिललित लवंग में न एलन में चंदन न चंद्रिका न केशरहिताब मैं। सेवती गुलाबमें न अतर अदाबमें न जैसीहै सुवास कान्ह मुख मुहताबमैं॥ ५॥ रसना वर्णन॥ सं०॥ दो०॥ मीठीबातन तें भरी रसना हरिकी जोय। जाके कान पियूषसी ढरी सो बसना होय॥ २॥ बानी वर्णन पदु-

मन दास ॥ स० ॥ सुन्दर देह नवीन घटा बिजुरी कि छटा छबिपीतनिचोलैं। शीश शिखीदल शक्र शरासन तंडव मोरकी कुंडल लोलैं॥ गाजनि धीर कि धोखैं परैं बलबीर गँभीर गिरा जब बोलैं। सूरति श्रीब्रजराज लसे किधौं मूरति मेघधरैं महिडोलैं॥ ५ ॥ कपोल वर्णन॥ सं०॥ दो० ॥ दर्पहरैं कंदर्पके दर्पणमे सुअमोल। अति सुडौल हरिकेलखे एरी गोलकपोल ॥ ३ ॥नासावर्णन॥ दो० ॥ तिल प्रसून तूनीरसी शुकसी किमि कहिजाय। हरिनासाकौं निरखि के ये सब रहे लजाय ॥ ४ ॥ नेत्र वर्णन ॥ पर्वतकवि ॥ क० ॥ खंजन खिजात जलजात कीलजात हेरो हिरनो हेरात मुकुतान ठहरातहै। पंच शर कीने रद भौंरन के भूले मद नटसे विचित्र चित्रहिये हहरातहै॥ दीपकमलीन छीन मीनलागे मेरेजान तीने तोनरंग तातें अति इतरातहै। परबत प्यारे मधुसूदन तिहारेहग मारत निशंक ना कलंकही डरातहै॥६॥ ऊधव ॥ खंजन मलीन मृगमीन बनमांझ लीन कंज छबि छीन कीन पाँयन के चेरेहैं। दीरघ दुरारे झपकारे रतनारे ऐन मैनमतवारे ऐसे मैं न कहूँ हेरे हैं॥ तरुणी चपलमन बांधिबे कौं फंदा ऊधौ लाल लाल डोरेलखे रूपके घनेरे हैं। बडडे बिशाल हिये किये हैं दुशाल ये रसा नटशाल लाल प्यारे हग तेरे हैं॥ ७॥ श्रीपति॥ कारे आछी कारनी असित सित भाल भांति रीझेरूप रसिक रसालैर सरैया से। थिरकत थिरनन थार मुकुताहलसे थहरात थाकत न खंजन खिजैयासे ॥ छबि सों फिरत फहरात फेरि फूले फूले श्रीपति सुघर बर लेत

हैं बलैयासे । आनँदके ऐन चितचैनके करनिहारे प्यारे तेरे नैन नाचैं मैनके भभैयासे ॥ ८ ॥ पंकज पदम पुंडरीक कंज तामरस इन्दीबर अंबुज सरोज जलजात है । अरबिंद पौष्कर सरोरुह राजीव से सारस ससेत सरसीरुह सीतातहै ॥ नीरज नलिन कोकनद अरु महोत्पल बारिज बिथक परिषत शतपातहै । नंदके कुमार तेरे लोचन निहारि एते नामतें कमल बलिहारि बारिजातहैं ॥ ९ ॥ चितौनिवर्णन ॥ नवीन ॥ मोदबरसावनी बिनोद सरसावनी है राधेकी रिझावनीहै नैनन चिकारी की । चायकी भरीहै भाई सांचकी ढरीहै नेह मेहकी भरीहै खरीकोर कजरारीकी ॥ योवन जगी है प्रेम पुंजन पगीहै जोररंगन रँगी है काम क्यारी फुलवारीकी । मौंहन तनीकी सुखदैनहारी जीकी नीकी पानिप अनीकी है चितौन श्रीविहारी की ॥ १० ॥ भौंह वर्णन ॥ ग्वालकवि ॥ कैधौं रमनीय रूप ऊपर वकारी बेस कीन्हीं महाराज कामदेव बलवंतकी । कैधौं परिपूरण पियूषकी पियालनि में बैठे अहिनंदकरि बक्रताई कंतकी ॥ ग्वालकवि कैधौं दृगद्वारहै बहारदार तापै मेहराब श्याम मीनाति लसंतकी । कैधौं सतरोहै नतरोहै होत जोहै जैसी सोहै मनमोहै बंकभौंहैं भगवंतकी॥ ११॥ कुण्डलयुत कान वर्णन ॥ विहारी ॥ मकराकृत गोपाल के कुण्डल झलकत कान । मनो धस्यो हियगढ़ समर ड्योढ़ी लसत निशान ॥ ५ ॥ सावयवमुख वर्णन ॥ अन्य ॥ आठैंके सुधाधरसों लसत विशाल भाल भौंम सोसुलाल जमैं टीको छबिभारी को । चापसी कुटिल

भौंहैं पैंने नैन शायक से शुकसी उतंग नासा मोहै मन प्यारीको ॥ बिंबसे अधर बंशी रदन छदन सोहै पेषि प्रेम पास फस्यो चित ब्रजनारीको । चन्द सो प्रकासकारी कंज सो सुवासधारी सब दुख त्रासहारी आनन बिहारीको ॥ १२ ॥ मुकुट वर्णन ॥ बिहारी ॥ दोहा ॥ मोर मुकुटकी चन्द्रिकन यों राजत नँदनन्द । मनु शशि शेखरकी अकस किय शेखर सत चन्द ॥६॥ अंगद्युति वर्णन ॥ तेजीराम ॥ क० ॥ जुगुनू उतै हैं इतै ज्योति हैं जवाहिर की झिल्ली झनकार उतै इतै घुंघुरू लरैं । कहै तेजीराम उतै चाप इतै बङ्क भौंहैं उतै बकपांति इतै मोती लरही धरैं ॥ धुनि सुनि शिखी उतै नाचैं गण सीखी इतै पीकरैं पपीहा उतै इतै प्यारी सी करैं । होड़सी परी है मानों घन घनश्याम जीसों दामिनी को कामिनीको दोऊ अङ्कही भरैं ॥ १३ ॥ गति वर्णन ॥ तोष ॥ कुंजनतें कढ़्यो हिये गुंजन की माल लिये पीरी पीरी शाल औ बिशाल नैनरातो सो । मोर पक्ष माथे श्रुति कुण्डल कमल हाथे गोपसखा साथे तोषकहै कछु बातो सो ॥ जाके आगे जातदबि कोटिकाम चन्द रवि वरणि सकै न कवि कोऊरे बिधातो सो । देखदेख चन्दमुखी नन्दनन्दजू को आज मन्दमन्द आवत गयन्द मदमातो सो ॥ १३ ॥ सर्वांगवर्णन ॥ चीरो जरकसी शीश शशिसो रसींलो मुख सुखमा अतूल अतसी को फूल फीको है । लियेंरी रसाल हिये सोहै वैजयन्ती माल लोचन बिसाल भाल रोचनको टीको है ॥ कहै कवि तोष मुकुताहल हलत जब बलित कलित

मानों करभ करीको है। एरी वृषभान केरी नेकतो निहारिलेरी शम्भुअरिहूंतेरी मुरारि सुठि नीको है १४॥ दामोदर॥ वारौं श्यामअंगपै अनंगछबि हीकी छटा मोर चन्द्रिकापै चन्द सुन्दर लसनपै। वारौं भ्रुवबङ्कपै कमान कमनीय सुतौ दृगनपै कञ्ज वारौं मुकुता दसनपै। दामोदर कहै त्योंहीं अधरन बिम्ब वारौं इन्द्र धनु वारौं शुभ बंशीकी लसनपै॥ वारौं कम्बुकण्ठपै सुहारहीर वारौं कोटि मुरली मनोहर की मोहनी हँसनपै १५॥ बिहारी॥ दो०॥ मोरमुकुट कटि काछनी करमुरलीउरमाल। यह बानक मोमनबसो सदा बिहारीलाल ७॥ अथ मनोपदेश॥ सुंदर॥ स०॥ संत सदा उपदेश बतावत केशसभी शिरश्वेत भयेहैं। तू ममता अजहूं नहिं छांड़त मौतने आय सँदेश दयेहैं॥ आजकै काल्ह चलै उठ मूरख तेरेही देखत केते गयेहैं। सुंदर क्यों नहिं श्याम सम्हारत या जगमें थिर कौन रहेहैं॥ ७॥ इति श्रीमदादिगौड़दुर्ग्गागर्भजश्रीकाशीनाथात्मजविप्रवल्लभबिप्रकृतेरसिकोल्लासभागवतेउत्तरार्द्धेश्रीकृष्णनखशिखवर्णनोनामतृतीयोऽध्यापारः॥ ३॥

अथ षट्ऋतुलीलावर्णनं॥ संग्रहकर्ता॥ दो०॥ वृन्दावन सब वननितें वंदित अति अभिराम। करत केलि षट ऋतु रहत जहँ श्यामा सह श्याम॥ १॥ नित उत सब मंगल जहां होत रहत तिहि ठौर। ता समता कों क्यों लहै बैकुंठादिक और॥ २॥ अथ वसन्त॥ गिरिधर॥ क०॥ कुमुद में कंजमें कुसुंभनमें केसरिमें किंशुककलीननमें छविदरसंतहै। केतकी में केवरामें केलामें करी-

लनमैं कुंदकचनारनमैं सुखद समन्तहैं ॥ गिरिधरदास कीर कोकिल कुहूकनिमैं कामिनीके कंठनमैं कौतुक करंतहै। काननमैं कुंजनमैं कोहमैं कुटीरनमैं कालिंदीमैं कूलनमैं कलित बसंतहैं॥ १॥ दो० ॥ सरसौं फूली देखिये एजू मोहनमीत। शिशिर विरह मानो भयो तन बसंत कोपीत ॥ ३ ॥ जो जाके रँगमें रँगे सो तेहि टेरे श्याम। कुहू कुहू कोकिल करे तजि सब तिथिको नाम ॥ ४ ॥ जिहि ऋतुराज प्रभाव सौं बौरे जड़ तरु आम ॥ जो नरबौरे होयतो कौन आचरज श्याम॥ ५ ॥ द्वै द्वै मास बसंतके मधु माधव रसखानि। वृन्दावन शोभाभरे मधुमाधव मुददानि ॥ ६ ॥ चौ० ॥ कुसुमित वन सोहत सुखकारी। फिरहिं भौंर सुमनन मनहारी ॥ चैतमास ब्रजजन छविछावैं। नन्दनँदन कों डोल झुलावैं॥ १॥ स० ॥ दंपति झूलति हैं तिहिंकों लखि शोभ मुरैघन बिज्जु अमोल की। त्यों गिरिधारन कुंडल लोल लसैं मुखमैं रुचिरेखतमोलकी ॥ आपुसमैं बिहँसै बतराय अमीसी झरे तिनके बरबोलकी। प्रीति अतोलनि तोलनिहै रसखोलनिरी सखिडोलनि डोलकी ॥ १ ॥ सं० ॥ दो० ॥ व्यापी कछु गरमी अधिक आवत माधव मास। रचहिं गोपिका फूलके बँगला सहित हुलास ॥ ७ ॥ गिरिधर ॥ क० ॥ गोपिन बनायो छायो सरस सुबासन सौं इन्द्रहू लजायो लखिजाकी शोभ तूलको। चंपक चमेली बेला बेलिनके वृन्द बने नलिन को कलश अलिन मनभूलको।गिरिधरदास बैठे गिरिधरलाल जामैं घन सम अंग रंग बिज्जु सो दुकूल को। कालिंदी के कूल

को करन सुख मूलको हरन दुख शूलको बँगलो सुसु-फूलको ॥ २ ॥ तहां की युवतिनको वर्णन ॥ क० ॥ क-रनमैं करनाके सोहत करनफूल बेलके बेलिनकी सारी छबि धरती । मोतियाको मोती नथ मनमथ चापहारी मौलसरी नौलसरी माल कंठ भरती ॥ गिरिधरदास चंपा कलिनकी चंपकली जुही औलिगुही गोप मनि-ओपहरती । तेरेकरबीर करबीर कौं कँगन चारु चंपक की पायजेब पायजेब करती ॥ ३ ॥ दो० ॥ इमि बिहर-त वैशाख मधि हरि राधा बरबाल । नवलकिशोर मनो-ज बपु ओजभरे गोपाल ॥ ८ ॥ चैत्र बैशाखके तिहवार वर्णन ॥ चैत्र शुक्ल प्रतिपद सुभद वत्सरादि वरनाम ॥ हरि राधा न्हावत दोऊ करि अभ्यंग ललाम ॥ ९ ॥ स० ॥ साजि नयेतन अम्बर सुंदर तामधि शुद्ध सुगंध लगाये । दंपति बैठि एकत्र सुने तिथिपत्र पुरोहितसों मनभाये ॥ राजत हैं गिरिधारन जू जहँ पादप पुंज के कुंजसुहाये । सौरभतें अतिशय जु सने ब्रज दूलहपै ज-नुमंडप छाये ॥ ९ ॥ बिलसै विविध बिलास रस गोपिन सँग ब्रजचंद । जामें इमि बरसो बरस बरसे बर आनंद ॥ १० ॥ चैत चांदनी तीज कौं सुमनस करि इकठौर । सुंदर भाग सुहाग हित पूजतहैं गुनगौर ॥ ११ ॥ स० ॥ चैतकी सेत शिवातिथि कौं सब पूजै शिवा कौं अ-हीर किशोरी । शालदुशाल उढ़ाय के अम्बर माल च-ढ़ाय चढ़ावहिंरोरी ॥ कायक बाचक मानस तें हरिही उरधारि निहोरत गोरी । संगतजे न कबू गिरिधारन मांगत यों बरहै करजोरी ॥ २ ॥ दो० ॥ जादिन सूरज

मेषके होहिं पुण्यदिन सोय ॥ सतुवा फल जल कुंभ बर दान करै सब कोय ॥ १२ ॥ सं० ॥ यमुनामहँ असनान करि पहिरि बसन भूषानि । राधा माधव देतहैं बिप्रन कहँ सनमानि ॥ १३ ॥ गिरिधर ॥ तृतिया माधव शुक्ककी अक्षयबर तेहवार । तादिन खेलहिं खेलकौं सखिन संग करतार ॥ २४ ॥ स० ॥ माधव तीजकों खेल रच्यो संग माधव के ललना मनभावन । हाथ प्रसून कि लेय छरी सबही दिशि लागी ललाम लचावन ॥ बीच लसै तिनके गिरिधारन ठाढ़ी चहूँदिशि मोदबढ़ावन । कोटिन नारिन कौं जनुमार सुशिक्षित फूल के बानचलावन ॥ ४ ॥ सं० ॥ सो० ॥ अंग सुगन्धनधारि फिरैं फूलसी फूलमधि । इमि बिहरैं ब्रजनारि माधव में माधव सहित ॥ १ ॥ जनोपदेश ॥ चढ़ि गजराज चतुरंगिनी समाज साजि जीति छितिपाल सुरपालहूसौं लरिहैं । वेद भेद पढ़िपढ़ि तीरथ अनेक मढ़ि यज्ञ ब्रत दान बहुभांतिहूँ जो करिहैं ॥ न्हाय तिरकाल सब इन्द्री को बहाय सुखलैके संन्यास बिषय बासनाहू टरि हैं । जप तप योगन को साधन कियो तो कहा बिना भगवंत भक्ति भवको न तरिहैं ॥ ४ ॥ इति श्रीमदादिगौड़दुर्ग्गागर्भजश्रीकाशीनाथात्मजविप्रवल्लभविप्रकृतेरसिकोल्लासभागवते उत्तरार्द्धपर्वमहोत्सवसंहितवसन्तवर्णनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ ग्रीष्मः ॥ दो० ॥ वृंदावन आवतभयो ग्रीषम अतिहि उदंड । तदपि तहां हरिडरनतें तपत न रवि परचंड ॥ १ ॥ सोरठा ॥ जेठ और आसाढ़ ग्रीषम

के दूयमास यह । है जनु यमकी डाढ़ तदपि डरत लखि इहिं बिपिन ॥ १ ॥ गिरिधारी सुकुल ॥ क० ॥ तपत प्रचंड मारतंड नवोखंड तपै ग्रीषम की तीक्षण तपन वारपारहै । कहै गिरिधारी कीच काच सोदहन लाग्यो भयो नद नदी नीर अदहन धार है ॥ झपकि चहूंघासों लपकि लपेटे लूक फनिकीसी फूंक पौन भूकन की झारहे । आवासी अटारी तपै तावासी तपतिभूमि दावासे महल औ पजावासे पहार है ॥ १ ॥ सं० ॥ ग्रीषम दवारन के बारनके हेत जहां केवरा गुलाबनतें हौज भरे भारे हैं । ताके नलनालतें यन्त्र जल जालनतें जल के उछालन तें झरै मुक्तधारे हैं ॥ ठौर ठौर गेहनतें गोखन के बेहनतें द्वारनके जेहनतें बल्लभ निहारे हैं । दर औ दिवारनतें बार अगवारन तें तरह हजारन तें छूटत फुहारे हैं ॥ २ ॥ आतश खेलौना से ये जलके खेलौना कैधौं कैधौं जरीतारन के कनुका अपारे हैं । कहैं विप्र वल्लभ ये तारनके पुञ्ज कैधौं करका उड़त कैधौं जलके अधारे हैं ॥ मोतिन के छच्छ कैधौं हीरनके गुच्छ स्वच्छ अतिही बलच्छ लच्छ सुखमाको धारे हैं । मोहनके मन्त्र कैधौं बशीकर तन्त्र कैधौं कैधौं जलयन्त्रनतें छूटत फुहारे हैं ॥३॥ देव ॥ शीतल महल महाशीतल पटीर पङ्क शीतलकै लिपीछिति भीत छात छहरैं । शीतल सलिल भरे शीतलविमल कुण्ड शीतल अमल जल यन्त्रधारा नहरैं ॥ शीतल बिछौनन तें शीतल बिछाई सेज शीतल दुकूल पैन्हि पौढ़े हैं दुपहरैं । देव दोऊ शीतल अलिंगनन देत लेत शीतल सुगंध मन्द मारुत

की लहरैं ॥दो०॥ सं० ॥ आवत मास असाढ़ लखि घर घरबढ्यो उछाव। खेलत झिरहिर ब्रजवधू ब्रजपतिसह चढ़िनाव ॥२॥ गिरिधर ॥क०॥ सुन्दर बनाव सों बनाई नाव कंचनकी इन्द्रधुज तूल मखतूल तामें खासोहै। सुखमा करनहार कालिंदीकी धार ज्योंहीं त्योंहीं कर्णधार रूप ललिता प्रकासो है॥ गिरिधर दास बैठे गिरिधर प्यारीसंग गावत मलार औ गवावत सुभासोहै। खेल के उमंगन में यमुना तरंगनमें गोपिनके संगनमें करत तमासोहै ॥ ५ ॥ जेठ असाढ़के तिहवार वर्णन ॥दो०॥ जेठ अमावस के दिवस वटसाविती होय। तादिन वट पूजनकरैं कंतवती सबकोय॥ ३ ॥ क० ॥ साजि के शिंगार शुभ सुन्दर सरोजमुखी कहति सखीन बर पूजनकौं जाइतहै। गिरिधरदास सुनि बैन ललितादि कह्यो ठाढ़ी रहो हमहूँ तिहारे संग आइत है ॥ चली सब पूजन कों भूषन बसन पैन्हि कालिंदी को कूल जहां अतिही सोहाइतहै॥ सोधि बरसाइत सुपूज बरसाइत अनंद बरसाइतही सांची बरसाइत है॥ ६ ॥ सं० ॥ दो० ॥ धरि वर भूषन वसन नव अक्षत पुहुप समेत। वटपूजत ब्रजनारि बर राधाबर बर हेत ॥ ४ ॥ गिरिधर॥ दो० ॥ दशमी शुक्लजेठकी लह्यो दशहरानाम। यमुनाउत्सव करत जन तादिन ब्रज अभिराम ॥ ५ ॥ स० ॥ जेठ सुदी दशमीके दिना यमुना जन पूजत मोद महासों। वारि विहार करैं गिरिधारन प्यारीलसैं सँगमैं सुखमा सों ॥ देखहुरी हरि चातुरता इमि देखिकहैं अबला अबलासों। संगहि संगम केलिकरैं हरिभानुसुता वृषभानु

सुतासों ॥ १ ॥ दो० ॥ जेठसुदी पूनोदिवस मुनिवर आनि विवेक । वेदमंत्रपढ़ि करतहैं केशवको अभिषेक ६ ॥ सं० ॥ सुदि असाढ़ की दोजकौं रथ चढ़ाय करि श्याम । फेरतहैं चहुँ अँगनमें मगन भई बरबाम ॥७॥ स० ॥ चढ़ि स्यंदन पै गिरिधारन औ बलभद्र दुहूँसु उमंगनमैं । बरदूज असाढ़ सुपुष्प दिनाधरि भूषनबासिअंगनमैं ॥ छबि काहकहूं कहिजात नहीं मनहू नहिं जात सुढंगनमैं । जगदीस नफीससखान सँगे सु फिरे यशुदायक अंगनमैं ॥ २ ॥ दो० ॥ सुदि असाढ़ एकादशी हरिशयनी करिख्यात ॥ तादिनतैं द्वय ऋतुकरैं शयन सुहरि दिन रात ॥ ७ ॥ स० ॥ नित सेजसँवारि मजेजनसौं बहु चावभरी मृगशावक नैनी । नितिसाज सजैं रति के रतिसी रमनी करजोरि खरी पिकबैनी ॥ निति मौज करैं गिरिधारन संग उमंग भरी चितचाहि सुचैनी । जग एक असाढ़ इकादशि कौं इत गोपिनको नितहीं हरिशैनी ॥ ३॥ मनोपदेश ॥ क० ॥ नारायण ॥ भृकुटीके मध्यध्यान धरिके तू योग करि चाहै नाम रूप मिथ्या जानिके निहारिलै । निरगुन निराकार तेजव्यापिरह्यो जग ऐसो तत्त्व ज्ञान निज मन मैं तू धारिलै ॥ नारायन अपनेकौं आपही बखान और मोतै वह भिन्न नहीं याविधि पुकारिलै । जौलौं तोहिं नंदके कुमारनहिं दृष्टि परैं तबलौं तू भले बैठि ब्रह्मकौं विचारिलै ॥ ७ ॥ इति श्रीमदादिगौड़दुर्गागर्भजश्रीकाशीनाथात्मजविप्र वल्लभविप्रकृतेरसिकोल्लासभागवतेउत्तरार्द्धसपर्वमहोत्सवसहितश्रीषमवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथवर्षा ॥दो०॥ इमि विहरत घनश्यामके वृन्दावन अभिराम ।वरषाऋतु आवतभई हरषाकरि छविधाम ॥ १ ॥ सो० ॥सावन भादों नाम बरषाके द्वै नामहैं ॥ सब जगके अभिराम वृन्दाबनवासिन सुखद ॥ १ ॥ क० ॥ कारेघन भारेते दँतारे मतवारे दीह गाजत अपारे सोई डंकादेत दीपहैं । चातक कलापी गुणी गावैं सूत बन्दी वृंद बिमल बलाका केतु यश कोउदीपहैं ॥ गिरिधरदास धनुइन्द्र सोई लीये करवान बारिधाराधरे सुखद समीप हैं । जल बलछायो अधिकायो मनभायो आयो व्रज मैं व्रजेश काज पावस महीपहैं ॥ १ ॥ बक दरसात हंस ऐसे सरसात सोई दादुरकी धुनि पाठ वेदतत्त्व ज्ञाताको । कनक कमण्डलसी बीजुरी बनी है इन्द्रधनु मनिहार बन्यो जगजनि दाता को ॥ गिरिधरदास जगजीवनि की सृष्टि करे भजें हरे पाप ताप यमुना के भ्राता को । पावस प्रसन्न ह्वै परमपरमा सौं पगो आयोरी व्रजहिं वेषधरिके बिधाताको ॥ २ ॥ कारे घन ये न है न गज को चरम अहै मेघको न नाद बाद डमरू विसेस सों । जींगन की चमक ये न लोचन फिरनि सोहै बातशीत-दाई ना बरद बरबेस सों ॥ बिज्जुछटा है न जटा यह गिरिधर दास बकन की माल नहीं सोहे गरे सेस सों । आयो व्रजदेस है न पावस बिसेस यह आयो है महेस व्रज मिलिबे व्रजेस सों ॥ ३ ॥ चातक द्विजनि सौं पढ़ाय मंत्र शोभ छाय बकन की पांति स्वच्छ अ-च्छत असेसहै ॥ इंद्र धनु पल्लव सुपंच बिज्जु हेम-युत. गिरिधरदास बायु बिधि उपदेसहै । घन घट

बीच वारिधारि चारिसागर को ल्याय व्योम मारगतैं आनँद असेसहैं ॥ मेरे जान पावस परबपाय आय आय करै सुरराज गिरिराज कोभिसेसहैं ॥ ४ ॥ वृन्दा-वन कुंजन मैं कूजत शिखंडी जहां तैसी घन घटा तहां अतिही सुहावती । कनक हिंडोरा बन्यो बनक अनूप जामैं मोतिनकी झालरैं सरस सरसावती ॥ गिरिधर-दास नैन्ही नैन्ही परति फुँहारें चारु गोरी चँहुओरन मलार राग गावती । दामिनी सुहाई घनश्याम कौं झुलावती ज्यों कामिनी सुहाई घनश्याम कौं झुलाव-ती ॥ ५ ॥ दो० ॥ भादौंमें हरिराम दोउ कराहिं शैल की सैल । जाहि जोय जग अघहरे सुमिरि मिटै मन मैल ॥ २ ॥ क० । घननको घोर तैसो निरझर झरै शेर बोलत कलापी लखि आनँद उमरिके । बेलिन के पातनतैं मोतीसी झरत बूंद फिरैं देव वृन्द तहां अंग मृग धरिके ॥ शोभ गिरिराज की निहारि गिरिधरदास करत विहारी जू बिहार मोदभरिके । एरी घनश्याम जनु भूलि व्योममारग कौं डोलत मगन नग नेह निज करिके ॥ ६ ॥ दो० ॥ इमि विहरत गिरिराज पै मोद भरे व्रजराज । संगलिये व्रजबालगण अरु बर बाल समाज ॥ ३ ॥ सावन भादों के तिहवार ॥ सावन शुक्-ला तीज को रचि हिंडोर बरवार । झुलवत हरि कौं हरषि अति करि करि विविध शिंगार ॥ ४ ॥ सावन शुक्ला पंचमी नागहिं पूजैंनारि । करिउत्सव बलदेव को पुनि पूजत हियधारि ॥ ५ ॥ स० ॥ अंगमनोभवके अ-नुहार लखे घनसार लजात समूजा । अग्रेज श्री गि-

रिधारन को करमें हर मूसर धूसर दूजा ॥ अक्षत चंदन फूलन लै बर यमुना के जल तैं भरिकूजा । रूप निहारि निहारि सुप्रेम सनाम प्रनाम करैं करि पूजा ॥ १ ॥ दो० ॥ सावन सुदि एकादशी परम पवित्रा होय । हरिहिं पवित्रा तादिना पहिरावहिं सबकोय ॥ ६ ॥ स० ॥ सावन शुक्ल इकादशि के दिन गोकुल बाढ़यो अनंद रसाला । सूतकी शुद्ध पवित्र बनाय पवित्र सुरूप बिचित्र बिसाला ॥ कुंकुम के रँगमैं रंगि के गिरिधारन कौं पहिरावहिंबाला । मानहुँ वे गरनावतिहैं मनमोहन के अनुराग सुमाला ॥ २ ॥ दो० ॥ सं० ॥ सावन की पूनो बिषै यमुना तटजुरि छिप्र । वेद मंत्रतें न्हाय के करत श्रावणी विप्र ॥ ७ ॥ रक्षा करिराखे जगत तातें राखी जोय । ताहि बँधावत द्विजनितैं हरि बलदाऊ सोय ॥ ८ ॥ गिरिधर ॥ भादौं कृष्ण अष्टमी कृष्ण जनम दिनसोय । तादिन गोकुल घरन घर महा महोत्सव होय ॥ ९ ॥क०॥ करैं गान रंभासी रँगीली बधू धाम धाम बार बार बारबधू नाच सरसात है । घोषकी गलीन मैं सुमंगल को घोष फैल्यो तैसो दूध दधिको सुपंक अधिकात है ॥ गिरिधरदास शोभ गोकुलकी कहै कौन बानी रहिजात नैन निरखै सिरातहै । आज नँद नंदको जनम दिनहैरी सखी नंदबर मंदिरमैं अनंद दरशात है ॥ ७ ॥ दो० ॥ भादों सित गणराज तिथि निरखहिं नारि सशंक । जामैं कोउ बिधि लालसौं लागे मोहिं कलंक ॥ १० ॥ स० ॥ गोकुलकी अबला मनमैं गिरिधारन कौं बर ध्यान बसावैं । जामैं कोऊ बिधि नैन लगैं मनमैं

तदबीर अनेक उपावैं ॥ भादौंकी चौथि अटा चढ़िके शशि सों बढ़िके यह बैन सुनावैं । पूजों सशंकहौं तोहिं अशंक कलंक जो गोप मयंक सौं लावैं ॥ ३ ॥ दो० ॥ भादों शुक्ला पंचमी रामजनम दिन जानि । करहिं महा मंगल तिया व्रज घरघर सुखदानि ॥ ११ ॥ भादों शुक्ला अष्टमी प्रियाजनम दिन सोय । तादिन बरसाने नगर घरघर मंगल होय ॥ १२ ॥ जनोपदेश ॥ अनाथ ॥ छप्पै ॥ चतुराननसम बुद्धि बिदित जो होहिं कोटिधर। एकएकधर प्रतिन शीश जो होहिं कोटिबर ॥ शीश शीश प्रति बदन कोटि करतार बनावे । बदन बदन प्रति मांह रसन करतार लगावे ॥ रसन रसन प्रति शारदा कोटि बैठि बानी कहहिं । तउ जन अनाथ के नाथकी महिमा कबहुँ न कहि सकहिं ॥ १ ॥ इति श्री मदादिगौड़दुर्ग्गागर्भजश्रीकाशीनाथात्मजविप्रबल्लभ-बिप्रकृतेरसिकोल्लासभागवतेउत्तरार्द्धेसपर्व्वमहोत्सवस-हितप्राविट्वर्णनोनामषष्ठोऽव्यापारः ॥ ६ ॥

अथ शरद् बर्णन ॥ दो० ॥ व्रज विलसत व्रजचंद के सुंदर आनँद ओक ॥ शरदमयी ऋतु आवती दूरि करन जग शोक ॥ सोरठा ॥ आश्विन कातिक दोय मास शरदऋतु के अहैं ॥ हरिहिं सुखद सुठि सोय वृन्दावन विहरत सदा ॥ १ ॥ नागर० ॥ क० ॥ साँझी फूल लैन सुखदैन मन नैननको श्यामजू के साथ यूथ युवतिन के धायेहैं । चलत अधिक छबि छाजत छबी-लिनके अंगन सुरंगन के पट फहराये हैं ॥ नागर नि-शान नाद नूपुर समूह बाजें अंगकी सुबासनि भँवर

अभिआये हैं। वृन्दावन माँझ सुनि इनके सरस गान इन्हें घनश्यामैं जानि मोर कुहुकाये हैं॥ १॥ दोहा॥ साँझी सुन्दर फूलकी विरचे द्वार कुवार। तिन सँग गिरिधर दासतहँ मोहन करत विहार॥ २॥ फूलि रही नवमाल्लिका पारिजात तरु वृन्द। निरखि परम प्रमुदित भये श्रीवृन्दावन चंद॥ ३॥ सं०॥ वृन्दावन की शोभ अरु शरद चांदिनी चंद। निरखि रास रुचि ह्वैगई यदपि सुआनँदकंद॥ ४॥ जुन्हाई वर्णन॥ पद-माकर॥ क०॥ तालन पै ताल पै तमालन पै मालनपै वृन्दावन वीथिन विहार बंशीबटपै। कहै पदमाकर अखण्ड रास मण्डल पै मण्डित उमण्डि महा कालिं-दीके तटपै॥ छितिपर छानपर छाजत छतानपर ललित लतानपर लाड़िली की लटपै। छाई भली छाई यह शरद जुन्हाई जेहिंपाई छवि आजहीं कन्हाई के मुकट पै॥ २॥ सं०॥ दोहा॥ मोहन मोहन मन्त्रपढ़ि मुरली दई बजाय॥ सुनि गोपी आवत भई घरबर बार बि-हाय॥ ५॥ सो सुनि सुरवर मुनिनके तन मन गये हि-राय॥ सोऊ तहँ आवत भये गोपीरूप विधाय॥ ६॥ अन्य॥ क०॥ एकै उठिधाई दौरि पौरिमें सुआई एकै एकै घबराई सुनि बंशी बंशीधरकी। एकै द्वार छाई एकै संगही सिधाई एकै एकै बिसराई सुधि देह नेह धरकी॥ एकै ना धरतधीर एकै ना सँभारें चीर एकन के छाती पीर दावानल भरकी॥ एकै कहैं बाजी एकै कहैं कहां बाजी एकै कहैं बाजी बंशी चंचल चतुरकी॥ ३॥ कस्यापि॥ शयानाहस्ताब्जे मृदुलमुपधायाधरतलं हरे

र्मन्दान्दोलालकततिभिराबीजिततनुः । दधानासाश ङ्कांगुलिभिरपरावाहनविधिन्तथाप्येषाबंशी नहिंभजति निद्रालुत्वमपि ॥ १ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ वृन्दावनके मध्य वे जुरीं आय इकठौर। तहँ जुरिकरि तेहि सुरनको करन लगीं सब गौर ॥ ७ ॥ ३३ ॥ चेतन सुनि जड़होत हैं जड़ चेतन ह्वै जात । री बंशी वरश्यामकी याकी अद्भुत बात ॥ ८ ॥ विहारी ॥ अधर धरत हरिके परत ओठ डीठपट जोति । हरित बाँसकी बाँसुरी इन्द्रधनुष द्युति होति ॥ ९ ॥ अन्य ॥ मधुर सुधारस बाँसुरी अधरधरी नँदलाल। व्रजबाला रसबसभईं सुनतहि शब्द रसाल ॥ १० ॥ तहँ ललितायों कहत भइ अरी सखी सुधि हैन। मनमोहनकी बाँसुरी सुनि मैं भई अचैन ॥ ११ ॥ सवैया ॥ बंशी जो बजी नँद नंदनकी सुनिके घनघोर हिये खटकी। कुलकानि तजी जुचली बनको कछु सूझत नाहिं फिरें भटकी ॥ सुन भागिन भेंट भई सजनी सुधि भूलिगई अपने घटकी। छवि देखि दया नटकी अटकी भटकी चट चौपट में पटकी ॥ १ ॥ पुनः ॥ घनश्याम घटासी घटासी दुकूल प्रकाशत औध बिलाजतहीं। बिन देखे छमासी छमासी पला उपहाँसी की नासी च काजतहीं॥ मृदुहाँसी कि फाँसी में फाँसी फिरैं सुखमासी उदासी न साजतहीं ॥ विष बाँसी ये गाँसी शिखासी हिये लगे बंसी बिसासी के बाजतहीं ॥ २ ॥ पुनः ॥ बाँसुरिया हित फूंकिगई अरु फूंकि के मैनकी आग जगावत। बेगि रसातल बेधिगई उरबेधत और दया नहिं आवत॥ आपगई अरु औरन खोवत दई यह जाहिर है कह-

नावत ॥ ज्यों बड़ बंशन आप छुटी सखि त्यों बड़ बंशनि और छड़ावत ॥ ३ ॥ पुनः ॥ सं० ॥ मन्त्रहि मोयसुफूंकि दई तबहीं तसुझारगयो चहुँकोती । बल्लभ की बँसुरी नितही यह बातकरे अतिही अनहोती ॥ कानन तान सुनी जिनही तिनको विष आतिहि माँझहि गोती । बाँसहि में उपजी इहि आकरी बासुकिकी जनुहै यह पोती ॥ ४ ॥ दोहा ॥ हरि अधरनके पानकी जातैं मिटै पिआसु । सखि बंशी सों पूंछि करि करै सोई तपआसु ॥ १२ ॥ विशाखा बोली ॥ अहो बाँसकी बाँसुरी तैं तप कीन्ह्यों कौन । अधर सुधा पियको पिये हम तलफत बिचभौन ॥ १३ ॥ सं ॥ क० ॥ तपको बयान अबकान दै सुनोरी आली ताते वनमाली निज करनि करेरहैं । कहैं विप्र बल्लभ मैं ठाढ़ी एक पावन ते घाम शीत बर्षा ये सहत अरेरहैं ॥ कुल तज्यो मूलतज्यो शाखातजी पत्रतजे तपनि तपायतन लोहन जरेरहैं । अंगअंग छिद्रित करायेअरी जाकेलिये क्योंन तब कान्ह मोहिं अधर धरेरहैं ॥ ४ ॥ प्रताप ॥ कान्हरा कल्यान गौरी केदारा हिंडोलतान सूहीराग मारू बजे मालवा धनासिरी । काफीऔ गंधार देव गूजरी मलार और ललित बिभासहूकी थोरीथोरी आसुरी ॥ सोरठसूहा अलाप भैरो भनेप्रताप सूधे नट गावै कछु आसहूकी आसुरी । थकित भये हैं मुनि मृगना चरे हैं तृण एते सुर मोहन बजाई ब्रज बांसुरी ॥ ५ ॥ अन्य ॥ सातसुर छवोराग रागिनी समेत गाय तीनग्राम घोर छवो बाइस रसाला है । भैरो मालकोस औ अलापत

हिंडोल मेघ सिरीराग दीपक ये परम रसालाहै ॥ न्यारे न्यारे नायकतें सोहत समीप बानी पांचपांच भारजातें एकएक आलाहै । गुनिनकी शाला सुनि मोहैं ब्रजबाला आज बांसुरी में लालाने बजाई रागमालाहै ॥ ६ ॥ राम ॥ एक बार बांसुरी बजाई बन बंशीधर बारिधकों बारिथक्यो व्योम बरबरमें । यामएक यमुनाके जलको प्रवाह थक्यो सलिल उमंगि आयो सूखे सरवरमें ॥ तरणिके तूरं थकिथकि कविरामभनै हंसपति हाथीपति मोहैं दरबरमें । सरिसरि गिरे जेते भरिभरि डारनतें हरेते पतौआ भये सूख तरुवर में ॥ ७ ॥ दो० ॥ सं० बासुकि तक्षकतें अधिक तो विष बंशी हाय । इनको विष गारुड़ि हरे तेरो हस्यो न जाय ॥ १४ ॥ चम्पकलता बोली ॥ अरी बावरी बांसुरी हरिमुख लगि मति गाज । ओठ अनूठे निजुठये जुठरावत बिनकाज ॥ १५ ॥ रसखानि ॥ स० ॥ मोरपखा शिर ऊपर राखिके गुंजकी माल हिये पहिरौंगी । ओढ़ि पिताम्बर लै लकुटी बन कुंजन गोधन संग फिरौंगी ॥ भावत तोहिं सही रसखानि पै तेरे कहे सब स्वांग करौंगी । पै मुरली मुरलीधरकी अधरा न धरी अधरा न धरौंगी ॥ ५ ॥ कौन ठगोरी भरी हरिआज बजाइ है बांसुरिया रसभीनी । तानसुनी जिनहीं तिनहीं तितही तब बुद्धि बिदाकरि दीनी ॥ घूमिगिरी खरिनंदके द्वारन बीर कहाकहुँ बाल प्रवीनी । या ब्रजमण्डल में रसखानि सो कौनभटू जो लटूनहिं कीनी ॥ ६ ॥ सुन्दर ॥ कानमें तेरी जो तानपरी तबतें वे सोहातिहैं तेरिये बातें । लाजतजी गृहकाज

महादुख सुन्दर चाव चलैं चहुँघातैं ॥ एरी बिसासिनि बांसुरिया अब फेरि कियो कह चाहत कातैं । मैं उतरी सबके मनते पै न तू उतरी हरिके अधरातैं ॥ ७ ॥ ठाकुर ॥ अरुभीमहरें सुमनोजके ओजनि फौज निहारिये साननमें । रसखानि ठगोरीसी डारिठगी उहि डारिकछू मुसक्यानन में ॥ ठग ठाकुर ठाढ़े भलेढिगहौ अबला जु बचैं इन प्राननमें । बरु मारिये बाननहींते गुपाल न मारिये बांसुरी ताननमें ॥ ८ ॥ सं० ॥ दो० ॥ बंशी नागिन के डसे कोऊ न सखी उपाय । हरिके हियतें हिय लगै तब याको विषजाय ॥ १६ ॥ चन्द्रकांता सखी बोली ॥ आली कालीते अधिक बंशी विष उतपात। वह काटेतें चढ़तहै यह फूँके चढ़िजात ॥ १७ ॥ ग्वाल॥ क० ॥ याकोरूप रंग सब सुन्दर सरिस सोहैं वाकोबदरंग औ भयावनोही भेशहै । यह तो अनेकनको दूरही ते डसिडारे वह डसै एकै अंग छूकै एक देशहै ॥ ग्वाल भरवैया याको ताकियत तूहीएक वाके भरवैयनको चहुँघा प्रवेशहै । एतेगुण जादें तेरीबंशी बीच वनमाली यातें विषझाली यह व्यालीतें विशेशहै ॥ १८ ॥ और विष जेते तेते प्राणके हरैयाहोत वंशीके डसेकी कभूं जाय ना लहरहै । सुनतेही एकसंग रोमरोम रचिजात जोमजारि डारे पारे बेकली गहरहै ॥ ग्वालकवि लाल तोसों जोरिकर पूछतहौं सांच कहिदीजै यों जो मोपर महर है । बांसमें कि बेधमें कि ओठमें कि फूंकमें कि आंगुरींकी दाबमें कि धुनिमें जहरहै ॥ १६ ॥ मोहनकी बांसुरी भरीहै विषजासुरी लगीहै पीर पांसुरी कहौंगी

पीर कासुरी । करीहै निज दासुरी बँधाइ प्रेम फांसुरी सहैगो कौन गासुरी लहौंगी कुलहासुरी ॥ तवाई तन बांसुरी बजाई घन तासुरी करीरी लाज नासुरी न भावे गृहबांसुरी । बुझावै कौन कासुरी कहैंगी जो पचासुरी न दूजो मन आसुरी करेगी कहा सासुरी ॥ २० ॥ देव ॥ भूल्यो खानपान भूल्यो पटपरिधान सब लोगनको भूलि गयो बास औ निवासुरी । चकिरहीं गैयां चारोचोंचनि चिरैयांदाबि चितवनिचलचखचेतचित नासुरी ॥ द्वै घरी भरीसीहै परीसीवृषभानजाई जीवत जनावै देवआवै दृग आसुरी । कान्ह रसकैसेंकै छड़ाय लेरी मेरीबीर कबकी बिसासिनी बगारे बिसबासुरी ॥ २१ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ कालकूटको बिषअरी शिवपीयो सुखपाय । यांबशीको शब्द बिष शिवहू पै न सहाय ॥ १८ ॥ महादेवीसखी बोली ॥ अरी क्षमाकर मुरलिया परत तिहारे पाँय । सुनि सुनि तेरे शब्दकों दुखी होत हम हाय ॥ १९ ॥ सवैया ॥ बसुरी यह और न ठौर नहीं इन गांवन बेचिय गोरसुरी । रसुरी न भजै कुललाजबधू बिरहानल छेदत है पँसुरी ॥ पसुरी तृनखाय न पानी पियें हम मानुष कै कै करै कसुरी । कसुरी न भजो गिरिधारी कहीन तो और बजै ब्रजमें बँसुरी ॥ ९ ॥ बाँसुरी बनीहै जाकी बनी सुरताके करै तन औ मन गाँसुरी । गाँसुरी औ असुरी- न को चेतनहीं कहा छीन करै अतिमासुरी ॥ मासुरी एकोनहीं सुख बीतत लावत कौन सुगंध सुबासुरी । बासुरी कैसे बनै व्रज मैं रसनायक दारुणहै इक बाँसु री ॥ १० ॥ बर्जाहै तो आज कलंक लग्यो सुनिके वृष-

भानकुमारि न जीहैं। न जीहैं कदाचित कामिनि कोउ जो कानमैं तान अचानक पी हैं ॥ पी हैं त्रिदेश सँदेशन पावत मेरिहूं देह को मैन सजी हैं ॥ सजी हैं तो मेरा कहा बशहै बिसबासिनि बाँसुरी फेर बजी हैं ॥ ११ ॥ सं० ॥ बजीहै सो आज सही सजनी रजनी दुख दारुण दोष सजी है ॥ सजीहै सनाहन साजन हेत सुकाम की सैनन ऐन गजी है ॥ गजी है तो याकोसुने अबरी ढिग बल्लभकी रमनीहु न जीहैं ॥ न जीहैं कहूँ कोउ कामिनि जो कहिं भामिनि बाँसुरी फेर बजी हैं ॥ १२॥ दो० ॥ काह करों कासों कहौं काके जाऊँ तीर ॥ नागिनि बंशी को डस्यो जो टारे विषपीर ॥ २० ॥ प्रिया जी को वचन ॥ विहारीदास ॥ कितीन गोकुल कुलवधू काहिन केहिसिख दीन ॥ कौनेतजी न कुलगली ह्वै मुरली सुरलीन ॥ २१ ॥ क० ॥ एक समै राधाप्यारी बैठीही सखिन संग रूप के प्रकाश बढ़ी रसही के हेत में ॥ वाही समै बाँसुरी की भनक परी है कान तान सुनि मारि जक रही ह्वै अचेत में ॥ ससकि ससकि प्यारी उससि उसासैं लेत कौन कहै बात मनगयो सो सक्रेतमैं । कहै सूरदास फिर हायमारी कहि यह बाँसुरी बजीहै कहूँ कुंजके निकेतमैं ॥ २२ ॥ एक ओर ब्यजन ढुरावती चतुर नारि दूजी ओर सखी लिये झारी जल पानकी । पीछेते खवासिनी खवावें खोलि खोलि पान राधे मुखलाली है चटक तरितानकी ॥ एते माँझ बाँसुरी बजाई मनमोहन ने आयगई सुधि तबै कुंजके लतान की । बाँयें गिरी नीरझारी दाहिने समीरझारी पीछे गिरी

पानवारी आगे वृषभानकी ॥ २३ ॥ अनूपरूप गातही सखी सरूप साथही कपूर पानखातही सरूपके गुमानमैं। कहीं प्रबीन श्यामजी बजाय बाँसुरी सजी बसंतरागमैं बजी परी सोतान कानमैं ॥ गली चली न गेहकी सँभार नाहिं देहकी हितोरही सनेहकी सुधो रही न प्रानमैं। नैन नीरढारती न चीरहूँ सँभारती हरीहरी पुकारती हरीहरी लतानमैं ॥ २४ ॥ बाँसुरी सुनत मनजाय लाग्यो काननमैं बिरहा कुलित कलपरत न सोयने । गायन दुहावन क्वाँ चली कर दोहनी लै रहैं जहाँ श्याम तहाँ औरनकोयने ॥ हरिहेरें राधेतन राधे हेरें हरितन काम शरलगे प्रान घट मैं रहोयने। जोलौं वृषभानकी कुमारी घूमिगिरै भूमि तौलौं गिरिधारी गिरे घूमि गाय नोयने ॥ २५ ॥ दो० ॥ बाजे मति अब बाँसुरी माति पिय अधर न लाग ॥ अरी घरगई देत क्यों रोम रोम मैं आग ॥ २६ ॥ मधुमती सखी बोली ॥ तो कारण घरब्ररतज्यो सह्योजगतको घेर ॥ हम सों तोसों मुरलिया कौन जनम को बैर ॥ २३ ॥ सवैया ॥ हम योग जपैं नित मोहन कोंपैदई न दयो इतनो जसुरी ॥ निशि द्योसरहैं सँग लालन के छिनहीं छिनलै मुख गोरसुरी ॥ जिहि बाँसके पास बसै न कोऊ रसखानि भये तिहि के बसुरी । जुपै लालन की यह रीभ भई तो तुहीं व्रजमैं बसुरे बँसुरी॥१३॥ सुनती हौ कहा भजिजाहु घरे विधि जाहुगे बाँसुरी ताननमैं । यह बंशी निवाज भरी बिषकी बिषसी बगरावत प्राननमैं ॥ अबहीं सुधि भूलिहौ मेरी भटू भभरो जिन मीठीसी ताननमैं । कुलकानि

जो आपनी राखो चहो तब दैरहौ आँगुरी कानननमें ॥ एक दिना वह नंदको छोहरा वे व्रज धेनु चराय गयोहै। माधुरी तानन गोधन गायके बेनु बजाय रिझाय गयोहै ॥ वाहि दिना कछु टोनोकियो रसखानि हिये में समाय गयो है। कोउन काहुकी बातैं सुनै सिगरो व्रजबीर बिकाय गयोहै ॥ १५ ॥ एक समय मुरली धुनि में कहुँ नाम लियो रसखानि हमारो। वादिन तें यह बैरिनि सासु किती करि झांकन देत न द्वारो ॥ होत चवाव बलाय से ती अरि अंगलै भेंटिये तौलौं पियारो। बाट पर्यो अबहीं तट में हियरे अटक्यो पियरे पटवारो ॥ १६ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ नट ज्यों बाँग बजायके काढ़त बिलते ब्याल। त्यों सखि बेनु बजाय के काढ़ि लियो हियलाल ॥ २४ ॥ मालतीसखी उक्ति ॥ तू बंशी बटपारतैं सरस दिखाई देत । वह परगट बित हरतहै तू हिय जिय हरिलेत॥ २५ ॥ क० ॥ तेरे बिन दरश बिकलहौं मैं प्राणप्यारी जबहीं ते मोहन बजाई या उकति है। तबहीं तें वाको घर बाहर सोहात नाहिं बार बार धाय कुंज ओरही तकतिहै ॥ कहै हनुमान बूझे वेदन बतावे नाहिं बावरी लौं औरहीकी औरही बकति हैं। सासुरी न आवतपै आँसुरी बहत तान वाही बाँसुरी की पांसुरी में कसकतिहै ॥ २६ ॥ बावरीसी ह्वै रही न बोलत बोलाये बीर सूखिगो बदन भई मलिन महान है। भूषन बसन छाँड़े भूंख न लगत प्यास सोवति न रैनि जाने साँझ न बिहानहै॥ तू तो है सयान कहु कछुक उपायं हाय मेरो हनुमान भूल्यो सकल सयानहै । छाँड़ि

कुलकानि तज्यो चाहतहै प्रान आन कैसी बनपरी कान बाँसुरीकी तानहै ॥ २७ ॥ बैठी बनि बानिक सौं मानिक महल मध्य अंग अलबेली को अचानक थरक पर्‌यो। कहै पदमाकर तहांई तन तापन तें बारन तें मुकुता हजारन दरकि पर्‌यो । बालछतिया तें धक धक ना कढ़त मुख बकना कढ़त करककना सरकि पर्‌यो ॥ पाँसुरी पकरि रही सासुरी सँभारे कौन बाँसुरी बजत आँख आँसुरी ढरकि परयो ॥ २८ ॥ कुंजनमें बाँसुरी बजाई नँदनंदनजू बैधुनि सुनि सबके हियेके होशहरि गो । कहै गिरिधारी कुल नारिनकी भीरभई निपट अधीर पै न धीर नेक करिगो ॥ बिकसि कलीसी चली निकसि निकेतनतें नहीं व्रत नेमको विचार कछु करिगो। लाजको रसाला तजि दौरी व्रजबाला सब आज कुल मालाको दिवालासो निकरिगो ॥ २९ ॥ सं० ॥ दोहा ॥ बड़िशहुतें बंशी सरस अहो तिहारी कान्ह। हरत प्रान वह एकको यह व्रज युवतिन प्रान ॥ २६ ॥ इंदुमती सखी बोली ॥ बंशीहरि यह मीनकी बंसिहुतें सरसाय। ईचे तारु चुभि वह यहै खींचै चुभि हियहाय ॥ २७ ॥ सवैया ॥ कान्हकी बाँसुरी ऐसी बजी मनमेरो हर्‌यो सुधि ना रही प्रानकी । प्रानकी कौन गुमान करै अनुमान बिचार कियो सुरतानकी ॥ तानकी तेगलगी जियमें हियमें अति शोचकरे वृषभानकी । भानकी भौनको भूली फिरे जबतें परीकानमें बाँसुरी कान्हकी ॥ २८ ॥ सासुरी लेतरह्यो नाहिं सासुरी तू पुनि तू नाहिं छांड़तके री। आसुरी आँखिनहूतें गिरै पसुखाति न घासुरीकेतक

टेरो ॥ हासुरी लोकके कौन डरै बिन दाम कियो सबरो ब्रजचेरो। गासुरी बोलके पासुरी बेधत नासुरी हूजियो बाँसुरी तेरो ॥ १८ ॥ सूरत॥ वे पग अंधन हैं मगदा चलिबोईन नीकनहूको निवास्यो। वे चलिबास बसावत हैं इन बास उजार कुबासमें पास्यो ॥ सूरतथाह बतावत वे इन प्रेम अथाहके बारिधि डास्यो। देखहुरी हरिकी बसुरी इन कैसे सुबंशको बंश बिगास्यो ॥ २६ ॥ लागि रहैं मुख लालनके कबहूँ कटि लागिरहैं चितचाइन। नाद औ वेदकी आदि जनी रस स्वाद नवीन लहैरी सुभाइन ॥ राममें तू रसराशि सकेलत पेलतहै तिय लाजहि पाइन। तो सम और न औरकी तू सम तोसी तुहीं मुरली सुखदाइन ॥ २६ ॥ दोहा ॥ सं० ॥ एरी बंशी श्यामकी तोहिं बिनवत परिपाँय॥ जब तोहिं बजवन चहत हरि तब किन रहत चुपाय ॥ २८ ॥ दमयंती सखी बोली ॥ भइ अभिमानी मुरलिया करी सोहागिन श्याम॥ अरी चलाये सखिनपै भले चामके दाम॥ ३०॥ क० ॥ भईहै वियोगी बाल भोगी होत हैं बिहाल ताल रस भोगी भयो योगी तजिकै तुरी। तपनसुताकोरी त्यों तपन लग्यो है नीर भूलिके अपनपौ की गति वेगतै मुरी ॥ शारद की भारद अशारद भई है मति बीनकी दुराय के प्रवीननदरी भैं दुरी। भूली सब बांसुरीसुनी है जब बाँसुरीकौं आसुरीसरोकिसकै आसुरीहू आसुरी॥ ३१॥ छोकरा अहीरको सो पीर पर जाने नाहिं वीर कर वांके त्यों कलंकिनी अरी रहै। बोल सुनि वाको लोक लाज कुलकानि भाजि लोकालोकन्दर के अन्दर दुरी

रहै॥ अधर सधर धरि बाहिरी बजावे जब धृति मति बुद्धि तब थिर न घरी रहै। याते ब्रजमण्डल में बसिबो कठिन आली पतिव्रत राखिबेकी विपति परीरहै॥ ३१॥ ऐसो वदनारविंद भर्यो मकरंदजामें अधर मधुरबानी वेद भेद चारहै। तहां बैठ मुरली सुरन अवलीन ह्वैकै करै विपरीत यामें कौनधों विकारहै॥ एकै ब्रजबधू ते तौ सुरभि धरणिपरी एकै मरिगिरी तिन्हैं सुधि ना संभार है। व्यापे जड़ जंगम निशंक हित मेरेजान पूतना पयोधरके विषकी बयार है ॥ ३२ ॥ जलकी न घटभरै थलकी न कछुकरै मगकी न डगधरै खरी भरी सांसुरी। एक सुनि मोट भई एकै लोटपोट भई एकनके मुखपै उमँगि आयो आंसुरी ॥ एरी रसखानि कछु करिये उपाय नातो सब ब्रजबधुन को होत उपहांसुरी॥ सब वन ढुँढ़ाय बाँस डारिये कटाय वन उपजेगो बाँस न बजावैंगे बाँसुरी॥ ३३॥ दो०॥ जिते बेध इहि बाँसुरी तिते और करिदेत॥ निकसि जाय जब साँसुरी तब मिटिंजा यह मेव॥ ३२ ॥ क० ॥ जेते सुर लीने तेते छेद उरकीने औ जेती राग तेते दाग रोमरोम छीजिये। तान के तीखे जनु बानन चलाय देति चीरि चीरि अंगन तुनीर तन कीजिये॥ अंतर के सूनो घर सूनो करे शेखरयो पुनिपुनि बसत बसेरो वन लीजिये। हम ब्रज बसिहैं तो बाँसुरी बसे ना कान्ह बाँसुरी बसे तो आज बिदा हमैं दीजिये ॥ ३४ ॥ बाँसुरी की उक्ति सखिन प्रति॥ काहे को त्रिलग मेरी मांगत हौ ब्रजबधू बाँसुरी कहन लागी लालके अधर मैं। तज्यों कुल

मूल शाखा सोचन सुखाये हम और तजे पत्र परिवारहू की सरमैं॥ याहू परचाहि मेरो छेद्योहियो ठौर ठौरलोहकी शलाक सही आगहूतैंगरमैं। मोहन सुकवि देख्यो दुख विनाकाहू सुख सुखही में सुखचाहोबैठिरहौ घरमैं॥३५॥ याविधि बाँसुरी की कहनावत सुनि सखी सब लाड़िली जीते बोलत भई॥ दो० ॥ अहो लाड़िली जो कहो मुरली धरैं चुराय॥ लालन फिरि पावैं नहीं ऐसी ठौर दुराय॥ ३१ ॥ धरी उरोजनि मांहि लै मुरली हरि की छीन॥ देखो या परबीन ने नई बनाई बीन॥ ३२ ॥ इहि विधि सखिन सखीनतें लीनी सखी चुराय॥ करते करलै करधरी मुरली कहूं दुराय॥३३॥ श्रीभगवान् की उक्ति श्रीलाड़िली जी प्रति॥ ए प्यारी तुव सखिन मिलि मुरली दई दुकाय॥ तिनपैं तैं मँगवायकै दीजै मोहिं दिवाय॥ ३४॥ श्रीप्यारीजीको वचन श्रीप्यारेलालजू के प्रति॥ है न सखी यह चोरटी अहो लाल चितचोर॥ धरि भूले जहँ बाँसुरी हरि हेरो तिहि ठौर॥ ३५ ॥ सखीन को वचन श्रीलालजीते ॥ क० ॥ कोऊ कहै बाल आज ब्रजको जवाल छूट्यो मुरली हिराई जहां लाल जाय हेरिये। कोऊ कहै आछो भयो वाहि जिन हेरो नाथ बाजि ब्रजबालन को लेय प्रान फेरिये ॥ कोऊ कहै एक यह बात मेरी मानि लीजे मिलै कहूँ जुपै तऊ ताहि न संकोरिये। कोऊ कहै अहो अब वल्लभ सरसतान बाँसुरी अधर धरि कान्ह क्यों न टेरिये ॥ ३६ ॥ श्रीलाल जी गोपिन के बैन या प्रकार सुनि श्रीप्यारीजी सों यों कह्यो ॥ दो० ॥ हे प्यारी तूँ नहिं सुनत कहे

सखिन के बैन ॥ एढ़े टेढ़े तो निकट बकत कछूक डरैन ॥ ३६ ॥ जपत रहत प्रति सासुरी तुव प्रकासुरी नाँव ॥ बसत हीय तू तासुरी पर्‌यो बाँसुरी नाँव ॥ ३७ ॥ ररत रहत निशि बासरी प्यारी तो गुणग्राम ॥ तातें धर्‌यो सुबाँसुरी एरी याको नाम ॥ ३७ ॥ यातें मोहिं प्यारी लगी अधरन धरी रमाय ॥ तुव सुमिरन तिहि मधि करौं तातें देहु मँगाय ॥ ३८ ॥ वाके संग ह्वै दासुरी जपत अधर धरि तोहिं ॥ प्यारी दै तू खासरी बंशी गई सुमोहिं ॥ ३९ ॥ प्रेमसरस इमि वचन सुनि मुरली दई मँगाय ॥ मिलत मिले दोउ परसपर हरि राधा मुसुक्याय ॥ ४० ॥ हरि राधा के देवता राधा हरिकी देव ॥ कहत वेद चारो यहै यामें तनक न भेव ॥ ४१ ॥ काहू नागरी सखीकी उक्ति ॥ नागर ॥ स० ॥ स्वामिनिके नित नाम रट्यो करै खोवै नहीं खिन दुर्लभ श्वासन । बोलि लै जातरी प्रीतमके ढिग काम कुतूहलपुंज प्रकासन ॥ नागरको मन हाथ लिये सुसदा हियरामें बढ़ावै हुलासन । मोहन की मुरली यह नाहिंन है अलि राधा की खासी खवासन ॥ २८ ॥ सं० ॥ दो० ॥ इमि हरिके मृदु बैन सुनि राधा पर्‌यो मान ॥ करन लगे तहँ रासबर राधा गोपी कान ॥ ४२ ॥ पदमाकर ॥ क० ॥ खनक चूरीन की त्यों ठनक मृदंगन की रुनुक झुनुक सुर नूपुरके जालको । कहै पदमाकर त्यों बाँसुरीकी धुनि मिलि रह्यो बँधि सरस सनाको एकताल को ॥ देखतैं बनत पै न कहत बनैरी कछु विविध विलास औ हुलास इह ख्याल को । चन्द छबि रास चांदिनीको परकास राधिका को मन्द हास रासमंडल गुपाल

को॥ ३७॥सं०॥ दो०॥गोपीगण संग राधिकहिं बढ़वत हियहि अनन्द। इमि वृन्दावन मध्य प्रभु बिहरत श्रीनँदनन्द॥ ४३॥ अथ शरदके तिहवार वर्णन॥ गिरिधरदास॥ दोहा॥ आश्विन सित प्रतिपद दिवस नवरातरकी आदि॥तादिन रासारंभहै बिहरत हरि रसस्वादि॥ ४६॥ सवैया॥ अंग अभ्यंग करै उठिप्रात नहात हमाममें आनँदभीने। अम्बर सुन्दर साजिसबै तन अम्बर चन्दनलाइनबीने। आश्विनकीपछली पड़वा दिन भूषण धारे शशी छबि छीने। रास बिलास प्रकास करैं गिरिधारन नारि हजारन लीने॥२४॥ दोहा॥ आश्विन सुदि दशमी सोई विजयादशमी होइ। तादिन जन पूजहिं शमी गोकुलके सबकोइ॥ ३५॥ धनतेरसिको धनहि सब पूजत ब्रज नरनारि॥ मंगलगीतन गायकरि मंगल दीपक बारि॥ ३६॥ सवैया॥ सब सुन्दर साज सजाइके मंदिर धारे मनोभवके रसको। गिरिधारन रंजन रंजन अंजन दै वरलोचन सारसको॥ शुचिसो अतिही रुचिसो भरिके कर में धरिके यमुनारसको। धन राधिका तू हरिसो धनपायकै पूजतिहै धनतेरसको॥३०॥ दोहा॥ कातिकबदि चौदस दिवस दुःखहरन अस्नान॥ करहिं नारि नर धारि सुख लाइ फुलेल सुजान॥४१॥ सवैया॥ रातिरहे कछु प्रातसमय उठिलावै सुगन्ध मनोहर गातहैं। गान करैं तिय मंगल गीत पुनीत अनेकन बाजे सुनातहैं॥चौकी चढ़े गिरिधारनजू शिरटीको कराइ महाहरषात हैं। कातिक चौदस को ब्रज में अघघातिक ऐसे नहान नहात हैं॥ ३१॥ दोहा॥ अमल

अमावस कातिकी होइ दिवारी सोइ॥ घर घर मंगल बाजने साज सजैं सब कोइ॥ ५० ॥ क० ॥ तैसोई महल नारि चहल पहल जहां तैसीही सजीहैं गीत गावनि गुवालाकी। तैसोई फरस जाहि देखिके हरस होत तैसीहै सुगन्ध फैली केसर रसाला की ॥ गिरिधरदास शोभा बरनी न जात कछू तैसीही हसनि है लसनि नन्दलाला की। तैसी दीपमाला तैसी बनी ब्रजबाला तैसी दिपति बिशाला कांति मनि चित्रशाला की ॥ ३८ ॥ सवैया ॥ सुन्दर साज सजे सुखके सब देखत लाजै पुरंदर जी में। सोहत हैं गिरिधारनजू वृषभानुसुता कहँ लीने सखीन में॥ ऐनक ऐन अनूप मसान बितान है बैठिक शोभामई में। लालभये नंदलाल सुबानिक बैठिकै मानिक की हटरी में ॥ ३९ ॥ सुन्दर दिव्य देवारि के द्योस गये गिरिधारन धाम प्रियाके। देखि जिन्हैं दबि काम रह्यो छबि भाषनको कबिके कुल थाके ॥ चौपरखेल रच्यो रमनीसों महारमनीय समीप दियाके। लाल मुखै ब्रजबाल लखै कोउ चाल न ख्याल में आवति ताके ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ कातिक सुदि परिवा दिवस पूजहिं सब गिरिराज। परब बारसिक प्रकट सो करन सरब सुख साज ॥ ५१ ॥ सवैया ॥ भोर दिवारी के नीके सबै ब्रजबासी गोबर्द्धन पूजन आये। भांति अनेकन अर्चत हैं शुचि शोभासजे रुचि साज सजाये ॥ सोहतहैं ब्रजनारिन में गिरिधारनजू अतिआनँद छाये। मानहुँ मेरु के पूजतहैं चपला सगरी घन संग लिवाये॥ ३४॥ दो० ॥ कातिक सुदि दुतिया दिवस भाईदूज कहाय ॥ बहिन

करहिं भाईन को तादिन तिलक सुभाय ॥५२॥ सवैया॥
रूप अनूपम सोहतहै नखसों शिखलों रतिरौनसों नीको।
आये भरे छबिसों भगिनी गृह हेरत चित्त हरैं रमनी
को ॥ मोद भये गिरिधारनजू धनदै करिकै मनुहार सु-
जीको । कातिक की दुतिया दिन आपुही कढ़ावत है
दुति सो भरोटीको ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ कातिक सुदि आठैं
प्रकट गोप अष्टमी सोइ ॥ ता दिन गोपूजन करैं गोप
वृन्द सब कोइ ॥ ५३ ॥ क० ॥ गिरिधरदास सुदि का-
तिक की अष्टमी को गिरिधरलाल लिये ग्वालके समू-
ह संग । पूंजि सुरसुरभीसी सुरभीको मोद उर सुभग
सिंगारी सबै भूषण भले सुरंग ॥ मणिनकी शृंग जोहिं
मोहत पतंग जिन्हें झूल मखतूलकी विचित्र धातु चि-
त्र अंग । चले गऊ चारत उचारत सुगीत मनो विजय
विचारत प्रचारत रनै अनंग ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ कातिक
नवमी शुक्ल की अक्षयपर्व युगादि ॥ ता दिन हरिपूजन
करैं ब्रजजन श्रुतिमरजादि ॥ ५४ ॥ सवैया ॥ कातिक
की नवमी नव नागरि धारि हिये मधि प्रीति अथोरी ।
साजि सुअम्बर भूषन अंग अदूषन देखि करैं चित
चोरी ॥ प्यारी सबै गिरिधारन की अँवरातरे जाय त्रि-
ठायके जोरी । राधिका और दमोदर को सहमोद हिये
धरि पूजहिं गोरी ॥ ३६ ॥ दो० ॥ कातिक सुदि एका-
दशी वरप्रबोधनी नाम ॥ तादिन देव जगावहीं ब्रज
घर घर नर बाम ॥ ५५ ॥ सवैया ॥ कुंज के मंदिर सुं-
दरसेजपैं मंडप इच्छुनको वर छावै । बेर बड़ी भई दे-
खियें जू कहि आनंद चित्त महाउपजावै ॥ कातिक

दूजी एकादशी के दिन ही गिरिधारन ध्यान बसावै। प्रातसमय पति आनंद साधिका राधिका आपनो देव जगावै ॥ ३७ ॥ सं० ॥ दो० ॥ बीत्यो चातर मास अब एहो श्रीघनश्याम ॥ खोलहु निज जन बैन सुनि नैन न मैन ललाम ॥ ५६ ॥ इति शरद ॥ मनोपदेश। थारामल ॥ क० ॥ श्वास के भरोसे गढ़ मासके निवास लयो आस मनमाहिं राखी भान न शरीराकी। बड़े बड़े शूर बीर गये देह गेह छोड़ रहीना निशानी अजू शाहरु वजीरा की ॥ एरे मन मेरे नँदनंदे मति भूले वह लेत खबर जड़ जंगम फकीराकी। कहै कवि थारामल सुमिरन कियेही फल एकएक जात पल लाख लाख हीराकी ॥ ४० ॥ इति श्रीमदादिगौड़दुर्ग्गार्भजश्रीकाशीनाथात्मजविप्रवल्लभविप्रकृतेरसिकोल्लासभागवतेउत्तरार्द्धे सपर्वमहोत्सववंशीलीलारासहित शरदृतुवर्णनोनामसप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥

अथ हेमन्त ॥ सं० ॥ दो० ॥ अगहन औरो पूस कहँ कहत सुकवि हेमन्त ॥ याके भयतें भीतह्वै सूरहु अति न तपन्त ॥ १ ॥ ठग ॥ क० ॥ मानिक महल बीच जटित कपाट तामें फरस गलीचन की सुखमा समंत में। तैसी गुलदारगद्दी गिलम उसीसा लसै ठग ठगि लेत मन देखत तुरंत में ॥ अम्बर अतर मृगमदतें सुबासि अंग राधिका सहित श्याम लसत हसंतमें। तरुनी तमोल लिये हँसती बिराजै जहां शीतहू सभीत तहां रहत हिमंत में ॥ १ ॥ हेमन्तके तेहवार ॥ सं० ॥ दो०॥ अगहनमें सब व्रतनको कर नरनारि अरम्भ॥ घरघरतें

जुरिजुरि युवति पूजहिं जाय कदंब ॥ हे कदम्ब वृजराज प्रिय यह हित चित सरसाय। तिहितर विप्रबधून युत पूजि जिमावत चाय ॥ ३ ॥ गिरिधर ॥ अरक मकरके होहिं जब अयन परब परमान ॥ तादिन नर नारी करहिं घृत खिचरी तिलदान ॥ ४ ॥ तिल मोदक चित्रान्न को करति यशोमति दान। जातें नित गोकुल बसहिं श्री घनश्याम सुजान ॥ ५ ॥ इति हेमन्त ॥ जनोपदेश ॥ सं० ॥ क० ॥ तातहै न मात है न सुत परिवार है न भाई औ भतीजा सब माया को पसार है। कहै विप्र वल्लभ मैं देश देश देशनि में घर घर घूमि देख्यो कोऊ नहिं यारहै ॥ देहहै न गेहहै न सुजन सनेह है न जहां जहां देख्यो तहां झूठको प्रचार है। असार संसारयामैं सार न लखात एक श्यामा अरु श्यामपद सेइबोई सारहै ॥ २॥ इति श्रीमदादिदुर्ग्गागर्भजश्रीकाशीनाथात्मजविप्रवल्लभविप्रकृते उत्तरार्द्धेसपर्व्वमहोत्सवसहितहेमन्तवर्णनोनाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ शिशिर ॥ गिरिधर ॥ दो० ॥ वृंदाबनआई शिशिर ऋतु अति शीत निधान। तदपि श्याम परभावतें होत बसन्त समान ॥ १ ॥ सं० । अहैं शिशिरके मास द्वै माघ फालगुन नाम । बिहरत तामें रस भरे ब्रज में श्यामा श्याम ॥ २ ॥ छाँड़ि सुधन चढ़ि मकरपैं भज्योसूरघबराय। लखि शिशिरहि फिर घट दुरयो लैकरि अनल सहाय ॥ ३ ॥ गिरिधर ॥ परि परिपाला माघमें रह्यो सबहिं थल छाय । मनहुँ सुयश ऋतुशिशिर को बगरयो चहुँ दिशि जाय ॥ ४ ॥ कहूँ कहूँ बोलन लगी

कोइलि तरुआसीन ॥ जनु आगम ऋतुराजके शिशिर बधाई कीन ॥ ५ ॥ कहुँ कहुँ सरसों देखिये फूली शिशिर नवीन। ऋतुपति आवत लखि मनहुँ बिपिन बिछावन कीन ॥ ६ ॥ माघ सुदी श्रीपंचमी मदन महोत्सवहोय। देत बधाई श्याम को तादिनरी सबकोय॥ ७॥ किशोर॥ सवैया॥ लिये करकञ्जन कञ्चनथार सजै तिनमें नव मंगल साज। उड़ावहि बीर अबीर गुलाल बिशाल रहे बहुबाजन बाज॥ जमायो किशोर मनोहरराग भरी अनुराग सवाँरि समाज। अली अलबेलि नवेली चली ब्रजराजे बसंत बधावन आज॥ १ ॥ सजसाज समाज सुहायो किये रहि राजि मनोहरतामें भली। निकसी निज मंदिर मंदिर तें बिकसी जनु कंचन कंजकली॥ कलगावें किशोर बहावें सुरंग रमावती गोकुलहूँ की गली॥ ब्रजबामेघनीरचनामेसनी घनश्यामे बसंत बँधावे चली ॥२॥ अन्य॥ भावेंभरी रस आवेंछकी सुछकावेंरी नैन सों नैनहि लावें। गावेंहिंडोल बजावें मृदंग हँसावें हँ-सैं सुरताल मिलावें॥ छावेंगुलाल रचावहिं रंग सखी सुखबीच सुगंधनि लावें। रीझि रिझावें अनंग जगावें बिहारी को प्यारीबसंतखेलावें॥ ३॥ जुरिसाँवरिगोरी सुआपसमें कहि होरी हरे बतरावतहैं। अरु कोऊ अ-बीर के झोरीभरैं कोउ केसरघोरि मँगावतहैं॥ बहु रोरी के लाल कमोरीभरैं छिरकैं हरिपै छिरकावतहैं। छबिछा-कि हसंत बसंतसमै नँदलाल गुलाल उड़ावतहैं॥ ४॥ जुरिखेलें तिया हरि होरी भले बहु बीन मृदंग बजै र-मकें। कर कुंकुमले रँग कंजमुखी पियके मुख लावन

को झमकैं ॥ तहँ लाल गुलालके धूँधर में बहु बालन की द्युतियों दमकैं। जनु सावनसाँझ ललाईके माँझ चहूँदिशितें चपला चमकैं ॥ ५ ॥ खेलिये फाग निशंक्कै आज मयंकमुखी कहै भाग हमारो । लेहु गुलाल दुहूँ करमैं पिचकारिन रंग हिये महँ मारो ॥ भावै तुम्हैं सो करो मोहिं लाल पै पांयपरों जिन घूंघटटारो । बीरकी सौं हम देखिहैं कैसे अबीर तौ आँखैं बचायकै डारो ॥ ६ ॥ भालपै लाल गुलाल गुलाल सों गेरि गरै गजरा अलबेलो।यौं बनि बानिक सों पदमाकर आय जु खेलन फागतो खेलो ॥ पैइकया छबि देखिबे के लिये मो बिनतीकै न झोरिन झेलो। रावरे रंग रँगी अँखियान मैं ए बलबीर अबीर न मेलो ॥ ७ ॥ क० ॥ खेलत बसंत ब्रज चंद नँदनंदजूसो बाजत मृदंग धुधुकार घन घूमि घूमि । नाचत नटति सुघराईकी समूहभरी तानकी तरंगनसौं रह्यो रस भूमि भूमि॥ फेर ऐसो दाँव कहां पायहोरी ग्वालिनीहो जैसी कछु यादिनभईहै ब्रज धूमि धूमि । सुंदर रसाल मनमोहन गुपालजूको साँवरो सलोनो मुख लीजियेरी चूमि चूमि ॥ १ ॥ गिरिधर दो० ॥ फागुन सुदि एकादशी कुंज नामनी जानि ॥ ता दिन कुंज बिहार हरिकरहिं हिये सुखमानि ॥ अन्य ॥ क० ॥ फूलेफूलहार उर शीशफूलफूल्यो शिर फूले फूले फूल बृंद गुही बेनी कारीसी । फूलेफूल कर्णफूल चंपकली फूली अंग फूली न समात लाजभारी बैसवारीसी ॥ फूले मुखकंज उरकंज फूले नैनकंज शोभाको सरोवर छबि फूउरंही भारीसी। दूरहितें देखे जब कुंजकेबिहारी

आली फूली वृषभानकी दुलारी फुलवारीसी ॥ २ ॥
गिरिधर ॥ स० ॥ जैसेलसै नवपल्लव आमके तैसे गुला-
ब लसे रुचिकारी । तैसिहि फूली चँबेली चहूँदिशि
तैसी सुगंध सुहाई निवारी ॥ तैसेबने गिरिधारनजू नव
तैसिही सोहति राधिकाप्यारी । तैसिहि केलि कलोल
करैं शुभ सुन्दर कुंजमें कुंजबिहारी ॥ ८ ॥ फागुनकी
उजियारि यकादशि देति बिनोद सुमोदकै पुंजै । गाव-
तीगीत बजावती नागरी ताल पखावज आवज रुंजै ॥
तैसेफिरैं अलिमैं गिरिधारन त्यों अलि वृंद चहूंदिशि
गुंजै । कामकलोलनि डोलनिमें बरकालिंदी कूल कदंब
की कुंजै ॥ ६ ॥ पद्माकर ॥ फूलनकेखंभा पाटपटलीसु
फूलनकी फूलनके फूँदने फँदे हैं लाल डोरेमें । कहैपद-
माकर बितानतने फूलनके फूलनकी झालरें त्यों झिल-
तीं झकोरेमें ॥ फूलरही फूलन सुफूल फुलवारी तहां
फूलही के फरश फबेहैं कुंजकोरेमें । फूलझरी फूलभरी
फूलजरीफूलनमें फूलऐसी झूलत सुफूलके हिंडोरेमें॥३॥
सं० ॥ दो०॥ फूलडोलपै दुहुँनकी लखिकरि डुलनि सु-
लोल । तिहिंसँग झूलतरी सखी मोमन मनहुं हिंडोल
॥ ६ ॥ तहां कुंजकी होली वर्णन ॥ स० ॥ वीरकवि ॥
कुंजगलीनअलीगनमें चलीआवती ती बृषभानदुलारी।
ताहि विलोकिके रंगभरे छलसों छिपके रहे कुंजबिहारी॥
कुंकुमघाल्यो उरोजनिको तकि पानि सरोज सो ताहि
निवारी । जानि हे बीर दशा उरआनि बजी वह एकही
हाथकी तारी ॥ १० ॥ अन्य ॥ गरजै डफ झांझ सुझि-
ल्लिनके गन बादर लाल गुलालकी झोरी । बूंदनकी

पिचकारिनसों भिंजवे हठिके हरि पीत पिछोरी ॥ कल कूजत कोकिल चातकके गन गाय रिझावत फाग गनोरी । सजि कुंजनमें मनमोहनसों जनु पावस पीतम खेलत होरी ॥ ११ ॥ लालहि घेरिरहीं ललना मनो हेम लता लपटानि तमालहि । मालहि टूटत जात न जानत लूटतहै रसरास रसालहि ॥ सालहि सौतिनके उरमें चलरी उठि बेगि दैताल उतालहि । तालहिदेति उठी ततकाल लगाय गुपालके गाल गुलालहि ॥ १२ ॥ क० ॥ सुरंग रंग चूनरी सुगंध रंग सोंभरी मनोअनंगकीछरी बनी ठनी सतानमैं । लखैं दृगै अनूपकी छटान काम भूपकी उठी तरंग रूपकी अलीरमीवतानमैं ॥ चलीशिंगारसाजिकैं सोहाग भागछाजिकैं दुरंगुपालभाजिकैं सुकुंजकीलतानमैं । मुठीगुलालसोंभरी निहारती घरी घरी हरी हरी पुकारती हरी हरी लतानमैं ॥ ४ ॥ राजाराम ॥ छाई छबिहीरनकी रतिजोति जीरनकी राजाराम चीरनकी चिलकारी अलकैं । अबला अहीरनकी पालीदधिछीरनकी सोनेसी शरीरन की गारीदेंदें बलकैं ॥ पिचकारीनीरनकी मारसमतीरन की देवदानचीरनकीमांगबेको ललकैं। सोंहैंकरें बीरनकी उड़त अबीरनकी मुखलाली बीरनकी बीरनकी झलकैं ॥ ५ ॥ बेनी कवि ॥ खेलनको होरी देवदारासी उतरि आई दीरघ दृगन देखिलागतीनपलकैं । खुलतदुकूल भुजमूल दरशत वर उन्नत उरोज हारहीरनके झलकैं ॥ बेनीकबि भूपर धरत पग मंद मंद आननके ऊपर अनूप छबि छलकैं । लाल लाल रंग भरी मदन तरंगभरी बा-

लभरी आनँद गुलाल भरी पलकैं ॥ ६ ॥ सेनाधिप ॥ दोऊ दल उमड़े निकुंज भौनरंग भूमि बालनके जाल लाल लियें ग्वाल बालकों । सेनाधिप कामबली बय सोहैं योबन त्यों हाव भाव सूरगहैं हाँसी करबाल कों ॥ उमड़्यो गुलाल करपूर धूर धूँधरिमें गोला कुंकुमाके चले ढीव्यो कोटढालकों । मारिके कटाक्ष पिचकारिन के बाननसों जीत्यो फाग संगरमें लंगर गुपालकों ॥ ७ ॥ प्यारी जू को वैभव बर्णन ॥ ग्वाल ॥ आली ललितादि लैकें चाली वृषभानुसुता फागकी बहाली लाली योबन नशाकीसब । तासबादलेनके झलाके झला झलकत चन्द्रके कलाकी चंचलाकी छबि थाकीतब ॥ ग्वाल कबि आई नंदगावँ की डगर पर जगर मगर जोति जागी है मजाकी जब । फैलको बकैया आगे मिलगो छबीलो छैल गैल रोंकि ठाढ़ो कहै सैलकरो ह्यांकी अब ॥८॥ जैसुख ॥ तुम्हैं लागिहोरी अबहींतैं अठिलात फिरो लाज करो लाला ना तो गाज परिजायगी । छूटै पिचकारी तो तिहारी सौं बिगरि जैहैं सारीजरतारी मेरी रंग भरिजायगी ॥ झूठीमूठी तानि तानि गावत हौ जैसुखजू गैयाके चरैया तैं बलैया न डेरायगी । नेक मेरी आंखिनमें परैगी गुलाल तौ तौ आज लालब्रजमें जवाल परिजायगी ॥ ९ ॥ शंभू ॥ स० ॥ खेलत फाग सोहागभरी सुथरी सुर अंगन तें सुकुमारिहै । जैये चलै अठिलैये उतै इतै कान्ह खड़ी बृषभान कुमारिहै ॥ शम्भु समूह गुलाब के शीशन ढारिके केसरि गारि त्रिगारिहै । पामरी पावड़े होति जहां तहां को ललां का-

मरी पै रँगडारिहै ॥ १३ ॥ खेलतहोरी किशोरी जहां जिन पै रति रंभा रती गई वारिकै। सोधों तहां साजये हरिजाय जहां जनि एकोऊ ग्वारि गँवारिकै ॥ शम्भु सरोज से पानि सुजान गहै पिचकारी गुलाल जो गारिकै। सोनो खराब करैगी लला कमरी पर केसरको रँग डारिकै ॥ १४ ॥ बागके बगर की होरी ॥ कालिदास ॥ क० ॥ बागके बगर अनुरागभरि खेलैं फाग खरी द्युतिभरी मनमोहन गोपालकी। कालिदास ललित ललोहीं छबि देखि अति नथ मुकतानकी कपोल उरमालकी ॥ राजकरि चन्द अरविन्दते न काज आज देखिबे को शोभा वाके बदन बिशालकी। बरुनी तिलक पर बिथुरी अलकपर भृकुटी पलक पर झलक गुलालकी ॥ १० ॥ नयन ॥ गावैं गीत झूमर बजावैं तालतारी दै दै काँध को नचावैं भरि आलिनि गुमान की। मदन उमंग रंग घोरि पिचकारिन तें अबिर उड़ावैं भई शोभ असमानकी ॥ होय एकठौरी सब दौरी कवि नैन कहैं रही न सँभार सारी तनी के तनानकी। गोरी गोरी सखी संग थोरी थोरी बैसनकी होरी होरी करत किशोरी वृषभानकी ॥ ११ ॥ आज नँदनन्द जू अनंद भरे खेलैं फाग कोटि चंद ते दुचन्द सोहै दुति भालकी। अभरन हीरन पै मानिक ललाई आई तैसी छबि छाई है बिशाल बनमाल की ॥ अबिर उड़ावैं मुठी मूठसी चलावैं एरी देखिये लुनाई नटनागर गोपालकी। सजै पीतपटपर मुरली लकुटपर मोर के मुकटपर गरद गुलालकी ॥ १२ ॥ कीरतिकिशोरी श्याम लखिभइ भोरी

गोरी होरी देखि आई कहूँ प्यारे बलबीर की । सारी जरतारीकी किनारी में गुलाल राजै तैसी छबिछाजै शीर काशमीर चीरकी ॥ हौरे हौरे आवैं मन्द मन्द सुरगावैं दोऊ मिलि मुसकावैं छबिधात्रेरी शरीरकी । नैन कोर ओरपर बरुनी के छोरपर भौंहन मरोरपर प्रभाहै अबीरकी ॥ १३ ॥ दोहा ॥ लाली मेरे लालकी जित देखौं तितलाल ॥ लाली देखन मैं गई है गइ लाल गुलाल ॥ १० ॥ हृदेश ॥ बासन बगीचे सींचे केसर उलीचे कीचे अतर सुगन्धनके परत फुहारेहैं। राजत हृदेश फाग मस्त मनमोहनपै उड़त गुलाब जनु जलधर भारेहैं ॥ बाल भाल मोतिनके भालपैं गुलाल धूर भासत रसाल छबि जाल चटकारेहैं। मानो पंचबानके शिंगारे रूप कारे भारे तारे आसमान के गुलाबी रंग धारेहैं ॥ १५ ॥ रघुनाथ स० ॥ फाग मची बरसाने के बाग सखी समता कहि जाय न वाकी । रीझि रही लखिहों रघुनाथ जुदेख रही बहुधा चहुँघाकी ॥ बाल गुपालपैं दौरि गुलाललै ऐसी लसी भरी रंग प्रभाकी । चारु तमाल के संगमकों भई जंगम बेली मनो कलताकी ॥ १६ ॥ ब्रजके डगरकी होरी ॥ ठाकुर ॥ स० ॥ आज भुकामुकी भेष छपायकैं लैगगरी जलकों डगरीती । जानिगई न कितेकऊवारतैं आनि जुरे जहां होरी धरीती ॥ ठाकुर दौरि परे मोहिं देखत भागि बची सु कछू सुघरीती । बीर जो द्वार किवार न देउरी तौ हरि हारन हाथ परीती ॥ १७ ॥ होरी अहीर को सांवरो छैल सुगन्ध लिये वृषभानु किसोरी । सोरी गयो यहि मारग ह्वै दये झांझ पखावजकी घनघोरी ॥

गोरीगुलाल अबीर गुलाब में बाँहगहे औकरे बरजो-
री । जोरी निहारत वारत प्रान न डारत रंगपुकारतहो-
री ॥ १८ ॥ पदमाकर ॥ ये नँदगाँवते आये यहाँ उत
आई सुता वह कौनहुँ ग्वालकी । त्योंपदमाकर होत
जुराजुरी दोउन फाग रची यह ख्यालकी ॥ दीठि चली
उनकी इनपै इनकी उनपै चलीमूठि उतालकी । दीठिसी
दीठिलगी इनके उनके लगी मूठिसीमूठि गुलालकी ॥
१९ ॥ ऐसेकढ़े गन गोपिनके तन मानो मनोभव भाव
से काढ़े । त्यों पदमाकर ग्वालनके डफ बाजि उठे गल
गाजत गाढ़े ॥ छाक छके छलहाइनमें छिक पावै न छैल
छिनो छबि बाढ़े । केसरलै मुखमींजबे को रस भीजत से
कर मींजत ठाढ़े ॥ २० ॥ ऊधम ऐसो मच्यो ब्रजमें सब
रंग तरंग उमंगनसींचे । त्यों पदमाकर छज्जन छातनि
छ्वै छिति छाजती केसर कीचे ॥ दैपिचकी भगि भाजि
तहाँ परयो पीछू गुपाल गुलाल उलीचे । एकही संग
यहाँ रपटे सखी ये भये ऊपर हौंभइ नीचे ॥ २१ ॥ फा-
गुनमें मधुबनसमै पदमाकर आइगे श्याम सँघाती ।
अंचल ऐंचि उचाय भुजो भरि मूठि गुलालकी ख्याल
सुहाती ॥ झूठिहूं दै झझकाइ तहाँ तियझाँकी झुकीझ-
झकी मदमाती । रूसिरही घरी आधकलौं तिय झारत
अंग निहारत छाती ॥२२॥ बड़भाग सुहागभरी हितसों
लहि फागमें राग न छायो करै । कबि लालगुलाल की
धूंधुरमें चख चंचल चारु चलायोकरै ॥ उभके झिझि-
कै झहराय झुकै सखि मंगनको मनभायो करै । छतिया
पर रंग परैतें तिया रति रंगते रंगसवायोकरै ॥ २३ ॥

पद्माकर ॥ गैलमें गायके गारीदई फिरि तारी दई औदई पिचकारी। त्यों पदमाकर मेलि मुठी इतपाय अकेली करी अधिकारी ॥ सौं हैं बबाकी करेहूं कहो यहि फागुको लेहूँगी दाँव बिहारी । काकबहूं मझिआइहोना तुम नंदकिशोर वो खोर हमारी ॥ २४ ॥ रघुनाथ ॥ कैसीढीठी लखी व्रजकी रघुनाथ कछू गनजात न गायो। खेलत फाग गली में अचानक आज गुवाले कहूं गहि पायो॥ कैसुधि गारीकी औपिचकारीकी बैरलियो यहि भाँति सहायो। जो कछु भायो सो वेषबनायो औ जो मन आयो सो नाच नचायो ॥ २५ ॥ ठाकुर ॥ नीरसों भीजिरहे रँगराय परी गली आये गुलाल उलीचमें। जायके ना इतैनाउते सुरही घिरिगे कान्हरे बालनगीच में ॥ ठाकुरकेतो बनाव कियो परदाँव चलैना सखीनके बीचमें। रंगभरी रसमाती गुवालि गुपालहि लै गिरि केसरकीचमें ॥ २६ ॥ सांकरी खोरिकी होरी ॥ ठग ॥ क० ॥ श्यामा श्यामजूको पेखि सांकरी गलीके बीच अलिनसकेलि घेरयो खेलही के ख्यालपैं। ठगठकुराइनतें ठाकुरठगायो अरी लेहु कि न दाँव जोकियो कदम डारपैं ॥ कनक कमोरिनमें रोरीभरि गोरीचली आवत अनंगरंग रंजित उतालपैं। झपटि लपटि बाल मलिकै गुलालगाल झोरिन अबीरलैलै मेलति गुपालपैं॥ १६॥ द्विजदेव॥ स० ॥ इतते बनिआई नई अबला उतते मनमोहनऊ उमहे। लखि साँकरी खोरि बिथोरि गुलाल बिशालदुहूँभुज जोरिरहे॥ द्विजदेव अभूतभईस्यह ताछिन देखे बनपै बने न कहे। कसिबोरिके चाहत जौलौं लला

रसकी सरिता महँ आपैबहे ॥ १७ ॥ रघुनाथ ॥ खेलत फागुलख्यो पिय प्यारीको ता सुखको उपमा केहिदीजै। देखतही बनिआवै भले रघुनाथ कहाहै जो वारनेकीजै॥ ज्यों ज्यों छबीली छकै पिचकारी लै एकलई यह दूसरी लीजै। त्यों त्यों छबीलो छकै छबि छाकसों हेरेहँसै न टरै खरी भीजै ॥१८॥ रैनसमैकी होरी० ॥ क० ॥ सांझहीसों खेलत रसिक रसभरी फाग भस्यो अनुराग राग गावैं रीझिपगिपगि। केसर गुलालसों लपटिरह्यो रघुनाथ रूप की ठगौरी डारिगोरी डारी ठगिठगि॥ भोडरके किनकाए लालकेबंदनपर निरखि जुन्हाई बीचऐसे लसें जगि जगि। मानो फूल्यो बारिज बिलोकि कलानिधि आली किरनै चलाई तेलुनाई रहीलगिलगि ॥ १९ ॥ शंभु ॥ स० ॥ फागुरच्यो नँद नंद प्रबीन बजै बहुबीन मृदंग रबाबैं। खेलतिहैं सुकुमारि तिया जे न भूषनहूँकी सकैसहिताबैं॥ श्वेत अबीरकी धूँधुरिमें बहुबालनकी बिलसैं मुखआबैं। चाँदनिमें चहुँओर मनो कहि शंभु बिराजिरहीं महताबैं॥ २७ ॥ फागरची वृषभानके द्वारदै गारिनग्वारि चहूँदिशिकूकै। आयजुरी उपजावती जे मनमोहनके मनमैन कीहूकै ॥ चातुर शंभु कहावतपै ब्रजसुंदरी सोहिरही जे भभूकै। जानी न जात मशाल औबाल गुपाल गुलाल चलावत चूकै॥ २८ ॥ पद्माकर ॥ क० ॥ गोकुलमें गोपिन गोबिंद संग खेली फाग रातभर प्रातसमै ऐसी छबि छलकै। देहभरी आलस कपोल रसरोरी भरे नींद भरे नैनन कछूक झपैंझलकै ॥ लालीभरे अधर बहालीभरे सुखबरं कबिपद्माकर बिलोके को न ललकै।

भाग भरे लाल औ सोहाग भरे सबअंग पीकभरी पलकैं अबीर भरी अलकैं ॥ २० ॥ गोलबंदी की होरी ॥ स० ॥ फागुनआयो सुहायो सबै रस कौतुक या ब्रजमें सरसैहै। गोपिनके गनमें चलिहो तुम गोपिनमें मनमोहन ऐहैं ॥ केसरसों रँगिहों उनके अँग लालरँगीलो तुम्हैं रँगिदैहैं। होरीके खेलमें मेरे मिलापको आपसों आय भले बनिजैहैं ॥ २९ ॥ द्विजदेव ॥ ढोल बजावती गावती गीत मचावती धूंधुरिधूरिके धारन। फेंटफतेकी कसे द्विजदेवजू चंचलता बश अंचल तारन ॥ औचकही बिजुरीसी जुरी दृग देखत मूँदिलये देखवारन। दामिनिसी घनश्यामहिं भेंटि गई गहिगोरी गुपालके हारन ॥ ३० ॥ पद्माकर ॥ आईहै खेलन फागयहां वृषभान पुरातें सखी सँगलीने। त्यों पद्माकर गावती गीत रिझावती भाव बताय नवीने ॥ कंचनकी पिचकी करमें लिये केसरके रँगसों अँगभीने। छोटीसी छाती छुटी अलकैं अतिबैसकी छोटी बड़ी परवीने ॥ ३१ ॥ खेलन में रसमेलनमें। गिरिधारन आज बने रँगराते। ताछन आयगयो अबला दल शेष प्रभा कहते सकुचाते ॥ आनन गोपतियानके मंडित बंदनतें तहँयों दरशातें। केसर केसर केसरसी रुह बेसबनेसबनैन सुहाते॥३२॥ फागुरची बलबीरके द्वार खरे फगुआर दोऊ दलवारे। साज सखी नटशा नटनागर बाजे मृदंग रबाब सितारे॥ रंग सहात्र अबीर भरे छुटे कुंकुमा केसरकी पिचकारे। केसरियां सरियां पहिरैं पर छोहरियां छरिया गहिमारें ॥ ३३ ॥ रघुनाथ ॥ कैसीहै ढीठिलख्यो यह गोपकी ओप

भरी सिगरी व्रजबालसों। काहूकी कानि न मानति हैं हठि ठानति हैं चपलापन चालसों ॥ मारिगई तबकी बढ़िकै रघुनाथ घुमायकै फूलकी मालसों। लालकी फेंटसों लैकै गुलाल लपेटिगई अबलालके गालसों॥३४॥ लै बलबीर अबीरकी मूठ दईअलबेली लली दृग दूपर। त्यों बनमालीपै आली चलावति लाली गुलालकी छ्वैरही भूपर ॥ लैपिचकारी बिहारी तहां अधिकारीकरी व्रज गोपबधू पर। पीन पयोधरतैं उचटी सो परी सब केसर लालके ऊपर ॥ ३५ ॥ पद्माकर॥ याअनुरागकी फाग लख्यो जंहां रागति राग किशोर किशोरी। त्यों पद्माकर घालि घली फिरि लालही लाल गुलालकी झोरी॥ जैसीकी तैसी रही पिचिकीकर काहुन केसर रंगमें बोरी। गोरिन के रँग भीजिगो सांवरो सांवरे के रंग भीजिगो गोरी ॥ ३६ ॥ खेलति फाग सोहाग भरी वृषभानलली भली भांति उमंगसों। घूंघट ओट किये रघुनाथ गई हरिपै छकि छूटि के संगसों ॥ चौंकि तिरीछी चितै मुसिक्याय फिरी पिचकारी लगायकै अंगसों। रीझिरहे वह भाव चितै अरु भीजिरहे वा रँगीले के रंगसों ॥ ३७॥गोरी किशोरी सुहोरीसी देहमें दामिनी की द्युति देति बिदारैं। नारिन वै सब नारिनकी तब नामके रूप अनूप निहारैं॥ भौंरसी भौंहन सोहिरही सुरके उरते न टरैं पलटारैं। भीजे मनो मुख अम्बुज के रस भौंर सुखावत पंख पसारैं॥ ३८॥ फागमची सिगरे वृजमें नभ बादर लाल गुलाल के छाये । नागरि औ मनमोहन नागर सामुहे होत चितै मुसुकाये॥ मान गयो छुटि मोद

भयो मन दोऊ सनेह भरे बतराये। मूठी अबीर भरी में सुगन्ध लगावनके मिसि सो लपटाये ॥ ३९ ॥ होरी के औसर गोरी सबै मिलि दौरी लख्यो जब कान्हर आयो। ह्वां इनमें निज भावती देखि रह्यो मनभावन को मन भायो॥ हाथ पसारे न सूझिपरे तहँ यों कछू लाल गुलाल उड़ायो। बाहन बाँधिहिये लगिके हरि राधिका के मुखसों मुख छ्वायो ॥ ४० ॥ ठाकुर ॥ होरी किशोरी किशोर की होत निहारिरहे दुहुँघासमुदाई । ओछलि छैलपर्खो अवनी बर या सुकुमारि शिरोमणिगाई॥ ठाकुर केसरि की पिचकारी अचानक आपनी आपचलाई। गोरीकी मूठ गुलालभरी गहिलीनी गुपालन घालन पाई ॥ ४१ ॥ गिरिधर ॥ अनुराग गुलाल उड़ाय सबै नंदलालहिये हरषावती हैं। गिरिधारन चोवा बन्यो रसराज समाज महाछबि छावती हैं॥ भरि रंग सुढंग उमंगमनी पिचकारी दृगै बरसावती हैं। ब्रजराजकुमार के साथ धमार में मारकी मार मचावती हैं ॥ ४२ ॥ क० ॥ होरी आज चोरीकी कहोरी कहामोरीदई लाड़िली पठई भुज गहन सहेली को। भोर भाय भावतो गहाय गयो जान बूझ आप गयो संग में मचायो रंग रेलीको ॥ ललिता लचायो लंक बांहदै बिशाखागरे डारि हिय हार हरि आनँद चमेली को। प्यारी लै गुलाल नंदलाल मुख मांड़ें जौलौं तौलौं छैल छ्वैगयो कपोल अलबेली को ॥ ४३ ॥ ठाकुर ॥ स० ॥ ठाढ़ी रहो न डगो न भगो अब देखिहो जो कछु खेलति ख्यालहि। गावनदैरी बजावनदै सजि आवनदै इतै नन्दके ला-

लहि ॥ ठाकुरहौं रँगिहौं रंगसो अँग ओढ़िहौं बीर अ-
बीर गुलालहि । धूंधर में धधकी में धमारमें हौं धसिकै
धरिलैहौं गुपालहि ॥ ४४ ॥ दो० ॥ करि गुलालसों धूँ-
धरित सकल ग्वालिनी ग्वाल । रोरी मीड़नके सुमि-
स गोरी गह्यो गुपाल ॥ रघुनाथ ॥ बाते लगाय सखान
ते न्यारोकै अ जु गह्यो वृषभानकिशोरी । केसरिसों त-
न मंजनकै दियो अंजन आंखिन में बरजोरी ॥ हैरघु-
नाथ कहा कहौं कौतुक प्यारे गोपाले बनायके गोरी ।
छोड़िदियो इतनो कहिकै बहुरो इत आइयो खेलन
होरी ॥ ४५ ॥ पद्माकर ॥ फागुके भीर अभीरन में गहि
गोबिंदै लैगई भीतरगोरी । भाई करी मनकी पद्मा-
कर ऊपर नाई गुलालकी भोरी ॥ छीन पितम्बर कम्ब-
रते सुबिदादई मींड़ि कपोलन रोरी । नैन नचाय कह्यो
मुसुकाय लला फिरि आइयो खेलन होरी ॥ ४६ ॥ ब्रज ॥
दो० ॥ प्यारी करतें पान लै दीन्हे सखी सुजान । प्रात
अवध बदिखेलकी राख्यो दुहुंदिशि मान ॥ १ ॥ सो० ॥
घर आये घनश्याम सखन संग गावत हँसत । गई प्रि-
या निजधाम सखिन सहित आनँदभरी ॥ स० ॥ खे-
लिके फाग फिरी जबसों तबसों दृग देखिये मैर मढ़्यो
सो । आवत है मुख जो सोबकै कछु खाहिं न पीवहिं भू-
तचढ़्योसो ॥ ऐसी दशा सबकी रघुनाथ रह्यो तपिकै
अँग आगि दढ़्योसो । डारगयो नँदलाल सखो ब्रज
बालपै मानो गुलालपढ़्योसो ॥ ४७ ॥ पद्माकर ॥ ऐसी न
देखी सुनी सजनी घनिबाढ़ति जाति वियोगकी बाधा ।
त्यों पद्माकर मोहनको तबतें कलहै न कछू पल आधा ॥

लाल गुलाल घलाघलमें दृग ठोकर दैगई रूपअगाधा। कैगई कैगई चेटकसी मन लैगई लैगई लैगई राधा ॥ ४८ ॥ चांरिन गोरिन को मिलिके इतआईही हाल गुवालि कहांकी। कोन बिलोकि रह्यो पद्माकर वा तियकी अवलोकनि बांकी ॥ बीर अबीर की धूँधुरिमें कछु फेरसो कै मुख फेरसो झाँकी। कैगई काटकरेजन की कतरे कतरे पतरे करिहाँकी ॥ ४९ ॥ खेलिके होरी गये यमुनातट सोहत फाग तहाँ सुखकारी। धाम जहाँ अभिराम बने तिन ओरतें दीठि टरै नहिं टारी ॥ रंगभरे अनुरागभरे छबि दंपतिकी मनमोहनवारी। बासर रैनि बिहारकरैं नितकुंजनमें बसिकुंजबिहारी ॥ ५० ॥ किशोर ॥ मंजु दृग अंजनसो रंजित नयन कंज गजमद गंजित किशोर बरचालसों। उफनात आनन पै अमल उदोत जोत जगमगहोत मग आभरन जाल सों ॥ मोती माँग माल सजि रोरी आड़ भाल रचि गोरी चली होरी खेलिबेको नँदलालसों। रंगबोरे बसन प्रसेदकन थोरे थोरे गोरे गोरेगंड युगमंडित गुलालसों ॥ ५१ ॥ रंगलाल रूपलाल अधर अधिकलाल दृगनके डोरालाल कोरलाल पलकैं। चीरलाल चूरी लाल लाल गुहे शीशबाल भाललाल मांगलाल बेंदीलाल झलकैं॥ करलाल पगलाल भूषन के नगलाल गुंजनकी माल लाल हिये बिचहलकैं। फूँदनाकी फीकलाल पान पीक लीकलाल एतेलाल लिये प्यारी लाललाल ललकैं ॥ ५२ ॥ सं० ॥ कीरति किशोरी बहुसंगलै सहस्रगोरी होरी मिसिआई नेक नैनन निरखनू। कहै विप्रवल्लभ त्यों

सखन समेततूहूं झोरिनमें अबिर गुलाल अबरखतू ॥ नवलकिशोरयों सुजाय नारिभीरनमें कुचऔकपोलनके रसकोपरखतू। नेह सरसाय दरसायके सरसरस चातुरी सुघन रंग आनँद बरखतू ॥ ५३॥ गिरिधर॥ कसे शीश फेंटाटेढ़ो लसे मोरपच्छ अच्छ भाल बनो मृगमद बिंदु मनभावतो । ओढ़े उपरैना दोऊ नैना बने बारिजसे सुंदर सुघर कर डफलै बजावतो ॥ गिरिधरदास झोरी भरिके गुलाललाल चहूँओर चारु पिचकारी बरसावतो। चलोलै अभीरनकी भीर बलबीर धीर फेटमें अबीर औ कबीर मुखगावतो ॥ ४४ ॥ पद्माकर ॥ झेला झेल झोरिनकी मूठिनकी मेला मेल रेला रेल रंगकी उमंगसरसतहै। कहे पदमाकर गवैयनकी ऐलपरी गैल गैल फैल फैल फागपरसतहै ॥ धूम धधकौअनकी धधकी बजत तामें ऐसो अति ऊधम अनोखो दरसतहै । ग्वालपर ग्वाल तेहि ग्वालपर नन्दलाल लाल नंदलाल पै गुलाल बरसतहै ॥ ५५ ॥ सं० ॥ आई दुहुँ ओरन तें गोल गोपगोपिनकी सिंधु जनु उमड़िदोय मिलत सुमहती। कहै विप्रवल्लभ ह्वाँ होनलगी झेलाझेल रंगन उमंगि अंग अंगनि उमहती॥ खैंचि जलयंत्रनितैं मेलैं ताकि बाननलौं जोरि मुखरेलैं खेलैं ख्याल खुलिलहती। चहूँओर चकित चितैबे चित चोरहीको चीरके चुरैया को गहन वे सुचहती ॥ ५६ ॥ पुनः ॥ कसिके निचोलैं बर बीरनकी ग्रोलैंकढ़ी आनँद अतोलैं भरी बोलन उमहती । कहै विप्रवल्लभ वे हेरें ब्रजवल्लभको कुंकुमके गोला ग्रोपगोलनपै बहती ॥ कहती फिरैं चीर चोरको

जो गहती बीर बदलोचुकायेबिन आज नहिं रहती। यों कहि सुगोपीगन पैठि गोप भीरन में गहिके गुपालहि नचायो नाच महती ॥ ५७॥ घूमि देखो घरिक धमारन की धूम देखो भूमि देखो भूषित छवावे छबि छबिके । कहै पदमाकर उमंग रंग सींच देखो केसरकी कीच जो रह्यो है ग्वालगबिकें ॥ उड़त गुलाल देखो ताननकी ताल देखो नाचत गुपाल देखो लैहो कहा दबिके। झेलि देखो झरिफ सकेलि देखो ऐसो मुख मेलि देखो मूठि खेलि देखो फाग फबिके ॥ ५८ ॥ उड़नि गुलाल की घमण्ड घन छायरह्यो पिचकी चलतधार रस बरसाई है। चांदनी शरद बुक्का चन्दमुख छबि फबी कांपत हेमंत भीजे दोऊ सुखदाई है ॥ धायके धरत पिय शीश के शिशिर चीर केसर शरीर ते बसंत दरसाई है। ग्रीषम गरूर बोल पियसों कहत नेही फागकी समाज कैधों छवो ऋतु आई है ॥ ५९ ॥ अन्य ॥ उतते कन्हाई लरिकाई के सबन लीन्हे कर चतुराई केलि होरीकी मचाई है। इत वृषभान की कुमारी सुकुमारी प्यारी आलीगन आली में रसालीसी सुहाई है ॥ ललना गुलालनकी लालन पै डारें मूठि चलै पिचकारी सुखकारी दुहुँ घाईहै। केसर सुरंगसाने नेह सरसाने डारैं मानो बरसाने बरसाने झरिलाई है ॥ ६० ॥ होरी होरी करत अबीर भरि झोरी लीन्हे खोरी खोरी फिरे ग्वालबाल समुदाई है । तामें नन्दलाल लालचीरा जरीदार धरे गरेमा बिशाल बनमालकी सुहाई है ॥ कीरति कि-शोरी संग गोरी यूथ यूथ मिलि भरि अनुराग फाग

श्याम ते मचाई है। केसर सुरंग साने नेह सरसाने डारैं मानो बरसाने बरसाने झरिलाई है॥ ६१॥
ईश॥ एकैकरैं ओटपट ओटकर ओटकरि एकै जे निघरघट चोटही बचावती। एकै निश्शंक अंक लागती सुबंक तजि एकै जे मयंकमुखी लंकहि लचावती॥ ईश कहे केसर गुलाब नीर घोरि घोरि जोरि जोरि मुण्ड रंग धूमही मचावती। देती गाल गुलचा गुलालहि लपेटि मुख दैकै करताली नन्दलालहि नचावती॥ ६२॥ कंचन पिचक लिये रंग सो हिचकमारे मुखपै दचक प्यारो नवल नवेलीको। सुन्दर गुलालके उड़ावे धूंध मेरी बीर रुचिसों लगावे चोवा कुच पै सहेलीको॥ कहत किशोर हल्ला करि करि भौर धावैं मुरक बचावैं बागगहैं बनबेली को। जौलौं वे बचावे को बिचारकरैं मेरी बीर तौलौं छैल चूमिगो कपोल अलबेलीको॥६३॥
गिरिधर॥ कीरति की जाई छाई होरी के गरूर भूरि बोली अबला मैं सब चारोओर धावो अबै। अबिर गुलाल बुक्का चन्दन कपूर धूर मृगमद अम्बरलै अम्बर उड़ावो अबै॥ गिरिधरदास पिचकारिनकी मारि करि धरोरी धरोरी यों कुलाहल मचावो अबै। बरसानेवारी रस बरसानेवारी कोऊ वृन्दावनवारी बनवारी बांधिलावो अबै॥ ६४॥ सुनत निदेश सो अशेश बनिता सुभेश चली एक एक गहि गरब अकरिकै। कबरी समेटि बांधी सबरी सुभग शुचि लहँगो जबर कस्यो लंक में जकरिकै॥ गिरिधरदास हाथ फूलकी छरी लै छाई छबिसों अतूल होरी होरी शोर करिकै। चपलासी

अतिसारहिको उर आन्यो। व्रर बल्लभ है न कोऊ जिहितैं सुकहै शुक शारद वेद पुरान्यो॥ यहिं भारत की जगती तल में निज जन्म लियेको भलो फलमान्यो। तनतो दहिहै बहिहै बसियै मनराधिका नाथके हाथ बिकान्यो॥ ७३॥ अन्य॥ क०॥ मैं तो हौं पतित आप पावनपतित नाथ पावनपतित हौ तो पातक हरोईगे। मैं तो महादीन आप दीनबंधु दीनानाथ दीनबंधु हौतो दया जीवमें धरोईगे॥ मैं तो हौं गरीब आप तारक गरीबनके तारकगरीबहौ तो बिरद बरोईगे। मेरीकरनीपै कछु मुकर न कीजै कान्ह करुणानिधानहौतो करुणाकरोईगे॥७४॥ दीनबन्धु दीनानाथ गोपीनाथरमानाथराधानाथ नाथह्वै सहाय कछु कीजिये। तात मात भ्रात कुल देव गुरु तूही नातो सब तोही ते विनय सुनि लीजिये॥ रीझिये रिझार देर कीजिये ना मेरीबार सुनिके पुकार अपनाय मोहिं लीजिये। हूजिये दयाल हाल साँवरे बिहारीलाल मेटि भवजाल बास वृन्दावन दीजिये॥ ७५॥ गिरि कीजै गोधन मयूर नव कुंजनको पशुकीजै एजू व्रजनन्द के बगरको। नर कीजै तौन जौन राधे राधे नाम रटे तट कीजै वरकूल कालिन्दी कगरको॥ इतने में जोई कछु कीजिये कुँवर कान्ह राखिये न आन फेर हठीके झगरको। गोपी पदपंकज पराग कीजै महाराज तृण कीजै रावरेई गोकुलनगरको॥ ७६॥ अन्य॥ दोहा॥ कदम कुंज ह्वैहौं कबै श्रीवृन्दावन माहँ। ललित किशोरी लाड़िले बिहरेंगे तिहि छाहँ॥ कब हौं सेवा कुंजमें ह्वैहौं श्याम तमाल। लतिका कर गहि बिरमिहैं ललित

लड़ैती लाल ॥ सुमनबाटिका बिपिन में ह्वैहौं कब हौं फूल। कोमल कर दोउ भावते धरिहैं बीनि दुकूल ॥ कालीदह के कूल कब ह्वैहौं त्रिविध समीर। युगल अंग अंग लागि के उड़िहै नूतन चीर ॥ मिलिहै कब अंग छार ह्वै श्रीव्रजवीथिन धूरि। परिहैं पदपंकज युगल मेरी जीवनमूरि ॥ कब गहवर की गलिन मैं फिरिहौं होय चकोर। युगल चन्दमुख निरखिहौं नागरि नवल किशोर ॥ कब कालिन्दी कूलकी ह्वैहौं तरुवर डार। ललित किशोरी लाड़िले झूलैं झूलाडार ॥ श्यामापद दृढ़ गहु सखी मिलिहैं निश्चय श्याम। ना मानै दृग देखि ले श्यामापद महँ श्याम ॥ अनाथ ॥ क० ॥ जाही हाथ हाथ गहि रुक्मिणी उबारी नाथ जाही हाथ द्रौ-पदीकीराखी लाजसारीहै। जाहीहाथ हथाहथी हाथी को उबार्‍यो गहि जाहीहाथ नृगहू की आपदा बिदारी है ॥ जाहीहाथ गिरिवर धार्‍यो गिरिधारी अहो जाही हाथ नाग नाथि हर्‍यो विष भारीहै। मेरोहाथ गहो नाथ तु-महौं अनाथनाथ मेरेहाथ गहिबेकी आई अब पारीहै ॥ ७७ ॥ हरिदत्त ॥ नाममाहात्म्य ॥ चारिहुँ वेद पुराण अठारहुँ चौसठि तन्त्रके मन्त्र विचारे। तीनि सौ साठि महाव्रत संयम मंगल यज्ञ पुरी पुरसारे ॥ योग नियोग प्रयोग उपासन ये हरिदत्त सभी निरधारे। तीनहुँ लोकन के सिगरे फल मैं हरिनामके ऊपर वारे ॥ कविकी प्रार्थना ॥ जन्म अनेकन्हि माहिं सदा मोहिं राधिकानाथ को दास-हि बोलै। वल्लभ विप्र यहै व्रजवीथिन जाचै पसारि पारि निचोलै ॥ मो हियआँगन माँझकरैं चित प्रेम

उमंग तरंग कल्लोलै। राधिका रूप भयो बरसाँवरो श्याममई भई राधिका डोलै॥ ७८॥ पुनः॥ क०॥ मेरी या अरज ब्रजनाथ सुनि लीजै नाथ मोहिंको अनाथ जानि करो निज चेरो है। एहो विप्र बल्लभ जू स्वरग नरकहू में नरहू के लोक में जो होत रहे फेरो है॥ गजन में गायन में मृग में पखेरुन में श्वान खर कूकर में पाऊँ जो बसेरो है। जिन जिन योनिन में जन्म जहां जहां होय तहां तहां मेरे उर रहै पद तेरो है॥ ७९॥ दोहा॥ ग्रन्थ सुधासरहू निरखि कवि नवीन कृत चित्र॥ ब्रज-विलास को मत समुझि यह मैं कियो विचित्र॥ गिरि-धरदासहु को रचित निरखि कथामृत ग्रन्थ। तामें ते सारांश लै धरयो याहि में मन्थ॥ लै अनेक सुकवीनके धरे कवित यहि माहिं। सरस सुरुचि मैंहूँ धरे जो जहँ चहँ तिहिं ताहिं॥ राधा माधव स्वपन में दयो दरश मोहिं येह। कबहुँक वह दिन होयगो हिय बसिरहैं अ-छेह॥ रसिकनके बशिकरन को रच्यो सुरसिकउलास। पद ब्रजेशधरि यह पढ़ै सो पावै ब्रजबास॥ इतिश्री मदादिगौड़दुर्गागर्भजश्रीकाशीनाथात्मजाविप्रबल्लभ विप्रकृतेरसिकोल्लासश्रीभागवतेसपर्वहोलिकामहोत्सव सहितवर्णनोन्नामनवमोऽध्यायः॥ ९॥ उत्तरार्द्धश्च समाप्तः॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः॥
